Faizane Ramazan (Hindi)

(मुरम्मम)

फ़ैज़ाने र-मज़ान

फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़ 21

अह़कामे रोज़ा 72

फ़ैज़ाने तरावीह 159

फ़ैज़ाने लय-लतुल क़द्र 181

अल वदाअ़ माहे र-मज़ान 207

फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़ 229

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र 297

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल 326

रोज़ादारों की 12 हिकायात 384

मो'तकिफ़ीन की 40 म-दनी बहारें 407

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले (اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکِر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब (फै़ज़ाने र-मज़ान)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाई है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाजे़ह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डोंट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دعوت، استعمال (दा'वत, इस्ति'माल वग़ैरा)।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

ह़ुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ای / ی	इ = اِ	ऐ = ـَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ा-लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने र-मज़ान

मुअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

नाम किताब : फ़ैज़ाने र-मज़ान

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

अजमेर शरीफ़ : 19/216, फ़लाहे़ दारैन मस्जिद, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान। फ़ोन : 0145-2629385

बरेली शरीफ़ : दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यूपी। फ़ोन : 09313895994

गुलबर्गा शरीफ़ : फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तीमा पूर चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक। फ़ोन : 09241277503

बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यूपी। फ़ोन : 09369023101

कानपूर : मस्जिद मख़्दूम सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पड़ाव चौराहा, कानपूर, यूपी। फ़ोन : 09619214045

कलकत्ता : 35A/H/2, मोमिन पूर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल। फ़ोन : 033-32615212

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर, महाराष्ट्र। फ़ोन : 09326310099

अनन्त नाग : म-दनी तरबियत गाह, टाउन होल के सामने, अनन्त नाग, कश्मीर। फ़ोन : 09797977438

सूरत : वलिया भाई मस्जिद, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सूरत, गुजरात। फ़ोन : 09601267861

इन्दौर : 13, बोम्बे बाज़ार, उदापूरा, इन्दौर, एमपी। फ़ोन : 09303230692

बेंगलोर : 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कोम्पलेक्स, नवां मेन पल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, अ़रबिक कोलेज, बेंगलोर-45 कर्नाटक। फ़ोन : 08088264783

हुबली : A.J. मुधल कोम्पलेक्स, A.J. मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक। फ़ोन : 08363244860

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"या अल्लाह ! फ़ैज़ाने सुन्नत आम हो जाए" के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 23 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ
मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है । (مُعجَم كبير ج ٦ ص ١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो म-दनी फूल

﴾1﴿ आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है ।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा ।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾6﴿ दीनी किताब की ता'ज़ीम के पेशे नज़र ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ फ़ज़ीलते दीनी ह़ासिल करने के लिये क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात व ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा और इन में बयान कर्दा अह़कामात पर अ़मल की कोशिश करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह तआ़ला**" का ज़ाती या सिफ़ाती नामे पाक आएगा वहां "عَزَّوَجَلَّ" या "तआ़ला" या "جَلَّ جَلَالُہٗ" वग़ैरा कलिमाते सना पढ़ूंगा और ﴾11﴿ जहां जहां "सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" का कोई भी ज़ाती या सिफ़ाती इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या कोई भी दुरूदो सलाम पढ़ूंगा ﴾12﴿ किताब के मुत़ा-लए़ से शर-ई मसाइल सीखूंगा सुन्नते रसूले अ़-रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उ़-लमाए दीन की जानिब से बयान कर्दा आदाबे ज़िन्दगी और हुस्ने मुआ़-शरत सीखूंगा । इस्लामी मा'लूमात, क़ल्बी व ज़ाहिरी अख़्लाक़ो आदाब, और हिकायाते बुज़ुर्गाने दीन से आगाही ह़ासिल करूंगा ताकि अपनी ज़िन्दगी में इन की रोशनी में बेहतरी ला सकूं ﴾13﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾14﴿ तज़्किरए सालिह़ीन पढ़ने सुनने की ब-र-कतें ह़ासिल करूंगा ﴾15﴿ दौराने मुत़ा-लआ़ किसी अहम दीनी मस्अले या सुन्नते मुबा-रका या फ़िक्रे आख़िरत से मु-तअ़ल्लिक़ या हुस्ने मुआ़-शरत या बन्दों

के हुक़ूक़ या इन के साथ ख़ैर ख़्वाही से मु-तअ़ल्लिक़ कोई बात ऐसी मा'लूम हुई कि जिस को याद रखने या नोट करने की ज़रूरत महसूस हुई तो उसे याद दिहानी के लिये अपनी ज़ाती किताब की सूरत में अन्डर लाइन या हाई लाइट करूंगा या किताब पर या अलग से डायरी पर नोट कर लूंगा ﴿16﴾ दौराने मुता-लआ़ कोई भी ऐसा काम नहीं करूंगा जो किताब में बयान कर्दा बात के मफ़्हूम को समझने में मुख़्िल (या'नी ख़लल अन्दाज़) हो जैसे मोबाइल फ़ोन का इस्ति'माल, गुफ़्त-गू करना, शोरो गुल में पढ़ना, मुता-लआ़ करते वक़्त ऐसे वक़्त का इन्तिख़ाब करना जिस वक़्त थकावट बहुत ज़ियादा हो या मिज़ाज मोत'दिल (या'नी नॉर्मल) न हो, अल ग़रज़ दौराने मुता-लआ़ भरपूर तवज्जोह से इल्मे दीन ह़ासिल करने की कोशिश करूंगा ﴿17﴾ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़्ह़ात पढ़ कर इल्मे दीन ह़ासिल करने के सवाब का ह़क़दार बनूंगा और इस निय्यत की बिना पर इस्तिक़ामत से नेक अ़मल करते रहने की फ़ज़ीलत का ह़क़दार भी बनूंगा ﴿18﴾ इल्मे दीन की नश्रो इशाअ़त के लिये दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴿19﴾ इस ह़दीसे पाक تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी "एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी" (مؤطّا ج۲ص۴۰۷حدیث۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा, तोह़फ़ा देते वक़्त इल्मे दीन आ़म करने की निय्यत भी करूंगा ताकि इस निय्यत का भी अलग से सवाब मिले ﴿20﴾ जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (म-सलन 25) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴿21﴾ इस किताब को पढ़ कर जो दीनी बातें मुझे मा'लूम हुईं जहां शरीअ़त इजाज़त देगी ज़बानी तौर पर दूसरों को बताऊंगा वरना किताब से देख कर जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा ﴿22﴾ अच्छी निय्यतों के साथ किताब पढ़ने पर जो सवाब ह़ासिल होगा वोह सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴿23﴾ कम्पोज़िंग वग़ैरा में ग़-लती मिली तो ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे के तह़त नेकी पर मदद करने और शर-ई ग़-लती मिली तो ग़लत़ मस्अले का फैलाव न हो इस निय्यत से नाशिरीन को और मुम्किन हुवा तो मुसन्निफ़ को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

उ़न्वान	सफ़ह़ा
फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़	21
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	21
इबादत का दरवाज़ा	21
नुज़ूले कुरआन	22
महीनों के नाम की वज्ह	22
सुर्ख़ याकूत का घर	23
नाबीना भान्जी बीना हो गई (म-दनी बहार)	23
पांच ख़ुसूसी करम	25
सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा	26
काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो !	26
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयाने जन्नत निशान	26
र-मज़ानुल मुबारक के चार नाम	27
13 म-दनी फूल	28
जन्नत सजाई जाती है	30
जन्नत कौन सजाता है ?	30
जन्नत में आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस की बिशारत	31
हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश	33
रोज़ाना दस लाख की दोज़ख़ से रिहाई	33
जुमुआ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग़्फ़िरत	34
ख़र्च में कुशा-दगी करो	35
भलाई ही भलाई	35
बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें	35
दो अंधेरे दूर	35
र-मज़ान व कुरआन शफ़ाअ़त करेंगे	36
लाख र-मज़ान का सवाब	36
काश ! ईद मदीने में हो !	36
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इबादत पर कमर बस्ता हो जाते	37
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब दुआएं मांगते थे	37
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते	38
क्या आक़ा की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में क़ैदी होते थे ?	38
सब से बढ़ कर सख़ी	38
हज़ार गुना सवाब	39
र-मज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत	39
सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ और ज़िक्रुल्लाह	39
छ6 बेटियों के बा'द औलादे नरीना	39
40 नेक मुसलमानों के मज्मअ़ में एक वली होता है	40
बेटा मिले, बेटी मिले, कुछ न मिले, हर ह़ाल में शुक्र कीजिये	41
हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद	41
र-मज़ान का दीवाना	42
अल्लाह बे नियाज़ है	43
तीन के अन्दर तीन पोशीदा	43
कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई	44
अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब	45
चुग़ली का दर्दनाक अ़ज़ाब	47
इल्ज़ामे गुनाह की ख़ौफ़नाक सज़ा	47
कोई भी नेकी नहीं छोड़नी चाहिये	48
गुनाहगारों की 4 ह़िकायात	48
(1) क़ब्र आग से भर गई !	48
(2) मापने में बे एह़तियाती के सबब इताब	49
(3) क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़	49
ह़राम की कमाई कहां जाती है ?	49

आग के दो पहाड़	50	अफ़्ज़ल इबादत कौन सी है ?	68
(4) तिन्के का बोझ	50	रोज़े में ज़ियादा सोना	69
गुनाह आख़िर गुनाह है	51	रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म	69
अदाए क़र्ज़ में बिला मोहलत लिये		फ़िक्रे मदीना क्या है ?	70
ताख़ीर गुनाह है	51	**अह्कामे रोज़ा**	72
तीन पैसे का वबाल	52	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	72
क़ियामत में मुफ़्लिस कौन ?	53	रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है	73
ज़ालिम से मुराद कौन है ?	53	रोज़े का मक़्सद	73
माहे र-मज़ान में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत	54	रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है	74
क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब	55	रोज़ा फ़र्ज़ होने की वज्ह	74
र-मज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !	55	रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़	
जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं	55	3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	75
शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं	55	रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है !	75
गुनाहों में कमी तो आ ही जाती है	56	बच्चे को कब रोज़ा रखवाया जाए ?	75
जूं ही सरकश शयातीन आज़ाद होते हैं !	56	आ'ला हज़रत को वालिद साहिब ने	
आतश परस्त ने माहे र-मज़ान का		ख़्वाब में फ़रमाया (हिकायत)	76
एह्तिराम किया तो...... (हिकायत)	56	रोज़े से सिह्हत मिलती है	76
र-मज़ान में अ़लल ए'लान खाने की दुन्यवी सज़ा	57	मे'दे का वरम	77
क्या आप को मरना नहीं ?	57	हैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ात	77
सुन्नतों भरे बयानात की ब-रकात	58	डॉक्टरों की तह्क़ीक़ाती टीम	77
ग़फ़्लत से नेकी की दा'वत सुनना		ख़ूब डट कर खाने से बीमारियां पैदा होती हैं	78
कुफ़्फ़ार की सिफ़त है	60	बिग़ैर ऑपरेशन के विलादत हो गई	78
साल भर की नेकियां बरबाद	61	रोज़े की जज़ा	80
दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप	62	रोज़े का ख़ुसूसी इन्आ़म	80
र-मज़ान में गुनाह करने वाला	62	नेक आ'माल की जज़ा जन्नत है	81
दिल का सियाह नुक़्ता	63	ग़ैरे सहाबी के लिये "رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه"	
दिल की सियाही का इलाज	63	कहना कैसा ?	82
गुनाह की मुआ़फ़ी के लिये 8 आ'माल	64	मुझे मोतियों वाला चाहिये	82
क़ब्र का भयानक मन्ज़र !	64	हम रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के	
मुर्दों से गुफ़्त-गू	66	जन्नत रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की	83
र-मज़ान की रातों में खेलकूद	67		
रोज़े में वक़्त "पास" करने के लिये......	67		

जो चाहो मांग लो !	84
रोज़े के फ़ज़ाइल से मु-तअ़ल्लिक़	
11 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	84
जन्नती दरवाज़ा	84
साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा	85
जहन्नम से 70 साल की मसाफ़त दूर	85
एक रोज़े की फ़ज़ीलत	85
सुर्ख़ याक़ूत का मकान	85
जिस्म की ज़कात	85
सोना भी इबादत है	85
आ'ज़ा का तस्बीह़ करना	85
जन्नती फल	86
सोने का दस्तर ख़्वान	86
सात क़िस्म के आ'माल	86
बे ह़िसाब अज्र	87
यरक़ान से सिह़्ह़त मिल गई	87
एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान	88
उलटे लटके हुए लोग	88
तीन बद बख़्त	89
नाक मिट्टी में मिल जाए	90
रोज़े के तीन द-रजे	90
(1) अ़वाम का रोज़ा	90
(2) ख़्वास का रोज़ा	90
(3) अख़स्सुल ख़्वास का रोज़ा	90
दाता साहिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का इर्शाद	91
रोज़ा रख कर भी गुनाह तौबा ! तौबा !	91
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को कुछ ह़ाजत नहीं	91
मैं रोज़ादार हूं	92
आ'ज़ा के रोज़ों की ता'रीफ़	92
आंख का रोज़ा	93
कान का रोज़ा	94
ज़बान का रोज़ा	95
ज़बान की बे एह़तियात़ी की तबाह कारियां	95
इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	97
हाथों का रोज़ा	97
पाउं का रोज़ा	98
K इलेक्ट्रिक में नोकरी मिल गई	98
रोज़े की निय्यत	100
निस्फ़ुन्नहारे शर-ई का वक़्त	
मा'लूम करने का त़रीक़ा	100
रोज़े की निय्यत के 20 म-दनी फूल	101
दाढ़ी वाली बच्ची !	105
स-ह़री करना सुन्नत है	106
हज़ार साल की इबादत से बेहतर	106
सोने के बा'द स-ह़री की इजाज़त न थी	106
स-ह़री की इजाज़त की ह़िकायत	107
स-ह़री के मु-तअ़ल्लिक़	
3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	108
क्या रोज़े के लिये स-ह़री शर्त़ है ?	108
खजूर और पानी से स-ह़री	108
खजूर से स-ह़री करना सुन्नत है	108
स-ह़री का वक़्त कब होता है ?	109
स-ह़री में ताख़ीर से कौन सा वक़्त मुराद है ?	109
अज़ाने फ़ज्र नमाज़ के लिये है न कि	
रोज़ा बन्द करने के लिये !	110
खाना पीना बन्द कर दीजिये	110
म-दनी क़ाफ़िले की निय्यत करते ही	
मुश्किल आसान हो गई !	111
क़र्ज़ से नजात का अ़मल	112
क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा	112
इफ़्त़ार का बयान	113
इफ़्त़ार की दुआ	113
इफ़्त़ार के लिये अज़ान शर्त़ नहीं	114

इफ़्तार के फ़ज़ाइल के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	114
इफ़्तार करवाने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत	114
जिब्रीले अमीन के मुसा-फ़ह़ा करने की अ़लामत	114
सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इफ़्तार	115
खजूर के 25 म-दनी फूल	115
क्या ह़दीस में बताया हुवा इलाज हर एक कर सकता है	119
इफ़्तार के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है	119
हम खाने पीने में रह जाते हैं	120
ग़िज़ा से इफ़्तार के बा'द नमाज़ के लिये मुंह साफ़ करना ज़रूरी है	120
दुआ़ के तीन फ़वाइद	122
दुआ़ में पांच सआ़दतें	122
"يَا عَفُوُّ" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से 5 म-दनी फूल	122
न जाने कौन सा गुनाह हो गया है	123
नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़त़ा ही नहीं !!!	123
जिस दोस्त की बात हम न मानें	124
क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब	124
नेक बन्दे की दुआ़ क़बूल होने में ताख़ीर की ह़िक्मत (ह़िकायत)	125
जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती !	125
अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर......	126
दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है	128
इर्क़ुन्निसा का दर्द जाता रहा	128
इर्क़ुन्निसा के दो रूह़ानी इलाज	129
रोज़ा तोड़ने वाली 14 चीज़ें	130
रोज़े में क़ै होना	131
क़ै के सात अह़काम	132
मुंह भर क़ै की ता'रीफ़	132
वुज़ू में क़ै के 5 अह़कामे शर-ई	132
क़ै का अहम मस्अला	133
भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं जाता	133
रोज़ा न टूटने के 21 अह़काम	133
रोज़ादार को भूल कर खाता पीता देखे तो क्या करे	134
मक्रूहाते रोज़ा	136
मक्रूहाते रोज़ा पर मुश्तमिल 12 पैरे	137
चखना किसे कहते हैं ?	138
आस्मान पर से काग़ज़ का पुर्ज़ा गिरा	139
मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म !	141
बेटी के फ़ज़ाइल	141
रोज़ा न रखने की मजबूरियां	142
शर-ई सफ़र की ता'रीफ़	142
रोज़ा न रखने की इजाज़ात पर मब्नी 33 म-दनी फूल	143
फ़ासिक़ या ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर रोज़ा न रखने का मश्वरा दे तो ?	145
रोज़ा और ह़ैज़ व निफ़ास	146
उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग के रोज़े	146
नफ़्ल रोज़ा तोड़ने में सिर्फ़ क़ज़ा होती है कफ़्फ़ारा नहीं	147
साल में पांच रोज़े ह़राम हैं	147
दा'वत के सबब रोज़ा तोड़ना	148
बीवी बिला इजाज़ते शोहर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती	148
"12 म-दनी फूल" जिन से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है	150
किसी के मजबूर करने पर रोज़ा तोड़ना	150
कफ़्फ़ारे के अह़काम	151
रोज़े के कफ़्फ़ारे का त़रीक़ा	152

www.dawateislami.net

औरत और कफ़्फ़ारे के रोज़े	152	लय-लतुल क़द्र को	
आइसा कितनी उम्र में ?	153	"लय-लतुल क़द्र" क्यूं कहते हैं ?	181
कफ़्फ़ारा वाजिब होने की एक सूरत	153	83 साल 4 माह की इबादत से ज़ियादा सवाब	182
कफ़्फ़ारे से मु-तअ़ल्लिक़ 11 म-दनी फूल	154	हज़ार महीनों से बेहतर एक रात	183
ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !	155	हमारी उम्रें तो बहुत क़लील हैं	183
اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया !	156	बा करामत शम्ऊ़न की ईमान अफ़रोज़ हिकायत	184
बे नमाज़ियों में बैठना कैसा ?	156	आह ! हमें क़द्र कहां !	185
फ़ैज़ाने तरावीह़	159	म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-र-कत	186
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	159	आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा	187
तरावीह़ से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ होते हैं	159	तमाम भलाइयों से महरूम कौन ?	187
सुन्नत की फ़ज़ीलत	160	सब्ज़ झन्डा	187
आ़शिक़ाने कलामुल्लाह की सात हिकायात	160	लड़ाई का वबाल	188
वस्वसा और उस का इलाज	161	हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और......	189
दौराने तिलावत ह़र्फ़ चबाना	161	मुसल्मान मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़	190
तरतील से पढ़ना किसे कहते हैं !	163	ना क़ाबिले बरदाश्त ख़ारिश	190
तरावीह़ की उजरत लेना देना कैसा ?	163	तक्लीफ़ दूर करने का सवाब	191
तिलावत व ज़िक्रो ना'त की उजरत ह़राम है	164	लड़ना है तो नफ़्स के साथ लड़ो !	91
तरावीह़ की उजरत का शर-ई ह़ीला	164	आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुरा रहे थे !	191
ख़त्मे क़ुरआन और रिक़्क़त	166	जादूगर का जादू नाकाम	192
तरावीह़ की जमाअ़त बिद्अ़ते ह़-सना है	167	अ़लामाते शबे क़द्र	192
12 अच्छे काम या'नी बिद्अ़ते ह़-सना	168	शबे क़द्र की पोशीदगी की ह़िक्मत	193
हर बिद्अ़त गुमराही नहीं है	169	समुन्दर का पानी मीठा लगा (ह़िकायत)	193
बिद्अ़ते ह़-सना के बिग़ैर गुज़ारा नहीं	170	हमें अ़लामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ?	193
सब्ज़ गुम्बद की तारीख़	171	ताक़ रातों में ढूंडो	194
दीदारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	172	आख़िरी सात रातों में तलाश करो	194
अच्छों से महब्बत के फ़ज़ाइल	173	लय-लतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ?	194
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत रखने के		ह़िक्मतों के म-दनी फूल	195
मु-तअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	173	साल में कोई सी भी रात शबे क़द्र हो सकती है	196
तरावीह़ के 35 म-दनी फूल	174	रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की	
केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया	179	मअ़ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जल्वा गरी	196
फ़ैज़ाने लय-लतुल क़द्र	181	इमामे आ'ज़म, इमामे शाफ़ेई और	
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	181	साहिबैन के अक़्वाल	198

शबे क़द्र बदलती रहती है	198	तौबा व नेकी का जज़्बा मिलता है	222
शैख़ अबुल हसन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى		सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तवे से	
और शबे क़द्र	199	हासिल होने वाले 9 म-दनी फूल	224
सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र	199	ख़ु-त़बे इल्मी में अल वदाई अश्आर	225
गोया शबे क़द्र हासिल कर ली	200	अफ़्सोस तू रुख़्सत हुवा माहे मुबारक अल वदाअ़	226
शबे क़द्र की दुआ	200	ख़ुत़्बे का एक अहम मस्अला	227
शबे क़द्र के नवाफ़िल	201	"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" की म-दनी बहार	227
अल वदाअ़ माहे र-मज़ान	208	**फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़**	230
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	208	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	230
"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" पढ़ना जाइज़ है	208	ए'तिकाफ़ पुरानी इबादत है	231
"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" के		मस्जिदों को साफ़ रखने का हुक्म है	231
मु-तअ़ल्लिक़ 12 निय्यतें	208	दस दिन का ए'तिकाफ़	231
आमदे र-मज़ान पर मुबारक बाद देना		आ़शिक़ों की धुन	232
सुन्नत से साबित है	210	ऊंटनी के साथ फेरे लगाने की हिक्मत	232
दिल ग़मे र-मज़ान में डूबने लगता है	211	मो'तकिफ़ का मक़्सूदे अस्ली	
आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं	212	इन्तिज़ारे नमाज़े बा जमाअ़त	232
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा	213	एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत	233
पहले के लोगों की दुआ में	213	साबिक़ा गुनाहों की बख़्शिश	233
सारा साल यादे र-मज़ान होती !	213	आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जाए ए'तिकाफ़	233
ईद की चांदरात आ़शिक़ाने र-मज़ान के जज़्बात	214	सारे महीने का ए'तिकाफ़	234
ग़मे र-मज़ान की तरग़ीब	214	तुर्की ख़ैमे में ए'तिकाफ़	234
माहे र-मज़ान की जुदाई में क्यूं न रोया जाए !	215	ए'तिकाफ़ का मक़्सदे अ़ज़ीम	234
जुमुअ़तुल वदाअ़ के बयान में		ज़मीन पर बिला हाइल सज्दा करना मुस्तहब है	235
जान दे दी (हिकायत)	215	दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	235
माहे र-मज़ान की आख़िरी रात		दो हज और दो उ़म्रों का सवाब	235
ख़ौफ़े ख़ुदा से वफ़ात (हिकायत)	218	बिग़ैर किये नेकियों का सवाब	236
"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" का		रोज़ाना हज का सवाब	236
शर-ई सुबूत क्या है ?	220	ए'तिकाफ़ की ता'रीफ़	236
अस्ल अश्या में इबाहत है	221	ए'तिकाफ़ के लफ़्ज़ी मा'ना	236
दीन में नए अच्छे त़रीक़े निकालने की		अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं	236
ह़दीस में इजाज़त है	221	ए'तिकाफ़ की क़िस्में	237
"अल वदाअ़" सुनने से		ए'तिकाफ़े वाजिब	237

ए'तिकाफ़े सुन्नत	237
ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये	238
ए'तिकाफ़े नफ़्ल	238
मस्जिद में खाना पीना	238
इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 41 निय्यतें	239
ए'तिकाफ़ किस मस्जिद में करे ?	242
मो'तकिफ़ और एह़तिरामे मस्जिद	242
अल्लाह उन पर करम न करेगा	243
अल्लाह तेरी गुमशुदा चीज़ न मिलाए	243
तो तुम्हें सज़ा देता	243
मुबाह़ कलाम नेकियों को खा जाता है	243
40 साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे	244
मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है	244
क़ब्र में अंधेरा	244
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ए'तिकाफ़	244
मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने बा'दे वफ़ात भी	
म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत दी	245
मस्जिद के मु-तअ़ल्लिक़ 19 म-दनी फूल	246
मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये !	250
मस्जिद में बल्ग़म देख कर सरकार की ना गवारी	250
फ़ारूके़ आ'ज़म और मस्जिद में ख़ुश्बू	250
मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये !	251
एर फ्रे़श्नर से केन्सर हो सकता है	251
मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है	251
मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मक्रूह होती है	252
बदबूदार मरहम लगा कर	
मस्जिद में आने की मुमा-न-अ़त	252
कच्ची पियाज़ खाने से भी	
मुंह बदबूदार हो जाता है	253
मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं	253
कच्ची पियाज़ वाले कचूमर और राइते से	
मोह़तात़ रहिये	254
मज्मअ़ में अगरबत्ती सुलगाना	254
बदबूदार मुंह ले कर मुसल्मानों के	
मज्मअ़ में जाने की मुमा-न-अ़त	254
नमाज़ के अवक़ात में कच्ची पियाज़ खाना कैसा ?	254
कच्ची पियाज़ खाते वक़्त بِسْمِ الله पढ़ना मक्रूह है	255
मुंह की बदबू मा'लूम करने का त़रीक़ा	256
मुंह की बदबू का इलाज	256
मुंह की बदबू का म-दनी इलाज	257
इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहिएं ?	258
अपने लिबास वग़ैरा पर	
ग़ौर करने की आ़दत बनाइये	258
मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमा-न-अ़त	260
गोश्त मछली बेचने वाले	260
सोने से मुंह में बदबू हो जाती है	260
पसीने की बदबू वाले कपड़े	261
मुंह की सफ़ाई का त़रीक़ा	261
दाढ़ी को बदबू से बचाइये	262
ख़ुश्बूदार तेल बनाने का आसान त़रीक़ा	262
हो सके तो रोज़ नहाइये	262
इमामा वग़ैरा को बदबू से बचाने का त़रीक़ा	262
इमामा कैसा होना चाहिये	263
ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ़	263
फ़िनाए मस्जिद और मो'तकिफ़	266
मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में जा सकता है	266
आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का फ़तवा	267
मस्जिद की छत पर चढ़ना	267
मो'तकिफ़ के मस्जिद से बाहर निकलने की सूरतें	268
(1) ह़ाजते शर-ई	268
ह़ाजते शर-ई के मु-तअ़ल्लिक़ 3 म-दनी फूल	268
(2) ह़ाजते त़ब्ई	269
ह़ाजते त़ब्ई के मु-तअ़ल्लिक़ 4 पैरे	269
ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों का बयान	269

ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 12 म-दनी फूल	270
मेरी कमर का दर्द चला गया	271
चुप का रोज़ा	272
हाजत रवाई और एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत	273
मुसल्मान को खुश करने की फ़ज़ीलत	274
ए'तिकाफ़ में जाइज़ कामों की इजाज़त पर मुश्तमिल 8 म-दनी फूल	274
ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा	276
ए'तिकाफ़ का फ़िदया	276
ए'तिकाफ़ तोड़ने की तौबा	276
मश्हूर बेन्ड पार्टी के मालिक की तौबा	276
मो'तकिफ़ीन के लिये ज़रूरत की अश्या	277
ए'तिकाफ़ के 30 म-दनी फूल	278
आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत ने मुझे क्या से क्या बना दिया !	282
अपनी चीज़ें संभालने का त़रीक़ा	284
ए'तिकाफ़ में बीमार पड़ जाने के अस्बाब	284
खाने की एह़तियात़ का फ़ाएदा	285
मुझे मुसल्मानों की सिह्ह़त अ़ज़ीज़ है	285
ज़ालिमों के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करना कैसा ?	286
मुसल्मानों की भलाई चाहना कारे सवाब है	286
कबाब समोसे खाने वाले मु-तवज्जेह हों	287
तली हुई चीज़ों से होने वाली 19 बीमारियों की निशान देही	288
ख़त़रनाक ज़हर का तोड़	289
तली हुई चीज़ों का नुक़्सान कम करने का त़रीक़ा	289
बचा हुवा तेल दोबारा इस्ति'माल करने का त़रीक़ा	289
फ़न्ने त़िब यक़ीनी नहीं	289
फ़ेशन परस्त "मुबल्लिग़े सुन्नत" बन गए	290
इस्लामी बहनों का ए'तिकाफ़	290
इस्लामी बहनें भी ए'तिकाफ़ करें	291
इस्लामी बहनों के लिये 13 म-दनी फूल	291
इस्लामी बहन के लिये ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा	293
7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	294
निशानियों के नमूने	295
फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र	298
मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ख़ाली हथेली पर दम किया और......	298
दिल ज़िन्दा रहेगा	299
जन्नत वाजिब हो जाती है	299
मुआ़फ़ी का ए'लाने आ़म	299
कोई साइल मायूस नहीं जाता	300
शैत़ान की बद ह़वासी	300
क्या शैत़ान काम्याब है ?	301
इसराफ़ की ग्यारह ता'रीफ़ात	302
इसराफ़ की वाज़ेह तर ता'रीफ़ ग़ैरे ह़क़ में माल ख़र्च करना	302
तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़	303
इन्सान व हैवान का फ़र्क़	303
ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है ?	304
घर ही पर विलादत हो गई	304
हिफ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूहानी इलाज	305
ईद या वईद	305
औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی भी तो ईद मनाते रहे हैं	305
ईद का अनोखा खाना	306
रूह़ को भी सजाइये	307
नजासत पर चांदी का वरक़	307
ईद किस के लिये है ?	307
सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ईद	308

हमारी ख़ुश फ़हमी	308	नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर	
शहज़ादे की ईद	309	13 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	329
शहज़ादियों की ईद	310	(1) जन्नत का अनोखा दरख़्त	329
वालिदे मर्हूम पर करम	310	(2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी	329
हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की ईद	311	(3) दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त तक दूरी	329
एक वली की ईद	312	(4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब	329
करामत का एक शो'बा	313	(5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी	329
एक सख़ी की ईद	313	(6) कव्वा बचपन ता बुढ़ापा उड़ता रहे	
सलाम उस पर कि जिस ने		यहां तक कि......	330
बे कसों की दस्त-गीरी की	314	(7) रोज़े जैसा कोई अ़मल नहीं	330
क़ुव्वते समाअ़त बहाल हो गई	314	(8) रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे	330
स-द-क़ए फ़ित्र	315	(9) महशर में रोज़ादारों के मज़े	330
स-द-क़ए फ़ित्र वाजिब है	315	(10)......तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा	330
स-द-क़ए फ़ित्र लग़्व बातों का कफ़्फ़ारा है	315	(11) जब तक रोज़ेदार के सामने	
रोज़ा मुअ़ल्लक़ रहता है	315	खाना खाया जाता है	331
फ़ित्रे के 16 म-दनी फूल	316	(12) हड्डियां तस्बीह़ करती हैं	331
स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार	318	(13) रोज़े में मरने की फ़ज़ीलत	331
क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल हों	319	नेक काम के दौरान मरने की सआ़दत	331
नमाज़े ईद से क़ब्ल की एक सुन्नत	319	कालू चाचा की ईमान अफ़्रोज़ वफ़ात	332
नमाज़े ईद का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)	320	सख़्त गरमी में रोज़े की फ़ज़ीलत (ह़िकायत)	333
ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो....?	320	क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे	334
ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ?	321	आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल	334
ईद के ख़ुत़्बे के अह़काम	321	आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआ़त	334
ईद के 20 म-दनी फूल	321	मुह़र्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल	335
बक़र ईद का एक मुस्तह़ब	323	यौमे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام	335
मैं ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था	323	ईदे मीलादुन्नबी और दा'वते इस्लामी	336
मुझ गुनहगार पर भी करम के छींटे पड़े	324	आ़शूरा का रोज़ा	337
नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल	327	यहूदियों की मुख़ा-लफ़त करो	337
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	327	सारा साल घर में ब-र-कत	337
नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद	327	र-जबुल मुरज्जब के रोज़े	337
रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत	327	हु़रमत वाले चार महीनों के नाम	338

रजब के एह्तिराम की ब-र-कत की हिकायत	339	ता'ज़ीमे र-मज़ान के लिये शा'बान के रोज़े	351
अल्लाह का महीना	339	आक़ा शा'बान के अक्सर रोज़े रखते थे	352
रजब में परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत	340	हदीसे पाक की शर्ह	352
दो साल की इबादत का सवाब	340	मरने वालों की फ़ेहरिस बनाने का महीना	352
रजब के मुख़्तलिफ़ नाम और मआ़नी	340	नफ़्ल रोज़ों का पसन्दीदा महीना	353
रजब के तीन हुरूफ़ की भी क्या बात है !	341	लोग इस से ग़ाफ़िल हैं	353
इबादत का बीज बोने का महीना	341	ताक़त के मुताबिक़ अ़मल कीजिये	353
जो सारी ज़िन्दगी न सीख सका वोह		दा'वते इस्लामी में रोज़ों की बहार	353
दस दिन में सीख लिया	341	पतंग बाज़ी का शौक़ीन	354
पांच बा ब-र-कत रातें	342	र-मज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़्ज़ल है ?	355
जन्नत में ले जाने वाली पांच रातें	342	पन्दरहवीं शब में तजल्ली	355
पहला रोज़ा तीन साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा	343	अ़दावत वाले की शामत	355
जन्नती महल	343	ढेरों गुनाहगारों की मग़्फ़िरत होती है मगर......	355
एक जन्नती नहर का नाम रजब है	343	हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام और	
एक रोज़े की फ़ज़ीलत	343	शबे बराअत	356
कश्तिये नूह में रजब के रोज़े की बहार	344	महरूम लोग	357
सो साल के रोज़ों का सवाब	344	इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पयाम	
27वीं शब के 12 नवाफ़िल की फ़ज़ीलत	345	तमाम मुसल्मानों के नाम	358
60 महीनों के रोज़ों का सवाब	345	शबे बराअत की ता'ज़ीम	359
...... तो गोया सो साल के रोज़े रखे	345	भलाइयों वाली चार रातें	358
दा'वते इस्लामी और		दूल्हा का नाम मुर्दों की फ़ेहरिस में !	360
जश्ने मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	345	मकान बनाने वाला मुर्दों की फ़ेहरिस में	360
कफ़न की वापसी	346	साल भर के मुआ़-मलात की तक़्सीम	360
लाड प्यार ने ढीट बना दिया था	347	नाज़ुक फ़ैसले	361
सोहबत के मु-तअ़ल्लिक़ तीन रिवायात	348	फ़ाएदे की बात	362
बुरी सोहबत की मुमा-न-अ़त	348	मग़रिब के बा'द छ⁶ नवाफ़िल	362
शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े	350	दुआ़ए निस्फ़े शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म	363
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का महीना	350	सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ की म-दनी इल्तिजाएं	364
शा'बान के पांच हुरूफ़ की बहारें	350	साल भर जादू से हिफ़ाज़त	365
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जज़्बा	350	शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत	365
मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा	351	क़ब्र पर मोमबत्तियां जलाना	365
		सब्ज़ परचा	366

www.dawateislami.net

आतश बाज़ी का मूजिद कौन ?	366	रोज़ए नफ़्ल के 13 म-दनी फूल	381
शबे बराअत की मुरव्वजा आतश बाज़ी हराम है	367	हमेशा रोज़ा रखना	383
आतश बाज़ी की जाइज़ सूरतें	367	शर्हे हदीस	383
आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सब्ज़ इमामा शरीफ़ का		**रोज़ादारों की 12 हिकायात**	385
ताज सजा रखा था	368	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	385
शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर		(1) हज्जाज बिन यूसुफ़ और रोज़ादार आ'राबी	385
मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	370	(2) सच्चा चरवाहा	386
नौ मौलूद की तरह गुनाहों से पाक	370	(3) निराला कफ़्फ़ारा	387
गोया उम्र भर का रोज़ा रखा	370	(4) सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने	
साल भर रोज़े रखे	370	लाख दिरहम लुटा दिये !	388
शश ईद के रोज़े कब रखे जाएं ?	371	आशिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की ब-रकात	388
ज़ुल हिज्जतिल हराम के		(5) हूर ने कूज़ा गिरा दिया	390
इब्तिदाई दस दिन के फ़ज़ाइल	372	सख़्त गर्मियों में भी पानी	
अ़शरए ज़ुल हिज्जतिल हराम के फ़ज़ाइल के		गर्म कर के पीते (हिकायत)	391
मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	372	(6) तीनों में बड़ा सख़ी कौन !	391
अय्यामे बीज़ के रोज़े	372	ईसार की फ़ज़ीलत	393
अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़		(7) रोज़ादार की क़ब्र की ख़ुश्बूदार मिट्टी	393
3 रिवायात	372	इमाम बुख़ारी की क़ब्र की मुश्कबार मिट्टी	393
अय्यामे बीज़ के रोज़ों के बारे में		साहिबे दलाइलुल ख़ैरात की क़ब्र से	
5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	373	अम्बर की ख़ुश्बू आती थी	394
मरने की दुआएं मांगते थे	373	(8) र-मज़ान व शश ईद के रोज़ों की ब-र-कत	394
पीर शरीफ़ और जुम्आरात के		(9) र-मज़ान का चांद	395
रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 5 रिवायात	374	जिगर का केन्सर ठीक हो गया	396
बुध और जुम्आरात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल	376	(10) दो ग़ीबत करने वालियों की हिकायत	396
बुध, जुम्आरात और जुमुआ के रोज़ों के फ़ज़ाइल		(11) मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े	398
पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	377	सय्यिदुना दावूद ताई के नफ़्स कुशी के वाक़िआत	398
जुमुआ के रोज़े के मु-तअ़ल्लिक़		अपनी नेकियों का ए'लान	399
4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	377	रियाकारी की ता'रीफ़	400
तन्हा जुमुआ का रोज़ा रखने की मुमा-न-अ़त पर		हिफ़्ज़ की ख़ुशी में तक़रीब	400
3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	379	हिफ़्ज़ करना आसान है मगर	
रोज़ए जुमुआ के मु-तअ़ल्लिक़ एक फ़तवा	380	हाफ़िज़ रहना मुश्किल है	400
हफ़्ता और इतवार के रोज़े	380	क़ुरआन भुला देने का अ़ज़ाब	401

3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	401
फ़रमाने र-ज़वी	401
नेकी के इज़्हार की कब इजाज़त है ?	402
(12) रोज़ेदारों का महल्ला	403
गोश्त की ख़ुश्बू से ही गुज़ारा कर लिया	403
नादान बच्चों की त़रफ़ से नेकी की दा'वत	404
म-दनी मुन्नी ने मेहंदी वाले हाथ क्यूं दिखाए ?	405
मैं नमाज़े जुमुआ़ तक से मह़रूम था	406
मो'तकिफ़ीन की 40 म-दनी बहारें	408
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	408
(1) शिकारी ख़ुद शिकार हो गया !	409
(2) मैं ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिश की थी	410
(3) मैं ने ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी !	411
(4) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया	412
(5) मैं पक्का दुन्यादार था	413
(6) मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये	414
(7) मेरी आंखों में आंसू आ गए !	416
(8) आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख ली	416
(9) ग़ैर इस्लामी न-ज़रिय्यात रखने वालों की तौबा	417
(10) अब गरदन तो कट सकती है मगर......	418
(11) मिरगी का मरज़ दूर हो गया	419
(12) मैं क्लीन शैव था	420
(13) मेरी फ़िल्मी गीत गुनगुनाने की आ़दत थी	420
(14) मॉडर्न नौ जवान तरक़्क़ी करते करते......	421
(15) मैं ने नशा कैसे छोड़ा !	422
(16) येह ए'तिकाफ़ क्या होता है !	423
(17) वोह चोरियां भी कर लिया करते थे	424
(18) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से शहर के लिये म-दनी मर्कज़ मिल गया	425
(19) ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेन्ड पहुंचा	426
(20) मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता	427
(21) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से घुटनों का दर्द चला गया	428
(22) दाढ़ी सजी सर सब्ज़ हो गया	429
(23) अनबन ख़त्म हो गई	429
ज़िन्दगी के आख़िरी साल के मु-तअ़ल्लिक़ एक इब्रत नाक रिवायत	430
(24) घर वाले घर से निकाल देते थे	431
(25) मस्जिद का ख़त़ीब बना दिया	433
(26) उ़म्र ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी	433
(27) वोह तहज्जुद गुज़ार बन गए	434
(28) आक़ा अपना दीदार करा दीजिये	435
(29) उन को हैरत है कि डब्बू स्नूकर कैसे छोड़ दिया !	436
(30) कॉमेडियन मुबल्लिग़ बन गया	437
(31) ह़-जरे अस्वद चूम लिया	437
(32) बुरी सोहबत में रहने का गुनाह छूट गया	439
(33) जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए	440
(34) 70 सालह इस्लामी भाई के तअस्सुरात	441
ग़ैरे अ़-रबी में आयाते क़ुरआनी लिखना जाइज़ नहीं	442
(35) घर में भी म-दनी माह़ोल बना लिया	443
(36) मैं र-मज़ान के रोज़े भी कम ही रखता था	444
(37) रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात	446
(38) हेप्पी न्यू यर का चस्का	446
हमें हिजरी सिन का लिह़ाज़ रखना चाहिये	447
(39) आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की ब-र-कत	447
(40) मिलावट वाले मसाले का कारोबार बन्द कर दिया	449
दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल दर्स देने का त़रीक़ा	451
मआख़िज़ो मराजेअ़	458

वक़्त स-ह़री का हो गया जागो

वक़्त स-ह़री का हो गया जागो
नूर हर सम्त छा गया जागो

उठ्ठो स-ह़री की कर लो तय्यारी
रोज़ा रखना है आज का जागो

माहे रमज़ां के फ़र्ज़ हैं रोज़े
एक भी तुम न छोड़ना जागो

उठ्ठो उठ्ठो वुज़ू भी कर लो और
तुम तहज्जुद करो अदा जागो

चुस्कियां गर्म चाय की भर लो
खा लो हलकी सी कुछ ग़िज़ा जागो

होगी मक़्बूल फ़ज़्ले मौला से
खा के स-ह़री करो दुआ जागो

माहे रमज़ां की बरकतें लूटो
लूट लो रह़मते ख़ुदा जागो

खा के स-ह़री उठो अदा कर लो
सुन्नते शाहे अम्बिया जागो

तुम को मौला मदीना दिखलाए
और ह़ज भी करो अदा जागो

तुम को र-मज़ां के सदक़े मौला दे
उल्फ़तो इश्क़े मुस्त़फ़ा जागो

तुम को र-मज़ान का मदीने में
दे शरफ़ रब्बे मुस्त़फ़ा जागो

कैसी प्यारी फ़ज़ा है र-मज़ां की
देख लो कर के आंख वा जागो

रह़मतों की झड़ी बरसती है
जल्द उठ कर के लो नहा जागो

तुम को दीदारे मुस्त़फ़ा हो जाए
है येह अ़त्त़ार की दुआ जागो

(वसाइले बख़्शिश, स. 668)

मरहबा सद मरहबा ! फिर आमदे र-मज़ान है

मरहबा सद मरहबा ! फिर आमदे र-मज़ान है
खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है

या ख़ुदा हम आ़सियों पर येह बड़ा एह़सान है
ज़िन्दगी में फिर अ़ता हम को किया र-मज़ान है

तुझ पे सदके़ जाऊं र-मज़ां ! तू अ़ज़ीमुश्शान है
तुझ में नाज़िल ह़क़ तआ़ला ने किया क़ुरआन है

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर
फ़ज़्ले रब से मग़्फ़िरत का हो गया सामान है

हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं ब-र-कतें
माहे र-मज़ां रह़मतों और ब-र-कतों की कान है

आ गया र-मज़ां इ़बादत पर कमर अब बांध लो
फ़ैज़ ले लो जल्द येह दिन तीस[30] का मेहमान है

आ़सियों की मग़्फ़िरत का ले कर आया है पयाम
झूम जाओ मुजरिमो ! र-मज़ां महे ग़ुफ़रान[1] है

भाइयो बहनो ! करो सब नेकियों पर नेकियां
पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है

भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो
ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है

कम हुवा ज़ोरे गुनह और मस्जिदें आबाद हैं
माहे र-मज़ानुल मुबारक का येह सब फ़ैज़ान है

रोज़ादारो ! झूम जाओ क्यूं कि दीदारे ख़ुदा
ख़ुल्द में होगा तुम्हें येह वा'दए रह़मान है

दो[2] जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को
जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

या इलाही ! तू मदीने में कभी र-मज़ां दिखा
मुद्दतों से दिल में येह अ़त्तार के अरमान है (वसाइले बख़्शिश, स. 705)

---

1 : मग़्फ़िरत, बख़्शिश, मग़्फ़िरत करना

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ज़ाइले र-मज़ान शरीफ़

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप हिम्मत कर के फ़ैज़ाने र-मज़ान (हर साल शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें **माहे र-मज़ान** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया। माहे र-मज़ान के फ़ैज़ान के क्या कहने ! इस की तो हर घड़ी रह़मत भरी है, **र-मज़ानुल मुबारक** में हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। (मिरआत, जि. 3, स. 137) नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना कर दिया जाता है, अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते रोज़ादारों की दुआ़ पर आमीन कहते हैं और फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुताबिक़ : **"र-मज़ान के रोज़ादार के लिये मछलियां इफ़्तार तक दुआ़ए मग़्फ़िरत करती रहती हैं।"** (اَلتَّرغیب والتَّرھیب ج ۲ ص ٥٥ حدیث ٦)

इ़बादत का दरवाज़ा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "रोज़ा इ़बादत का दरवाज़ा है।" (اَلْجامِعُ الصَّغیر ص١٤٦ حدیث٢٤١٥)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

नुज़ूले कुरआन : **इस** माहे मुबारक की एक खुसूसिय्यत येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस में कुरआने पाक नाज़िल फ़रमाया है। चुनान्चे पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** आयत 185 में मुक़द्दस कुरआन में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ٘ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ(۱۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : र-मज़ान का महीना, जिस में कुरआन उतरा, लोगों के लिये हिदायत और रहनुमाई और फ़ैसले की रोशन बातें, तो तुम में जो कोई येह महीना पाए ज़रूर इस के रोज़े रखे और जो बीमार या सफ़र में हो, तो उतने रोज़े और दिनों में। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस लिये कि तुम गिनती पूरी करो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत की और कहीं तुम ह़क़ गुज़ार हो।

महीनों के नाम की वज्ह : **र-मज़ान,** येह ''रम्ज़ुन'' से बना जिस के मा'ना हैं : ''गरमी से जलना।'' क्यूं कि जब महीनों के नाम क़दीम अ़-रबों की ज़बान से नक़्ल किये गए तो उस वक़्त जिस क़िस्म का मौसिम था उस के मुत़ाबिक़ महीनों के नाम रख दिये गए इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त र-मज़ान सख़्त गर्मियों में आया था इसी लिये येह नाम रख दिया गया। (اَلنِّهَايَة لِابْنِ الْاَثِير ٢ ص ٢٤٠)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : बा'ज़ मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने फ़रमाया कि जब महीनों के नाम रखे गए तो जिस मौसिम में जो महीना था उसी से उस का नाम हुवा। जो महीना गरमी में था उसे **र-मज़ान** कह दिया गया और जो मौसिमे बहार में था उसे **रबीउ़ल अव्वल** और जो सर्दी में था जब पानी जम रहा था उसे **जुमादल ऊला** कहा गया।

(तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 205)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सुर्ख़ याक़ूत का घर : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जब माहे र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक बन्द नहीं होते। जो कोई बन्दा इस माहे मुबारक की किसी भी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ (या'नी बदले में) उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में **सुर्ख़ याक़ूत का घर** बनाता है। पस जो कोई माहे र-मज़ान का **पहला रोज़ा** रखता है तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, और उस के लिये सुब्ह़ से शाम तक 70 **हज़ार फ़िरिश्ते** दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं। रात और दिन में जब भी वोह **सज्दा** करता है उस के हर सज्दे के बदले उसे (जन्नत में) एक एक ऐसा दरख़्त अ़त़ा किया जाता है कि उस के साए में (घोड़े) सुवार **पांच सो बरस** तक चलता रहे।" (شُعَبُ الایمان ج۳ ص ۳۱۴ حدیث ۳۶۳۵ مُلَخَّصاً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाबीना भान्जी बीना हो गई (म-दनी बहार) : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ह़ासिल होने की सूरत में **माहे र-मज़ानुल मुबारक** की ब-र-कतें लूटने का बहुत ज़ेह्न बनता है वरना बुरी सोह़बतों में रह कर इस मुबारक महीने में भी अक्सर लोग गुनाहों में पड़े रहते हैं। आइये ! गुनाहों की दलदल में धंसे हुए एक **फ़नकार** की "म-दनी बहार" सुनिये जिसे दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** ने रह़मते इलाही से म-दनी रंग चढ़ा दिया और उस की नाबीना भान्जी को बीना बना दिया ! चुनान्चे ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई **फ़नकार** थे, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़न्कशन्ज़ के अन्दर ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न गुनाहों का एह़सास। सह़राए मदीना बाबुल मदीना

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

कराची में बाबुल इस्लाम सत़्ह़ पर होने वाले **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (1424 सि.हि. 2003 सि.ई.) में ह़ाज़िरी के लिये एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के तरग़ीब दिलाई । ज़हे नसीब ! उन्हें उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई । तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** में उन्हें अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, वोह अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सके और फूट फूट कर रोने लगे, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माह़ोल मिल गया और उन्हों ने रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों से **तौबा** कर ली और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया । ब तारीख़ 25 दिसम्बर 2004 ई. **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवानगी के वक़्त उन्हें छोटी बहन का फ़ोन आया, उन्हों ने भर्राई हुई आवाज़ में अपने यहां होने वाली **नाबीना बच्ची** की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा : डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रोशन नहीं हो सकतीं । इतना कहने के बा'द बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी । उन इस्लामी भाई ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में दुआ़ करूंगा । उन्हों ने म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी दुआ़एं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले **आ़शिक़ाने रसूल** से भी दुआ़एं करवाईं । जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटे तो दूसरे ही दिन छोटी बहन ने फ़ोन पर ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनाई कि اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रोशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था !** اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हें बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की ह़ैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें भी ह़ासिल हुईं ।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र — रोशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो
आप को चारागर, ने गो मायूस कर — भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आ कर मुआ़-शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों की म-दनी बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की मशक़्क़त भी राह़त में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153)

पांच ख़ुसूसी करम : **ह़ज़रते** सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रह़मते आ़-लमिय्यान, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "मेरी उम्मत को माहे र-मज़ान में **पांच चीज़ें** ऐसी अ़त़ा की गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को न मिलीं : ﴾1﴿ जब **र-मज़ानुल मुबारक** की पहली रात होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे कभी भी अ़ज़ाब न देगा ﴾2﴿ शाम के वक़्त इन के मुंह की बू (जो भूक की वज्ह से होती है) **अल्लाह तआ़ला** के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी बेहतर है ﴾3﴿ फ़िरिश्ते हर रात और दिन इन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़एं करते रहते हैं ﴾4﴿ **अल्लाह तआ़ला** जन्नत को हुक्म फ़रमाता है : "मेरे (नेक) बन्दों के लिये मुज़य्यन (या'नी आरास्ता) हो जा अ़न्क़रीब वोह दुन्या की मशक़्क़त से मेरे घर और करम में राह़त पाएंगे" ﴾5﴿ जब माहे र-मज़ान की आख़िरी रात आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है। क़ौम में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वोह **लय-लतुल क़द्र** है ?" इर्शाद फ़रमाया : नहीं, क्या तुम नहीं देखते कि मज़दूर जब अपने कामों से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो उन्हें उजरत दी जाती है।"

(شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۰۳حدیث۳۶۰۳)

www.dawateislami.net

सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : "पांचों नमाज़ें और जुमुआ अगले जुमुआ तक और माहे र-मज़ान अगले माहे र-मज़ान तक गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब तक कि कबीरा गुनाहों से बचा जाए।" (مسلم ص١٤٤ حديث٢٣٣)

काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : "अगर बन्दों को मा'लूम होता कि र-मज़ान क्या है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि काश ! पूरा साल र-मज़ान ही हो।" (ابنِ خُزَيمه ج٣ص١٩٠ حديث١٨٨٦)

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बयाने जन्नत निशान : हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "महबूबे रहमान, सरवरे ज़ीशान, रहमते आ-लमिय्यान, मक्की म-दनी सुल्तान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन बयान फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ-ज़मत वाला ब-र-कत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात (ऐसी भी है जो) हज़ार महीनों से बेहतर है, इस (माहे मुबारक) के रोज़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम[1] ततव्वोअ़ (या'नी सुन्नत) है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस में जिस ने **फ़र्ज़** अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में **70** **फ़र्ज़** अदा किये। येह महीना **सब्र** का है और **सब्र** का सवाब जन्नत है और येह महीना मुआसात (या'नी ग़म ख़्वारी और भलाई) का है और इस महीने में मोमिन का **रिज़्क़** बढ़ाया जाता है। जो इस में रोज़ादार को **इफ़्तार** कराए उस के गुनाहों के लिये **मग़्फ़िरत** है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और इस इफ़्तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा, बिग़ैर इस के कि उस के अज्र में कुछ कमी हो।" हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्तार करवाए। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

1 : यहां क़ियाम से मुराद तरावीह है।

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह तआ़ला** येह सवाब तो उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खजूर या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए और जिस ने रोज़ादार को पेट भर कर खिलाया, उस को **अल्लाह तआ़ला** मेरे हौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा, यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का **अव्वल** (या'नी इब्तिदाई दस दिन) **रह़मत** है और इस का **औसत़** (या'नी दरमियानी दस दिन) **मग़्फ़िरत** है और **आख़िर** (या'नी आख़िरी दस दिन) **जहन्नम से आज़ादी** है। जो अपने ग़ुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे (या'नी काम कम ले) **अल्लाह तआ़ला** उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा। इस महीने में चार बातों की कसरत करो, उन में से दो ऐसी हैं जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे और बक़िय्या दो से तुम्हें बे नियाज़ी नहीं। पस वोह दो बातें जिन के ज़रीए़ तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करोगे वोह येह हैं : ﴾1﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ की गवाही देना ﴾2﴿ इस्तिग़्फ़ार करना। जब कि वोह दो बातें जिन से तुम्हें ग़ना (या'नी बे नियाज़ी) नहीं वोह येह हैं : (1) **अल्लाह तआ़ला** से जन्नत त़लब करना (2) जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करना।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۳۰۵ حدیث۳۶۰۸، ابنِ خُزَیمه ج ۳ ص ۱۹۲ حدیث۱۸۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो ह़दीसे पाक बयान की गई उस में माहे **र-मज़ानुल मुबारक** की रह़मतों, ब-र-कतों और अ़-ज़-मतों का ख़ूब ख़ूब तज़्किरा है। इस माहे मुबारक में **कलिमा** शरीफ़ ज़ियादा ता'दाद में पढ़ कर और बार बार **इस्तिग़्फ़ार** या'नी ख़ूब तौबा के ज़रीए़ **अल्लाह तआ़ला** को राज़ी करने की सई (कोशिश) करनी है और **अल्लाह तआ़ला** से जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से पनाह की बहुत ज़ियादा इल्तिजाएं करनी हैं।

र-मज़ानुल मुबारक के चार नाम : अल्लाहु अक्बर عَزَّوَجَلَّ **!** माहे र-मज़ान का भी क्या ख़ूब फ़ैज़ान है ! **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **तफ़्सीरे नईमी** में फ़रमाते हैं : "इस माहे मुबारक के कुल चार नाम हैं ﴾1﴿ **माहे र-मज़ान** ﴾2﴿ **माहे सब्र** ﴾3﴿ **माहे मुआसात** और ﴾4﴿ **माहे वुस्अ़ते रिज़्क़**।" **मजीद** फ़रमाते हैं : "रोज़ा **सब्र**

www.dawateislami.net

है जिस की जज़ा रब عَزَّوَجَلَّ है और वोह इसी महीने में रखा जाता है। इस लिये इसे **माहे सब्र** कहते हैं। **मुआसात** के मा'ना हैं भलाई करना। चूंकि इस महीने में सारे मुसल्मानों से ख़ास कर अहले क़राबत (या'नी रिश्तेदारों) से भलाई करना ज़ियादा सवाब है इस लिये इसे **माहे मुआसात** कहते हैं इस में रिज़्क़ की फ़राख़ी (या'नी ज़ियादती) भी होती है कि ग़रीब भी ने'मतें खा लेते हैं, इसी लिये इस का नाम माहे वुस्अ़ते रिज़्क़ भी है।" (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

"माहे र-मज़ान मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से 13 म-दनी फूल

(येह तमाम म-दनी फूल तफ़्सीरे नईमी जिल्द 2 से लिये गए हैं)

1. **का'बए** मुअ़ज़्ज़मा मुसल्मानों को बुला कर देता है और येह आ कर **रहमतें** बांटता है। गोया वोह (या'नी का'बा) कूंवां है और येह (या'नी र-मज़ान शरीफ़) दरिया, या वोह (या'नी का'बा) दरिया है और येह (या'नी र-मज़ान) बारिश।
2. **हर** महीने में ख़ास तारीख़ें और तारीख़ों में भी ख़ास वक़्त में इबादत होती है, म-सलन बक़र ईद की चन्द (मख़्सूस) तारीख़ों में **हज**, मुहर्रम की दसवीं तारीख़ अफ़्ज़ल, मगर **माहे र-मज़ान** में हर दिन और हर वक़्त इबादत होती है। रोज़ा इबादत, इफ़्तार इबादत, इफ़्तार के बा'द तरावीह का इन्तिज़ार इबादत, तरावीह पढ़ कर स-हरी के इन्तिज़ार में सोना इबादत, फिर स-हरी खाना भी इबादत, अल ग़रज़ हर आन में ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की शान नज़र आती है।
3. **र-मज़ान** एक भट्टी है जैसे कि भट्टी गन्दे लोहे को साफ़ और साफ़ लोहे को मशीन का पुर्ज़ा बना कर क़ीमती कर देती है और सोने को ज़ेवर बना कर इस्ति'माल के लाइक़ कर देती है, ऐसे ही **माहे र-मज़ान** गुनहगारों को पाक करता और नेक लोगों के द-रजे बढ़ाता है।
4. **र-मज़ान** में नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब 70 गुना मिलता है।
5. **बा'ज़** उ-लमा फ़रमाते हैं कि जो र-मज़ान में मर जाए उस से सुवालाते क़ब्र भी नहीं होते।

www.dawateislami.net

《6》 **इस** महीने में शबे क़द्र है, गुज़श्ता आयत (या'नी पारह 2 सू-रतुल ब-क़रह आयत 185) से मा'लूम हुवा कि क़ुरआन र-मज़ान में आया और दूसरी जगह फ़रमाया :

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ۝۱ (پ۳۰، القدر:۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

दोनों आयतों के मिलाने से मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र र-मज़ान में ही है और वोह ग़ालिबन सत्ताईसवीं शब है, क्यूं कि **लय-लतुल क़द्र** (لَيْلَةُ الْقَدْر) में नव हुरूफ़ हैं और येह लफ़्ज़ सूरए क़द्र में तीन बार आया। जिस से **सत्ताईस** हासिल हुए मा'लूम हुवा कि वोह सत्ताईसवीं शब है।

《7》 **र-मज़ान** में दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं जन्नत आरास्ता की जाती है, इस के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। इसी लिये इन दिनों में नेकियों की ज़ियादती और गुनाहों की कमी होती है जो लोग गुनाह करते भी है वोह नफ़्से अम्मारा या अपने साथी शैतान (हमज़ाद) के बहकाने से करते हैं।

《8》 **र-मज़ान** के खाने पीने का हिसाब नहीं। (या'नी स-ह़रो इफ़्तार के खाने पीने का)

《9》 **क़ियामत** में र-मज़ान व क़ुरआन रोज़ादार की शफ़ाअ़त करेंगे कि **र-मज़ान** तो कहेगा : मौला (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे दिन में खाने पीने से रोका था और **क़ुरआन** अ़र्ज़ करेगा कि या रब (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे रात में तिलावत व तरावीह़ के ज़रीए़ सोने से रोका।

《10》 **हुज़ूर** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **र-मज़ानुल मुबारक** में हर क़ैदी को छोड़ देते थे और हर साइल को अ़ता फ़रमाते थे, रब عَزَّوَجَلَّ भी र-मज़ान में जहन्नमियों को छोड़ता है, लिहाज़ा चाहिये कि र-मज़ान में नेक काम किये जाएं और गुनाहों से बचा जाए।

《11》 **क़ुरआने** करीम में सिर्फ़ र-मज़ान शरीफ़ ही का नाम लिया गया और इसी के फ़ज़ाइल बयान हुए, किसी दूसरे महीने का न सरा-हतन नाम है न ऐसे फ़ज़ाइल। महीनों में सिर्फ़

www.dawateislami.net

माहे र-मज़ान का नाम क़ुरआन शरीफ़ में लिया गया । औरतों में सिर्फ़ **बीबी मरयम** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنها का नाम क़ुरआन में आया । सहाबा में सिर्फ़ ह़ज़रते (सय्यिदुना) **ज़ैद इब्ने ह़ारिसा** (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) का नाम क़ुरआन में लिया गया जिस से इन तीनों की अ़-ज़मत मा'लूम हुई ।

﴾12﴿ **र-मज़ान** शरीफ़ में इफ़्त़ार और स-ह़री के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है या'नी इफ़्त़ार करते वक़्त और स-ह़री खा कर । येह मर्तबा किसी और महीने को ह़ासिल नहीं ।

﴾13﴿ **र-मज़ान** में पांच हुरूफ़ हैं : ر،م،ض،ا،ن । ر से मुराद रह़मते इलाही, م से मुराद मह़ब्बते इलाही, ض से मुराद ज़माने इलाही, اَلِف से अमाने इलाही, ن से नूरे इलाही । और **र-मज़ान** में पांच इ़बादात ख़ुसूसी होती हैं : रोज़ा, तरावीह़, तिलावते क़ुरआन, ए'तिकाफ़, शबे क़द्र में इ़बादात । तो जो कोई सिद्क़े दिल से येह **पांच इ़बादात** करे वोह उन **पांच इन्आ़मों** का मुस्तह़िक़ है । (तफ़्सीरे नईमी, जि. 2, स. 208)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत सजाई जाती है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : बेशक **जन्नत** साल के शुरूअ़ से अगले साल तक **र-मज़ानुल मुबारक** के लिये सजाई जाती है । और फ़रमाया : र-मज़ान शरीफ़ के पहले दिन जन्नत के दरख़्तों के पत्तों से बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरों पर हवा चलती है और वोह अ़र्ज़ करती हैं : "ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! अपने बन्दों में से ऐसे बन्दों को हमारा शोहर बना जिन को देख कर हमारी आंखें ठन्डी हों और जब वोह हमें देखें तो उन की आंखें भी ठन्डी हों ।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۱۲حدیث۳۶۳۳)

जन्नत कौन सजाता है ? : **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस हिस्से : "बेशक जन्नत साल के शुरूअ़ से अगले साल तक

www.dawateislami.net

र-मज़ान के लिये सजाई जाती है" के तहत मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 142 ता 143 पर फ़रमाते हैं : या'नी ईदुल फ़ित्र का चांद नज़र आते ही, अगले र-मज़ान के लिये जन्नत की आरास्तगी (या'नी सजावट) शुरूअ़ हो जाती है और साल भर तक फ़रिश्ते इसे सजाते रहते हैं जन्नत ख़ुद सजी सजाई फिर और भी ज़ियादा सजाई जाए, फिर सजाने वाले फ़रिश्ते हों, तो कैसी सजाई जाती होगी, इस की सजावट हमारे वहमो गुमान से वरा है, बा'ज़ मुसलमान र-मज़ान में मस्जिदें सजाते हैं, वहां क़-ल-ई चूना करते हैं, झन्डियां लगाते, रोशनी करते हैं इन की अस्ल येह ही ह़दीस है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! जन्नत की अ़-ज़मत की तो क्या ही बात है ! काश ! हमें बे ह़िसाब बख़्श दिया जाए और जन्नतुल फ़िरदौस में मदीने वाले आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** अहले ह़क़ की म-दनी तह़रीक है, इस से हर दम वाबस्ता रहिये, **दा'वते इस्लामी** वालों पर कैसी कैसी करम नवाज़िशें होती हैं इस की एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

जन्नत में आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस की बिशारत : इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुफ़्त दर्से निज़ामी करवाने के लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम मु-तअ़द्दिद जामिआ़त बनाम **जामिअ़तुल मदीना** क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 1427 सि.हि. में दा'वते इस्लामी के इन जामिआ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) के तक़रीबन 160 त़-ल-बए किराम ने हाथों हाथ 12 माह के लिये **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र इख़्तियार किया। इब्तिदाअन **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** करवाने की तरकीब बनी, इस दौरान त़-लबा के जज़्बए ख़िदमते इस्लाम को मज़ीद **मदीने के 12 चांद** लग गए और उन में से तक़रीबन 77 त़-ल-बए किराम ने उ़म्र भर के लिये अपने आप को म-दनी क़ाफ़िलों के लिये पेश कर दिया ! इस अ़ज़ीम

www.dawateislami.net

क़ुरबानी पर हौसला अफ़्ज़ाई की बड़ी ज़बर दस्त सूरत बनी और वोह येह कि ख़्वाब में **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीदार से एक **आ़शिक़े रसूल** की आंखें ठन्डी हुईं, लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई, रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "**जिस जिस ने अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दिया है मैं उन को जन्नत के अन्दर अपने साथ रखूंगा ।**" ख़्वाब देखने वाले आ़शिक़े रसूल के दिल में ह़सरत हुई कि काश ! सद करोड़ काश ! मुझे भी इन ख़ुश नसीबों में शामिल कर लिया जाता । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे दिल की बात जान ली और फ़रमाया : "अगर तुम भी इन में शामिल होना चाहते हो तो अपने आप को उ़म्र भर के लिये पेश कर दो ।"

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
म-लकूतो मुल्क में कोई शै, नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल को बिशारते उ़ज़्मा मुबारक हो ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर नज़र रखते हुए क़वी उम्मीद है कि जिन बख़्त-वरों के लिये येह **म-दनी ख़्वाब** देखा गया है اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उन का ख़ातिमा ईमान पर होगा और वोह म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल जन्नतुल फ़िरदौस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाएंगे । ताहम येह याद रहे ! कि ग़ैरे नबी जो ख़्वाब देखे वोह शरअ़न हुज्जत (या'नी दलील) नहीं होता, ख़्वाब की बिशारत की बुन्याद पर किसी को यक़ीनी त़ौर पर जन्नती नहीं कहा जा सकता ।

इज़्न से तेरे सरे ह़श्र कहें काश ! हुज़ूर
साथ अ़त्तार को जन्नत में रखूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 86)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

हर शब साठ हज़ार की बख़्शिश : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि शहन्शाहे ज़ीशान, मक्की म-दनी सुल्तान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "**र-मज़ान शरीफ़** की हर शब आस्मानों में सुब्ह़े सादिक़ तक एक मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला फ़िरिश्ता) येह निदा (ए'लान) करता है : **ऐ भलाई त़लब करने वाले !** इरादा पुख़्ता कर ले और ख़ुश हो जा, और **ऐ बुराई का इरादा रखने वाले !** बुराई से बाज़ आ जा। **है कोई मग़्फ़िरत का त़लब गार !** कि उस की त़लब पूरी की जाए। **है कोई तौबा करने वाला !** कि उस की तौबा क़बूल की जाए। **है कोई दुआ़ मांगने वाला !** कि उस की दुआ़ क़बूल की जाए। **है कोई साइल !** कि उस का सुवाल पूरा किया जाए। **अल्लाह तआ़ला र-मज़ानुल मुबारक की हर शब में इफ़्त़ार के वक़्त साठ हज़ार गुनाहगारों को दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है, और ईद के दिन सारे महीने के बराबर गुनाहगारों की बख़्शिश की जाती है।**"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۰۴حدیث۳۶۰۶)

मदीने के दीवानो ! र-मज़ानुल मुबारक की जल्वा गरी तो क्या होती है, हम ग़रीबों के वारे न्यारे हो जाते हैं। **अल्लाह तआ़ला** के फ़ज़्लो करम से **रह़मत** के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और ख़ूब **मग़्फ़िरत** के परवाने तक़्सीम होते हैं। काश ! हम गुनहगारों को ब तुफ़ैले **माहे र-मज़ान**, सरवरे कौनो मकान, मक्की म-दनी सुल्तान, रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم के रह़मत भरे हाथों जहन्नम से रिहाई का परवाना मिल जाए। इमामे अहले सुन्नत رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ बारगाहे रिसालत صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم में अ़र्ज़ करते हैं :

तमन्ना है फ़रमाइये रोज़े मह़शर *येह तेरी रिहाई की चिठ्ठी मिली है*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 188)

रोज़ाना दस लाख की दोज़ख़ से रिहाई : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब र-मज़ान की पहली रात होती है तो **अल्लाह तआ़ला**

www.dawateislami.net

अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा और **हर रोज़ दस लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये उन के मज्मूए़ के बराबर उस एक रात में आज़ाद फ़रमाता है**। फिर जब ईदुल फ़ित्र की रात आती है, मलाएका ख़ुशी करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़िरिश्तों से फ़रमाता है : **"ऐ गुरौहे मलाएका !** उस मज़दूर का क्या बदला है जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : "उस को पूरा पूरा अज्र दिया जाए।" **अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है : "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने इन सब को बख़्श दिया।"

(جَمْعُ الْجَوامِع ج ١ ص ٣٤٥ حديث ٢٠٣٦)

जुमुआ़ की हर हर घड़ी में दस लाख की मग़्फ़िरत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, सय्यिदुल अम्बियाए वल मुर-सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ माहे र-मज़ान में रोज़ाना इफ़्त़ार के वक़्त दस लाख ऐसे गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर गुनाहों की वज्ह से जहन्नम वाजिब हो चुका था, नीज़ शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुम्अ़रात को गुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ को गुरूबे आफ़्ताब तक) की **हर हर घड़ी में ऐसे दस दस लाख गुनहगारों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है जो अ़ज़ाब के ह़क़दार क़रार दिये जा चुके होते हैं।"**

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج ٣ ص ٣٢٠ حديث ٤٩٦٠)

आ़शिक़ाने र-मज़ान ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मो इक्राम का ज़िक्र है। ऐ काश ! **अल्लाह तआ़ला** हम गुनहगारों को भी मग़्फ़िरत याफ़्तगान में शामिल कर ले। اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तूने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़र्च में कुशा-दगी करो : **हज़रते** सय्यिदुना ज़मुरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रह़मते आ-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "माहे र-मज़ान में (घर वालों के) ख़र्च में कुशा-दगी करो क्यूं कि माहे र-मज़ान में ख़र्च करना **अल्लाह तआला** की राह में ख़र्च करने की त़रह़ है।" (فضائل شھر رمضان مع موسوعۃ ابن اَبِی الدُّنیا ج۱ ص۳۶۸ حدیث۲۴)

भलाई ही भलाई : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते : "उस महीने को ख़ुश आ-मदीद जो हमें पाक करने वाला है। पूरा **र-मज़ान** ख़ैर ही ख़ैर (या'नी भलाई ही भलाई) है दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम, इस महीने में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने का द-रजा रखता है।" (تَنْبِیْہُ الْغَافِلِیْن ص ۱۷۷)

बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब र-मज़ान शरीफ़ की पहली रात आती है तो अ़र्शे अ़ज़ीम के नीचे से मसीरा नामी हवा चलती है जो जन्नत के दरख़्तों के पत्तों को हिलाती है, इस हवा के चलने से ऐसी दिलकश आवाज़ बुलन्द होती है कि इस से बेहतर आवाज़ आज तक किसी ने नहीं सुनी। इस आवाज़ को सुन कर **बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें** ज़ाहिर होती हैं यहां तक कि जन्नत के बुलन्द मह़ल्लात पर खड़ी हो जाती हैं और कहती हैं : "है कोई जो हम को **अल्लाह तआला** से मांग ले कि हमारा निकाह़ उस से हो ?" फिर वोह हूरें दारोग़ए जन्नत (ह़ज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) से पूछती हैं : "आज येह कैसी रात है ?" (ह़ज़रते) रिज़्वान (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) जवाबन तल्बिया (या'नी लब्बैक) कहते हैं, फिर कहते हैं : "येह माहे र-मज़ान की पहली रात है, जन्नत के दरवाज़े **उम्मते मुह़म्मद** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रोज़ेदारों के लिये खोल दिये गए हैं।" (اَلتَّرغیب والتَّرھیب ج ۲ ص ۶۰ حدیث ۲۳)

दो अंधेरे दूर : **मन्क़ूल** है कि **अल्लाह तआला** ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : मैं ने **उम्मते मुह़म्मद** (عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) को **दो नूर** अ़ता

www.dawateislami.net

किये हैं ताकि वोह **दो अंधेरों** के ज़रर (या'नी नुक़्सान) से मह़फ़ूज़ रहें। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! वोह **दो नूर** कौन कौन से हैं ? इर्शाद हुवा : "**नूरे र-मज़ान** और **नूरे क़ुरआन**।" ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : **दो अंधेरे** कौन कौन से हैं ? फ़रमाया : "**एक क़ब्र का और दूसरा क़ियामत का।**" (دُرَّۃُ النّاصِحِین ص۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

र-मज़ान व क़ुरआन शफ़ाअ़त करेंगे : **मदीने** के सुल्तान, सरदारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : रोज़ा और क़ुरआन बन्दे के लिये क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेंगे। **रोज़ा** अ़र्ज़ करेगा : "**ऐ रब्बे करीम** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा।" **क़ुरआन** कहेगा : "मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के लिये क़बूल कर।" पस दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी।

(مُسند امام احمد ج۲ص۵۸۶حدیث۶۶۳۷)

लाख र-मज़ान का सवाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश गवार है : "जिस ने मक्कए मुकर्रमा में माहे र-मज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के लिये और जगह के एक लाख र-मज़ान का सवाब लिखेगा** और हर दिन एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रात एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जिहाद में घोड़े पर सुवार कर देने का सवाब और हर दिन में नेकी और हर रात में नेकी लिखेगा।"

(ابنِ ماجه ج۳ص۵۲۳حدیث۳۱۱۷)

काश ! ईद मदीने में हो ! : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनाहों के मरीज़ों के त़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दियारे विलादत **मक्कए**

www.dawateislami.net

मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا है। **अल्लाह तआला** ने अपने हबीबे मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके में गुलामाने मुस्तफ़ा पर किस क़दर लुत्फ़ो करम फ़रमाया है ! ऐ काश ! हमें भी **मक्कए मुकर्रमा** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में **माहे र-मज़ान** गुज़ारने की अज़ीम सआदत नसीब हो जाए और उस में खूब इबादत की भी तौफ़ीक़ मिले और फिर **माहे र-मज़ान** गुज़ार कर फ़ौरन ही **ईद** मनाने के लिये अपने मीठे मीठे आक़ा मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए ज़ियाबार पर हाज़िर हो जाएं और वहां पर रो रो कर "ईदी" की भीक मांगें और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के मकीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रहमत जोश पर आ जाए और ऐ काश ! सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर-बार से हम गुनहगार बतौरे "ईदी" बे हिसाब मग्फ़िरत की बिशारत पाने की सआदत पा लें।

या नबी ! अत्तार को जन्नत में दे अपना जवार
वासिता सिद्दीक़ का जो तेरा यारे ग़ार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 480)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इबादत पर कमर बस्ता हो जाते :

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब **माहे र-मज़ान** आता तो शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बीस दिन नमाज़ और नींद को मिलाते थे पस जब आखिरी अशरह होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये कमर बस्ता हो जाते।

(مسند امام احمد ج۹ ص۳۳۸ حدیث ۲۴۴۴۴)

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم र-मज़ान में खूब दुआएं मांगते थे :

एक और रिवायत में फ़रमाती हैं : जब माहे र-मज़ान तशरीफ़ लाता तो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मु-तग़य्यर (या'नी तब्दील) हो जाता और **नमाज़** की

कसरत फ़रमाते और **ख़ूब दुआएं मांगते।** (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص ۳۱۰حدیث ۳۶۲۵)

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान में ख़ूब ख़ैरात करते : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "जब **माहे र-मज़ान** आता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर क़ैदी को रिहा कर देते और **हर साइल को अ़ता फ़रमाते।"** (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص ۳۱۱حدیث۳۶۲۹)

क्या आक़ा की ह़याते ज़ाहिरी के दौर में क़ैदी होते थे ? : **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان बयान कर्दा ह़दीसे पाक के ह़िस्से : "हर क़ैदी को रिहा कर देते" के तह़्त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 142 पर फ़रमाते हैं : ह़क़ येह है कि यहां क़ैदी से मुराद वोह शख़्स है जो **ह़क़्क़ुल्लाह** या **ह़क़्क़ुल अ़ब्द** (या'नी बन्दे के ह़क़) में गिरिफ़्तार हो और आज़ाद फ़रमाने से उस के ह़क़ अदा कर देना या करा देना मुराद है।

सब से बढ़ कर सख़ी : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "**रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में **सब से बढ़ कर सख़ी थे** और **र-मज़ान शरीफ़** में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ख़ुसूसन) बहुत ज़ियादा सख़ावत फ़रमाते थे। जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **र-मज़ानुल मुबारक** की हर रात में मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर होते और रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم उन के साथ क़ुरआने अ़ज़ीम का दौर फ़रमाते। जब भी ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तेज़ चलने वाली हवा से भी ज़ियादा ख़ैर (या'नी भलाई) के मुआ-मले में **सख़ावत** फ़रमाते।" (بُخاری ج ۱ ص ۹ حدیث ۶)

हाथ उठा कर एक टुकड़ा ऐ करीम ! हैं सख़ी के माल में ह़क़दार हम

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 83)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हज़ार गुना सवाब : **हज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : "**माहे र-मज़ान** में एक दिन का **रोज़ा** रखना एक हज़ार दिन के रोज़ों से अफ़्ज़ल है और **माहे र-मज़ान** में एक मर्तबा तस्बीह़ करना (سُبْحٰنَ الله कहना) इस माह के इलावा एक हज़ार मर्तबा तस्बीह़ करने (سُبْحٰنَ الله कहने) से अफ़्ज़ल है और **माहे र-मज़ान** में एक **रक्अ़त** पढ़ना ग़ैरे र-मज़ान की एक हज़ार **रक्अ़तों** से अफ़्ज़ल है।" (تفسیرِدُرِّ مَنثُور ج١ص٤٥٤)

र-मज़ान में ज़िक्र की फ़ज़ीलत : **अमीरुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि रसूले अन्वर, मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : र-मज़ान में **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करने वाले को बख़्श दिया जाता है और इस महीने में **अल्लाह तआ़ला** से मांगने वाला मह़रूम नहीं रहता। (شُعَبُ الْایمان ج٣ص ٣١١ حدیث ٣٦٢٧)

सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ और ज़िक्रुल्लाह : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वोह लोग कितने खु़श नसीब हैं जो इस माहे मुबारक में खु़सूसिय्यत के साथ **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का **सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही पर मुश्तमिल होता है क्यूं कि तिलावत, ना'त शरीफ़, सुन्नतों भरा बयान, दुआ़ और सलातो सलाम वग़ैरा सब **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में दाख़िल हैं। दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ की ब-रकात की एक "म-दनी बहार" मुला-ह़ज़ा हो, चुनान्चे

छ[6] बेटियों के बा'द औलादे नरीना : **मर्कज़ुल** औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई की म-दनी बहार अ़र्ज़ करता हूं : ग़ालिबन 2003 सि.ई. की बात है, एक इस्लामी भाई ने उन्हें तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान) में शिर्कत

www.dawateislami.net

की दा'वत इनायत फ़रमाई। उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं छ[6] बेटियों का बाप हूं, मेरे घर में फिर विलादत मु-तवक़्क़अ़ है, दुआ़ फ़रमाइये कि अब की बार **नरीना औलाद** हो। उस इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए फ़रमाया : ह़ज के बा'द ता'दाद के लिहाज़ से **आ़शिक़ाने रसूल** के सब से बड़े इज्तिमाअ़ (मुलतान शरीफ़) में आ कर दुआ़ मांगिये न जाने किस के सदक़े में बेड़ा पार हो जाए। उस की बात उन के दिल को लग गई और वोह **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (मुलतान शरीफ़) में ह़ाज़िर हो गए। वहां के रूह़ परवर मनाज़िर का बयान करने के लिये उन के पास अल्फ़ाज़ नहीं थे, उन्हें ज़िन्दगी में पहली बार एक ज़बर दस्त रूह़ानी सुकून नसीब हुवा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाअ़ के चन्द ही रोज़ के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें **चांद सा म-दनी मुन्ना** अ़ता फ़रमाया, घर वालों की ख़ुशी बयान से बाहर थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें मज़ीद एक और **म-दनी मुन्ने** से भी नवाज़ दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** की ह़ैसिय्यत से ख़िदमत की सआ़दत भी मिली।

40 नेक मुसल्मानों के मज्मअ़ में एक वली होता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** और सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन **आ़शिक़ाने रसूल** में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى होते होंगे। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जमाअ़त में ब-र-कत है और दुआ़ए मज्मए मुस्लिमीन अक़रब ब क़बूल। (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) उ-लमा फ़रमाते हैं : **जहां चालीस मुसल्मान सालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है।**"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 184, فيض القدير ج ١ ص ٤٩٧ زيرِ حديث ٧١٤)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

बेटा मिले, बेटी मिले, कुछ न मिले, हर ह़ाल में शुक्र कीजिये : बिलफ़र्ज़ दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न हो तब भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये। हमारी भलाई किस बात में है इस को यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है। हमें हर ह़ाल में पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये। वोह **बेटा** दे तब भी उस का शुक्र, **बेटी** दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर ह़ाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये। पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** की आयत नम्बर 49 और 50 में इर्शादे बारी तआ़ला है :

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़त़ा फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इल्म व क़ुदरत वाला है।

"**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में आयत नम्बर 50 के इस ह़िस्से (जिसे चाहे बांझ कर दे) के तह़्त है : (या'नी) "कि उस के औलाद ही न हो, वोह (या'नी **अल्लाह तआ़ला**) मालिक है, अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे, जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं, ह़ज़रते लूत़ व ह़ज़रते शुऐ़ब عَلَيْهِمَا السَّلَام के सिर्फ़ **बेटियां** थीं, कोई बेटा न था और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द (या'नी बेटे) थे, कोई दुख़्तर (या'नी बेटी) हुई ही नहीं और सय्यिदे अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह तआ़ला** ने चार फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साह़िब ज़ादियां।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 898)

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद : दा'वते इस्लामी के

www.dawateislami.net

इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत्बूआ़ 48 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले, **"ज़िन्दा बेटी कूंएं में फेंक दी"** सफ़्हा 7 ता 8 पर है : **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चार फ़रज़न्द होने का अगर्चे "ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में ज़िक्र है मगर इस में इख़्तिलाफ़ है, तीन शहज़ादों का भी क़ौल है और दो का भी। चुनान्चे "तज़्कि-रतुल अम्बिया" सफ़्हा 827 पर है : आप (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) के तीन बेटे थे : **क़ासिम, इब्राहीम, अ़ब्दुल्लाह**। ख़याल रहे कि त़य्यिब, मुत़य्यब, त़ाहिर और मुत़ह्हर इन्हीं (या'नी ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) के अल्क़ाब थे, येह कोई अ़ला-ह़दा बेटे नहीं थे। (तज़्कि-रतुल अम्बिया, स. 827) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **"सीरते मुस्त़फ़ा"** सफ़्हा 687 पर लिखते हैं : इस बात पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की औलादे किराम की ता'दाद छ[6] (तो यक़ीनन) है। दो फ़रज़न्द ह़ज़रते **क़ासिम** व ह़ज़रते **इब्राहीम** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) और चार साहि़ब ज़ादियां ह़ज़रते **ज़ैनब** व ह़ज़रते **रुक़य्या** व ह़ज़रते **उम्मे कुल्सूम** व ह़ज़रते **फ़ात़िमा** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ) लेकिन बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने येह बयान फ़रमाया है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के एक साहि़ब ज़ादे **अ़ब्दुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) भी हैं जिन का लक़ब त़य्यिब व त़ाहिर है। इस क़ौल की बिना पर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस औलाद की ता'दाद **सात** है या'नी तीन साहि़ब ज़ादगान और चार साहि़ब ज़ादियां। (सीरते मुस्त़फ़ा, स. 687)

र-मज़ान का दीवाना : मुह़म्मद नामी एक आदमी सारा साल नमाज़ न पढ़ता था। जब **र-मज़ान शरीफ़** का मु-तबर्रक महीना आता तो वोह पाक साफ़ कपड़े पहनता और पांचों वक़्त पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता और साले गुज़श्ता की क़ज़ा नमाज़ें भी अदा करता। लोगों ने उस से पूछा : तू ऐसा क्यूं करता है ? उस ने जवाब दिया : येह महीना रह़मत ब-र-कत, तौबा और मग़्फ़िरत का है, शायद **अल्लाह तआ़ला** मुझे मेरे इसी अ़मल के सबब बख़्श दे। जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ या'नी **अल्लाह तआ़ला**

www.dawateislami.net

ने तेरे साथ क्या मुआ-मला किया ? उस ने जवाब दिया : **"मेरे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझे एह़तिरामे र-मज़ान शरीफ़ बजा लाने के सबब बख़्श दिया।"** (دُرَّةُ النَّاصِحِين ص٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह बे नियाज़ है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ **माहे र-मज़ान** के क़द्रदान पर किस द-रजा मेह्रबान है कि साल के बाक़ी महीने छोड़ कर सिर्फ़ **माहे र-मज़ान** में इबादत करने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा दी। इस ह़िकायत से कहीं कोई येह न समझ बैठे कि अब तो (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) सारा साल नमाज़ों की छुट्टी हो गई !! सिर्फ़ **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़ा नमाज़ कर लिया करेंगे और सीधे जन्नत में चले जाएंगे। **प्यारे इस्लामी भाइयो !** दर अस्ल बख़्शना या अ़ज़ाब करना येह सब कुछ **अल्लाह तआ़ला** की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है, वोह बे नियाज़ है, अगर चाहे तो किसी मुसल्मान को ब ज़ाहिर छोटे से नेक अ़मल पर ही अपने फ़ज़्ल से बख़्श दे और अगर चाहे तो बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद किसी को मह़्ज़ एक छोटे से गुनाह पर अपने अ़द्ल से पकड़ ले। पारह 3 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 284 में इर्शादे रब्बे बे नियाज़ है :

فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ (پ٣،البقرة:٢٨٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे चाहेगा (अपने फ़ज़्ल से अहले ईमान को) बख़्शेगा और जिसे चाहेगा (अपने अ़द्ल से) सज़ा देगा।

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म
देता हूं वासिता़ तुझे शाहे ह़िजाज़ का

तीन के अन्दर तीन पोशीदा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कोई नेकी छोड़नी नहीं चाहिये, न जाने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कौन सी नेकी पसन्द आ जाए और कोई छोटे से छोटा गुनाह करना नहीं चाहिये कि न जाने किस गुनाह पर **अल्लाह तआ़ला** नाराज़ हो जाए और उस का दर्दनाक अ़ज़ाब

www.dawateislami.net

घेर ले। ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, फ़क़ीहे आ'ज़म सय्यिदुना **अबू यूसुफ़ मुहम्मद शरीफ़** मुहद्दिस कोट्लवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखा है, ﴾1﴿ अपनी रिज़ा को अपनी इताअ़त में और ﴾2﴿ अपनी नाराज़ी को अपनी ना फ़रमानी में और ﴾3﴿ अपने औलिया को अपने बन्दों में।" (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّين ص٥١) येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़क़ीहे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الأَكْرَم फ़रमाते हैं : "लिहाज़ा हर ताअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाए और हर बदी से बचना चाहिये क्यूं कि मा'लूम नहीं किस बदी पर वोह नाराज़ हो जाए। ख़्वाह वोह बदी कैसी ही सग़ीर (या'नी छोटी) हो। म-सलन (बिला इजाज़त) किसी के तिन्के का ख़िलाल करना ब ज़ाहिर एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाए की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है मगर मुम्किन है कि इस बुराई में ही हक़ तआ़ला की नाराज़ी मख़्फ़ी (या'नी छुपी हुई) हो तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।" (अख़्लाक़ुस्सालिहीन, स. 60)

कुत्ते को पानी पिलाने वाली बख़्शी गई : रहमत के तलब गारो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शने पर आता है तो ब ज़ाहिर नेकी कितनी ही छोटी हो वोह इसी के सबब करम फ़रमा देता है। जैसा कि **एक औरत को सिर्फ़ इस लिये बख़्श दिया गया कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था।** (بُخاری ج٢ ص٤٠٩ حديث٣٣٢١) एक हदीस में सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान भी मिलता है कि एक शख़्स ने रास्ते में से एक **दरख़्त** को इस लिये हटा दिया ताकि लोगों को इस से ईज़ा न पहुंचे। **अल्लाह तआ़ला** ने ख़ुश हो कर उस की **मग़िफ़रत** फ़रमा दी। (مُسلم ص١٤١٠ حديث١٩١٤) एक सहीह हदीस में **तक़ाज़े** (या'नी क़र्ज़ के मुता-लबे) **में नरमी** करने वाले एक शख़्स की **नजात** हो जाने का वाक़िआ़ भी आया है। (بُخاری ج ٢ ص ١٢ حديث ٢٠٧٨) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रहमत** के वाक़िआ़त जम्अ़ करने जाएं तो इतने हैं कि जम्अ़ करना मुश्किल हो जाए।

www.dawateislami.net

मुज़्दाबाद ऐ आ़सियो ! शाफ़ेअ़ शहे अबरार है

तहनियत ऐ मुजरिमो ! ज़ाते ख़ुदा ग़फ़्फ़ार है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 176)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़ज़ाब से छुटकारे के अस्बाब : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत करने पर आता है तो यूं भी सबब बनाता है कि किसी एक अ़मल को अपनी बारगाह में श-रफ़े क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमा देता है और फिर उसी के बाइ़स उस पर रह़मतों की बारिश कर देता है। लिहाज़ा अब एक ह़दीसे मुबारक पेश की जाती है जिस में मु-तअ़द्दिद ऐसे लोगों का बयान किया गया है कि वोह किसी न किसी नेकी के सबब **अल्लाह तआ़ला** की गिरिफ़्त से बच गए और रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी आग़ोश में ले लिया। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : एक बार ह़ुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया : "आज रात मैं ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा कि

(1) **एक** शख़्स की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये म-लकुल मौत (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) तशरीफ़ लाए लेकिन उस का मां बाप की **इत़ाअ़त** करना सामने आ गया और वोह बच गया।

(2) **एक** शख़्स पर अ़ज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के **वुज़ू** (की नेकी) ने उसे बचा लिया।

(3) **एक** शख़्स को शयात़ीन ने घेर लिया लेकिन **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (करने की नेकी) ने उसे बचा लिया।

(4) **एक** शख़्स को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने घेर लिया लेकिन उसे (उस की) **नमाज़** ने बचा लिया।

(5) **एक** शख़्स को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले हुए था और एक ह़ौज़ पर पानी पीने

www.dawateislami.net

जाता था मगर लौटा दिया जाता था कि इतने में उस के **रोज़े** आ गए (और इस नेकी ने) उस को सैराब कर दिया।

﴾6﴿ **एक** शख़्स को देखा कि जहां अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) ह़ल्क़े बनाए हुए तशरीफ़ फ़रमा थे, वहां उन के पास जाना चाहता था लेकिन धुत्कार दिया जाता था कि इतने में उस का **ग़ुस्ले जनाबत** (करना) आया और (उस नेकी ने) उस को मेरे पास बिठा दिया।

﴾7﴿ **एक** शख़्स को देखा कि उस के आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अंधेरा ही अंधेरा है और वोह उस अंधेरे में ह़ैरान व परेशान है तो उस के **ह़ज व उ़म्रह** आ गए और (इन नेकियों ने) उस को अंधेरे से निकाल कर रोशनी में पहुंचा दिया।

﴾8﴿ **एक** शख़्स को देखा कि वोह मुसल्मानों से गुफ़्त-गू करना चाहता है लेकिन कोई उस को मुंह नहीं लगाता तो **सिलए रेह़्मी** (या'नी रिश्तेदारों से ह़ुस्ने सुलूक करने की नेकी) ने मुअमिनीन से कहा कि तुम इस से बातचीत करो। तो मुसल्मानों ने उस से बात करना शुरूअ़ की।

﴾9﴿ **एक** शख़्स के जिस्म और चेहरे की त़रफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से बचा रहा है तो उस का **स-दक़ा** आ गया और उस के आगे ढाल बन गया और उस के सर पर साया फ़िगन हो गया।

﴾10﴿ **एक** शख़्स को ज़बानिया (या'नी अ़ज़ाब के मख़्सूस फ़िरिश्तों) ने चारों त़रफ़ से घेर लिया लेकिन उस का अम्रुन बिल मा'रूफ़ व नह्युन अ़निल मुन्कर आया (या'नी नेकी का हुक्म करने और बुराई से मन्अ़ करने की नेकी आई) और उस ने उसे बचा लिया और रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिया।

﴾11﴿ **एक** शख़्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है लेकिन उस के और **अल्लाह तआ़ला** के दरमियान ह़िजाब (या'नी पर्दा) है मगर उस का **ह़ुस्ने अख़्लाक़** आया इस (नेकी) ने उस को बचा लिया और **अल्लाह तआ़ला** से मिला दिया।

www.dawateislami.net

《12》 **एक** शख़्स को उस का आ'माल नामा उलटे हाथ में दिया जाने लगा तो उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ आ गया और (इस अ़ज़ीम नेकी की ब-र-कत से) उस का नामए आ'माल सीधे हाथ में दे दिया गया।

《13》 **एक** शख़्स की नेकियों का वज़्न हलका रहा मगर उस की **सख़ावत** आ गई और नेकियों का वज़्न बढ़ गया।

《14》 **एक** शख़्स जहन्नम के कनारे पर खड़ा था मगर उस का **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ आ गया और वोह बच गया।

《15》 **एक** शख़्स जहन्नम में गिर गया लेकिन उस के **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में बहाए हुए **आंसू** आ गए और (इन आंसूओं की ब-र-कत से) वोह बच गया।

《16》 **एक** शख़्स पुल सिरात़ पर खड़ा था और टहनी की त़रह लरज़ रहा था लेकिन उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ हुस्ने ज़न (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान) आया (और इस नेकी) ने उसे बचा लिया और वोह पुल सिरात़ से गुज़र गया।

《17》 **एक** शख़्स पुल सिरात़ पर घिसट घिसट कर चल रहा था कि उस का **मुझ पर दुरूदे पाक** पढ़ना आ गया और (इस नेकी ने) उस को खड़ा कर के पुल सिरात़ पार करवा दिया।

《18》 **मेरी** उम्मत का एक शख़्स जन्नत के दरवाज़ों के पास पहुंचा तो वोह सब उस पर बन्द थे कि उस का لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की गवाही देना आया और उस के लिये जन्नती दरवाज़े खुल गए और वोह जन्नत में दाख़िल हो गया।

चुग़ली का दर्दनाक अ़ज़ाब

《19》 **कुछ** लोगों के होंट काटे जा रहे थे मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से दरयाफ़्त किया, येह कौन हैं? तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों के दरमियान **चुग़ल ख़ोरी** करने वाले हैं।

इल्ज़ामे गुनाह की ख़ौफ़नाक सज़ा

《20》 **कुछ** लोगों को ज़बानों से लटका दिया गया था। मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) से उन के बारे

www.dawateislami.net

में पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह लोगों पर **झूटी तोहमत** लगाने वाले हैं।"

(شرحُ الصُّدر ص۱۸۲ تا ۱۸۴، مُلَخَّصاً)

कोई भी नेकी नहीं छोड़नी चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया ! इत़ाअ़ते वालिदैन, वुज़ू, नमाज़, रोज़ा, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, ह़ज व उ़म्रह, सिलए रेह़मी, अम्रुन बिल मा'रूफ़ व नह्युन अ़निल मुन्कर, स-दक़ा, हुस्ने अख़्लाक़, सख़ावत, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रोना, नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ हुस्ने ज़न वग़ैरा वग़ैरा नेकियों के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर करम फ़रमा दिया और उन्हें इ़ताब व अ़ज़ाब से रिहाई मिल गई। बहर ह़ाल येह उस के फ़ज़्लो करम के मुआ़-मलात हैं, वोह मालिको मुख़्तार عَزَّوَجَلَّ है, जिसे चाहे बख़्श दे, जिसे चाहे अ़ज़ाब करे, येह सब उस का अ़द्ल ही अ़द्ल है। जहां वोह किसी नेकी से ख़ुश हो कर अपनी रह़मत से बख़्श देता है वहीं किसी गुनाह पर जब वोह नाराज़ हो जाता है तो उस का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आ जाता है और फिर उस की गिरिफ़्त निहायत ही सख़्त होती है। जैसा कि अभी गुज़श्ता त़वील ह़दीस के आख़िर में **चुग़ल ख़ोरों** और दूसरों पर **गुनाह की तोहमत** बांधने वालों का अन्जाम गुज़रा। पस अ़क़्लमन्द वोही है कि ब ज़ाहिर कोई छोटी सी भी नेकी हो उसे तर्क न करे कि हो सकता है येही नेकी नजात का ज़रीआ़ बन जाए और ब ज़ाहिर गुनाह कितना ही मा'मूली नज़र आता हो हरगिज़ हरगिज़ न करे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़ह्हार" के चार हुरूफ़ की निस्बत से गुनाहगारों की 4 ह़िकायात

(1) क़ब्र आग से भर गई ! : बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** के बन्दों में से एक बन्दे को क़ब्र में **सो कोड़े** मारने का हुक्म दिया गया,

www.dawateislami.net

वोह **अल्लाह** से दुआ़ करता रहा यहां तक कि एक कोड़ा रह गया जब एक कोड़ा मारा गया तो उस की **क़ब्र आग से भर गई** जब आग ख़त्म हुई और उस बन्दे को इफ़ाक़ा हुवा तो उस ने (फ़िरिश्तों से) पूछा : आख़िर मुझे येह कोड़ा क्यूं मारा गया ? तो उन्हों ने जवाब दिया : **एक रोज़ तूने बिग़ैर त़हारत (या'नी बे वुज़ू) नमाज़ पढ़ ली थी और एक मज़्लूम के पास तेरा गुज़र हुवा था मगर तूने उस की मदद न की ।** (شَرحُ مَشْكِلِ الآثار لِلطَّحاوِى ج٨ص٢١٢حديث٣١٨٥، اَلزَّواجِر ج٢ص٢٣٦)

(2) मापने में बे एह़तियात़ी के सबब इताब : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस मुह़ासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि एक कय्याल (या'नी ग़ल्ला मापने वाले) ने येह काम छोड़ दिया और इ़बादते इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हुवा । जब वोह मर गया तो उस के बा'ज़ अह़बाब ने उस को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया ? उस ने कहा : "मेरा वोह पैमाना जिस में ग़ल्ला वग़ैरा मापा करता था, उस में मेरी बे एह़तियात़ी की वज्ह से कुछ मिट्टी सी बैठ गई थी, मैं ने उसे साफ़ करने में ग़फ़्लत बरती तो हर मर्तबा मापने के वक़्त ब क़दर उस मिट्टी के कम हो जाता था । मैं उस क़ुसूर के सबब इताब में गिरिफ़्तार हूं ।" (تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص٥١)

(3) क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ : इसी त़रह़ एक और शख़्स भी अपनी तराज़ू से मिट्टी वग़ैरा साफ़ नहीं करता था और इसी त़रह़ चीज़ तोल देता था । जब वोह मर गया तो उस को क़ब्र में अ़ज़ाब शुरूअ़ हो गया, यहां तक कि **लोगों ने उस की क़ब्र से चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ सुनी ।** बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين (या'नी नेक लोगों) को क़ब्र से चिल्लाने की आवाज़ सुन कर रह़्म आ गया और उन्हों ने उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत की तो इस की ब-र-कत से **अल्लाह तआ़ला** ने उस का अ़ज़ाब दफ़्अ़ किया । (اَيضاً)

ह़राम की कमाई कहां जाती है ? : मज़्कूरा दोनों लरज़ा ख़ेज़ ह़िकायात से वोह लोग ज़रूर दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो डन्डी मारते और कम माप तोल करते हैं । मुसल्मानो ! डन्डी मार कर

www.dawateislami.net

कम माप कर बा'ज़ अवक़ात ब ज़ाहिर माल में कुछ ज़ियादती नज़र आ भी जाती है मगर ऐसी आमदनी किस काम की ! बसा अवक़ात दुन्या में भी इस क़िस्म का माल वबाल बन जाता है। हो सकता है कि डॉक्टरों की फ़ीसों, बीमारियों की दवाओं, जेब कतरों, चोरों या रिश्वत ख़ोरों के हाथं में येह माल चला जाए और फिर साथ ही साथ مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आख़िरत का अ़ज़ाबे शदीद भी भुगत्ना पड़ जाए।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

आग के दो पहाड़ : **रूहुल बयान** में है : "जो शख़्स नाप तोल में ख़ियानत करता है, क़ियामत के रोज़ उसे दोज़ख़ की गहराइयों में डाला जाएगा और **आग के दो पहाड़ों** के दरमियान बिठा कर हुक्म दिया जाएगा : येह दोनों पहाड़ नापो और तोलो ! जब तोलने लगेगा तो आग उसे जला डालेगी।" (تفسیر روحُ البیان ج۱۰ ص۳۶۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब ग़ौर फ़रमाइये ! मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में चन्द फ़ानी सिक्के ह़ासिल करने के लिये अगर डन्डी मार ली तो किस क़दर शदीद अ़ज़ाब की वईद है। आज मा'मूली गरमी बरदाश्त नहीं होती तो जहन्नम में आग के पहाड़ों की तपिश किस त़रह़ सही जा सकेगी। ख़ुदारा ! अपने ह़ाल पर रह़म करते हुए माल की हवस से दूर रहिये, वरना माले ग़ैरे ह़लाल दोनों जहानों में वबाल ही वबाल साबित होगा।

(4) तिन्के का बोझ : **मश्हूर** ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल के एक नौ जवान ने गुनाहों से तौबा की, फिर 70 साल मुसल्सल इ़बादत करता रहा, रात जागता और दिन में रोज़ा रखता, **न किसी साए के नीचे आराम करता और न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता।** जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उस के बा'ज़ दोस्तों ने उसे

www.dawateislami.net

ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़-मला किया ? उस ने बताया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर **एक लकड़ी** जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर **दांतों में ख़िलाल** कर लिया था (और येह मुआ़-मला हुक़ूक़ुल इ़बाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था उस की वज्ह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تنبیهُ الْمُغتَرِّین ص٥١)

गुनाह आख़िर गुनाह है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ जाओ ! थर्रा उठो !! कि एक आ़बिदो ज़ाहिद और नेक बन्दा सिर्फ़ और सिर्फ़ इस वज्ह से जन्नत से रोक दिया गया कि उस ने एक **तिन्का** उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर ले कर उस से दांतों में ख़िलाल कर लिया और फिर बे मुआ़फ़ करवाए इन्तिक़ाल कर गया। ज़रा सोचिये ! ग़ौर कीजिये !! अब एक तिन्के की कहां बात है ! आज कल तो लोग बड़ी बड़ी क़ीमती अमानतें हड़प कर जाते और डकार तक नहीं लेते।

تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

अदाए क़र्ज़ में बिला मोहलत लिये ताख़ीर गुनाह है : मुसल्मानो ! डर जाओ !! हुक़ूक़ुल इ़बाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) का मुआ़-मला निहायत सख़्त है अगर किसी बन्दे का माल दबा लिया, या उस को गाली दे दी, आंखें दिखा कर डराया, धम्काया, डांट डपट की जिस से उस का दिल दुखा। अल ग़रज़ किसी त़रह़ भी बे इजाज़ते शर-ई उस की दिल आज़ारी की या क़र्ज़ा दबा लिया बल्कि बिला इजाज़ते क़र्ज़-ख़्वाह या बिग़ैर सह़ीह़ मजबूरी के क़र्ज़ की अदाएगी में ताख़ीर ही की, येह सब बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियां हैं। **क़र्ज़** की बात चली है तो येह भी बताता चलूं कि **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى **कीमियाए सआ़दत** में नक़्ल करते हैं : "जो शख़्स क़र्ज़ लेता है और येह निय्यत करता है कि मैं अच्छी त़रह़ अदा कर दूंगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़िफ़ाज़त के लिये चन्द

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है और वोह दुआ़ करते हैं कि इस का क़र्ज़ अदा हो जाए।" (انظر:إتحاف السّادة ج ٦ ص ٤٠٩) और अगर क़र्ज़दार क़र्ज़ अदा कर सकता हो तो क़र्ज़-ख़्वाह की मरज़ी के बिग़ैर अगर एक घड़ी भर भी ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा और ज़ालिम क़रार पाएगा। ख़्वाह रोज़े की ह़ालत में हो या सो रहा हो और उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत उतरती है। येह गुनाह तो ऐसा है कि नींद की ह़ालत में भी उस के साथ रहता है। अगर अपना सामान बेच कर क़र्ज़ अदा कर सकता है तब भी करना पड़ेगा, अगर ऐसा नहीं करेगा तो गुनाहगार है। उस का येह फ़े'ल कबीरा गुनाहों में से है मगर लोग इसे मा'मूली ख़याल करते हैं।" (کیمیائے سعادت ج١ص٣٣٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन पैसे का वबाल : **मेरे** आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से क़र्ज़े की अदाएगी में सुस्ती और झूटे ह़ि-यलो ह़ुज्जत करने वाले शख़्स ज़ैद के बारे में इस्तिफ़्सार हुवा तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़ैद फ़ासिक़ो फ़ाजिर, मुर-तकिबे कबाइर, ज़ालिम, कज़्ज़ाब, मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब है इस से ज़ियादा और क्या अल्क़ाब अपने लिये चाहता है! अगर इस ह़ालत में मर गया और दैन (क़र्ज़) लोगों का इस पर बाक़ी रहा, इस की नेकियां उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के मुता-लबे में दी जाएंगी और क्यूंकर दी जाएंगी (या'नी किस त़रह़ दी जाएंगी येह भी सुन लीजिये) तक़रीबन तीन पैसा दैन (क़र्ज़) के इ़वज़ (या'नी बदले) **सात सो नमाज़ें बा जमाअ़त** (देनी पड़ेंगी)। जब इस (क़र्ज़ा दबा लेने वाले) के पास नेकियां न रहेंगी उन (क़र्ज़ ख़्वाहों) के गुनाह इस (मक़रूज़) के सर पर रखे जाएंगे और आग में फेंक दिया जाएगा।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 25, स. 69 मुलख़्ख़सन)

मत दबा क़र्ज़ा किसी का ना-बकार
रोएगा दोज़ख़ में वरना ज़ार ज़ार

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में किसी पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म करने वाला भी जब तक मज़्लूम को राज़ी नहीं कर लेगा उस वक़्त तक उस की ख़लासी (या'नी छुटकारा) ना मुम्किन है। हां, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़्लो करम से क़ियामत के रोज़ ज़ालिम व मज़्लूम में सुल्ह़ करवा देगा, ब सूरते दीगर उस मज़्लूम को ज़ालिम की नेकियां दे दी जाएंगी, अगर इस से भी मज़्लूम या मज़्लूमीन के हुक़ूक़ अदा न हुए तो मज़्लूमीन के गुनाह ज़ालिम के सर पर डाल दिये जाएंगे और वोह जहन्नम रसीद कर दिया जाएगा। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى

क़ियामत में मुफ़्लिस कौन ? : ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्ताने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या तुम जानते हो कि **मुफ़्लिस** कौन है ?" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से **मुफ़्लिस** तो वोह है जिस के पास दिरहम व दुन्यावी साज़ो सामान न हो। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत का **मुफ़्लिस तरीन** शख़्स वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात तो ले कर आएगा मगर साथ ही किसी को गाली दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, उस का माले नाह़क़ खाया होगा, उस का ख़ून बहाया होगा, उस को मारा होगा, पस इन सब गुनाहों के बदले में उस की नेकियां ली जाएंगी, पस अगर उस की नेकियां ख़त्म हो जाएं और मज़ीद ह़क़दार बाक़ी हों तो बदले में उन (या'नी मज़्लूमों) के गुनाह ले कर इस (या'नी ज़ालिम) पर डाले जाएंगे फिर उस (ज़ालिम) शख़्स को जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

(مسلم ص١٣٩٤حديث٢٥٨١)

ज़ालिम से मुराद कौन है ? : याद रहे ! यहां ज़ालिम से मुराद सिर्फ़ क़ातिल, डाकू या मारधाड़ करने वाला ही नहीं बल्कि जिस ने ब ज़ाहिर किसी की थोड़ी सी भी ह़क़ त-लफ़ी की म-सलन किसी का एकआध रुपिया ही दबा लिया हो, मज़ाक़ उड़ा कर या बिला इजाज़ते शर-ई डांट डपट कर के या ग़ुस्से में घूर कर दिल दुखाया हो वोह भी ज़ालिम है। अब येह जुदा

www.dawateislami.net

बात है कि जिस पर इस त़रह़ के ज़ुल्म हुए इस "मज़्लूम" ने भी "उस ज़ालिम" की बा'ज़ ह़क़ त-लफ़ियां की हों, इस सूरते ह़ाल में दोनों एक दूसरे के ह़क़ में जुदा जुदा मुआ-मलात में "ज़ालिम" भी हैं और "मज़्लूम" भी।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** उनैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : "कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो, जब तक वोह **हुक़ूक़ुल इबाद** का बदला न अदा करे।" या'नी जिस किसी का ह़क़ जिस किसी ने दबाया हो उस का फ़ैसला होने तक दोज़ख़ या जन्नत में दाख़िल न होगा। (تنبیہ المغترین ص ۵۱)

हुक़ूक़ुल इबाद की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** का मत़्बूआ़ तह़रीरी बयान **ज़ुल्म का अन्जाम** ज़रूर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम सब मुसल्मानों को एक दूसरे की ह़क़ त-लफ़ी से बचा और इस सिल्सिले में जो कुछ कोताहियां हो चुकी हैं उन से सच्ची तौबा करने और इन्हें आपस में मुआ़फ़ करवा लेने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

माहे र-मज़ान में फ़ौत होने की फ़ज़ीलत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है : नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस को **र-मज़ान** के वक़्त मौत आई वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा और जिस की मौत **यौमे अ़-रफ़ा** (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) के वक़्त आई वोह भी **जन्नत** में दाख़िल होगा और जिस की मौत **स-दक़ा** देने की ह़ालत में आई वोह भी दाख़िले जन्नत होगा।" (حِلْيَةُ الاولياء ج۵ ص۲۶ حدیث۶۱۸۷) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि माहे र-मज़ान में मुर्दों से अ़ज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है। (شَرحُ الصُّدُور ص۱۸۷)

www.dawateislami.net

क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब : **उम्मुल मुअमिनीन** सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है : अम्बिया के सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे बिशारत बुन्याद है : "**रोज़े** की हालत में जिस का इन्तिक़ाल हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत तक के रोज़ों का सवाब अ़ता फ़रमाता है।" (اَلْفِردَوس بماْثور الْخطاب ج٣ص٥٠٤حدیث٥٥٥٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

र-मज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी ! : **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "येह र-मज़ान तुम्हारे पास आ गया है, इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है। महरूम है वोह शख़्स जिस ने **र-मज़ान** को पाया और उस की **मग़्फ़िरत** न हुई कि **जब इस की र-मज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !**" (مُعجَم اَوسَط ج٥ص٣٦٦حدیث٧٦٢٧)

जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं : **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, रहमते आ़लम, रसूले मोहतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**र-मज़ान** आ गया ब-र-कत वाला महीना है, **अल्लाह तआ़ला** ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये, इस में आस्मान के दरवाज़े खोले जाते और **जहन्नम** के दरवाज़े बन्द किये जाते हैं, और इस में मरदूद शयातीन क़ैद कर दिये जाते हैं, इस में एक रात है, **हज़ार महीनों** से बेहतर, जो इस की भलाई से महरूम रहा वोह बिल्कुल ही महरूम रहा।" (نَسائی ص٣٥٥حدیث٢١٠٣)

शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं : **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : सुल्ताने दो जहान, रहमते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब र-मज़ान आता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (بُخاری ج ١ ص ٦٢٦ حدیث ١٨٩٩)

www.dawateislami.net

और एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, शयातीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (اَیضاً ص ۳۹۹ حدیث ۳۲۷۷) एक रिवायत में है कि रहमत के दरवाज़े खोले जाते हैं। (مسلم ص ٥٤٣ حدیث ١٠٧٩)

गुनाहों में कमी तो आ ही जाती है : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बहर कैफ़ आम मुशा-हदा येही है कि **र-मज़ानुल मुबारक** में हमारी मसाजिद ग़ैरे र-मज़ान के मुक़ाबले में ज़ियादा आबाद हो जाती हैं, नेकियां करने में आसानियां रहती हैं और इतना ज़रूर है कि माहे र-मज़ान में गुनाहों का सिल्सिला कुछ न कुछ कम हो जाता है।

जूं ही सरकश शयातीन आज़ाद होते हैं ! : **र-मज़ानुल मुबारक** के रुख़्सत होते ही, सरकश शयातीन आज़ाद हो जाते हैं और अफ़्सोस ! गुनाहों का ज़ोर बढ़ जाता है। ख़ुसूसन ईद के दिन गुनाहों की निहायत कसरत हो जाती है, गोया एक महीने की क़ैद के सबब सरकश शयातीन बेहद बिफर चुके हैं और माहे **र-मज़ानुल मुबारक** की सारी कसर वोह ईद के रोज़ ही निकाल देना चाहते हैं, तफ़रीह गाहें बे पर्दा औरतों और मर्दों से भर जाती हैं, ईद के लिये नई नई फ़िल्में और जदीद डिरामे लगा दिये जाते हैं, आह ! **शैतान** के हाथों बे शुमार मुसल्मान खिलोना बन कर रह जाते हैं, मगर ऐसे ख़ुश नसीब भी होते हैं जो **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़फ़्लत नहीं करते और **शैतान** के बहकाने से महफ़ूज़ रहते हैं।

आतश परस्त ने माहे र-मज़ान का एहतिराम किया तो...... (हिकायत) : **बुख़ारा** में एक मजूसी (आतश परस्त) रहता था एक मर्तबा **र-मज़ान शरीफ़** में वोह अपने बेटे के साथ मुसल्मानों के बाज़ार से गुज़र रहा था, उस के बेटे ने अ़लल ए'लान कोई चीज़ खानी शुरूअ़ कर दी, मजूसी ने येह देखते ही अपने बेटे को एक **तमांचा** रसीद कर दिया और डांटते हुए कहा : तुझे **र-मज़ानुल मुबारक** के महीने में मुसल्मानों के बाज़ार में खाते हुए शर्म नहीं आती ! लड़के ने कहा : अब्बाजान ! आप भी तो र-मज़ान शरीफ़ में खाते हैं। वालिद ने कहा : मैं

www.dawateislami.net

मुसल्मानों के सामने नहीं अपने घर के अन्दर छुप कर खाता हूं, इस माहे मुबारक की बे हुरमती नहीं करता। कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया। किसी ने ख़्वाब में उस को जन्नत में टहलते हुए देखा तो हैरत से पूछा : तू तो मजूसी (आग का पुजारी) था, जन्नत में कैसे आ गया ? कहने लगा : "वाक़ेई मैं मजूसी था, लेकिन जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **एह़तिरामे र-मज़ान की ब-र-कत से मुझे ईमान की दौलत से और मरने के बा'द जन्नत से मुशर्रफ़ फ़रमाया।"** (نُزهَةُ الْمَجَالِس ج١ ص٢١٧)

र-मज़ान में अ़लल ए'लान खाने की दुन्यवी सज़ा : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !**

देखा आप ने ? **र-मज़ानुल मुबारक** की ता'ज़ीम के सबब एक आतश परस्त को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दौलते ईमान से नवाज़ कर जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों से मालामाल फ़रमा दिया। इस ह़िकायत से ख़ुसूसन उन ग़ाफ़िलों को दर्से इब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो मुसल्मान होने के बा वुजूद **र-मज़ानुल मुबारक** में अव्वल तो वोह रोज़ा नहीं रखते, फिर चोरी और सीना ज़ोरी यूं कि रोज़ादारों के सामने ही सिगरेट के कश लगाते, पान चबाते, ह़त्ता कि बा'ज़ तो इतने बेबाक व बे मुरव्वत कि सरे आ़म पानी पीते बल्कि खाना खाते भी नहीं शरमाते। ऐसे लोगों के लिये फ़िक़्ही किताबों में सख़्त सज़ा का हुक्म है।

क्या आप को मरना नहीं ? : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** ग़ौर कीजिये ! ख़ूब सोचिये !!

जब दुन्या में रोज़ाख़ोरों की सख़्त सज़ा तज्वीज़ की गई है (येह सज़ा सिर्फ़ ह़ाकिमे इस्लाम ही दे सकता है) तो आख़िरत की सज़ा किस क़दर होलनाक होगी ! मुसल्मानो ! होश में आइये ! कब तक इस दुन्या में गुलछर्रे उड़ाएंगे ? क्या आप को मरना नहीं ? क्या इस दुन्या में हमेशा इसी त़रह़ दन-दनाते फिरेंगे ? याद रखिये ! एक न एक दिन मौत ज़रूर आएगी और आप का रिश्तए ह़यात मुन्क़त़ेअ़ कर के (या'नी काट कर) नर्म व आराम देह गदेलों से उठा कर फ़र्शे ख़ाक पर सुला देगी, हर त़रह़ के सामाने त़रब से आरास्ता व पैरास्ता कमरों से निकाल कर अंधेरी क़ब्रों में पहुंचा देगी,

फिर पछताने से कुछ हाथ न आएगा, अभी मौक़अ़ है, गुनाहों से सच्ची तौबा कर लीजिये और रोज़ा व नमाज़ की पाबन्दी इख़्तियार कीजिये।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

सुन्नतों भरे बयानात की ब-रकात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों भरी ज़िन्दगी से छुटकारा पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत दोनों में सुर्ख़-रूई नसीब होगी। आप की तरग़ीब के लिये एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है, चुनान्चे पाकिस्तान के एक इस्लामी भाई 1987 सि.ई. ता 1990 सि.ई. एक सियासी पार्टी से वाबस्ता रहे। आए दिन के फ़सादात से बेज़ार हो कर घर वालों ने उन्हें बैरूने पाकिस्तान भेजने की ठानी। चुनान्चे 3.11.90 को वोह सल्त़नते उ़म्मान के दारुल इमारात **मस्क़त** की एक गारमेन्ट फ़ेक्टरी में मुलाज़िम हो गए। 1992 सि.ई. में **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई काम के सिल्सिले में उन की फ़ेक्टरी में भरती हुए। उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह नमाज़ी बने। फ़ेक्टरी का माह़ोल बहुत ही ख़राब था, सिर्फ़ उन के शो'बे ही को ले लीजिये उस में आठ या नव टेप रेकोर्डर थे जिन के ज़रीए मुख़्तलिफ़ ज़बानों, म-सलन उर्दू, पंजाबी, पश्तो, हिन्दी और बंगाली वग़ैरा में ऊंची आवाज़ के साथ गाने चलाने का सिल्सिला रहता। दा'वते इस्लामी वाले **आ़शिक़े रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह गाने बाजों से मु-तनफ़्फ़िर हो गए। बाहमी मश्वरे से उन्हों ने **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाली सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें चलानी शुरूअ़ कर दीं। इब्तिदाअन बा'ज़ लोगों ने मुख़ा-लफ़त भी की मगर उन्हों ने हिम्मत नहीं हारी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे बयानात चलाने की ब-रकात का ख़ुद उन पर भी ज़ुहूर होने लगा। बिल ख़ुसूस **क़ब्र की पहली रात, नैरंगिये दुन्या, बद नसीब दूल्हा, क़ब्र की पुकार और तीन क़ब्रें** नामी बयानात ने उन्हें हिला कर रख दिया, आख़िरत की तय्यारी की **म-दनी सोच** मिली और उन का दिल गुनाहों से नफ़रत करने लगा। इस दौरान चन्द और अफ़राद भी सुन्नतों भरे बयानात से मु-तअस्सिर हो कर क़रीब आ गए। जिन्हों ने उन को नेकी के कामों में लगाया था वोह **आ़शिक़े रसूल** मुला-ज़मत छोड़ कर पाकिस्तान लौट गए। उन्हों ने पाकिस्तान से सुन्नतों भरे बयानात की 90 केसिटें मंगवा लीं। **पहले उन की फ़ेक्टरी में सिर्फ़ 50 या 60 नमाज़ी थे बयानात सुन सुन कर नमाज़ियों की ता'दाद बढ़ते बढ़ते اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ 200 से 250 हो गई।** उन्हों ने मिल कर 400 वॉट का क़ीमती स्पीकर ख़रीद कर अपनी मन्ज़िल की दीवार पर नस्ब कर लिया और धूमधाम से केसिटें चलाने लगे रोज़ाना तिलावते कलामे पाक, ना'त शरीफ़ और सुन्नतों भरे बयान की केसिट चलाने का मा'मूल बना लिया। रफ़्ता रफ़्ता उन के पास 500 केसिटें जम्अ़ हो गईं। उन का कहना है कि मुझ समेत **पांच इस्लामी भाइयों** ने अपने आप को दा'वते इस्लामी के म-दनी रंग में रंग लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद दर्स का आग़ाज़ हो गया। फिर कुछ अ़र्से बा'द रफ़्ता रफ़्ता उन की फ़ेक्टरी में **हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** शुरूअ़ हो गया, इज्तिमाअ़ में कमो बेश 250 इस्लामी भाई शिर्कत करते थे, **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) भी क़ाइम हो गया। सुन्नतों की बहारें आने लगीं, मु-तअ़द्दिद इस्लामी भाइयों ने अपने चेहरे पर **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी मुबारक दाढ़ी सजा ली, 20 से 25 इस्लामी भाइयों के सरों पर **इमामे के ताज** जग-मगाने लगे। उन की फ़ेक्टरी के मेनेजर इब्तिदाअन केसिटें चलाने वग़ैरा से मन्अ़ करते रहे मगर बयानात की केसिटों की आवाज़ उन के कानों में भी रस घोलती रही और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बिल आख़िर वोह भी मु-तअस्सिर हो ही गए न सिर्फ़ मु-तअस्सिर हुए बल्कि नमाज़ी भी बन गए और एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली।

www.dawateislami.net

वोह इस्लामी भाई वापस पाकिस्तान आ चुके हैं और उन्हें बाबुल मदीना कराची के एक डिवीज़न की मुशा-वरत की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआदत भी मिली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों के ज़रीए इस्लाह़ का सामान हुवा। हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह सुन्नतों भरे बयान या **म-दनी मुज़ा-करे** की कम अज़ कम एक केसिट रोज़ाना सुनने का मा'मूल बना ले, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ऐसी ब-र-कतें मिलेंगी कि दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा।[1]

ग़फ़्लत से नेकी की दा'वत सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **मक-त-बतुल मदीना** से जारी कर्दा बयानात की केसिटें सुनने की भी कैसी ब-रकात हैं ![2] येह सब मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, वरना बे शुमार अफ़राद ऐसे भी देखे जाते हैं कि वोह बरसहा बरस से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िर होते हैं मगर उन पर म-दनी रंग नहीं चढ़ पाता। शायद इस की एक वज्ह येह भी हो सकती है कि वोह बैठ कर तवज्जोह के साथ बयान न सुनते हों, बे परवाई के साथ इधर उधर देखते हुए या मोबाइल फ़ोन पर बातें वग़ैरा करते हुए सुनने से बयानात की ब-रकात कहां से मिलेंगी ! याद रहे ! ग़फ़्लत के साथ नसीहत सुनना कुफ़्फ़ार की सिफ़त है मुसल्मानों को इस ह़-र-कत से बचना ज़रूरी है चुनान्चे पारह 17 **सू-रतुल अम्बियाअ** की आयत नम्बर 2 और 3 में इर्शादे रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ है :

مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٢﴾ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब उन के रब के पास से उन्हें कोई नई नसीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए, उन के दिल खेल में पड़े हैं।

---

1 : सुन्नतों भरे बयानात की केसिटों की ब-रकात की तफ़्सीलात जानने के लिये "बयानात की केसिटों के करिश्मात" नामी रिसाला "54 सफ़ह़ात" मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

2 : रिक़्क़त अंगेज़ बयानात की विडियो केसिटें और मेमोरी कार्ड मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

www.dawateislami.net

साल भर की नेकियां बरबाद : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "बेशक जन्नत माहे र-मज़ान के लिये एक साल से दूसरे साल तक सजाई जाती है, पस जब माहे र-मज़ान आता है तो जन्नत कहती है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे इस महीने में अपने बन्दों में से (मेरे अन्दर) रहने वाले अ़ता फ़रमा दे।" और हूरे ईन कहती हैं : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस महीने में हमें अपने बन्दों में से शोहर अ़ता फ़रमा।" फिर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने इस माह में अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त की, कि न तो कोई नशा आवर शै पी और न ही किसी मोमिन पर **बोहतान** लगाया और न ही इस माह में कोई **गुनाह** किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर रात के बदले उस का **सो हूरों** से निकाह़ फ़रमाएगा और उस के लिये **जन्नत** में सोने, चांदी, याक़ूत और ज़बर-जद का ऐसा मह़ल बनाएगा कि अगर सारी दुन्या जम्अ़ हो जाए और इस मह़ल में आ जाए तो इस मह़ल की उतनी ही जगह घेरेगी जितना बकरियों का एक बाड़ा दुन्या की जगह घेरता है, और **जिस ने इस माह में कोई नशा आवर शै पी या किसी मोमिन पर बोहतान बांधा या इस माह में कोई गुनाह किया तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के एक साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे।** पस तुम माहे र-मज़ान (के ह़क़) में कोताही करने से डरो क्यूं कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है। **अल्लाह तआ़ला** ने तुम्हारे लिये ग्यारह महीने कर दिये कि इन में ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो और तलज़्ज़ुज़ (लज़्ज़त) ह़ासिल करो और अपने लिये एक महीना ख़ास कर लिया है। पस तुम माहे र-मज़ान के मुआ़-मले में डरो।"

(مُعجَم اَوسَط ج٢ ص٤١٤ حديث٣٦٨٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जहां माहे **र-मज़ानुल मुबारक** की ता'ज़ीम करने वालों के लिये उख़्रवी इन्आ़माते इक्रामात की बिशारात हैं वहां इस मुबारक महीने की ना क़द्री करते हुए इस में गुनाह करने वालों के लिये वईदात भी हैं। इस ह़दीसे पाक में नशा आवर

www.dawateislami.net

चीज़ पीने और मोमिन पर बोहतान बांधने का ख़ुसूसिय्यत के साथ तज़्किरा है याद रखिये ! शराब **उम्मुल ख़बाइस** (या'नी बुराइयों की मां) है इस का पीना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो चीज़ ज़ियादा मिक़्दार में नशा लाए तो उस की थोड़ी सी मिक़्दार भी ह़राम है।" (ابوداؤد ج٣ ص٤٥٩ حدیث٣٦٨١)

दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप : **मोमिन** पर बोहतान बांधना भी ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, ह़दीसे पाक में है : "जो किसी मोमिन के बारे में ऐसी चीज़ कहे जो उस में न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (बोहतान तराश) को उस वक़्त तक **रद-ग़तुल ख़बाल** में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए।" (ابوداؤد ج٣ ص٤٢٧ حدیث٣٥٩٧) रद-ग़तुल ख़बाल जहन्नम में वोह मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 313) मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस से मुराद येह है कि जिस अ़ज़ाब का वोह मुस्तह़िक़ हो चुका है उसे भुगत्ने के बा'द पाक हो जाए।" (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج٣ ص٢٩٠ مُلَخَّصاً)

र-मज़ान में गुनाह करने वाला : **सय्यि-दतुना** उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है : दो जहां के सुल्त़ान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "मेरी उम्मत ज़लीलो रुस्वा न होगी जब तक वोह माहे र-मज़ान का ह़क़ अदा करती रहेगी।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم र-मज़ान के ह़क़ को ज़ाएअ़ करने में इन का ज़लीलो रुस्वा होना क्या है ? फ़रमाया : "इस माह में इन का ह़राम कामों का करना।" फिर फ़रमाया : "**जिस ने इस माह में ज़िना किया या शराब पी तो अगले र-मज़ान तक अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और जितने**

आस्मानी फ़िरिश्ते हैं सब उस पर ला'नत करते रहेंगे पस अगर येह शख़्स अगला माहे र-मज़ान पाने से पहले ही मर गया तो उस के पास कोई ऐसी नेकी न होगी जो उसे जहन्नम की आग से बचा सके। पस तुम माहे र-मज़ान के मुआ-मले में डरो क्यूं कि जिस तरह इस माह में और महीनों के मुक़ाबले में नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी तरह गुनाहों का भी मुआ-मला है।" (مُعجَم صغیر ج۱ ص۲۴۸)

تُوبُوا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ الله

दिल का सियाह नुक़्ता : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लरज़ उठिये ! **माहे र-मज़ान** की ना क़द्री से बचने का ख़ुसूसिय्यत के साथ सामान कीजिये। इस माहे मुबारक में दूसरे महीनों के मुक़ाबले में जिस तरह नेकियां बढ़ा दी जाती हैं इसी तरह दीगर महीनों के मुक़ाबले में गुनाहों की हलाकत ख़ेज़ियां भी बढ़ जाती हैं। र-मज़ान शरीफ़ के इलावा भी गुनाहों से बचना ही चाहिये। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक सियाह नुक़्ता पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आ जाता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो उस का दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक़्ता बढ़ता है यहां तक कि पूरा दिल सियाह हो जाता है। और येही वोह ज़ंग है जिस का ज़िक्र **अल्लाह तआ़ला** ने इस तरह फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ ٗ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ۳۰،المطففین:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(تِرمذی ج۵ ص۲۲۰ حدیث۳۳۴۵)

दिल की सियाही का इलाज : इस सियाह क़ल्बी का इलाज ज़रूरी है और इस के इलाज का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ किसी जामेए़ शराइत़ पीर साहिब से निस्बत भी है, लिहाज़ा किसी ऐसे

www.dawateislami.net

मुर्शिद का मुरीद बन जाए जो परहेज़ गार और मुत्तबेए़ सुन्नत हो, जिस की ज़ियारत ख़ुदा व मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद दिलाए, जिस की गुफ़्त-गू सलातो सुन्नत का शौक़ उभारे, जिस की सोह़बत क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का जज़्बा बढ़ाए। अगर ख़ुश क़िस्मती से ऐसा पीरे कामिल मुयस्सर आ गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सच्ची तौबा की सआ़दत नसीब होगी और **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से **दिल की सियाही का इलाज** हो जाएगा।

गुनाह की मुआ़फ़ी के लिये 8 आ'माल : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 911 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**एह़याउल उ़लूम** मुतर्जम जिल्द 4" सफ़ह़ा 141 पर है : रिवायात से मा'लूम होता है गुनाह के बा'द जब आठ आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक अ़मल) किये जाएं तो उस (गुनाह) की बख़्शिश (या'नी मुआ़फ़ी) की उम्मीद होती है। चार आ'माल का तअ़ल्लुक़ दिल से है : ﴾1﴿ तौबा या तौबा का अ़ज़्म ﴾2﴿ गुनाह से बाज़ रहने की चाहत ﴾3﴿ अ़ज़ाब होने का ख़ौफ़ ﴾4﴿ मग़्फ़िरत की उम्मीद। चार आ'माल का तअ़ल्लुक़ आ'ज़ा से है : ﴾1﴿ दो रक्अ़त नमाज़े (तौबा) अदा करना ﴾2﴿ 70 मर्तबा इस्तिग़्फ़ार करना और 100 मर्तबा سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ पढ़ना ﴾3﴿ स-दक़ा करना ﴾4﴿ रोज़ा रखना।

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
पए ताजदारे ह़रम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 110)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्र का भयानक मन्ज़र ! : मन्क़ूल है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم एक बार ज़ियारते क़ुबूर के लिये कूफ़े के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी, तो दिल में उस के ह़ालात मा'लूम करने की

www.dawateislami.net

ख़्वाहिश हुई, चुनान्चे बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन मस्मूअ़ हुई (या'नी सुनी गई) और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे ह़ाइल थे तमाम उठा दिये गए ! अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था ! क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रियाद कर रहा है :

يَا عَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّارِ۔

या'नी या अ़ली ! मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं। क़ब्र के दह्शत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने ह़ैदरे कर्रार كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दर-ख़्वास्त पेश की। ग़ैब से आवाज़ आई : "ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ! इस की सिफ़ारिश मत करो। क्यूं कि येह शख़्स **र-मज़ानुल मुबारक** की बे हुरमती करता, **र-मज़ानुल मुबारक** में भी गुनाहों से बाज़ न आता था, दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था।" मौलाए काएनात अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सज्दे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़्म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरिया जोश में आ गया और निदा आई : "ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ! हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली के सबब इसे बख़्श दिया।" चुनान्चे उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया। (انيسُ الْواعظين ص٢٥،٢٦)

www.dawateislami.net

क्यूं न मुश्किल कुशा कहूं तुम को

तुम ने बिगड़ी मेरी बनाई है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुर्दों से गुफ़्त-गू : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की अ़ज़्मतो शान के क्या कहने ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अहले क़ुबूर से गुफ़्त-गू फ़रमा लिया करते थे । एक और **ह़िकायत** पेशे ख़िदमत है : चुनान्चे, मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार हम अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के हमराह मदीनए मुनव्वरह के क़ब्रिस्तान गए । ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने क़ब्र वालों को सलाम किया और फ़रमाया : ऐ क़ब्र वालो ! तुम अपनी ख़बर बताओगे या हम तुम्हें बताएं ? सय्यिदुना सई़द बिन मुसय्यब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि हम ने क़ब्र से ''وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ'' की आवाज़ सुनी और कोई कहने वाला कह रहा था : **या अमीरल मुअमिनीन !** आप ही ख़बर दीजिये कि हमारे मरने के बा'द क्या हुवा ? ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाह़ कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मज़्बूत़ बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गए । अब तुम अपना ह़ाल सुनाओ । येह सुन कर एक क़ब्र से आवाज़ आने लगी : **या अमीरल मुअमिनीन !** हमारे कफ़न फट कर तार तार हो गए, हमारे बाल झड़ कर मुन्तशिर हो गए, हमारी खालें टुकड़े टुकड़े हो गईं हमारी आंखें बह कर रुख़्सारों पर आ गईं और हमारे नथनों से पीप बह रही है और हम ने जो कुछ आगे भेजा (या'नी जैसे अ़मल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोड़ा उस में नुक़्सान हुवा ।

(شَرْحُ الصُّدُور ص ٢٠٩، ابن عساكر ج ٢٧ ص ٣٩٥)

www.dawateislami.net

र-मज़ान की रातों में खेलकूद : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** गुज़श्ता दोनों ह़िकायात में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार **म-दनी फूल** हैं। ज़िन्दा इन्सान ख़ूब फुदक्ता है मगर जब मौत का शिकार हो कर क़ब्र में उतार दिया जाता है, उस वक़्त आंखें बन्द होने के बजाए ह़क़ीक़त में खुल चुकी होती हैं। अच्छे आ'माल और राहे ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ में दिया हुवा माल तो काम आता है मगर जो कुछ धन दौलत पीछे छोड़ आता है उस में भलाई का इम्कान न होने के बराबर होता है, वु-रसा से येह उम्मीद कम ही होती है कि वोह अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ की आख़िरत की बेहतरी के लिये माले कसीर ख़र्च करें, बल्कि मरने वाला अगर ह़राम व ना जाइज़ माल म-सलन गुनाहों के अस्बाब जैसा कि आलाते मूसीक़ी, विडियो गेम्ज़ की दुकान, म्यूज़िक सेन्टर, सिनेमा घर, शराब ख़ाना, जूए का अड्डा, मिलावट वाले माल का धोके भरा कारोबार वग़ैरा पीछे छोड़े तो उस मरने वाले के लिये मरने के बा'द सख़्त तरीन और ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान है। **क़ब्र का भयानक मन्ज़र** नामी ह़िकायत में **र-मज़ानुल मुबारक** की बे हुरमती करने वाले का ख़ौफ़नाक अन्जाम पेश किया गया है इस से दर्से इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये। आह ! सद आह ! **र-मज़ानुल मुबारक** की पाकीज़ा रातों में कई नौ जवान मह़ल्ले में क्रिकेट, फ़ुटबॉल वग़ैरा खेल खेलते, ख़ूब शोर मचाते हैं और इस त़रह़ येह बद नसीब ख़ुद तो इ़बादत से मह़रूम रहते ही हैं, दूसरों के लिये भी मुसीबत का बाइ़स बनते हैं, न तो ख़ुद इ़बादत करते हैं न दूसरों को करने देते हैं। इस क़िस्म के खेल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले हैं। नेक लोग तो इन खेलों से सदा दूर ही रहते हैं, ख़ुद खेलना तो दर कनार ऐसे खेल तमाशे देखते भी नहीं बल्कि इस क़िस्म के खेलों का आंखों देखा ह़ाल (Commentary) भी नहीं सुनते।

रोज़े में वक़्त पास करने के लिये......: **बा'ज़** नादान ऐसे भी होते हैं जो रोज़ा तो रख लेते हैं मगर उन बेचारों का वक़्त "पास" नहीं होता ! लिहाज़ा वोह भी एह़तिरामे र-मज़ान शरीफ़ को

www.dawateislami.net

एक त़रफ़ रख कर ना जाइज़ कामों का सहारा ले कर वक़्त "पास" करते हैं और यूं **र-मज़ान शरीफ़** में शत़रन्ज, ताश, लुड्डो, गाने बाजे और सोश्यल मीडिया के ज़रीए़ तबाहकार प्रोग्रामों वग़ैरा में मश्ग़ूल हो जाते हैं। **याद रखिये !** शत़रन्ज और ताश वग़ैरा पर किसी क़िस्म की बाज़ी या शर्त़ न भी लगाई जाए तब भी येह खेल ना जाइज़ हैं। बल्कि ताश में चूंकि जानदारों की तस्वीरों की ता'ज़ीम भी होती है इस लिये मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ताश खेलने को मुत़्लक़न ह़राम लिखा है। चुनान्चे फ़रमाते हैं : गन्जिफ़ा (पत्तों के ज़रीए़ खेले जाने वाले एक खेल का नाम और) ताश ह़रामे मुत़्लक़ हैं कि इन में इलावा लह्वो लइ़ब के तस्वीरों की ता'ज़ीम है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 141)

अफ़्ज़ल इ़बादत कौन सी है ? : ऐ जन्नत के त़लब गार रोज़ादार इस्लामी भाइयो ! **र-मज़ानुल मुबारक** के मुक़द्दस लम्ह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात व ख़ुराफ़ात में बरबाद होने से बचाइये ! ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है इस को ग़नीमत जानिये, ताश की गड्डियों और फ़िल्मी गानों के ज़रीए़ वक़्त "पास" (बल्कि बरबाद) करने के बजाए तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रो दुरूद में वक़्त गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये। भूक प्यास की शिद्दत जिस क़दर ज़ियादा मह़सूस होगी सब्र करने पर اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ सवाब भी उसी क़दर ज़ाइद मिलेगा। जैसा कि मन्क़ूल है : "اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُهَا" या'नी अफ़्ज़ल इ़बादत वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा है।" (شرح الطیبی علی مشکاۃ المصابیح ج ٥ ص١٧٢٩ تحت الحدیث ٢٢٦٧) इमाम श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इ़बादात में मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से सवाब और फ़ज़ीलत ज़ियादा हो जाती है।" (شرح مسلم لِلنّووی ج ٤ ص١٥٢) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "दुन्या में जो नेक अ़मल जितना दुश्वार होगा क़ियामत के रोज़ नेकियों के पलड़े में उतना ही वज़्न-दार होगा।" (تذکرۃ الاولیاء ص ٩٠)

www.dawateislami.net

रोज़े में ज़ियादा सोना : **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى "कीमियाए सआदत" में फ़रमाते हैं : "रोज़ादार के लिये सुन्नत येह है कि दिन के वक़्त ज़ियादा देर न सोए बल्कि जागता रहे ताकि भूक और ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) का असर महसूस हो।" (کیمیائے سعادت ج۱ ص۲۱۶) (अगर्चे अफ़्ज़ल कम सोना ही है फिर भी अगर किसी की हक़ त-लफ़ी न होती हो और कोई मानेए शर-ई न हो तो ज़रूरी इबादात के इलावा कोई शख़्स सारा वक़्त सोया रहे तो गुनाहगार न होगा)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! साफ़ ज़ाहिर है कि जो दिन भर **रोज़े** में सो कर वक़्त गुज़ार दे उस को रोज़े का पता ही क्या चलेगा ? ज़रा सोचो तो सही ! **हुज्जतुल इस्लाम** हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى तो ज़ियादा सोने से भी मन्अ फ़रमाते हैं कि इस तरह भी वक़्त फ़ालतू "पास" हो जाएगा। तो जो लोग खेल तमाशों और हराम कामों में वक़्त बरबाद करते हैं वोह किस क़दर महरूम व बद नसीब हैं। इस मुबारक महीने की क़द्र कीजिये, इस का एहतिराम बजा लाइये, इस में ख़ुशदिली के साथ रोज़े रखिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल कीजिये।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ैज़ाने र-मज़ान से हर मुसल्मान को मालामाल फ़रमा। इस माहे मुबारक की हमें क़द्रो मन्ज़िलत नसीब कर और इस की बे अ-दबी से बचा।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आम : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** एहतिरामे **माहे र-मज़ानुल मुबारक** का दिल में जज़्बा बढ़ाने, इस की ख़ूब ब-र-कतें पाने, ढेरों नेकियां कमाने और ख़ुद को गुनाहों से बचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल को अपनाने और **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाने की सआदत हासिल

www.dawateislami.net

कीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह फ़वाइद हासिल होंगे कि आप की अ़क्ल हैरान रह जाएगी । एक आ़शिक़े रसूल की रूह परवर "म-दनी बहार" सुनिये और झूमिये : चुनान्चे, एक इस्लामी भाई को **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार था और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने का उन का मा'मूल भी था । एक बार वोह तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर थे । इसी दौरान उन पर बाबे करम खुल गया ! हुवा यूं कि रात जब सोए तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम थे कि लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : "जो म-दनी क़ाफ़िले में **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा ।"**

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 373)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़िक्रे मदीना क्या है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये सुवाल नामे की सूरत में इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, दीनी त़-लबा के लिये 92 और दीनी त़ालिबात के लिये 83 जब कि म-दनी मुन्नों के लिये 40 नीज़ ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों या'नी गूंगे बहरों के लिये 25 **म-दनी इन्आ़मात** पेश किये गए हैं । **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन मिल सकता

www.dawateislami.net

है। रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ उस में दिये हुए ख़ाने पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये। अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाएज़ा लेते हुए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में **फ़िक्रे मदीना** करना कहते हैं। आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये, अगर फ़िलह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की पच्चीसवीं शरीफ़ की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम 25 सेकन्ड के लिये उस की वरक़ गर्दानी कर लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से पढ़ने और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले के ख़ाने भरने का ज़ेहन बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़्फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अह़कामे रोज़ा[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر जब फ़ौत हुए तो अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि सर पर मोतियों वाला ताज सजाए, बेहतरीन हुल्ला (या'नी जन्नती जोड़ा) ज़ैबे तन किये वोह शीराज़ की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं । ख़्वाब देखने वाले ने ह़ाल दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : "**अल्लाह तआ़ला** ने मुझे बख़्शा, करम फ़रमाया और ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया ।" पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : "मैं ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया ।" (القول البدیع ص٢٥٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का कितना बड़ा करम है कि उस ने हम पर **माहे र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े फ़र्ज़ कर के हमारे लिये सामाने तक़्वा फ़राहम किया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 2 **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 183 ता 184 में इर्शाद फ़रमाता है :

1 : फ़ैज़ाने सुन्नत में हर जगह मसाइल फ़िक़्हे ह-नफ़ी के मुताबिक़ दिये गए हैं । लिहाज़ा शाफ़ेई, मालिकी और ह़म्बली इस्लामी भाई फ़िक़्ही मसाइल के मुआ़-मले में अपने अपने उ़-लमाए किराम से रुजूअ़ करें ।

www.dawateislami.net

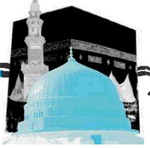

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ
عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَۙ(۱۸۳) اَیَّامًا
مَّعْدُوْدٰتٍؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَؕ وَ عَلَى الَّذِیْنَ یُطِیْقُوْنَهٗ فِدْیَةٌ
طَعَامُ مِسْكِیْنٍؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا فَهُوَ خَیْرٌ لَّهٗؕ
وَ اَنْ تَصُوْمُوْا خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ(۱۸۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले, गिनती के दिन हैं तो तुम में जो कोई बीमार या सफ़र में हो तो उतने रोज़े और दिनों में और जिन्हें इस की त़ाक़त न हो वोह बदले में एक मिस्कीन का खाना फिर जो अपनी त़रफ़ से नेकी ज़ियादा करे तो वोह उस के लिये बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये ज़ियादा भला है अगर तुम जानो ।

रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है : आयते करीमा के इब्तिदाई हिस्से के तह़त "**तफ़्सीरे ख़ाज़िन**" में है : तुम से पहले लोगों से मुराद येह है : ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा **रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तक जितने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए और उन की उम्मतें आईं उन पर रोज़े फ़र्ज़ होते चले आए हैं (मगर उस की सूरत हमारे रोज़ों से मुख़्तलिफ़ थी) । मत़लब येह है कि रोज़ा बड़ी पुरानी इबादत है और गुज़श्ता उम्मतों में कोई उम्मत ऐसी नहीं गुज़री जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी त़रह़ रोज़े फ़र्ज़ न किये हों । (تفسیرِ خازن ج۱ ص۱۱۹ مُلَخَّصاً) और "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना **आदम सफ़िय्युल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर हर महीने के अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े फ़र्ज़ थे । और यहूद (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम) पर यौमे आ़शूरा (या'नी 10 मुह़र्रमुल ह़राम के दिन) और हर हफ़्ते में हफ़्ते के दिन (Saturday) का और कुछ और दिनों के रोज़े फ़र्ज़ थे और नसारा पर माहे र-मज़ान के रोज़े फ़र्ज़ थे । (تفسیرِ عزیزی ج۱ ص۷۷۱)

रोज़े का मक़्सद : मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ "**तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान**" जिल्द

www.dawateislami.net

1 सफ़ह़ा 290 पर है : "आयत के आख़िर में बताया गया कि रोज़े का मक़्सद तक़्वा व परहेज़ गारी का ह़ुसूल है। रोज़े में चूंकि नफ़्स पर सख़्ती की जाती है और खाने पीने की ह़लाल चीज़ों से भी रोक दिया जाता है तो इस से अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने की मश्क़ (Practice) होती है जिस से ज़ब्ते नफ़्स (नफ़्स पर क़ाबू) और ह़राम से बचने पर क़ुव्वत ह़ासिल होती है और येही ज़ब्ते नफ़्स और ख़्वाहिशात पर क़ाबू वोह बुन्यादी चीज़ है जिस के ज़रीए़ आदमी गुनाहों से रुकता है।"

रोज़ा किस पर फ़र्ज़ है : **तौह़ीद** व रिसालत का इक़रार करने और तमाम ज़रूरिय्याते दीन पर ईमान लाने के बा'द जिस त़रह़ हर मुसल्मान पर नमाज़ फ़र्ज़ क़रार दी गई है इसी त़रह़ **र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े** भी हर मुसल्मान (मर्द व औ़रत) आ़क़िल व बालिग़ पर **फ़र्ज़** हैं। "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : रोज़े 10 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 2 सि.हि. को फ़र्ज़ हुए। (دُرِّمُخْتار و رَدُّالْمُحتار ج۳ص۳۸۳)

रोज़ा फ़र्ज़ होने की वज्ह : **इस्लाम** में अक्सर आ'माल किसी न किसी रूह़ परवर वाक़िए़ की याद ताज़ा करने के लिये मुक़र्रर किये गए हैं। म-सलन **सफ़ा व मर्वह** के दरमियान ह़ाजियों की सअ़्य ह़ज़रते सय्यि-दतुना **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की यादगार है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदुना **इस्माई़ल ज़बीह़ुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام के लिये पानी तलाश करने के लिये इन दोनों पहाड़ों के दरमियान **सात बार** चली और दौड़ी थीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ह़ज़रते सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की येह अदा पसन्द आ गई, लिहाज़ा इसी **अदाए हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बाक़ी रखते हुए **ह़ाजियों** और **उ़म्रह** करने वालों के लिये **सफ़ा व मर्वह** की सअ़्य वाजिब फ़रमा दी। इसी त़रह़ **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में से कुछ दिन हमारे प्यारे सरकार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **ग़ारे ह़िरा** में गुज़ारे थे, इस दौरान आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दिन को खाने से परहेज़ करते और रात को **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहते थे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दिनों की याद ताज़ा करने के लिये रोज़े फ़र्ज़ किये ताकि उस के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत क़ाइम रहे।

www.dawateislami.net

"नबी" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के रोज़ों से मु-तअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ (ह़ज़रते) **आदम सफ़िय्युल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने (चांद की) 13, 14, 15 तारीख़ के रोज़े रखे। (کنز العمّال ج۸ص۲۰۸ حدیث۲۴۱۸۸) ﴾2﴿ صَامَ نُوْحٌ الدَّهْرَ اِلَّا يَوْمَ الْفِطْرِ وَيَوْمَ الْاَضْحٰى. या'नी (ह़ज़रते) **नूह़ नजिय्युल्लाह** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के इलावा हमेशा रोज़ा रखते थे। (ابن ماجہ ج۲ ص۳۳۳ حدیث ۱۷۱۴) ﴾3﴿ (ह़ज़रते) **दावूद** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। (مسلم ص ۵۸۴ حدیث ۱۱۵۹) और (ह़ज़रते) **सुलैमान** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) तीन दिन महीने के शुरूअ़ में, तीन दिन दरमियान में और तीन दिन आख़िर में (या'नी इस तरतीब से महीने में 9 दिन) **रोज़ा** रखा करते थे। और ह़ज़रते **ईसा रूहुल्लाह** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हमेशा रोज़ा रखते थे कभी न छोड़ते थे। (ابنِ عساکِر ج۲۴ ص۴۸)

रोज़ादार का ईमान कितना पुख़्ता है ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सख़्त गरमी है, प्यास से ह़ल्क़ सूख रहा है, होंट ख़ुश्क हो रहे हैं, पानी मौजूद है मगर रोज़ादार उस की त़रफ़ देखता तक नहीं, खाना मौजूद है भूक की शिद्दत से ह़ालत दिगर गूं है मगर वोह खाने की त़रफ़ हाथ तक नहीं बढ़ाता। आप अन्दाज़ा फ़रमाइये ! इस मुसल्मान का ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ पर कितना **पुख़्ता ईमान** है क्यूं कि वोह जानता है कि इस की ह़-र-कत सारी दुन्या से तो छुप सकती है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पोशीदा नहीं रह सकती। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर इस का येह यक़ीने कामिल रोज़े का अ़-मली नतीजा है, क्यूं कि दूसरी इबादतें किसी न किसी ज़ाहिरी ह़-र-कत से अदा की जाती हैं मगर रोज़े का तअ़ल्लुक़ बात़िन से है, इस का ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता अगर वोह छुप कर खा पी ले तब भी लोग तो येही समझते रहेंगे कि येह रोज़ादार है, मगर मह़ज़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के बाइ़स वोह खाने पीने से अपने आप को बचा रहा है।

बच्चे को कब रोज़ा रखवाया जाए ? : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "बच्चा

www.dawateislami.net

जैसे ही आठवें साल में क़दम रखे (उस के) वली (या'नी सर परस्त) पर लाज़िम है कि उसे नमाज़ रोज़े का हुक्म दे और जब ग्यारहवां साल शुरूअ़ हो तो वली (या'नी सर परस्त) पर वाजिब है कि सौमो सलात (नमाज़ न पढ़ने और रोज़ा न रखने) पर मारे बशर्ते कि रोज़े की त़ाक़त हो और रोज़ा ज़रर (या'नी नुक़्सान) न करे।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 345) फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : बच्चे की उ़म्र दस साल की हो जाए और (ग्यारहवें में क़दम रख दे और) उस में **रोज़ा** रखने की त़ाक़त हो तो उस से **र-मज़ानुल मुबारक** में **रोज़ा** रखवाया जाए। अगर पूरी त़ाक़त होने के बा वुजूद न रखे तो मार कर रखवाइये अगर रख कर तोड़ दिया तो क़ज़ा का हुक्म न देंगे और नमाज़ तोड़ दे तो फिर पढ़वाइये। (رَدُّالْمُحْتَار ج٣ ص٤٤٢)

आ'ला ह़ज़रत को वालिद साह़िब ने ख़्वाब में फ़रमाया (ह़िकायत) : "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा **206** पर मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपना ख़्वाब इर्शाद फ़रमाते हैं : अभी चन्द साल हुए माहे रजब में ह़ज़रत वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया : "अब की र-मज़ान में मरज़ शदीद होगा रोज़ा न छोड़ना।" वैसा ही हुवा और हर चन्द त़बीब वग़ैरा ने कहा (मगर) मैं ने بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰى रोज़ा न छोड़ा और इसी की ब-र-कत ने بِفَضْلِهٖ تَعَالٰى शिफ़ा दी कि ह़दीस में इर्शाद हुवा है : صُوْمُوْا تَصِحُّوْا या'नी **रोज़ा** रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे। (مُعجَم اَوسط ج٦ ص١٤٧ حديث ٨٣١٢)

रोज़े से सिह़्ह़त मिलती है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बनी इसराईल के एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि आप अपनी क़ौम को ख़बर दीजिये कि जो भी बन्दा मेरी रिज़ा के लिये **एक दिन का रोज़ा** रखता है तो मैं उस के **जिस्म को सिह़्ह़त** भी इनायत फ़रमाता हूं और उस को अ़ज़ीम अज्र भी दूंगा।"

(شُعَبُ الايمان ج٣ ص٤١٢ حديث٣٩٢٣)

www.dawateislami.net

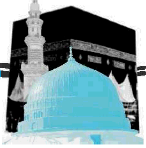

मे'दे का वरम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अह़ादीसे मुबा-रका से मुस्तफ़ाद हुवा कि **रोज़ा** अज्रो सवाब के साथ साथ ह़ुसूले **सिह़्ह़त** का भी ज़रीआ़ है । अब तो साइन्स दान भी अपनी तह़क़ीक़ात में इस ह़क़ीक़त को तस्लीम करने लगे हैं । जैसा कि ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी का प्रोफ़ेसर मूर पॉलिड (MOORE PALID) कहता है : "मैं इस्लामी उ़लूम पढ़ रहा था जब रोज़ों के बारे में पढ़ा तो उछल पड़ा कि इस्लाम ने अपने मानने वालों को कैसा अ़ज़ीमुश्शान नुस्ख़ा दिया है ! मुझे भी शौक़ हुवा, लिहाज़ा मैं ने मुसल्मानों की त़र्ज़ पर रोज़े रखने शुरूअ़ कर दिये । अ़र्सए दराज़ से मेरे **मे'दे पर वरम** था, कुछ ही दिनों के बा'द मुझे तक्लीफ़ में कमी मह़सूस हुई, मैं रोज़े रखता रहा यहां तक कि एक महीने में मेरा मरज़ बिल्कुल ख़त्म हो गया !"

ह़ैरत अंगेज़ इन्किशाफ़ात : हॉलेन्ड का पादरी एल्फ़ गाल (ALF GAAL) कहता है : मैं ने **शूगर, दिल** और **मे'दे** के मरीज़ों को मुसलसल **30 दिन रोज़े** रखवाए, नतीजतन **शूगर** वालों की शूगर कन्ट्रोल हो गई, **दिल** के मरीज़ों की घबराहट और सांस का फूलना कम हुवा और **मे'दे** के मरीज़ों को सब से ज़ियादा फ़ाएदा हुवा । एक अंग्रेज़ माहिरे नफ़्सियात सिग्मन्ड फ़्राईड (Sigmund Freud) का बयान है, रोज़े से जिस्मानी खिचाव, ज़ेहनी डिप्रेशन और नफ़्सियाती अमराज़ का ख़ातिमा होता है ।

डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम : एक अख़्बारी रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ जर्मनी, इंग्लेन्ड और अमरीका के माहिर डॉक्टरों की तह़क़ीक़ाती टीम **र-मज़ानुल मुबारक** में पाकिस्तान आई और उन्हों ने बाबुल मदीना कराची, मर्कज़ुल औलिया लाहोर और दियारे मुह़द्दिसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद पंजाब पाकिस्तान) का इन्तिख़ाब किया । जाएज़ा (Survey) के बा'द उन्हों ने येह रिपोर्ट पेश की : चूंकि मुसल्मान नमाज़ पढ़ते और **र-मज़ानुल मुबारक** में इस की ज़ियादा पाबन्दी करते हैं इस लिये वुज़ू करने से नाक, कान और गले के अमराज़ में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है, नीज़ मुसल्मान रोज़े के बाइस कम खाते हैं लिहाज़ा मे'दे, जिगर, दिल और आ'साब (या'नी पठ्ठों) के अमराज़ में कम मुब्तला होते हैं ।

www.dawateislami.net

ख़ूब डट कर खाने से बीमारियां पैदा होती हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी नफ़्सिही **रोज़े** से कोई बीमार नहीं होता बल्कि स-ह़री व इफ़्त़ारी में बे एह़तियात़ियों और बद परहेज़ियों के सबब नीज़ दोनों वक़्त ख़ूब मुरग़्ग़न (या'नी तेल, घी वाली) और तली हुई ग़िज़ाओं के इस्ति'माल और रात भर वक़्तन फ़ वक़्तन खाते पीते रहने से रोज़ादार बीमार हो जाता है, लिहाज़ा स-ह़री और इफ़्त़ार के वक़्त खाने पीने में एह़तियात़ बरत़नी चाहिये, रात के दौरान पेट में ग़िज़ा का इतना ज़ियादा भी ज़ख़ीरा न कर लिया जाए कि दिन भर डकारें आती रहें और रोज़े में भूक प्यास का एह़सास ही न रहे, अगर भूक प्यास का एह़सास ही न रहा तो फिर रोज़े का लुत़्फ़ ही क्या है ! देखा जाए तो एक त़रह़ से **रोज़े** का मज़ा ही इस बात में है कि सख़्त गरमी हो, शिद्दते प्यास से लब सूख गए हों और भूक से ख़ूब निढाल हो चुके हों ऐसे में काश ! **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا की मीठी मीठी गरमी और ठन्डी ठन्डी धूप की याद ताज़ा हो और ऐ काश ! करबला के तपते हुए सह़रा और गुलिस्ताने नुबुव्वत के महक्ते हुए नौ शिगुफ़्ता फूलों, तीन दिन की भूक प्यास से तड़पते बिलक्ते "ह़क़ीक़ी म-दनी मुन्नों" और शहन्शाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के भूके प्यासे मज़्लूम शहज़ादों की याद तड़पाने लगे, और जिस वक़्त भूक प्यास कुछ ज़ियादा ही सताए उस वक़्त तस्लीमो रिज़ा के पैकर, मदीने के ताजवर, नबियों के सरवर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शि-कमे अत़्हर पर बंधे हुए बा मुक़द्दर पथ्थर भी याद आ जाएं तो क्या कहने ! लिहाज़ा मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई रोज़े तो ऐसे होने चाहिएं कि हम अपने आक़ाओं और सरकारों की ह़सीन यादों में गुम हो जाएं।

कैसे आक़ाओं का हूं बन्दा रज़ा

बोलबाले मेरी सरकारों के

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 360)

बिग़ैर ऑपरेशन के विलादत हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की नूरानिय्यत और रूह़ानिय्यत पाने और म-दनी ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर

www.dawateislami.net

ग़ैर सियासी तह्रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें और ब-र-कतें हैं! ग़ालिबन 1998 सि.ई. का वाक़िआ़ है, **हैदरआबाद** (बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई की अहलिया उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे, डॉक्टर का कहना था कि शायद **ऑपरेशन** करना पड़ेगा। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह्रीक, **दा'वते इस्लामी** का बैनल अक़्वामी **तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना, मुलतान) का वक़्त क़रीब था। इज्तिमाअ़ के बा'द सुन्नतों की तरबियत के एक माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की उन इस्लामी भाई की निय्यत थी। इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचे, चूंकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआ़वुन के लिये मौजूद थे, अहलियए मोह़-त-रमा ने अश्कबार आंखों से उन्हें सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (मुलतान) के लिये अल वदाअ़ किया। उन का ज़ेह्न येह बना हुवा था कि अब तो बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और फिर वहां से एक माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करना है कि काश! इस की ब-र-कत से आ़फ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। बेचारे ग़रीब थे, उन के पास तो **ऑपरेशन** के अख़राजात भी नहीं थे! बहर ह़ाल वोह मदीनतुल औलिया **मुलतान शरीफ़** ह़ाज़िर हो गए। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ख़ूब दुआ़एं मांगीं। इज्तिमाअ़ की इख़्तितामी **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** के बा'द उन्हों ने घर पर फ़ोन किया तो उन की अम्मीजान ने फ़रमाया : **मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ **ने बिग़ैर ऑपरेशन के तुम्हें चांद सी म-दनी मुन्नी अ़ता फ़रमाई है।** उन्हों ने ख़ुशी से झूमते हुए अ़र्ज़ की : अम्मीजान! मेरे लिये क्या हुक्म है? आ जाऊं या एक माह के लिये म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनूं? अम्मीजान ने फ़रमाया : "बेटा! बे फ़िक्र हो कर **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करो।" अपनी **म-दनी मुन्नी** की ज़ियारत की ह़सरत दिल में दबाए

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह एक माह के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ रवाना हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से उन की मुश्किल आसान हो गई थी। **म-दनी क़ाफ़िलों की म-दनी बहारों** की ब-र-कत के सबब घर वालों का बहुत ज़बर दस्त म-दनी ज़ेहन बन गया, उन इस्लामी भाई का बयान है कि मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है : जब आप **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को मह़फ़ूज़ तसव्वुर करती हूं।

ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो *उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो*
बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी *ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो*

(वसाइले बख़्शिश, स. 674, 675)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़े की जज़ा : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आदमी के हर नेक काम का बदला दस से सात सो गुना तक दिया जाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : اِلَّا الصَّوْمَ فَاِنَّهٗ لِىْ وَاَنَا اَجْزِىْ بِهٖ۔ या'नी सिवाए रोज़े के कि रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मज़ीद इर्शाद है : बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को सिर्फ़ मेरी वज्ह से तर्क करता है। रोज़ादार के लिये **दो ख़ुशियां** हैं, एक **इफ़्त़ार** के वक़्त और एक अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त, रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है।"

(مسلم ص ٥٨٠ حديث ١١٥١)

मज़ीद इर्शाद है : **रोज़ा** सिपर (या'नी ढाल) है और जब किसी के **रोज़े** का दिन हो तो न बेहूदा बके और न ही चीख़े, फिर अगर कोई और शख़्स इस से गालम गलोच करे या लड़ने पर आमादा हो तो कह दे : "मैं रोज़ादार हूं।" (بُخاری ج ١ ص ٦٢٤ حديث ١٨٩٤)

रोज़े का ख़ुसूसी इन्आ़म : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बयान कर्दा अह़ादीसे मुबा-रका

www.dawateislami.net

में **रोज़े** की कई ख़ुसूसिय्यात इर्शाद फ़रमाई गई हैं। कितनी प्यारी बिशारत है उस रोज़ादार के लिये जिस ने इस त़रह़ **रोज़ा** रखा जिस त़रह़ **रोज़ा** रखने का ह़क़ है। या'नी खाने पीने और जिमाअ़ से बचने के साथ साथ अपने तमाम आ'ज़ा को भी गुनाहों से बाज़ रखा तो वोह रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से उस के लिये तमाम पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया। और ह़दीसे मुबारक का येह फ़रमाने आ़लीशान तो ख़ास त़ौर पर क़ाबिले तवज्जोह है जैसा कि सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने ख़ुश गवार सुनाते हैं : "فَاِنَّهٗ لِیْ وَاَنَا اَجْزِیْ بِهٖ" या'नी रोज़ा मेरे लिये है और इस की जज़ा मैं ख़ुद ही दूंगा। ह़दीसे क़ुदसी के इस इर्शादे पाक को बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने "اَنَا اُجْزٰی بِهٖ" भी पढ़ा है जैसा कि **मिरआतुल मनाजीह़** वग़ैरा में है तो फिर मा'ना येह होंगे : "**रोज़े** की जज़ा मैं ख़ुद ही हूं।" سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! या'नी **रोज़ा** रख कर रोज़ादार बज़ाते ख़ुद **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ही को पा लेता है।

नेक आ'माल की जज़ा जन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बयान हुवा है कि जो अच्छे आ'माल करेगा उसे जन्नत मिलेगी। चुनान्चे **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह 30 **सू-रतुल बय्यिनह** की आयत नम्बर 7 और 8 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓىٕكَ هُمْ خَیْرُ الْبَرِیَّةِ ؕ﴿۷﴾ جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّهٗ ﴿۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये वोही तमाम मख़्लूक़ में बेहतर हैं। उन का सिला उन के रब के पास बसने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बहें, उन में हमेशा हमेशा रहें। **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी। येह उस के लिये है जो अपने रब से डरे।

www.dawateislami.net

ग़ैरे सह़ाबी के लिये "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" कहना कैसा ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात बिल्कुल ग़लत़ है कि "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" कहना लिखना सिर्फ़ **सह़ाबी** के नाम के साथ मख़्सूस है। पेश कर्दा आयात के इस आख़िरी ह़िस्से رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ وَ رَضُوْا عَنْہُ ؕ ذٰلِکَ لِمَنْ خَشِیَ رَبَّہٗ ۝۸ **(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उन से राज़ी और वोह उस से राज़ी, येह उस के लिये है जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से डरे) ने इस अ़वामी ग़लत़ फ़हमी को जड़ से उखाड़ दिया ! ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ रखने वाले हर मोमिन ख़्वाह वोह सह़ाबी हो या ग़ैरे सह़ाबी सब के लिये येह बिशारते उ़ज़्मा इर्शाद फ़रमाई गई है कि जो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वाला है वोह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ وَ رَضُوْا عَنْہُ ؕ के ज़ुम्रे में दाख़िल है, बेशक **हर सह़ाबी और वली के लिये "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" लिखना और बोलना बिल्कुल दुरुस्त व जाइज़ है।** जिस ने ईमान के साथ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक लम्ह़ा भर भी सोह़बत पाई या देखा और उस का ईमान पर ख़ातिमा हुवा वोह **सह़ाबी** है। बड़े से बड़ा वली, **सह़ाबी** के मर्तबे को नहीं पा सकता, हर **सह़ाबी** आ़दिल और जन्नती है।

मुझे मोतियों वाला चाहिये : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ" की बात भी ज़िम्नन ज़ेरे बह़स आ गई, अब अस्ल मौज़ूअ़ पर आते हैं : नमाज़, ह़ज, ज़कात, ग़ु-रबा की इमदाद, बीमारों की इ़यादत, मसाकीन की ख़बरगीरी वग़ैरा तमाम आ'माले ख़ैर से जन्नत मिलती है, मगर **रोज़ा** वोह इ़बादत है जिस से जन्नत वाला या'नी ख़ुद मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ ही मिल जाता है। कहते हैं : **एक** मर्तबा मह़मूद ग़ज़्नवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی के कुछ क़ीमती मोती अपने अफ़्सरान के सामने बिखर गए, फ़रमाया : "चुन लीजिये !" और ख़ुद आगे चल दिये। थोड़ी दूर जाने के बा'द मुड़ कर देखा तो अयाज़ घोड़े पर सुवार पीछे चला आ रहा है। पूछा : **अयाज़ !** क्या तुझे मोती नहीं चाहिएं ? अयाज़ ने अ़र्ज़ की : "आ़लीजाह ! जो मोतियों के त़ालिब थे वोह मोती चुन रहे हैं, मुझे तो मोती नहीं बल्कि मोतियों वाला चाहिये।" (بوستانِ سعدی ص ۱۱۰ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

हम रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के जन्नत रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की

इस सिल्सिले में एक ह़दीसे मुबारक भी मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ फ़रमाते हैं : मैं रात हुज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारता था तो मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास वुज़ू का पानी और आप की ज़रूरत की चीज़ें (जैसे मिस्वाक) ले कर ह़ाज़िर हुवा तो रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : سَلۡ ! या'नी मांग क्या मांगता है ? मैं ने अ़र्ज़ की : اَسۡئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِي الۡجَنَّةِ या'नी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जन्नत में आप की रफ़ाक़त (या'नी पड़ोस) चाहिये। (गोया अ़र्ज़ कर रहे हैं :)

तुझ से तुझी को मांग लूं तो सब कुछ मिल जाए
सो सुवालों से येही एक सुवाल अच्छा है

(दरियाए रह़मत मज़ीद जोश में आया) और फ़रमाया : "اَوۡ غَيۡرَ ذٰلِكَ؟ या'नी कुछ और मांगना है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "बस सिर्फ़ येही।"

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली सारी काएनात
मुझ सा कोई गदा नहीं, तुझ सा कोई सख़ी नहीं

(जब ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ जन्नत की रफ़ाक़त (पड़ोस) त़लब कर चुके और मज़ीद किसी ह़ाजत के त़लब करने से इन्कार कर दिया) तो इस पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "فَاَعِنِّيۡ عَلٰى نَفۡسِكَ بِكَثۡرَةِ السُّجُوۡدِ" या'नी अपने नफ़्स पर कस्रते सुजूद (या'नी ज़ियादा नवाफ़िल) से मेरी मदद कर। (مسلم ص۲۵۳ حدیث ۴۸۹)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जो चाहो मांग लो ! : سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله ! इस ह़दीसे मुबारक ने तो ईमान ही ताज़ा कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बिला किसी तक़्यीद व तख़्सीस मुत़्लक़न फ़रमाना : سَلْ ؟ या'नी मांग क्या मांगता है ? इस बात को ज़ाहिर करता है कि सारे ही मुआ़-मलात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ में हैं, जो चाहें जिस को चाहें अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से अ़त़ा कर दें। अ़ल्लामा बूसीरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **क़सीदए बुर्दा शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

فَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَهَا وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ

या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या और आख़िरत आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के जूदो सख़ावत का ह़िस्सा है और लौह़ो क़लम का इ़ल्म तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़लूमे मुबा-रका का एक ह़िस्सा है।

اگر خیریت دُنیا و عُقبٰی آرزو داری
بدَرگاہش بیاد ہر چہ مَن خواہی تمنّا کُن

या'नी दुन्या व आख़िरत की ख़ैर चाहते हो तो इस आस्ताने अ़र्श निशान पर आओ और जो चाहो मांग लो !

(اَشِعَّةُ اللَّمعات ج ١ ص ٤٢٤، ٤٢٥ وغیرہ)

ख़ालिक़े कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहान दे दिये क़ब्ज़ा व इख़्तियार में

"२-मज़ानुल करीम" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से

रोज़े के फ़ज़ाइल से मु-तअ़ल्लिक़ 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

जन्नती दरवाज़ा : ﴾1﴿ बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस को **रय्यान** कहा जाता है, इस से क़ियामत के दिन रोज़ादार दाख़िल होंगे इन के इलावा कोई और दाख़िल न होगा। कहा जाएगा : रोज़ेदार कहां हैं ? पस येह लोग खड़े होंगे इन के इलावा कोई और इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा। जब येह

www.dawateislami.net

दाख़िल हो जाएंगे तो दरवाज़ा बन्द कर दिया जाएगा पस फिर कोई इस दरवाज़े से दाख़िल न होगा।

(بُخاری ج۱ص۶۲۵حدیث۱۸۹۶)

साबिक़ा गुनाहों का कफ़्फ़ारा : ﴾2﴿ जिस ने र-मज़ान का **रोज़ा** रखा और उस की हुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो (कुछ गुनाह) पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया। (الاحسان بترتیب صحیح ابنِ حَبّان ج۵ ص۱۸۳حدیث۳۴۲۴)

जहन्नम से 70 साल की मसाफ़त दूर : ﴾3﴿ जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का **रोज़ा** रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर कर देगा।

(بُخاری ج۲ص۲۶۵حدیث۲۸۴۰)

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : ﴾4﴿ जिस ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक कव्वा जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए। (ابو یعلٰی ج۱ ص۳۸۳حدیث۹۱۷)

सुर्ख़ याक़ूत का मकान : ﴾5﴿ जिस ने माहे र-मज़ान का एक रोज़ा भी ख़ामोशी और सुकून से रखा उस के लिये जन्नत में एक घर सब्ज़ ज़बर-जद या सुर्ख़ याक़ूत का बनाया जाएगा।

(مُعجَم اَوسَط ج ۱ ص ۳۷۹ حدیث ۱۷۶۸)

जिस्म की ज़कात : ﴾6﴿ हर शै के लिये ज़कात है और जिस्म की ज़कात **रोज़ा** है और **रोज़ा** आधा सब्र है। (ابنِ ماجه ج ۲ ص۳۴۷حدیث۱۷۴۵)

सोना भी इ़बादत है : ﴾7﴿ **रोज़ादार** का सोना इ़बादत और इस की ख़ामोशी तस्बीह़ करना और इस की दुआ़ क़बूल और इस का अ़मल मक़्बूल होता है। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۴۱۵حدیث۳۹۳۸)

आ'ज़ा का तस्बीह़ करना : ﴾8﴿ जो बन्दा **रोज़े** की ह़ालत में सुब्ह़ करता है, उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस के आ'ज़ा **तस्बीह़** करते हैं और आस्माने दुन्या पर रहने वाले (फ़िरिश्ते) उस के लिये सूरज डूबने तक **मग़्फ़िरत** की दुआ़ करते रहते हैं। अगर वोह एक या दो रक्अ़तें पढ़ता है तो येह आस्मानों में उस के लिये नूर बन जाती हैं और **हूरे ईन** (या'नी बड़ी आंखों वाली

www.dawateislami.net

हूरों) में से उस की बीवियां कहती हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू इस को हमारे पास भेज दे हम इस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ हैं। और अगर वोह لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ या سُبْحٰنَ اللّٰهِ या اَللّٰهُ اَكْبَر पढ़ता है तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस का सवाब सूरज डूबने तक लिखते रहते हैं। (ایضاً ص۲۹۹حدیث۳۵۹۱)

जन्नती फल : ﴾9﴿ जिस को रोज़े ने खाने या पीने से रोक दिया कि जिस की उसे ख़्वाहिश थी तो **अल्लाह तआला उसे जन्नती फलों** से खिलाएगा और जन्नती शराब से सैराब करेगा।

(ایضاً ص۴۱۰حدیث۳۹۱۷)

सोने का दस्तर ख़्वान : ﴾10﴿ क़ियामत वाले दिन रोज़ादारों के लिये एक **सोने का दस्तर ख़्वान** रखा जाएगा, जिस से वोह खाएंगे हालां कि लोग (ह़िसाब किताब के) मुन्तज़िर होंगे।

(کَنْزُ الْعُمّال ج۸ص۲۱۴حدیث۲۳۶۴۰)

सात क़िस्म के आ'माल : ﴾11﴿ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आ'माल सात क़िस्म पर हैं, दो अ़मल वाजिब करने वाले, दो अ़मलों की जज़ा उन की मिस्ल, एक अ़मल की जज़ा अपने से दस गुना, एक अ़मल की सात सो गुना तक और एक अ़मल ऐसा है कि उस का सवाब **अल्लाह तआला** के इ़लावा कोई नहीं जानता। पस जो दो वाजिब करने वाले हैं ﴾1﴿ वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत इख़्लास के साथ इस त़रह़ की, कि किसी को उस का शरीक न ठहराया तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ﴾2﴿ और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिला कि उस के साथ किसी को शरीक ठहराया तो उस के लिये दोज़ख़ वाजिब हो गई। और जिस ने एक गुनाह किया तो उस की मिस्ल (या'नी एक ही गुनाह की) जज़ा पाएगा और जिस ने सिर्फ़ नेकी का इरादा किया तो एक नेकी की जज़ा पाएगा। और जिस ने नेकी कर ली तो वोह दस (नेकियों का अज्र) पाएगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में अपना माल ख़र्च किया तो उस के ख़र्च किये हुए एक दिरहम को सात सो दिरहम और एक दीनार को सात सो दीनार में बढ़ा दिया जाएगा और **रोज़ा अल्लाह तआला** के लिये है इस के रखने वाले का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा कोई नहीं जानता।"

(شُعَبُ الایمان ج۳ص۲۹۸حدیث۳۵۸۹)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस का ईमान पर ख़ातिमा होगा वोह या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से बे ह़िसाब या مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ गुनाहों का अ़ज़ाब हुवा तब भी बिल आख़िर यक़ीनन दाख़िले जन्नत होगा। और जिस का (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा वोह हमेशा हमेशा दोज़ख़ में रहेगा। जिस ने एक गुनाह किया उस को एक ही गुनाह का बदला मिलेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के क़ुरबान ! सिर्फ़ **नेकी की निय्यत** करने पर एक नेकी का सवाब और अगर नेकी कर ली तो सवाब दस गुना, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने वाले को सात सो गुना और **रोज़ादार** की भी कितनी ज़बर दस्त अ़-ज़मत है कि इस के सवाब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।

बे ह़िसाब अज्र : **ह़ज़रते** सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "बरोज़े क़ियामत एक मुनादी इस त़रह़ निदा करेगा, हर बोने वाले (या'नी अ़मल करने वाले) को उस की खेती (या'नी अ़मल) के बराबर अज्र दिया जाएगा सिवाए क़ुरआन वालों (या'नी आ़लिमे क़ुरआन) और रोज़ादारों के कि इन्हें बे ह़दो **बे ह़िसाब अज्र** दिया जाएगा।" (شُعَبُ الایمان ج٣ص٤١٣ حديث٣٩٢٨)

यरक़ान से सिह़्ह़त मिल गई : **रोज़ों** की ब-र-कतों को दोबाला करने और अपने बात़िन में इ़ल्मे दीन से उजाला करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** को अपना लीजिये। अपनी इस्लाह़ की ख़ात़िर **मक-त-बतुल मदीना** से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ले कर पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये और सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करना अपना मा'मूल बनाइये, **म-दनी क़ाफ़िले** की भी क्या ख़ूब **म-दनी बहारें** हैं ! 1994 सि.ई. की बात है, ज़मज़म नगर (हैदरआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बच्चों की अम्मी का **यरक़ान** काफ़ी बढ़ चुका था और वोह बाबुल मदीना कराची के अन्दर अपने मयके में ज़ेरे इ़लाज थीं। उन इस्लामी भाई ने **63 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र इख़्तियार

www.dawateislami.net

किया और इस ज़िम्न में बाबुल मदीना कराची तशरीफ़ लाए, फ़ोन पर घर पर राबित़ा किया, त़बीअ़त काफ़ी तश्वीश नाक थी, बिलोरबिन (Bilirubin) तश्वीश नाक ह़द तक बढ़ चुका था तक़रीबन 25 ग्लूकोज़ की ड्रिपें लगाने के बा वुजूद ख़ातिर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा था । इन्हों ने उन को तसल्ली देते हुए कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **म–दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर** हूं, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतें मुयस्सर हैं, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ म–दनी क़ाफ़िले की ब–र–कत से सब बेहतर हो जाएगा । इस के बा'द भी उन्हों ने बराबर राबित़ा रखा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ बरोज़ सिह़्ह़त बेहतर होती जा रही थी । पांचवें दिन बाबुल मदीना से आगे सफ़र दरपेश था, उन्हों ने जब फ़ोन किया तो उन्हें येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनने को मिली : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **बिलोरबिन की रिपोर्ट नोर्मल आ गई है और डॉक्टर ने इत़्मीनान का इज़्हार किया है । अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करते हुए वोह ख़ुशी ख़ुशी **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह म–दनी क़ाफ़िले में मज़ीद आगे सफ़र पर रवाना हो गए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां रोज़ा रखने के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं वहीं बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के **र–मज़ानुल मुबारक** का **रोज़ा** तर्क करने पर सख़्त वई़दें भी हैं । **र–मज़ान शरीफ़** का एक भी रोज़ा जो बिला किसी उ़ज़्रे शर–ई़ जान बूझ कर ज़ाएअ़ कर दे तो अब उ़म्र भर भी अगर रोज़े रखता रहे तब भी उस छोड़े हुए एक रोज़े की फ़ज़ीलत नहीं पा सकता । चुनान्चे

एक रोज़ा छोड़ने का नुक़्सान : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार दो जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जिस ने **र–मज़ान** के एक दिन का **रोज़ा** बिग़ैर रुख़्सत व बिग़ैर मरज़ इफ़्त़ार किया (या'नी न रखा) तो ज़माने भर का **रोज़ा** भी उस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले ।" (ترمذی ج۲ ص۱۷۵ حدیث۷۲۳) या'नी वोह फ़ज़ीलत जो **र–मज़ानुल मुबारक** में रोज़ा रखने की थी अब किसी त़रह़ नहीं पा सकता । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 985 मुलख़्ख़सन)

उलटे लटके हुए लोग : जो लोग **रोज़ा** रख कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के तोड़ डालते हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब से ख़ूब डरें । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहली

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं, मैं ने सरकारे मदीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : "मैं सोया हुवा था तो ख़्वाब में दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे एक दुश्वार गुज़ार पहाड़ पर ले गए, जब मैं पहाड़ के दरमियानी हि़स्से पर पहुंचा तो वहां बड़ी सख़्त आवाज़ें आ रही थीं, मैं ने कहा : "येह कैसी आवाज़ें हैं ?" तो मुझे बताया गया कि येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं। फिर मुझे और आगे ले जाया गया तो **मैं कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रा कि उन को उन के टख़्नों की रगों में बांध कर (उलटा) लटकाया गया था और उन लोगों के जबड़े फाड़ दिये गए थे जिन से ख़ून बह रहा था,** तो मैं ने पूछा : "येह कौन लोग हैं ?" तो मुझे बताया गया कि "येह लोग **रोज़ा** इफ़्त़ार करते थे क़ब्ल इस के कि **रोज़ा** इफ़्त़ार करना ह़लाल हो।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ج۹ص۲۸۶ حدیث۷۴۴۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ान का **रोज़ा** बिला इजाज़ते शर-ई तोड़ देना बहुत बड़ा गुनाह है। वक़्त से पहले इफ़्त़ार करने से मुराद येह है कि **रोज़ा** तो रख लिया मगर सूरज ग़ुरूब होने से पहले पहले जान बूझ कर किसी सह़ीह़ मजबूरी के बिग़ैर तोड़ डाला। इस ह़दीसे पाक में जो अ़ज़ाब बयान किया गया है वोह **रोज़ा** रख कर तोड़ देने वाले के लिये है और जो बिला उ़ज़्र शर-ई **रोज़ए र-मज़ान** तर्क कर देता है वोह भी सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़ुफ़ैल हमें अपने क़हरो ग़ज़ब से बचाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

तीन बद बख़्त :

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने **माहे र-मज़ान** को पाया और उस के रोज़े न रखे वोह शख़्स शक़ी (या'नी बद बख़्त) है, जिस ने अपने वालिदैन या किसी एक को पाया और उन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी शक़ी (या'नी बद बख़्त) है।"

(مُعجَم اَوسَط ج۲ص۶۲ حدیث۳۸۷۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नाक मिट्टी में मिल जाए : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास मेरा ज़िक्र किया गया तो उस ने मेरे ऊपर दुरूद नहीं पढ़ा और उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए जिस पर र-मज़ान का महीना दाख़िल हुवा फिर उस की मग़्फ़िरत होने से क़ब्ल गुज़र गया और उस आदमी की नाक मिट्टी में मिल जाए कि जिस के पास उस के वालिदैन ने बुढ़ापे को पा लिया और उस के वालिदैन ने उस को जन्नत में दाख़िल नहीं किया।" (या'नी बूढ़े मां बाप की ख़िदमत कर के जन्नत ह़ासिल न कर सका) (مسند احمد ج۳ ص۶۱ حدیث۷۴۵۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب !   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़े के तीन द-रजे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की अगर्चे ज़ाहिरी शर्त़ येही है कि रोज़ादार क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से बाज़ रहे। ताहम रोज़े के कुछ बात़िनी आदाब भी हैं जिन का जानना ज़रूरी है ताकि ह़क़ीक़ी मा'नों में हम **रोज़े** की ब-र-कतें ह़ासिल कर सकें। चुनान्चे रोज़े के तीन द-रजे हैं :

(1) अ़वाम का रोज़ा (2) ख़्वास का रोज़ा (3) अख़स्सुल ख़्वास का रोज़ा

(1) अ़वाम का रोज़ा : रोज़े के लुग़वी मा'ना हैं : "रुकना" लिहाज़ा शरीअ़त की इस्तिलाह़ में सुब्ह़े सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक क़स्दन खाने पीने और जिमाअ़ से "रुके रहने" को **रोज़ा** कहते हैं और येही अ़वाम या'नी आ़म लोगों का **रोज़ा** है।

(2) ख़्वास का रोज़ा : खाने पीने और जिमाअ़ से रुके रहने के साथ साथ जिस्म के तमाम आ'ज़ा को बुराइयों से "रोकना" **ख़्वास** या'नी ख़ास लोगों का **रोज़ा** है।

(3) अख़स्सुल ख़्वास का रोज़ा : अपने आप को तमाम तर उमूर से "रोक" कर सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु-तवज्जेह होना, येह **अख़स्सुल ख़्वास** या'नी ख़ासुल ख़ास लोगों का **रोज़ा** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 966 मुलख़्ख़सन)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रूरत इस अम्र की है कि खाने पीने वग़ैरा से "रुके रहने" के साथ साथ अपने तमाम तर आ'ज़ाए बदन को भी रोज़े का पाबन्द बनाया जाए।

www.dawateislami.net

दाता साह़िब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **का इर्शाद :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "रोज़े की ह़क़ीक़त "रुकना" है और रुके रहने की बहुत सी शराइत़ हैं म-सलन **मे'दे** को खाने पीने से रोके रखना, **आंख** को बद निगाही से रोके रखना, **कान** को ग़ीबत सुनने, ज़बान को फ़ुज़ूल और फ़ितना अंगेज़ बातें करने और **जिस्म** को हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ की मुख़ा-लफ़त से रोके रखना **रोज़ा** है। जब बन्दा इन तमाम शराइत़ की पैरवी करेगा तब वोह **ह़क़ीक़तन रोज़ादार** होगा।" (کَشفُ الْمَحْجُوب ص ۳۵۴،۳۵۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रोज़ा रख कर भी गुनाह तौबा ! तौबा ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदारा ! अपने ह़ाले ज़ार पर तर्स खाइये और ग़ौर फ़रमाइये ! कि रोज़ादार **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में दिन के वक़्त खाना पीना छोड़ देता है ह़ालां कि येह खाना पीना इस से पहले दिन में भी बिल्कुल जाइज़ था, अब ख़ुद ही सोच लीजिये कि जो चीज़ें **र-मज़ान शरीफ़** से पहले ह़लाल थीं वोह भी जब इस मुबारक महीने के मुक़द्दस दिनों में मन्अ़ कर दी गईं तो जो चीज़ें **र-मज़ानुल मुबारक** से पहले भी ह़राम थीं, म-सलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी, गालम गलोच, फ़िल्में डिरामे, गाने बाजे, बद निगाही, दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना, वालिदैन को सताना, लोगों का दिल दुखाना वग़ैरा वोह **र-मज़ानुल मुबारक** में क्यूं न और भी ज़ियादा ह़राम हो जाएंगी ! रोज़ादार जब **र-मज़ानुल मुबारक** में ह़लाल व त़य्यिब खाना पीना छोड़ देता है, ह़राम काम क्यूं न छोड़े ? अब फ़रमाइये ! जो शख़्स पाक और ह़लाल खाना पीना तो छोड़ दे लेकिन ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम ब दस्तूर जारी रखे वोह किस क़िस्म का रोज़ादार है ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **को कुछ ह़ाजत नहीं : याद रखिये !** नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान : "जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना पीना छोड़ दिया है।" (بُخاری ج۱ ص۶۲۸ حدیث۱۹۰۳)

www.dawateislami.net

हज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बुरी बात से मुराद हर ना जाइज़ गुफ़्त-गू है जैसे झूट, बोहतान, ग़ीबत, तोहमत, गाली, ला'न त़ा'न वग़ैरा जिन से बचना ज़रूरी है । (مرقاۃ المفاتیح ج ٤ ص ٤٩١) एक और मक़ाम पर **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "सिर्फ़ खाने और पीने से बाज़ रहने का नाम **रोज़ा** नहीं बल्कि **रोज़ा** तो येह है कि लग़्व और बेहूदा बातों (या'नी वोह बात जिस के करने में मआ़सी (या'नी ना फ़रमानी) है उस) से बचा जाए ।" (اَلْمُستَدرَك ج ٢ ص ٦٧ حديث ١٦١١)

मैं रोज़ादार हूं : **हुज़ूर** सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : तुम से अगर कोई लड़ाई करे, गाली दे तो तुम उस से कह दो कि **मैं रोज़े से हूं ।** (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج ١ ص ٨٧ حديث ١)

आ'ज़ा के रोज़ों की ता'रीफ़ : **आ'ज़ा का रोज़ा** या'नी "जिस्म के तमाम ह़िस्सों को गुनाहों से बचाना ।" येह सिर्फ़ **रोज़ों** ही के लिये मख़्सूस नहीं, बल्कि पूरी ज़िन्दगी इन आ'ज़ा को गुनाहों से बचाना ज़रूरी है और येह जभी मुम्किन है कि हमारे दिलों में ख़ूब **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ पैदा हो जाए । आह ! क़ियामत के उस होशरुबा मन्ज़र को याद कीजिये जब हर त़रफ़ "नफ़्सी नफ़्सी" का आ़लम होगा, सूरज आग बरसा रहा होगा, ज़बानें शिद्दते प्यास के सबब मुंह से बाहर निकल पड़ी होंगी, बीवी शोहर से, मां अपने लख़्ते जिगर से और बाप अपने नूरे नज़र से नज़र बचा रहा होगा, मुजरिमों को पकड़ पकड़ कर लाया जा रहा होगा, उन के मुंह पर मोह्‌र मार दी जाएगी और उन के आ'ज़ा उन के गुनाहों की दास्तान सुना रहे होंगे जिस का "**सूरए यासीन**" की आयत नम्बर 65 में यूं तज़्किरा किया गया है :

اَلْیَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤی اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ اَیْدِیْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : आज हम इन के मूंहों पर मोह्‌र कर देंगे और इन के हाथ हम से बात करेंगे और इन के पाउं इन के किये की गवाही देंगे ।

आह ! ऐ कमज़ोर व ना तुवां इस्लामी भाइयो ! क़ियामत के उस कड़े वक़्त से अपने दिल को डराइये और हर वक़्त अपने आ'ज़ाए बदन को मा'सियत (या'नी ना फ़रमानी) से बाज़

www.dawateislami.net

रखिये । अब आ'ज़ा के रोज़े की तफ़्सीलात पेश की जाती हैं :

आंख का रोज़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आंख का रोज़ा इस त़रह़ रखना चाहिये कि आंख जब भी उठे तो सिर्फ़ और सिर्फ़ जाइज़ उमूर ही की त़रफ़ उठे । आंख से मस्जिद देखिये, कुरआने करीम देखिये, मज़ाराते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की ज़ियारत कीजिये, उ़-लमाए किराम, मशाइख़े इज़ाम और **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** के नेक बन्दों का दीदार कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिखाए तो का'बए मुअ़ज़्ज़मा के अन्वार देखिये, मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की महकी महकी गलियां और वहां के वादी व कोहसार देखिये, मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के दरो दीवार देखिये, सब्ज़ सब्ज़ गुम्बदो मीनार देखिये, मीठे मीठे मदीने के सह़रा व गुलज़ार देखिये, सुनहरी जालियों के अन्वार देखिये, जन्नत की प्यारी प्यारी क्यारी की बहार देखिये । ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ करते हैं :

कुछ ऐसा कर दे मेरे किर्दिगार आंखों में — हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में
उन्हें न देखा तो किस काम की हैं येह आंखें — कि देखने की हैं सारी बहार आंखों में

(सामाने बख़्शिश शरीफ़)

प्यारे रोज़ादारो ! आंख का रोज़ा रखिये और ज़रूर रखिये बल्कि **आंख का रोज़ा** तो डबल बारह घन्टे, तीसों दिन और बारह महीने होना चाहिये । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा **आंखों** से हरगिज़ हरगिज़ **फ़िल्में** न देखिये, **डिरामे** न देखिये, **ना मह़रम** औ़रतों को न देखिये, शह्वत के साथ **अमरदों** को न देखिये, किसी का खुला हुवा सित्र न देखिये, बल्कि बेहतर येह है कि बिला ज़रूरत अपना खुला हुवा **सित्र** भी मत देखिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद से ग़ाफ़िल करने वाले **खेल तमाशे** म-सलन रीछ और बन्दर का नाच वग़ैरा न देखिये (इन को नचाना और इन का नाच देखना दोनों काम ना जाइज़ हैं) क्रिकेट, कबड्डी, फ़ुटबॉल, हॉकी, ताश, शत़रन्ज, विडियो गेम्ज़, टेबल फ़ुटबॉल वग़ैरा वग़ैरा खेल न देखिये । (जब देखने की इजाज़त नहीं तो खेलने की इजाज़त किस त़रह

www.dawateislami.net

हो सकती है ? और इन में बा'ज़ खेल तो ऐसे हैं जो नीकर या चड्डी पहन कर खेले जाते हैं जिस की वज्ह से घुटने बल्कि مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रानें तक खुली रहती हैं और इस त़रह़ दूसरों के आगे रानें या घुटने खोले रहना गुनाह है और दूसरों को इस त़रफ़ नज़र करना भी गुनाह) किसी के घर में बे इजाज़त न झांकिये, किसी का ख़त़ या चिठ्ठी या डायरी की तह़रीर शर-ई इजाज़त के बिग़ैर न देखिये, **याद रखिये ! फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "जो अपने भाई का ख़त़ बिग़ैर इजाज़त देखता है गोया वोह आग में देखता है।" (اَلْمُسْتَدْرَک ج٥ ص٣٨٤ حدیث٧٧٧٩)

उठे न आंख कभी भी गुनाह की जानिब — अ़ता करम से हो ऐसी हमें ह़या या रब !
किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और — सुनें न कान भी ऐबों का तज़्किरा या रब !
दिखा दे एक झलक सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की
बस उन के जल्वों में आ जाए फिर क़ज़ा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 83, 87)

कान का रोज़ा : कानों का रोज़ा येह है कि सिर्फ़ों सिर्फ़ जाइज़ बातें सुनें। म-सलन **कानों** से तिलावत व ना'त सुनिये, सुन्नतों भरे बयानात सुनिये, अच्छी बात, अज़ान व इक़ामत सुनिये, सुन कर जवाब दीजिये, हरगिज़ हरगिज़ गाने बाजे और मूसीक़ी न सुनिये, झूटे चुटकुले न सुनिये, किसी की ग़ीबत न सुनिये, किसी की चुग़ली न सुनिये, किसी के ऐब न सुनिये और जब दो आदमी छुप कर बात करें तो कान लगा कर न सुनिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : **जो शख़्स किसी क़ौम की बातें कान लगा कर सुने ह़ालां कि वोह इस बात को ना पसन्द करते हों या इस बात को छुपाना चाहते हों तो क़ियामत के दिन उस के कानों में पिघला हुवा सीसा डाला जाएगा।** (بُخاری ج٤ ص ٤٢٣ حدیث ٧٠٤٢)

सुनूं न फ़ोह़्श कलामी न ग़ीबतो चुग़ली — तेरी पसन्द की बातें फ़क़त़ सुना या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 87)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ज़बान का रोज़ा : **ज़बान** का रोज़ा येह है कि **ज़बान** सिर्फ़ो सिर्फ़ नेक व जाइज़ बातों के लिये ही ह़-र-कत में आए। म-सलन **ज़बान** से तिलावते कुरआन कीजिये, ज़िक्रो दुरूद का विर्द कीजिये। ना'त शरीफ़ पढ़िये, दर्स दीजिये, सुन्नतों भरा बयान कीजिये, नेकी की दा'वत दीजिये, अच्छी और प्यारी प्यारी दीनदारी वाली बातें कीजिये। फ़ुज़ूल "बक बक" से बचते रहिये। ख़बरदार ! गाली गलोच, झूट, ग़ीबत, चुग़ली वग़ैरा से **ज़बान** नापाक न होने पाए कि "चमचा अगर नजासत से आलूदा हो गया तो दो एक गिलास पानी से पाक हो जाएगा मगर **ज़बान** बे ह़याई की बातों से नापाक हो गई तो इसे सात समुन्दर भी नहीं धो सकेंगे।"

ज़बान की बे एह़तियाती की तबाह कारियां : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन **रोज़ा** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : "जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्त़ार न करे।" लोगों ने **रोज़ा** रखा। जब शाम हुई तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के ह़ाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हो कर अ़र्ज़ करते रहे। **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, इजाज़त दीजिये ताकि **रोज़ा** खोल दूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते। एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दो औ़रतों ने **रोज़ा** रखा और वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में आने से ह़या मह़सूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी **रोज़ा** खोल लें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फेर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर येही बात दोहराई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेहरए अन्वर फैर लिया वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फैर लिया, फिर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : "उन दोनों ने **रोज़ा** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं ? वोह

www.dawateislami.net

तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ, उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो कै कर दें।" वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें **फ़रमाने शाही** सुनाया। उन दोनों ने कै की, तो कै से जमा हुवा ख़ून निकला। उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में वापस ह़ाज़िर हो कर सूरते ह़ाल अ़र्ज़ की। **म-दनी आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों को **आग** खाती। (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी) (ذَمُّ الْغِیبَۃِ لِابْنِ اَبِی الدُّنْیا ص ٧٢ رقم ٣١)

एक और रिवायत में है कि जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुंह फेरा तो वोह सामने आए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह दोनों प्यास की शिद्दत से मरने के क़रीब हैं। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया : "उन दोनों को मेरे पास लाओ।" वोह दोनों ह़ाज़िर हुईं। **सरकारे आ़ली वक़ार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक पियाला मंगवाया और उन में से एक को हुक्म फ़रमाया : "इस में कै करो !" उस ने ख़ून, पीप और गोश्त की कै की, ह़त्ता कि आधा पियाला भर गया। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी को हुक्म दिया कि "तुम भी इस में कै करो !" उस ने भी इसी त़रह़ की कै की, यहां तक कि पियाला भर गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **इन दोनों ने अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ह़लाल कर्दा चीज़ों** (या'नी खाने, पीने वग़ैरा) **से तो रोज़ा रखा मगर जिन चीज़ों को अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने** (इलावा रोज़े के भी) **ह़राम रखा है उन** (ह़राम चीज़ों) **से रोज़ा इफ़्त़ार कर डाला !** हुवा यूं कि एक लड़की दूसरी लड़की के पास बैठ गई और दोनों मिल कर लोगों का गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) लगीं।[1] (مُسندِ اِمام احمد ج٩ ص١٦٥ حدیث٢٣٧١٤)

1 : मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब, "ग़ीबत की तबाह कारियां" पढ़िये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ग़ीबत जैसे गुनाहे कबीरा से बचने का ख़ूब ज़ेह्न बनेगा।

www.dawateislami.net

इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **इल्मे ग़ैब** ह़ासिल है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़-मलात मा'लूम हो जाते हैं। जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे **ग़ैब की ख़बर** इर्शाद फ़रमा दी। बहर ह़ाल **रोज़ा** हो या न हो, **ज़बान** का क़ुफ़्ले मदीना ही भला वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा ! अगर इन **तीन उसूलों** को पेशे नज़र रख लिया जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बड़ा नफ़्अ़ होगा : ﴾1﴿ बुरी बात कहना हर ह़ाल में बुरा है ﴾2﴿ फ़ुज़ूल बात से ख़ामोशी अफ़्ज़ल है ﴾3﴿ अच्छी बात करना ख़ामोशी से बेहतर है।

मेरी ज़बान पे क़ुफ़्ले मदीना लग जाए फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हाथों का रोज़ा : हाथों का रोज़ा येह है कि जब भी हाथ उठें, सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें। म-सलन बा त़हारत क़ुरआने करीम को हाथ लगाइये, नेक लोगों से मुसा-फ़ह़ा कीजिये। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसा-फ़ह़ा करें और नबी (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (ابو یعلٰی ج ۳ ص ۹۰ حدیث ۲۹۵۱) हो सके तो किसी **यतीम** के सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरिये कि हाथ के नीचे जितने बाल आएंगे हर बाल के इवज़ एक एक नेकी मिलेगी। (बच्चा या बच्ची उस वक़्त तक ही यतीम हैं जब तक ना बालिग़ हैं जूं ही बालिग़ हुए यतीम न रहे। लड़का 12 और 15 साल के दरमियान बालिग़ और लड़की 9 और 15 साल के दरमियान बालिग़ा होती है) ख़बरदार ! किसी पर **ज़ुल्मन** हाथ न उठें, **रिश्वत** लेने देने के लिये न उठें, न किसी का माल **चुराएं,** न **ताश** खेलें न पतंग उड़ाएं, न किसी **ना मह़रम औ़रत** से मुसा-फ़ह़ा करें। (बल्कि शहवत का अन्देशा हो तो **अम्रद** से भी हाथ न मिलाएं)

हमेशा हाथ भलाई के वासित़े उठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब !

(वसाइले बख़्शिश, स. 77)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पाउं का रोज़ा : पाउं का रोज़ा येह है कि पाउं उठें तो सिर्फ़ो सिर्फ़ नेक कामों के लिये उठें । म-सलन पाउं चलें तो मसाजिद की त़रफ़ चलें, मज़ाराते औलिया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰى की त़रफ़ चलें, उ़-लमा व सु-लह़ा की ज़ियारत के लिये चलें, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ चलें, नेकी की दा'वत देने के लिये चलें, सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये चलें, नेक सोह़बतों की त़रफ़ चलें, किसी की मदद के लिये चलें, काश ! **मक्कए मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا व **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ चलें, सूए मिना व अ़-रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा चलें, त़वाफ़ व सअ़्य में चलें । हरगिज़ हरगिज़ सिनेमा घर की त़रफ़ न चलें, डिरामा गाह की त़रफ़ न चलें, बुरे दोस्तों की मजलिसों की त़रफ़ न चलें, शत़रन्ज, लुड्डो, ताश, क्रिकेट, फ़ुटबॉल, विडियो गेम्ज़, टेबल फ़ुटबॉल वग़ैरा वग़ैरा खेल खेलने या देखने की त़रफ़ न चलें, काश ! पाउं कभी तो ऐसे भी चलें कि बस मदीना ही मदीना लब पर हो और सफ़र भी मदीने का हो ।

रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम　　करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़ी मा'नों में रोज़े की ब-र-कतें तो उसी वक़्त नसीब होंगी, जब हम तमाम आ'ज़ा का भी **रोज़ा** रखेंगे, वरना भूक और प्यास के सिवा कुछ ह़ासिल न होगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : "बहुत से रोज़ादार ऐसे हैं कि उन को उन के रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं होता, और बहुत से क़ियाम करने वाले ऐसे हैं कि उन को उन के क़ियाम से सिवाए जागने के कुछ ह़ासिल नहीं होता ।" (ابنِ ماجه ج۲ص۳۲۰حديث۱۶۹۰)

K इलेक्ट्रिक में नोकरी मिल गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े की नूरानिय्यत और रूह़ानिय्यत पाने और म-दनी ज़ेहन बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

कीजिये । سُبْحٰنَ اللّٰہ ! दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और म-दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें और ब-र-कतें हैं । चुनान्चे 19.6.2003 को ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई का मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के दा'वत देने पर **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ रुख़ हुवा मगर पाबन्दी नहीं थी । बे रोज़गारी के सबब परेशानी थी, उन्हों ने एक इस्लामी भाई की "इन्फ़िरादी कोशिश" के नतीजे में 41 रोज़ा **म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में दाख़िला ले लिया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों और ब-र-कतों ने उन पर म-दनी रंग चढ़ा दिया, और जीने का ढंग सिखा दिया । **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** पूरा करने के दूसरे या तीसरे दिन उन के बा'ज़ दोस्तों ने बताया : K इलेक्ट्रिक (K-Electric) को मुलाज़िमों की ज़रूरत है, हम ने भी दर-ख़्वास्तें जम्अ़ करवा दी हैं आप भी करवा दीजिये । उन्हों ने कहा : आज कल सिर्फ़ दर-ख़्वास्तों पर कहां ! सिफ़ारिशों (बल्कि रिश्वतों) पर नोकरियों की तरकीब बनती है ! अपने पास तो कुछ भी नहीं । बिल आख़िर उन के इसरार पर उन्हों ने "दर-ख़्वास्त" जम्अ़ करवा दी । इब्तिदाअन तह़रीरी टेस्ट हुए फिर इन्टरव्यू के बा'द मेडीकल टेस्ट की सूरत बनी । बे शुमार असरो रुसूख़ वाली दर-ख़्वास्तों के बा वुजूद वोह वाह़िद ऐसे थे कि हर जगह काम्याब रहे ! फ़ाइनल इन्टरव्यू में उन के घर वालों ने ज़ोर दिया कि पेन्ट शर्ट पहन कर जाओ, मगर वोह तो आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से अंग्रेज़ी लिबास तर्क कर चुके थे लिहाज़ा सफ़ेद शलवार क़मीस में ही पहुंच गए । अफ़्सर ने उन का मज़्हबी ह़ुल्या देख कर बा'ज़ इस्लामी मा'लूमात के सुवालात किये । जिन के उन्हों ने जवाबात दे दिये क्यूं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने येह सब "म-दनी इन्आ़मात व म-दनी क़ाफ़िला कोर्स" के अन्दर सीखे हुए थे । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर किसी सिफ़ारिश व रिश्वत के उन्हें मुला-ज़मत मिल गई । उन के घर वाले **दा'वते इस्लामी** के "म-दनी क़ाफ़िला कोर्स" और म-दनी माह़ोल की ब-र-कत देख कर दंग रह गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मुह़िब बन गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें दा'वते इस्लामी

www.dawateislami.net

की **अ़लाक़ाई मुशा-वरत** के ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में **सुन्नतों** के डंके बजाने और **म-दनी इन्आ़मात** व म-दनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की सआ़दत भी मिली।

नोकरी चाहिये, आइये आइये क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, दूर आफ़त हटे लेने को ब-र-कतें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 672, 675)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़े की निय्यत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़े के लिये **निय्यत** शर्त़ है। लिहाज़ा "बे निय्यते रोज़ा अगर कोई इस्लामी भाई या इस्लामी बहन सुब्ह़े सादिक़ के बा'द से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक बिल्कुल न खाए पिये तब भी उस का **रोज़ा** न होगा" (ماخوذ از رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۳۹۳) र-मज़ान शरीफ़ का **रोज़ा** हो या नफ़्ल या **नज़्रे मुअ़य्यन** का रोज़ा (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी मख़्सूस दिन के **रोज़े** की मन्नत मानी हो म-सलन ख़ुद सुन सके इतनी आवाज़ से यूं कहा हो कि "मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस साल रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की हर पीर शरीफ़ का रोज़ा है।" तो येह **नज़्रे मुअ़य्यन** है और इस मन्नत का पूरा करना वाजिब हो गया।) इन तीनों क़िस्म के रोज़ों के लिये ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ले कर "निस्फ़ुन्नहारे शर-ई" (इसे ज़ह़वए कुब्रा भी कहते हैं) से पहले पहले तक जब भी **निय्यत** कर लें **रोज़ा** हो जाएगा। (دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۳۹۳)

निस्फ़ुन्नहारे शर-ई का वक़्त मा'लूम करने का त़रीक़ा : जिस दिन का **निस्फ़ुन्नहारे शर-ई** मा'लूम करना हो उस दिन के सुब्ह़े सादिक़ से ले कर ग़ुरूबे आफ़्ताब तक वक़्त शुमार कर लीजिये और उस सारे वक़्त के दो ह़िस्से कर लीजिये पहला आधा ह़िस्सा ख़त्म होते ही "निस्फ़ुन्नहारे शर-ई" का वक़्त शुरूअ़ हो गया। म-सलन आज सुब्ह़े सादिक़ ठीक पांच बजे है और ग़ुरूबे आफ़्ताब ठीक छ6 बजे। तो दोनों के दरमियान का वक़्त कुल तेरह घन्टे हुवा, इन के दो ह़िस्से करें तो दोनों में का हर एक ह़िस्सा साढ़े छ6 घन्टे का हुवा। अब सुब्ह़े सादिक़ के पांच बजे के बा'द वाले इब्तिदाई साढ़े छ6 घन्टे साथ मिला लीजिये, तो इस त़रह़ दिन के साढ़े ग्यारह

www.dawateislami.net

बजे के फ़ौरन बा'द "निस्फ़ुन्नहारे शर-ई" का वक़्त शुरूअ़ हो गया तो अब इन तीन त़रह़ के रोज़ों की **निय्यत** नहीं हो सकती। (رَدُّالْمُحتَار ج۳ص۳۹۳ مُلَخَّصا)

बयान कर्दा तीन क़िस्म के रोज़ों के इ़लावा दीगर जितनी भी अक़्सामे रोज़ा हैं उन सब के लिये येह लाज़िमी है कि रातों रात या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ले कर सुब्ह़े सादिक़ तक **निय्यत** कर लीजिये, अगर सुब्ह़े सादिक़ हो गई तो अब **निय्यत** नहीं हो सकेगी। म-सलन क़ज़ाए रोज़ए र-मज़ान, कफ़्फ़ारे के रोज़े, क़ज़ाए रोज़ए नफ़्ल (रोज़ए नफ़्ल शुरूअ़ करने से वाजिब हो जाता है, अब बे उ़ज़्रे शर-ई तोड़ना गुनाह है। अगर किसी त़रह़ से भी टूट गया ख़्वाह उ़ज़्र से हो या बिला उ़ज़्र, इस की क़ज़ा बहर ह़ाल वाजिब है) "रोज़ए नज़्रे ग़ैरे मुअ़य्यन" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये रोज़े की मन्नत तो मानी हो मगर दिन मख़्सूस न किया हो इस मन्नत का भी पूरा करना वाजिब है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मानी हुई हर शर-ई मन्नत का पूरा करना वाजिब है जब कि ज़बान से इस त़रह़ के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज़ से कहे हों कि ख़ुद सुन सके, म-सलन इस त़रह़ कहा : "मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक **रोज़ा** है" अब चूंकि इस में दिन मख़्सूस नहीं किया कि कौन सा **रोज़ा** रखूंगा लिहाज़ा ज़िन्दगी में जब भी मन्नत की निय्यत से **रोज़ा** रख लेंगे मन्नत अदा हो जाएगी। मन्नत के लिये ज़बान से कहना शर्त़ है और येह भी शर्त़ है कि कम अज़ कम इतनी आवाज़ से कहें कि ख़ुद सुन लें, मन्नत के अल्फ़ाज़ इतनी आवाज़ से अदा तो किये कि ख़ुद सुन लेता मगर बहरा पन या किसी क़िस्म के शोरो ग़ुल वग़ैरा की वज्ह से सुन न पाया जब भी मन्नत हो गई इस का पूरा करना वाजिब है) वग़ैरा वग़ैरा इन सब रोज़ों की **निय्यत** रात में ही कर लेनी ज़रूरी है। (ایضاً)

"मुझे माहे र-मज़ान से प्यार है" के बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़े की निय्यत के 20 म-दनी फूल

﴾1﴿ **अदाए** रोज़ए र-मज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन (या'नी मुक़र्रर कर्दा मन्नत) और नफ़्ल के रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द से ज़ह़वए कुब्रा या'नी निस्फ़ुन्नहारे शर-ई

www.dawateislami.net

से पहले पहले तक है इस पूरे वक़्त के दौरान आप जब भी **निय्यत** कर लेंगे येह रोजे़ हो जाएंगे। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمحتار ج۳ص۳۹۳)

﴿2﴾ **निय्यत** दिल के इरादे का नाम है ज़बान से कहना शर्त़ नहीं, मगर ज़बान से कह लेना मुस्तह़ब है अगर रात में रोज़ए र-मज़ान की निय्यत करें तो यूं कहें : نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَدًا لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ۔ **तरजमा :** मैं ने निय्यत की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये कल इस र-मज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा।

﴿3﴾ **अगर** दिन में **निय्यत** करें तो यूं कहें : نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ هٰذَا الْيَوْمَ لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ۔ **तरजमा :** मैं ने निय्यत की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आज इस र-मज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा। (جَوْهَره ج۱ص۱۷۵)

﴿4﴾ **अ़-रबी** में निय्यत के कलिमात अदा करने उसी वक़्त **निय्यत** शुमार किये जाएंगे जब कि उन के मा'ना भी आते हों, और येह भी याद रहे कि ज़बान से **निय्यत** करना ख़्वाह किसी भी ज़बान में हो उसी वक़्त कारआमद होगा जब कि उस वक़्त दिल में भी **निय्यत** मौजूद हो। (ايضاً)

﴿5﴾ **निय्यत** अपनी मा-दरी ज़बान में भी की जा सकती है, अ़-रबी में करें ख़्वाह किसी और ज़बान में, **निय्यत** करते वक़्त दिल में इरादा मौजूद होना शर्त़ है, वरना बे ख़याली में सिर्फ़ ज़बान से रटे रटाए जुम्ले अदा कर लेने से **निय्यत** न होगी। हां ज़बान से रटी हुई **निय्यत** कह ली मगर बा'द में निय्यत के लिये मुक़र्ररा वक़्त के अन्दर दिल में भी निय्यत कर ली तो अब निय्यत सह़ीह़ है। (رَدُّالْمحتار ج۳ص۳۳۲)

﴿6﴾ **अगर** दिन में **निय्यत** करें तो ज़रूरी है कि येह **निय्यत** करें कि मैं सुब्ह़े सादिक़ से रोज़ादार हूं। अगर इस त़रह़ **निय्यत** की, कि अब से रोज़ादार हूं सुब्ह़ से नहीं, तो रोज़ा न हुवा। (جَوْهَره ج۱ص۱۷۵ و رَدُّالْمحتار ج۳ص۳۹٤)

﴿7﴾ **दिन** में वोह **निय्यत** काम की है कि सुब्ह़े सादिक़ से **निय्यत** करते वक़्त तक रोजे़ के ख़िलाफ़

www.dawateislami.net

कोई अम्र (या'नी मुआ-मला) न पाया गया हो । अलबत्ता सुब्हे सादिक़ के बा'द भूल कर खा पी लिया या जिमाअ़ कर लिया तब भी **निय्यत** सह़ीह़ हो जाएगी । (مُلَخَّص از رَدُّالْمحتار ج۳ص۳٦۷)

8 **आप** ने अगर यूं **निय्यत** की, कि "कल कहीं दा'वत हुई तो **रोज़ा** नहीं और न हुई तो **रोज़ा** है ।" येह **निय्यत** सह़ीह़ नहीं, आप रोज़ादार न हुए । (عَالمگیری ج۱ص۱۹۵)

9 **माहे र-मज़ान** के दिन में न रोज़े की **निय्यत** की न येह कि "रोज़ा नहीं" अगर्चे मा'लूम है कि येह **र-मज़ानुल मुबारक** का महीना है तो **रोज़ा** न होगा । (عَالمگیری ج۱ص۱۹۵)

10 **ग़ुरूबे** आफ़्ताब के बा'द से ले कर रात के किसी वक़्त में भी **निय्यत** की फिर इस के बा'द रात ही में खाया पिया तो **निय्यत** न टूटी, वोह पहली ही काफ़ी है फिर से **निय्यत** करना ज़रूरी नहीं । (جَوْهَره ج ۱ ص۱۷۵)

11 **आप** ने अगर रात में रोज़े की **निय्यत** तो की मगर फिर रातों रात पक्का इरादा कर लिया कि "रोज़ा नहीं रखूंगा" तो अब वोह आप की, की हुई निय्यत जाती रही । अगर नई **निय्यत** न की और दिन भर रोज़ादारों की त़रह़ भूके प्यासे रहे तो रोज़ा न हुवा । (دُرِّمُختار ج۳ص۳۹۸)

12 **दौराने** नमाज़ कलाम (बातचीत) की **निय्यत** तो की मगर बात नहीं की तो नमाज़ फ़ासिद न होगी । इसी त़रह़ रोज़े के दौरान तोड़ने की सिर्फ़ **निय्यत** कर लेने से **रोज़ा** नहीं टूटेगा जब तक तोड़ने वाली कोई चीज़ न करे । (جَوْهَره ج ۱ ص۱۷۵)

13 **स-ह़री** खाना भी **निय्यत** ही है ख़्वाह माहे र-मज़ान के रोज़े के लिये हो या किसी और रोज़े के लिये मगर जब स-ह़री खाते वक़्त येह इरादा है कि सुब्ह़ को **रोज़ा** न रखूंगा तो येह स-ह़री खाना **निय्यत** नहीं । (اَیضاً ص۱۷٦)

14 **र-मज़ानुल मुबारक** के हर रोज़े के लिये नई **निय्यत** ज़रूरी है । पहली तारीख़ या किसी भी और तारीख़ में अगर पूरे **माहे र-मज़ान** के रोज़े की **निय्यत** कर भी ली तो येह **निय्यत** सिर्फ़ उसी एक दिन के ह़क़ में है, बाक़ी दिनों के लिये नहीं । (ایضاً)

www.dawateislami.net

15 **अदाए** र-मज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के इलावा बाक़ी रोज़े म-सलन क़ज़ाए र-मज़ान और नज़्रे ग़ैरे मुअ़य्यन और नफ़्ल की क़ज़ा और नज़्रे मुअ़य्यन की क़ज़ा और कफ़्फ़ारे का रोज़ा और तमत्तोअ़[1] का रोज़ा इन सब में ऐन सुब्ह़ चमकते (या'नी ठीक सुब्हे सादिक़ के) वक़्त या रात में **निय्यत** करना ज़रूरी है और येह भी ज़रूरी है कि जो **रोज़ा** रखना है ख़ास उसी मख़्सूस रोज़े की **निय्यत** करें । अगर इन रोज़ों की **निय्यत** दिन में (या'नी सुब्हे सादिक़ से ले कर ज़ह्वए कुब्रा से पहले पहले) की तो नफ़्ल हुए फिर भी इन का पूरा करना ज़रूरी है, तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब होगी, अगर्चे येह बात आप के इ़ल्म में हो कि मैं जो **रोज़ा** रखना चाहता था येह वोह **रोज़ा** नहीं है बल्कि नफ़्ल ही है ।

(دُرِّمُختار ج۳ص۳۹۳)

16 **आप** ने येह गुमान कर के **रोज़ा** रखा कि मेरे ज़िम्मे रोज़े की क़ज़ा है, अब रखने के बा'द मा'लूम हुवा कि गुमान ग़लत़ था । अगर फ़ौरन तोड़ दें तो कोई ह़रज नहीं, अलबत्ता बेहतर येही है कि पूरा कर लें । अगर मा'लूम होने के फ़ौरन बा'द न तोड़ा तो अब लाज़िम हो गया इसे नहीं तोड़ सकते अगर तोड़ेंगे तो क़ज़ा वाजिब है । (رَدُّالمُحتار ج۳ص۳۹۹)

17 **रात** में आप ने क़ज़ा रोज़े की **निय्यत** की, अगर अब सुब्ह़ शुरूअ़ हो जाने के बा'द इसे नफ़्ल करना चाहते हैं तो नहीं कर सकते । (ایضاً ص۳۹۸) **हां रातों रात निय्यत तब्दील की जा सकती थी ।**

---

1 : ह़ज की तीन क़िस्में हैं (1) क़िरान (2) तमत्तोअ़ (3) इफ़्राद । क़िरान और तमत्तोअ़ वाले पर ह़ज अदा करने के बा'द बत़ौरे शुक्राना ह़ज की क़ुरबानी करना वाजिब है जब कि इफ़्राद वाले के लिये मुस्तह़ब । अगर क़िरान और तमत्तोअ़ वाले बहुत ज़ियादा मिस्कीन और मोह़ताज हैं मगर क़िरान और तमत्तोअ़ की निय्यत कर ली है और अब इन के पास न कोई क़ुरबानी के लाइक़ जानवर है न रक़म न ही कोई ऐसा सामान वग़ैरा है जिसे फ़रोख़्त कर के क़ुरबानी का इन्तिज़ाम कर सकें तो अब क़ुरबानी के बदले इन पर दस रोज़े वाजिब होंगे । तीन रोज़े ह़ज के महीनों में या'नी यकुम शव्वालुल मुकर्रम से नवीं ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम तक एह़राम बांधने के बा'द इस बीच में जब चाहें रख लें । तरतीब वार रखना ज़रूरी नहीं, नाग़ा कर के भी रख सकते हैं । बेहतर येह है कि सात, आठ और नवीं ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम को रखें और फिर तेरह ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के बा'द बक़िय्या सात रोज़े जब चाहें रख सकते हैं बेहतर येह है कि घर जा कर रखें ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (مسند احمد)

﴾18﴿ **दौराने** नमाज़ भी अगर रोज़े की **निय्यत** की तो येह **निय्यत** सह़ीह़ है ।

(دُرِّمُختَار و رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۳۹۸)

﴾19﴿ **कई** रोज़े क़ज़ा हों तो **निय्यत** में येह होना चाहिये कि उस **र-मज़ान** के पहले रोज़े की क़ज़ा, दूसरे की क़ज़ा और अगर कुछ इस साल के क़ज़ा हो गए कुछ पिछले साल के बाक़ी हैं तो येह **निय्यत** होनी चाहिये कि इस **र-मज़ान** की क़ज़ा और उस **र-मज़ान** की क़ज़ा और अगर दिन और साल को **मुअ़य्यन** (या'नी Fix) न किया, जब भी हो जाएंगे ।

(عالمگیری ج۱ ص۱۹٦)

﴾20﴿ مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ आप ने **र-मज़ान** का रोज़ा रख लेने के बा'द क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) तोड़ डाला था तो आप पर इस **रोज़े** की क़ज़ा भी है और (अगर कफ़्फ़ारे की शराइत़ पाई गई तो) साठ रोज़े कफ़्फ़ारे के भी । अब आप ने **इक्सठ रोज़े** रख लिये क़ज़ा का दिन **मुअ़य्यन** (Fix) न किया तो इस में क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों अदा हो गए । (ایضاً)

दाढ़ी वाली बच्ची ! : **रोज़ा** और दीगर आ'माल की निय्यतें सीखने का जज़्बा बेदार करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और दोनों जहानों की ब-र-कतें ह़ासिल कीजिये । आप की तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार "म-दनी बहार" आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे रन्छोड़ लाइन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि एक बार **आ़शिक़ाने रसूल** के तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में एक तक़रीबन 26 सालह इस्लामी भाई भी शरीके सफ़र थे, वोह दुआ़ में बहुत गिर्या व ज़ारी करते थे । इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर बताया कि मेरी एक ही **म-दनी मुन्नी** है और उस के चेहरे पर दाढ़ी के बाल उगने शुरूअ़ हो गए हैं ! इस की वज्ह से मुझे सख़्त तश्वीश है, एक्सरे और टेस्ट वग़ैरा से सबब सामने नहीं आ रहा और कोई भी इलाज कारगर नहीं हो पा रहा । उन की दर-ख़्वास्त पर शु-रकाए म-दनी क़ाफ़िला ने उन की म-दनी

www.dawateislami.net

मुन्नी के लिये दुआ़ की। सफ़र मुकम्मल हो जाने के बा'द जब दूसरे दिन उस दुख्यारे इस्लामी भाई से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मसर्रत से झूमते हुए येह खुश ख़बरी सुनाई कि बच्ची की अम्मी ने बताया कि आप के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना होने के दूसरे ही दिन اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हैरत अंगेज़ तौर पर म-दनी मुन्नी के चेहरे से बाल ऐसे ग़ाइब हुए हैं जैसे कभी थे ही नहीं !

स-ह़री करना सुन्नत है : **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने हमें **रोज़े** जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत इनायत फ़रमाई और साथ ही क़ुव्वत के लिये **स-ह़री** की न सिर्फ़ इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई, बल्कि इस में हमारे लिये ढेरों सवाबे आख़िरत भी रख दिया।

बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि कभी **स-ह़री** करने से रह जाते हैं तो फ़ख़्रिया यूं कहते सुनाई देते हैं : "हम ने तो आज बिग़ैर **स-ह़री** के रोज़ा रखा है !" **मक्की म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के दीवानो !** येह फ़ख़्र का मौक़अ़ हरगिज़ नहीं, **स-ह़री की सुन्नत** छूटने पर अफ़्सोस होना चाहिये कि अफ़्सोस ! ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक अ़ज़ीम सुन्नत छूट गई।

हज़ार साल की इबादत से बेहतर : **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ श-रफ़ुद्दीन अल मा'रूफ़ बाबा बुलबुल शाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "**अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** ने मुझे अपनी रह़मत से इतनी त़ाक़त बख़्शी है कि मैं बिग़ैर खाए पिये और बिग़ैर साज़ो सामान के भी अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकता हूं। मगर चूंकि येह उमूर हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत नहीं हैं, इस लिये मैं इन से बचता हूं, **मेरे नज़्दीक सुन्नत की पैरवी हज़ार साल की** (नफ़्ल) **इबादत से बेहतर है।**" बहर ह़ाल तमाम तर आ'माल का ह़ुस्नो जमाल इत्तिबाए़ सुन्नते मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पिन्हां है।

सोने के बा'द स-ह़री की इजाज़त न थी : **इब्तिदाअन** रोज़ा रखने वाले को ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द सिर्फ़ उस वक़्त तक खाने पीने की इजाज़त थी जब तक वोह सो न जाए, अगर सो गया तो अब बेदार हो कर खाना पीना मम्नूअ़ था। मगर रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे बन्दों

www.dawateislami.net

पर एह़सा‍ने अ़ज़ीम फ़रमाते हुए **स-ह़री** की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी, इस का सबब बयान करते हुए **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی नक़्ल करते हैं :

स-ह़री की इजाज़त की ह़िकायत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना सरमा बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا मेह़नती शख़्स थे। एक दिन ब ह़ालते **रोज़ा** अपनी ज़मीन में दिन भर काम कर के शाम को घर आए। अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से खाना त़लब किया, वोह पकाने में मसरूफ़ हुईं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थके हुए थे, आंख लग गई। खाना तय्यार कर के जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को जगाया गया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने खाने से इन्कार कर दिया। क्यूं कि उन दिनों (ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द) सो जाने वाले के लिये खाना पीना मम्नूअ़ हो जाता था। चुनान्चे खाए पिये बिग़ैर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दूसरे दिन भी **रोज़ा** रख लिया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कमज़ोरी के सबब **बेहोश** हो गए। (تفسیرِ خازن ج۱ ص۱۲۶) तो उन के ह़क़ में येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ (پ۲، البقرۃ:۱۸۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और खाओ और पियो यहां तक कि तुम्हारे लिये ज़ाहिर हो जाए सफ़ेदी का डोरा सियाही के डोरे से पौ फट कर। फिर रात आने तक रोज़े पूरे करो।

इस आयते मुक़द्दसा में रात को सियाह डोरे से और सुब्ह़े सादिक़ को सफ़ेद डोरे से तश्बीह दी गई। मा'ना येह हैं कि तुम्हारे लिये **र-मज़ानुल मुबारक** की रातों में खाना पीना मुबाह़ (या'नी जाइज़) क़रार दे दिया गया है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 62 ब तसर्रुफ़)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से येह भी मा'लूम हुवा कि रोज़े का **अज़ाने फ़ज्र** से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं या'नी **फ़ज्र** की अज़ान के दौरान खाने पीने का कोई जवाज़ ही नहीं। अज़ान हो या न हो, आप तक आवाज़ पहुंचे या न पहुंचे सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले आप को खाना पीना बन्द करना होगा।

www.dawateislami.net

"सुन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से

स-हरी के मु-तअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **रोज़ा** रखने के लिये **स-हरी** खा कर कुव्वत हासिल करो और दिन (या'नी दो पहर) के वक़्त आराम (या'नी क़ैलूला) कर के रात की इबादत के लिये ताक़त हासिल करो। (ابنِ مَاجَه ج۲ص۳۲۱حدیث۱۶۹۳)

﴾2﴿ **तीन** आदमी जितना भी खा लें उन से कोई हिसाब न होगा बशर्ते कि खाना हलाल हो (1) रोज़ादार इफ़्तार के वक़्त (2) **स-हरी** खाने वाला (3) मुजाहिद, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में सरहदे इस्लाम की हिफ़ाज़त करे। (مُعجَم کبیر ج۱۱ ص ۲۸۵ حدیث ۱۲۰۱۲)

﴾3﴿ **स-हरी** पूरी की पूरी ब-र-कत है पस तुम न छोड़ो चाहे येही हो कि तुम पानी का एक घूंट पी लो। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते रहमत भेजते हैं **स-हरी** करने वालों पर। (مُسند امام احمد ج٤ ص٨٨ حدیث١١٣٩٦)

क्या रोज़े के लिये स-हरी शर्त़ है ? : **स-हरी** रोज़े के लिये शर्त़ नहीं, **स-हरी** के बिग़ैर भी **रोज़ा** हो सकता है मगर जान बूझ कर **स-हरी** न करना मुनासिब नहीं कि एक अ़ज़ीम सुन्नत से महरूमी है और **स-हरी** में ख़ूब डट कर खाना ही ज़रूरी नहीं, चन्द खजूरें और पानी ही अगर ब निय्यते **स-हरी** इस्ति'माल कर लें जब भी काफ़ी है।

खजूर और पानी से स-हरी : **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **स-हरी** के वक़्त मुझ से फ़रमाया : "मेरा रोज़ा रखने का इरादा है मुझे कुछ खिलाओ।" तो मैं ने कुछ खजूरें और एक बरतन में पानी पेश किया। (السُّنَنُ الکُبریٰ لِلنّسائی ج۲ص۸۰حدیث۲٤۷۷)

खजूर से स-हरी करना सुन्नत है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ादार के लिये एक तो **स-हरी** करना बज़ाते ख़ुद **सुन्नत** और खजूर से **स-हरी** करना दूसरी सुन्नत, क्यूं कि **अल्लाह तआ़ला** के हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर से **स-हरी** करने की तरग़ीब दी है। चुनान्चे सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** के प्यारे हबीब, हबीबे

www.dawateislami.net

लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "نِعْمَ السَّحُوْرُ التَّمْرُ- या'नी खजूर बेहतरीन स-ह़री है ।" (مُعجَم کبیر ج۷ ص۱۵۹ حدیث ۶۶۸۹)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : "نِعْمَ سَحُوْرُ الْمُؤْمِنِ التَّمْرُ- या'नी **खजूर** मोमिन की क्या ही अच्छी **स-ह़री** है ।" (ابوداؤد ج ۲ ص۴۴۳ حدیث۲۳۴۵)

स-ह़री का वक़्त कब होता है ? : **ह़-नफ़िय्यों** के बहुत बड़े आ़लिम ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "बा'ज़ों के नज़्दीक **स-ह़री** का वक़्त **आधी रात** से शुरूअ़ हो जाता है ।" (مِرقاةُالمفاتیح ج ۴ ص۴۷۷)

स-ह़री में ताख़ीर अफ़्ज़ल है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन मुर्रह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन चीज़ों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मह़बूब रखता है (1) इफ़्त़ार में जल्दी और (2) **स-ह़री** में ताख़ीर और (3) नमाज़ (के क़ियाम) में हाथ पर हाथ रखना ।" (مُعجَم اَوسَط ج۵ ص۳۲۰ حدیث۷۴۷۰)

स-ह़री में ताख़ीर से कौन सा वक़्त मुराद है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! स-ह़री में ताख़ीर करना मुस्तह़ब है मगर इतनी ताख़ीर भी न की जाए कि सुब्ह़े सादिक़ का शुबा होने लगे ! यहां ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा होता है कि "ताख़ीर" से मुराद कौन सा वक़्त है ? **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "तफ़्सीरे नई़मी" में फ़रमाते हैं : "इस से मुराद **रात का छटा ह़िस्सा** है ।" फिर सुवाल ज़ेह्न में उभरा कि रात का छटा ह़िस्सा कैसे मा'लूम किया जाए ? इस का जवाब येह है कि **ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े सादिक़ तक रात कहलाती है ।** म-सलन किसी दिन **सात** बजे शाम को सूरज ग़ुरूब हुवा और फिर **चार** बजे सुब्ह़े सादिक़ हुई । इस त़रह़ ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े सादिक़ तक जो नव घन्टे का वक़्फ़ा गुज़रा वोह रात कहलाया । अब रात के इन नव घन्टों के बराबर बराबर छ[6] ह़िस्से कर दीजिये । हर ह़िस्सा **डेढ़ घन्टे** का हुवा, अब रात के आख़िरी डेढ़ घन्टे (या'नी अढ़ाई बजे ता चार बजे) के दौरान सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले **स-ह़री** करना ताख़ीर से करना हुवा । **स-ह़री** व इफ़्त़ार का वक़्त रोज़ाना

www.dawateislami.net

बदलता रहता है। बयान किये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ जब चाहें रात का छटा ह़िस्सा निकाल सकते हैं। अगर रात **स-ह़री** कर ली और रोज़े की निय्यत भी कर ली। तब भी बक़िय्या रात के दौरान खा पी सकते हैं, नई निय्यत की ह़ाजत नहीं।

अज़ाने फ़ज्र नमाज़ के लिये है न कि रोज़ा बन्द करने के लिये ! : बा'ज़ लोग सुब्ह़े सादिक़ के बा'द फ़ज्र की अज़ान के दौरान खाते पीते रहते हैं, और बा'ज़ कान लगा कर सुनते हैं कि अभी फ़ुलां मस्जिद की अज़ान ख़त्म नहीं हुई या कहते हैं : वोह सुनो ! दूर से अज़ान की आवाज़ आ रही है ! और यूं कुछ न कुछ खा लेते हैं। अगर खाते नहीं तो पानी पी कर अपनी इस्त़िलाह़ में "रोज़ा बन्द" करते हैं। आह ! इस त़रह़ "रोज़ा बन्द" तो क्या करेंगे रोज़े को बिल्कुल ही "खुला" छोड़ देते हैं और यूं सुब्ह़े सादिक़ के बा'द खा या पी लेने के सबब उन का रोज़ा होता ही नहीं, और सारा दिन भूक प्यास के सिवा कुछ उन के हाथ आता ही नहीं। "रोज़ा बन्द" करने का तअ़ल्लुक़ अज़ाने फ़ज्र से नहीं सुब्ह़े सादिक़ से पहले पहले खाना पीना बन्द करना ज़रूरी है, जैसा कि आयते मुक़द्दसा के तह़त गुज़रा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर मुसल्मान को अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए और सह़ीह़ अवक़ात की मा'लूमात कर के रोज़ा नमाज़ वग़ैरा इबादात दुरुस्त बजा लाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

खाना पीना बन्द कर दीजिये : इल्मे दीन से दूरी के सबब आज कल काफ़ी लोग अज़ान या साइरन ही पर **स-ह़री** व इफ़्त़ार का दारो मदार रखते हैं बल्कि बा'ज़ तो अज़ाने **फ़ज्र** के दौरान ही "रोज़ा बन्द" करते हैं। इस आ़म ग़-लत़ी को दूर करने के लिये क्या ही अच्छा हो कि **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़ाना सुब्ह़े सादिक़ से तीन मिनट पहले हर मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد कहने के बा'द इस त़रह़ तीन बार ए'लान कर दिया जाए : "**आ़शिक़ाने रसूल मु-तवज्जेह हों, आज स-ह़री का आख़िरी वक़्त** (म-सलन) **चार बज कर बारह मिनट है, वक़्त ख़त्म हो रहा है, फ़ौरन खाना पीना बन्द कर दीजिये, अज़ान का हरगिज़ इन्तिज़ार न फ़रमाइये, अज़ान स-ह़री का वक़्त ख़त्म हो जाने के बा'द नमाज़े**

www.dawateislami.net

फ़ज्र के लिये दी जाती है।"

हर एक को येह बात ज़ेह्न नशीन करनी ज़रूरी है कि अज़ाने **फ़ज्र** सुब्हे सादिक़ के बा'द ही देनी होती है और वोह "रोज़ा बन्द" करने के लिये नहीं बल्कि सिर्फ़ **नमाज़े फ़ज्र** के लिये दी जाती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले की निय्यत करते ही मुश्किल आसान हो गई ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाते रहिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हाथ आएंगी। आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक "म-दनी बहार" गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे लांढी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बड़े भाई की शादी के दिन क़रीब आ रहे थे, अख़्राजात का इन्तिज़ाम नहीं था, उन्हें सख़्त तश्वीश थी, क़र्ज़ लेने का ज़ेह्न भी नहीं बन रहा था कि अदा करने में ताख़ीर की सूरत में जान से प्यारी म-दनी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" के नाम पर बट्टा लग सकता है। एक दिन इन्तिहाई परेशानी के आ़लम में उन्हों ने नमाज़े ज़ोह्र अदा की और दिल ही दिल में निय्यत की, कि अगर रक़म का इन्तिज़ाम हो गया तो **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करूंगा। नमाज़ से फ़रागत के बा'द अभी नमाज़ियों से मुलाक़ात और **इन्फ़िरादी कोशिश** में मसरूफ़ थे कि इमाम साहिब जो रिश्ते में उन के तायाजान थे और उन की परेशानी से वाक़िफ़ भी। उन्हों ने इन्हें बुलाया और اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिगै़र सुवाल के ख़ुद ही रक़म देने का वा'दा फ़रमा लिया। वोह इस्लामी भाई दूसरे ही दिन म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से उन की उल्झन दूर हो गई। तारीख़ तै होते वक़्त बारे क़र्ज़ तले दबे हुए थे, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बड़े भाईजान की शादी भी हो गई और क़र्ज़ भी उतर गया।

www.dawateislami.net

क़ल्ब भी शाद हो, घर भी आबाद हो शादियां भी रचें, क़ाफ़िले में चलो
क़र्ज़ उतर जाएगा, ख़ूब रिज़्क़ आएगा सब बलाएं टलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! छोटे भाई की म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब–र–कत से अदाए क़र्ज़ का इन्तिज़ाम, रक़म का एहतिमाम और बड़े भाई की शादी वाला काम हो गया।

क़र्ज़ से नजात का अ़मल : हर नमाज़ के बा'द सात बार **सूरए क़ुरैश** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दुआ़ मांगिये। पहाड़ जितना क़र्ज़ होगा तब भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अदा हो जाएगा। अ़मल ता हुसूले मुराद जारी रखिये।

क़र्ज़ा उतारने का वज़ीफ़ा : اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ (**तरजमा : या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे) ता हुसूले मुराद हर नमाज़ के बा'द 11, 11 बार और सुब्हो शाम 100, 100 बार रोज़ाना (अव्वल व आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़िये। मरवी हुवा कि एक मुकातब[1] ने ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "मैं अपनी किताबत (या'नी आज़ादी की क़ीमत) अदा करने से आ़जिज़ हूं मेरी मदद फ़रमाइये।" आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : मैं तुम्हें चन्द कलिमात न सिखाऊं जो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे सिखाए हैं, अगर तुम पर ज–बले सीर[2] जितना दैन (या'नी क़र्ज़) होगा तो **अल्लाह तआ़ला** तुम्हारी त़रफ़ से अदा कर देगा,

---

1 : मुकातब : उस ग़ुलाम को कहते हैं जिस ने अपने आक़ा से माल की अदाएगी के बदले आज़ादी का मुआ़–हदा किया हुवा हो। (جَوْهَره ج ٢ ص ١٤٢ مُلَخَّصاً)

2 : सीर एक पहाड़ का नाम है। (اَلنِّهَايَة ج ٣ ص ٦١)

www.dawateislami.net

तुम यूं कहा करो : اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ (तरजमा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे) (ترمذی ج ٥ ص ٣٢٩ حديث ٣٥٧٤)

सुब्ह़ व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमक्ने तक **सुब्ह़** और इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक **शाम** कहलाती है।

म-दनी मश्वरा : परेशान ह़ाल इस्लामी भाई को चाहिये कि **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के वहां दुआ़ मांगे, अगर ख़ुद मजबूर है म-सलन इस्लामी बहन है तो अपने घर में से किसी और को सफ़र पर भिजवाए।

इफ़्त़ार का बयान : जब ग़ुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए, इफ़्त़ार करने में देर नहीं करनी चाहिये, न साइरन का इन्तिज़ार कीजिये न अज़ान का, फ़ौरन कोई चीज़ खा या पी लीजिये मगर खजूर या छुहारा या पानी से इफ़्त़ार करना सुन्नत है। "फ़तावा र-ज़विय्या" में है, **सुवाल :** रोज़ा इफ़्त़ार करना किस चीज़ से मस्नून (सुन्नत) है। **जवाब :** ख़ुरमाए तर (या'नी खजूर) और न हो तो ख़ुश्क (या'नी छुहारा) और न हो तो पानी। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 628, 629)

इफ़्त़ार की दुआ़ : इफ़्त़ार कर लेने के बा'द म-सलन खजूर खा कर या थोड़ा सा पानी पी लेने के बा'द सुन्नत पर अ़मल करने की निय्यत से नीचे दी हुई दुआ़ भी पढ़िये, कि मदीने के ताजदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब वक़्ते इफ़्त़ार येह दुआ़ पढ़ते : اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ (तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरे ही अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ से इफ़्त़ार किया।) (ابو داؤد ج ٢ ص ٤٤٧ حديث ٢٣٥٨) दूसरी ह़दीसे पाक में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ऐ अ़ली ! जब तुम र-मज़ान के महीने में रोज़ा रखो तो इफ़्त़ार के बा'द येह दुआ़ पढ़ो : اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ (तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे लिये रोज़ा रखा और तुझी पर भरोसा किया और तेरे ही अ़त़ा

www.dawateislami.net

कर्दा रिज़्क़ से इफ़्तार किया) तो तुम्हारे लिये तमाम रोज़ेदारों की मिस्ल अज्र लिखा जाएगा और उन के सवाब में भी कमी नहीं की जाएगी। (بُغْيَةُ الْبَاحِث عن زوائِدِ مسندِ الْحارث ج ١ ص ٥٢٧ حديث ٤٦٩) इस के बा'द हो सके तो मज़ीद दुआएं भी कीजिये कि वक़्ते क़बूल है।

इफ़्तार के लिये अज़ान शर्त नहीं : **इफ़्तार** की दुआ उमूमन क़ब्ल अज़ इफ़्तार पढ़ने का रवाज है मगर इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह्मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने "फ़तावा र-ज़विय्या (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़्हा 631" में अपनी तह्क़ीक़ येही पेश की है कि दुआ इफ़्तार के बा'द पढ़ी जाए। इफ़्तार के लिये अज़ान शर्त नहीं, वरना उन अ़लाक़ों या शहरों में रोज़ा कैसे खुलेगा जहां मसाजिद ही नहीं या अज़ान की आवाज़ नहीं आती। बहर ह़ाल अज़ान नमाज़े मग़रिब के लिये होती है। जहां मसाजिद हों ! ज़हे नसीब ! वहां येह त़रीक़ा राइज हो जाए कि जैसे ही आफ़्ताब ग़ुरूब होने का यक़ीन हो जाए, बुलन्द आवाज़ से "صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد" कहने के बा'द इस तरह़ तीन बार ए'लान कर दिया जाए : "**आ़शिक़ाने रसूल रोज़ा इफ़्तार कर लीजिये।**"

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से

इफ़्तार के फ़ज़ाइल के मु-तअ़ल्लिक़ 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**हमेशा** लोग ख़ैर के साथ रहेंगे जब तक इफ़्तार में जल्दी करेंगे।" (بُخاری ج ١ ص ٦٤٥ حديث ١٩٥٧)

इफ़्तार करवाने की अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत

﴾2﴿ "**जिस** ने ह़लाल खाने या पानी से (किसी मुसल्मान को) रोज़ा इफ़्तार करवाया, फ़िरिश्ते माहे र-मज़ान के अवक़ात में उस के लिये **इस्तिग़्फ़ार** करते हैं और जिब्रील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) शबे क़द्र में उस के लिये **इस्तिग़्फ़ार** करते हैं।" (مُعجَم كبير ج ٦ ص ٢٦٢ حديث ٦١٦٢)

जिब्रीले अमीन के मुसा-फ़ह़ा करने की अ़लामत

﴾3﴿ "**जो** ह़लाल कमाई से र-मज़ान में रोज़ा इफ़्तार करवाए र-मज़ान की तमाम रातों में फ़िरिश्ते उस

www.dawateislami.net

पर दुरूद भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्रील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) उस से मुसा-फ़ह़ा करते हैं और जिस से जिब्रील (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) मुसा-फ़ह़ा कर लें उस की आंखें अश्कबार हो जाती हैं और उस का दिल नर्म हो जाता है।" (جَمْعُ الْجَوامِع ج٧ص٢١٧ حديث٢٢٥٣٤)

﴾4﴿ "**जो** रोज़ादार को पानी पिलाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि जन्नत में दाख़िल होने तक प्यासा न होगा।" (ابن خُزَيمه ج ٣ ص١٩٢ حديث١٨٨٧)

﴾5﴿ "**जब** तुम में कोई रोज़ा इफ़्त़ार करे तो **खजूर** या छुहारे से इफ़्त़ार करे कि वोह ब-र-कत है और अगर न मिले तो पानी से कि वोह पाक करने वाला है।" (تِرمذی ج٢ص١٦٢ حديث٦٩٥)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का इफ़्त़ार : ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से पहले तर **खजूरों** से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते, तर **खजूरें** न होतीं तो चन्द ख़ुश्क **खजूरें** या'नी छुहारों से और येह भी न होतीं तो चन्द चुल्लू पानी पीते।" (ابوداوٗد ج٢ص٤٤٧ حديث٢٣٥٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुबा-रका में **स-ह़री** और इफ़्त़ार में **खजूर** के इस्ति'माल की तरग़ीब मौजूद है, बेशक **खजूर** में ला ता'दाद ब-र-कतें और कई बीमारियों का इलाज है।

"सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से खजूर के 25 म-दनी फूल

﴾1﴿ **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : "आ़लिया" (या'नी मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में मस्जिदे क़ुबा शरीफ़ की जानिब एक जगह का नाम) की **अ़ज्वा** (मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की सब से अ़ज़ीम खजूर का नाम) में हर बीमारी से शिफ़ा है।" एक रिवायत के मुत़ाबिक़ "सात रोज़ तक रोज़ाना **सात अ़ज्वा खजूरें** खाना जुज़ाम (या'नी कोढ़) में नफ़्अ़ देता है।" (الكامل لابن عدى ج٧ ص ٤٠٧)

www.dawateislami.net

2 **मीठे मीठे आक़ा**, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **अ़ज्वा** खजूर जन्नत से है, इस में **ज़हर** से शिफ़ा है। (ترمذی ٤ ص١٧ حديث ٢٠٧٣) **बुख़ारी** शरीफ़ की रिवायत के मुत़ाबिक़ जिस ने नहार मुंह अ़ज्वा खजूर के सात दाने खा लिये उस दिन उसे **जादू** और **ज़हर** भी नुक़्सान न दे सकेंगे। (بُخارِی ج٣ص٥٤٠ حديث ٥٤٤٥)

3 **सय्यिदुना** अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, खजूर खाने से क़ूलन्ज (या'नी बड़ी अंतड़ी का दर्द) नहीं होता। (كَنْزُ الْعُمّال ج١٠ ص١٢ حديث٢٨١٩١)

4 **त़बीबों** के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़ह़त निशान है : "नहार मुंह खजूर खाओ इस से पेट के कीड़े मर जाते हैं।" (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٣٩٨ حديث٦٣٩٤)

5 **ह़ज़रते** सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "मेरे नज़्दीक ह़ामिला के लिये खजूर से और मरीज़ के लिये शहद से बेहतर किसी चीज़ में शिफ़ा नहीं।" (تفسيرِ دُرِّ مَنْثُور ج٥ ص٥٠٥)

6 **सय्यिदी** मुह़म्मद अह़मद ज़हबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ह़ामिला को खजूरें खिलाने से اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ लड़का पैदा होगा जो कि ख़ूब सूरत बुर्द-बार और नर्म मिज़ाज होगा।"

7 **जो** फ़ाक़े (या'नी भूक) की वज्ह से कमज़ोर हो गया हो उस के लिये खजूर बहुत मुफ़ीद है क्यूं कि येह गिज़ाइयत से भरपूर है इस के खाने से जल्द तुवानाई बह़ाल हो जाती है, लिहाज़ा खजूर से **इफ़्त़ार** करने में येह ह़िक्मत भी है।

8 **रोज़े** में फ़ौरन बर्फ़ का ठन्डा पानी पी लेने से गेस, तबख़ीरे मे'दा और जिगर के वरम का सख़्त ख़त़रा है, खजूर खा कर ठन्डा पानी पीने से नुक़्सान का ख़त़रा टल जाता है, मगर सख़्त ठन्डा पानी हरगिज़ नहीं पीना चाहिये।

9 **खजूर** और ककड़ी[1], नीज़ खजूर और तरबूज़ एक साथ खाना नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है।[2] इस में भी ह़िक्मतों के म-दनी फूल हैं। त़बीबों का कहना है कि इस से जिन्सी

---

١ مسلم ص١١٣٠ حديث٢٠٤٣ ـ ٢ شمائلِ ترمذی ص١٢١ حديث ١٩٠

www.dawateislami.net

व जिस्मानी कमज़ोरी और **दुबला पन** दूर होता है । **मखन** के साथ **खजूर** खाना भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है । (ابن ماجه ج٤ص ٤١ حديث٣٣٣٤)

﴾10﴿ **खजूर** खाने से पुरानी क़ब्ज़ दूर होती है ।

﴾11﴿ **दमे, दिल, गुर्दे, मसाने, पित्ते और आंतों** के अमराज़ में खजूर मुफ़ीद है । येह बल्ग़म ख़ारिज करती, मुंह की ख़ुश्की दूर करती और पेशाब आवर है ।

﴾12﴿ **दिल** की बीमारी और काला मोतिया के लिये खजूर गुठली समेत कूट कर खाना मुफ़ीद है ।

﴾13﴿ **खजूर** भिगो कर इस का पानी पी लेने से **जिगर** की बीमारियां दूर होती हैं । **दस्त** की बीमारी में भी येह पानी मुफ़ीद है । (रात को भिगो कर सुब्ह नहार मुंह इस का पानी पियें मगर भिगोने के लिये पानी डाल कर फ़्रीज़र में न रखें)

﴾14﴿ **खजूर** दूध में उबाल कर खाना बेहतरीन मुक़व्वी (या'नी ताक़त देने वाली) ग़िज़ा है, येह ग़िज़ा बीमारी के बा'द की कमज़ोरी दूर करने के लिये बेहद मुफ़ीद है ।

﴾15﴿ **खजूर** खाने से ज़ख़्म जल्दी भरता है ।

﴾16﴿ **यरक़ान** (या'नी पीलिया) के लिये खजूर बेहतरीन दवा है ।

﴾17﴿ **ताज़ा** पक्की खजूरें सफ़रा (या'नी "**पित**" जिस से क़ै के ज़रीए कड़वा पानी निकलता है) और तेज़ाबियत को ख़त्म करती हैं ।

﴾18﴿ **खजूर** की गुठलियां आग में जला कर उस का मन्जन बना लीजिये, येह दांत चमक्दार और मुंह की बदबू दूर करता है ।

﴾19﴿ **खजूर** की जली हुई गुठलियों की राख लगाने से ज़ख़्म का ख़ून बन्द होता और ज़ख़्म भर जाता है ।

﴾20﴿ **खजूर** की गुठलियों को आग में डाल कर धूनी लेने से बवासीर के मस्से ख़ुश्क हो जाते हैं ।

﴾21﴿ **खजूर** के दरख़्त की जड़ों या पत्तों की राख से मन्जन करना दांतों के दर्द के लिये मुफ़ीद है, जड़ों या पत्तों को पानी में उबाल कर उस से कुल्लियां करना भी **दांतों** के दर्द में फ़ाएदे

www.dawateislami.net

मन्द है।

﴾22﴿ **जिसे** खजूर खाने से किसी क़िस्म का नुक़्सान (side effect) होता हो वोह अनार के रस या ख़श्ख़ाश या काली मिर्च के साथ इस्ति'माल करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

﴾23﴿ **अध** पक्की और पुरानी खजूरें ब-यक वक़्त (या'नी एक ही वक़्त में) खाना नुक़्सान देह है। इसी त़रह़ खजूर के साथ अंगूर या किशमिश या मुनक़्क़ा मिला कर खाना, खजूर और इन्जीर ब-यक वक़्त खाना, बीमारी से उठते ही कमज़ोरी में ज़ियादा खजूरें खाना और आंखों की बीमारी में खजूरें खाना मुज़िर या'नी नुक़्सान देह है।

﴾24﴿ **एक** वक़्त में 5 तोला (या'नी 58.32 ग्राम) से ज़ियादा खजूरें न खाएं। पुरानी खजूर खाते वक़्त खोल कर अन्दर से देख लीजिये क्यूं कि उस में बा'ज़ अवक़ात सुरसुरियां (या'नी छोटे छोटे लाल कीड़े) होती हैं, लिहाज़ा साफ़ कर के खाइये। जिस खजूर में कीड़े होने का गुमान हो उसे साफ़ किये बिग़ैर खाना मक्रूह है। बेचने वाले चमकाने के लिये अक्सर सरसों का तेल लगा देते हैं लिहाज़ा बेहतर येह है कि खजूरें चन्द मिनट के लिये पानी में भिगो दीजिये ताकि मख्खियों की बीट और मैल कुचैल वग़ैरा छूट जाए फिर धो कर इस्ति'माल फ़रमाइये। दरख़्त की पकी हुई खजूरें **ज़ियादा मुफ़ीद** होती हैं। (मगर धोए बिग़ैर खजूरें बल्कि कोई सा फल और सब्ज़ी वग़ैरा इस्ति'माल न करें वरना गर्दो गुबार, मख्खियों, कीड़े मकोड़ों की बीट और जरासीम कुश दवाओं के अ-सरात पेट में जा कर बीमारियों का बाइस हो सकते हैं)

﴾25﴿ **मदीनए मुनव्वरह** زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की खजूरों की गुठलियां मत फेंकिये, किसी अदब की जगह डाल दीजिये या दरिया बुर्द फ़रमा दीजिये, बल्कि हो सके तो सरोते से बारीक टुकड़ियां कर के या पीस कर डिबिया में डाल कर जेब में रख लीजिये और छालिया की जगह इस्ति'माल कर के इस की ब-र-कतें लूटिये। कोई चीज़ ख़्वाह दुन्या के किसी भी ख़ित़्ते की हो जब मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا की फ़ज़ाओं में दाख़िल हुई तो मदीने की हो गई लिहाज़ा आ़शिक़ाने रसूल उस का अदब करते हैं।

www.dawateislami.net

क्या ह़दीस में बताया हुवा इलाज हर एक कर सकता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा "खजूर के 25 म-दनी फूल" में मुख़्तलिफ़ अमराज़ में "खजूर" के ज़रीए इलाज तज्वीज़ किया गया है, इस सिल्सिले में आयिन्दा सुतूर का बग़ौर मुता-लआ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नफ़्अ़ बख़्श पाएंगे। चुनान्चे (ह़दीसे पाक : "فِى الْحَبَّةِ السَّوداءِ شِفاءٌ مِّنْ كُلِّ داءٍ اِلَّا السَّامَ" या'नी काला दाना (कलोंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से **शिफ़ा** है" के तह़त) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रतूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है), क्यूं कि **कलोंजी** गर्म और ख़ुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब (या'नी तरी वाली) और सरदी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद **अ़रब की आ़म बीमारियां** हैं (مرقات) या'नी कलोंजी अ़रब की आ़म बीमारियों में मुफ़ीद है। ख़याल रहे कि अह़ादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी ह़ाज़िक़ त़बीब (या'नी माहिर त़बीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिएं (अहले अ़रब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (त़ब्ई) मिज़ाज अहले अ़रब के (त़ब्ई) मिज़ाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6, स. 216, 217) साथ ही येह भी ख़ास ताकीद है कि **इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्ख़ा अपने त़बीब से मश्वरा किये बिग़ैर इस्ति'माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्ख़ा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दोचार हों।** याद रहे ! लोगों की त़ब्ई कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, बसा अवक़ात एक ही **दवा** किसी के लिये शिफ़ा व आराम का बाइस बनती है तो किसी के लिये **मौत का पयाम** लाती है। लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाक़िफ़ आप का मख़्सूस त़बीब ही येह तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्ख़ा मुवाफ़िक़ आ सकता है और कौन सा नहीं।

इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है : दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : (1) "बेशक रोज़ादार के लिये इफ़्त़ार के वक़्त एक ऐसी दुआ़ होती है जो रद नहीं की जाती।" (ابن ماجه ج٢ ص ٣٥٠ حديث ١٧٥٣) (2) "तीन शख़्सों की दुआ़ रद नहीं की जाती ﴿1﴾ बादशाहे आ़दिल की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

और ﴾2﴿ रोज़ादार की ब वक़्ते इफ़्त़ार और ﴾3﴿ मज़्लूम की। इन तीनों की दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बादलों से भी ऊपर उठा लेता है और आस्मान के दरवाज़े उस के लिये खुल जाते हैं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है : "मुझे मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरी ज़रूर मदद फ़रमाऊंगा अगर्चे कुछ देर बा'द।"

(اَیضاً ص ۳۴۹ حدیث ۱۷۵۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हम खाने पीने में रह जाते हैं : प्यारे रोज़ादारो ! اَلْحَمْدُ لِله इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ क़बूल होती है, आह ! इस क़बूलिय्यत की घड़ी में हमारा नफ़्स इस मौक़अ़ पर सख़्त आज़्माइश में पड़ जाता है। क्यूं कि इस वक़्त अक्सर हमारे आगे अन्वाओ़ अक़्साम के फलों, कबाब, समोसों, पकोड़ों के साथ साथ गरमी का मौसिम हो तो ठन्डे ठन्डे शरबत के जाम भी मौजूद होते हैं, इधर सूरज ग़ुरूब हुवा, उधर खानों और शरबतों पर हम ऐसे टूट पड़ते हैं कि दुआ़ याद ही नहीं रहती ! दुआ़ तो दुआ़ हमारे कुछ इस्लामी भाई इफ़्त़ार के दौरान खाने पीने में इस क़दर मश्ग़ूल हो जाते हैं कि उन को नमाज़े मग़रिब की पूरी जमाअ़त तक नहीं मिलती, बल्कि مَعَاذَ الله बा'ज़ तो इस क़दर सुस्ती करते हैं कि घर ही में इफ़्त़ार कर के वहीं पर बिग़ैर जमाअ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं। तौबा ! तौबा !!

जन्नत के त़लब गारो ! इतनी भी ग़फ़्लत मत कीजिये !! नमाज़े बा जमाअ़त की शरीअ़त में निहायत सख़्त ताकीद आई है। याद रखिये ! बिला किसी सह़ीह़ शर-ई मजबूरी के मस्जिद की **पन्ज वक़्ता** नमाज़ की पहली जमाअ़त तर्क कर देना गुनाह है।

ग़िज़ा से इफ़्त़ार के बा 'द नमाज़ के लिये मुंह साफ़ करना ज़रूरी है : बेहतर येह है कि एकआध खजूर से इफ़्त़ार कर के फ़ौरन अच्छी त़रह़ मुंह साफ़ कर ले और नमाज़े बा जमाअ़त में शरीक हो जाए। आज कल मस्जिद में लोग फल पकोड़े वग़ैरा खाने के बा'द अच्छी त़रह़ मुंह साफ़ नहीं करते यूं ही जमाअ़त में शरीक हो जाते हैं ह़ालां कि ग़िज़ा का मा'मूली ज़र्रा या ज़ाएक़ा भी मुंह में नहीं होना चाहिये कि **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मु-तअ़द्दिद अह़ादीस में इर्शाद हुवा है कि "जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता

www.dawateislami.net

उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती ।" **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह इस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ इस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है ।[1] और "**त़-बरानी** ने **कबीर**" में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में खाने के रेज़े फंसे हों । (مُعْجَم كبير ج٤ ص١٧٧ حديث٤٠٦١/ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 624 ता 625) मस्जिद में इफ़्त़ार करने वालों के लिये अक्सर मुंह साफ़ करना दुश्वार होता है कि अच्छी त़रह़ सफ़ाई करने बैठें तो जमाअ़त निकल जाने का अन्देशा होता है लिहाज़ा मश्वरा है कि सिर्फ़ एकआध खजूर खा कर पानी पी लें पानी को मुंह के अन्दर ख़ूब जुम्बिश दें या'नी हिलाएं ताकि खजूर की मिठास और उस के अज्ज़ा छूट कर पानी के साथ पेट में चले जाएं ज़रूरतन दांतों में ख़िलाल भी करें । अगर मुंह साफ़ करने का मौक़अ़ न मिलता हो तो आसानी इसी में है कि सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर लीजिये । मुझे वोह रोज़ेदार बड़े प्यारे लगते हैं जो त़रह़ त़रह़ की ने'मतों के थालों से बे नियाज़ हो कर ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद की पहली सफ़ में, पानी ले कर बैठ जाएं कि इस त़रह़ इफ़्त़ार से जल्दी फ़राग़त भी मिले, मुंह भी साफ़ रहे और पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ भी नसीब हो जाए ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुज़श्ता ह़दीसे मुबारक में फ़रमाया गया है कि "इफ़्त़ार के वक़्त दुआ़ रद नहीं की जाती ।" बा'ज़ अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ के इज़्हार में ताख़ीर हो जाती

مدينه

[1] شُعَبُ الْإِيمان ج٢ ص٣٨١ رقم٢١١٧-

www.dawateislami.net

है तो ज़ेहन में येह बात आती है कि **दुआ़** आख़िर क़बूल क्यूं नहीं हुई ! जब कि ह़दीसे मुबारक में तो क़बूले दुआ़ की बिशारत आई है। **प्यारे इस्लामी भाइयो !** ब ज़ाहिर ताख़ीर से न घबराइये। सय्यिदी **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के वालिदे गिरामी ह़ज़रते रईसुल मु-तकल्लिमीन सय्यिदुना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **"अह़्सनुल विआ़-इ लि आदाबिद्दुआ़अ"** सफ़्ह़ा 55 पर नक़्ल करते हैं :

दुआ़ के तीन फ़वाइद : सरवरे मा'सूम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत है : **दुआ़** बन्दे की, तीन बातों से ख़ाली नहीं होती : ﴾1﴿ या उस का गुनाह बख़्शा जाता है। या ﴾2﴿ दुन्या में उसे फ़ाएदा ह़ासिल होता है। या ﴾3﴿ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ़ की जाती है कि जब बन्दा आख़िरत में अपनी दुआ़ओं का सवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थीं तमन्ना करेगा : काश ! दुन्या में मेरी कोई **दुआ़** क़बूल न होती और सब यहीं (या'नी आख़िरत) के वासित़े जम्अ़ रहतीं।

(اَلْمُسْتَدْرَك ج٢ ص١٦٥ حديث١٨٦٢, अह़्सनुल विआ़अ, स. 55)

दुआ़ में पांच सआ़दतें : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दुआ़ राएगां तो जाती ही नहीं, इस का दुन्या में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तब भी आख़िरत में अज्रो सवाब मिल ही जाएगा लिहाज़ा दुआ़ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

"या अ़फ़ुव्व" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 म-दनी फूल

﴾1﴿ **पहला** फ़ाएदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ़ मांगा करो। चुनान्चे पारह 24 **सू-रतुल मुअमिन** आयत 60 में इर्शाद है :

اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।

﴾2﴿ **दुआ़** मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर अवक़ात **दुआ़** मांगते। लिहाज़ा दुआ़ मांगने में **इत्तिबाए सुन्नत** का भी शरफ़ ह़ासिल होगा।

﴾3﴿ **दुआ** मांगने में इताअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **दुआ** की अपने गुलामों को ताकीद फ़रमाते रहते ।

﴾4﴿ **दुआ** मांगने वाला आ़बिदों के ज़ुम्रे (या'नी गुरौह) में दाख़िल होता है कि दुआ बज़ाते ख़ुद एक इबादत बल्कि इबादत का भी मग़्ज़ है । जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ ۔ या'नी दुआ इबादत का मग़्ज़ है ।

(ترمذی ج ۵ ص ۲۴۳ حدیث ۳۳۸۲)

﴾5﴿ **दुआ** मांगने से या तो उस का गुनाह मुआ़फ़ किया जाता है या दुन्या ही में उस के मसाइल ह़ल होते हैं या फिर वोह **दुआ** उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है ।

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? दुआ मांगने में **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त भी है, दुआ मांगना सुन्नत भी है, दुआ मांगने से इबादत का सवाब भी मिलता है नीज़ दुन्या व आख़िरत के मु–तअ़द्दिद फ़वाइद ह़ासिल होते हैं । बा'ज़ लोगों को देखा गया है कि वोह दुआ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाते बल्कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! बातें बनाते हैं कि हम तो इतने अ़र्से से दुआएं मांग रहे हैं, बुज़ुर्गों से भी दुआएं करवाते रहे हैं, कोई पीर फ़क़ीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ते हैं, वोह अवराद पढ़ते हैं, फ़ुलां फ़ुलां मज़ार पर भी गए मगर हमारी ह़ाजत पूरी होती ही नहीं, बल्कि बा'ज़ येह भी कहते सुने जाते हैं :

"क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है ! जिस की हम को सज़ा मिल रही है !!"

नमाज़ न पढ़ना तो गोया ख़ता ही नहीं !!! : ह़ैरत अंगेज़ तो येह है कि इस त़रह़ की "भड़ास" निकालने वाले बसा अवक़ात बे नमाज़ी होते हैं ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ) कोई गुनाह ही नहीं है ! चेहरा देखो तो दुश्मनाने मुस्त़फ़ा आतश परस्तों जैसा या'नी ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे से ग़ाइब ! नीज़ झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी, बद निगाही, वालिदैन की ना फ़रमानी, फ़िल्में डिरामे, गाने

www.dawateislami.net

बाजे वग़ैरा वग़ैरा गुनाह आ़दत में शामिल होने के बा वुजूद ज़बान पर येह अल्फ़ाज़े शिक्वा खेल रहे होते हैं :

"क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है ! जिस की हम को सज़ा मिल रही है !!"

जिस दोस्त की बात हम न मानें : **ज़रा** सोचिये तो सही ! कोई जिगरी दोस्त कई बार कुछ काम बताए मगर आप उस का काम न करें। इत्तिफ़ाक़ से कभी उसी दोस्त से काम पड़ जाए तो आप पहले ही सहमे रहेंगे कि मैं ने तो उस का एक भी काम नहीं किया, अब वोह भला मेरा काम कैसे करेगा ! अगर आप ने हिम्मत कर के बात की और उस ने काम न किया तब भी आप शिक्वा नहीं कर सकेंगे, क्यूं कि आप ने भी तो अपने उस दोस्त का काम नहीं किया था।

अब ज़रा ठन्डे दिल से ग़ौर कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कितने कितने काम बताए, कैसे कैसे अह्‌काम जारी फ़रमाए, मगर हम उस के कौन कौन से हुक्म पर अ़मल करते हैं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि उस के कई अह्‌कामात की बजा आ-वरी में हम ने ग़फ़्लत से काम लिया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे बात समझ में आ गई हो कि ख़ुद तो अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के हुक्मों पर अ़मल न करें, मगर वोह किसी बात (या'नी दुआ़) का असर ज़ाहिर न फ़रमाए तो शिक्वा व शिकायत ले कर बैठ जाएं। देखिये ना ! आप अगर अपने किसी जिगरी दोस्त की कोई बात बार बार टालते रहें तो हो सकता है कि वोह आप से दोस्ती ही ख़त्म कर दे, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दों पर किस क़दर मेह्‌रबान है कि लाख उस के फ़रमाने आ़ली की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करें, फिर भी वोह अपने बन्दों की फ़ेहरिस से ख़ारिज नहीं करता, लुत्फ़ो करम फ़रमाता ही रहता है। ज़रा ग़ौर तो फ़रमाइये ! जो बन्दे एह्‌सान फ़रामोशी का मुज़ा-हरा कर रहे हैं अगर वोह भी बतौरे सज़ा अपने एह्‌सानात उन से रोक ले तो उन का क्या बने ? यक़ीनन उस की इनायत के बिग़ैर बन्दा एक क़दम भी नहीं उठा सकता, अरे ! वोह अपनी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत हवा जो कि बिल्कुल मुफ़्त अ़ता फ़रमा रखी है अगर चन्द लम्हों के लिये रोक ले तो लाशों के अम्बार लग जाएं !!

क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर का एक सबब : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बसा

www.dawateislami.net

अवक़ात क़बूलिय्यते दुआ़ की ताख़ीर में काफ़ी **मस्लहतें** होती हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं। हुज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कोई प्यारा **दुआ़** करता है तो **अल्लाह तआ़ला** जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) से इर्शाद फ़रमाता है : "ठहरो ! अभी न दो ताकि फिर मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ पसन्द है।" और जब कोई काफ़िर या फ़ासिक़ **दुआ़** करता है, फ़रमाता है : "ऐ जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ! इस का काम जल्दी कर दो, ताकि फिर न मांगे कि मुझ को इस की आवाज़ मक्रूह (या'नी ना पसन्द) है।" (كَنْزُ الْعُمَّال ج٢ص٣٩حديث٣٢٦١, अह़्सनुल विआ़अ, स. 99)

नेक बन्दे की दुआ़ क़बूल होने में ताख़ीर की ह़िक्मत (ह़िकायत) : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद बिन क़त्तान (عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان) ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा, अ़र्ज़ की : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! मैं अक्सर **दुआ़** करता हूं और तू क़बूल नहीं फ़रमाता ? हुक्म हुवा : "ऐ यह़्या ! मैं तेरी आवाज़ को पसन्द करता हूं, इस वासिते तेरी **दुआ़** की क़बूलिय्यत में ताख़ीर करता हूं।"

(رساله قُشَيريه ص٢٩٧, अह़्सनुल विआ़अ, स. 99)

"**फ़ज़ाइले दुआ़**" सफ़्ह़ा 97 में **आदाबे दुआ़** बयान करते हुए ह़ज़रते रईसुल मु-तकल्लिमीन मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

जल्दी मचाने वाले की दुआ़ क़बूल नहीं होती ! : (दुआ़ के आदाब में से येह भी है कि) **दुआ़** के क़बूल में जल्दी न करे। ह़दीस शरीफ़ में है कि ख़ुदाए तआ़ला तीन आदमियों की **दुआ़** क़बूल नहीं करता। एक वोह कि गुनाह की **दुआ़** मांगे। दूसरा वोह कि ऐसी बात चाहे कि क़त्ए रेह़्म हो। तीसरा वोह कि क़बूल में जल्दी करे कि मैं ने **दुआ़** मांगी अब तक क़बूल नहीं हुई।

(مسلم ص١٤٦٣حديث٢٧٣٥)

इस ह़दीस में फ़रमाया गया है कि ना जाइज़ काम की **दुआ़** न मांगी जाए कि वोह क़बूल नहीं होती। नीज़ किसी रिश्तेदार का ह़क़ ज़ाएअ़ होता हो ऐसी **दुआ़** भी न मांगें और **दुआ़** की क़बूलिय्यत के लिये जल्दी भी न करें वरना **दुआ़** क़बूल नहीं की जाएगी।

अह़्सनुल विआ़-इ लि आदाबिदुआ़अ पर आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना

www.dawateislami.net

शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने ह़ाशिया तह़रीर फ़रमाया है और उस का नाम **ज़ैलुल मुद्दआ-इ लि अह़्सनिल विआ़अ** रखा है। मक-त-बतुल मदीना ने तख़्रीज व तस्हील के साथ इसे "फ़ज़ाइले दुआ़" के नाम से शाएअ़ किया है। इसी किताब के ह़ाशिये में एक मक़ाम पर **दुआ़** की क़बूलिय्यत में जल्दी मचाने वालों को अपने मख़्सूस और निहायत ही इ़ल्मी अन्दाज़ में समझाते हुए फ़रमाते हैं :-

अफ़्सरों के पास तो बार बार धक्के खाते हो मगर...... : सगाने दुन्या (या'नी दुन्यवी अफ़्सरों) के उम्मीद वारों (या'नी उन से काम निकलवाने के आरज़ू मन्दों) को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीद वारी (और इन्तिज़ार) में गुज़ारते हैं, सुब्ह़ व शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं, (धक्के खाते हैं) और वोह (अफ़्सरान) हैं कि रुख़ नहीं मिलाते, जवाब नहीं देते, झिड़कते, दिल तंग होते, नाक भौं चढ़ाते हैं, उम्मीद वारी में लगाया तो बेगार (बेकार मेह़नत) सर पर डाली, येह ह़ज़रत गिरह (या'नी उम्मीद वार जेब) से खाते, घर से मंगाते, बेकार बेगार (फ़ुज़ूल मेह़नत) की बला उठाते हैं, और वहां (या'नी अफ़्सरों के पास धक्के खाने में) बरसों गुज़रें हुनूज़ (या'नी अभी तक गोया) रोज़े अव्वल (ही) है, मगर येह (दुन्यवी अफ़्सरों के पास धक्के खाने वाले) न उम्मीद तोड़ें, न (अफ़्सरों का) पीछा छोड़ें। और अह़-कमुल ह़ाकिमीन, अकरमुल अकरमीन عَزَّ جَلَالُهٗ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है! और आए भी तो उक्ताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी, साह़िब! पढ़ा तो था, कुछ असर न हुवा! येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत) का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते हैं। मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : يُسْتَجَابُ لِاَحَدِكُمْ مَالَمْ يَعْجَلْ، يَقُوْلُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِيْ- **तरजमा :** "तुम्हारी दुआ़ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो येह मत कहो कि मैं ने दुआ़ की थी क़बूल न हुई।" (بُخاری ج ٤ ص ٢٠٠ حديث ٦٣٤٠)

बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर (या'नी बे क़ाबू) हो जाते हैं कि आ'माल व अद्इय्या (या'नी अवराद व दुआ़ओं) के असर से बे ए'तिक़ाद, बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वा'दए करम से बे

www.dawateislami.net

ए'तिमाद, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ الْكَرِيْمِ الْجَوَاد । ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो !! ज़रा अपने गिरीबान में मुंह डालो। अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओ (शरमाओ)गे, (कि) हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें ? और अगर ग़रज़ दीवानी होती है (या'नी मत़लब पड़ा तो) कह भी दिया और उस ने (अगर तुम्हारा काम) न किया तो अस्लन मह़ल्ले शिकायत न जानोगे (या'नी इस बात पर शिकायत करोगे ही नहीं ज़ाहिर है ख़ुद ही समझते हो) कि हम ने (उस का काम) कब किया था जो वोह करता।

अब जांचो, कि तुम **मालिक अ़लल इत़्लाक़ عَزَّوَجَلَّ** के कितने अह़काम बजा लाते हो ? उस के हुक्म बजा न लाना और अपनी दर-ख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (हर सूरत में) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है !

ओ अह़मक़ ! फिर फ़र्क़ देख ! अपने सर से पाउं तक नज़रे ग़ौर कर ! एक एक रूएं में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं। तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी ह़िफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और (फिर भी) सर से पाउं तक सिह़ह़तो आ़फ़िय्यत, बलाओं से ह़िफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़्लात (या'नी जिस्म के अन्दर की गन्दगियों) का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में त़ाक़त, आंखों में रोशनी। बे ह़िसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं। फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़त़ा न हों, किस मुंह से शिकायत करता है ? तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है ! तू क्या जाने कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस (ब ज़ाहिर न क़बूल होने वाली) दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि इस दुआ़ के इ़वज़ कैसा सवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं जिन में हर पहली, पिछली से आ'ला है। हां, बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर लिया। وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰى (और **अल्लाह** की पनाह वोह पाक है और अ-ज़मत वाला)।

www.dawateislami.net

ऐ ज़लील ख़ाक ! ऐ आबे नापाक ! अपना मुंह देख और इस अ़ज़ीम शरफ़ पर ग़ौर कर कि अपनी बारगाह में हाज़िर होने, अपना पाक, मु–तआ़ली (या'नी बुलन्द) नाम लेने, अपनी त़रफ़ मुंह करने, अपने पुकारने की तुझे इजाज़त देता है। लाखों मुरादें इस फ़ज़्ले अ़ज़ीम पर निसार।

ओ बे सब्र ! ज़रा भीक मांगना सीख। इस आस्ताने रफ़ीअ़ की ख़ाक पर लौट जा। और लिपटा रह और टिकटिकी बंधी रख कि अब देते हैं, अब देते हैं ! बल्कि पुकारने, उस से मुनाजात करने की लज़्ज़त में ऐसा डूब जा कि इरादा व मुराद कुछ याद न रहे, यक़ीन जान कि इस दरवाज़े से हरगिज़ मह़रूम न फिरेगा कि مَنْ دَقَّ بَابَ الْكَرِيْمِ انْفَتَحَ (जिस ने करीम के दरवाज़े पर दस्तक दी तो वोह उस पर खुल गया) وَبِاللّٰهِ التَّوْفِيْق (और तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है)।

(फ़ज़ाइले दुआ़, स. 100 ता 104)

दुआ़ की क़बूलिय्यत में ताख़ीर तो करम है : ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ऐ अ़ज़ीज़ ! तेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ (پ۲،البقرة:۱۸۶) **तरजमा :** मैं दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल करता हूं जब मुझ से दुआ़ मांगे।

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿۷۵﴾ (پ۲۳،صٰفّٰت:۷۵) **तरजमा :** हम क्या अच्छे क़बूल करने वाले हैं।

اُدْعُوْنِيْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (پ۲۴،مؤمن:۶۰) **तरजमा :** मुझ से दुआ़ मांगो मैं क़बूल फ़रमाऊं।

पस यक़ीन समझ कि वोह तुझे अपने दर से मह़रूम नहीं करेगा और अपने वा'दे को वफ़ा फ़रमाएगा। वोह अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाता है :

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿۱۰﴾ (پ۳۰،الضحٰى:۱۰) **तरजमा :** साइल को न झिड़क।

आप किस त़रह़ अपने ख़्वाने करम से दूर करेगा ! बल्कि वोह तुझ पर नज़रे करम रखता है कि तेरी दुआ़ के क़बूल करने में देर करता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 98)

इर्कुन्निसा का दर्द जाता रहा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो

www.dawateislami.net

सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **"दा'वते इस्लामी"** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के दुआ़ मांगने वालों के मसाइल ह़ल होने के काफ़ी वाक़िआ़त हैं। एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ में अ़र्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। हमारा **म-दनी क़ाफ़िला** ठठ्ठा शहर वारिद हुवा, शु-रका में से एक इस्लामी भाई को **इर्कुन्निसा** का शदीद दर्द उठता था, बेचारे शिद्दते दर्द से माहिये बे आब की त़रह़ तड़पते थे। एक बार दर्द के सबब रात भर सो न सके। आख़िरी दिन **अमीरे क़ाफ़िला** ने फ़रमाया : आइये ! सब मिल कर इन के लिये दुआ़ करते हैं। चुनान्चे दुआ़ शुरूअ़ हुई, उन इस्लामी भाई का बयान है : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दौराने दुआ़ ही दर्द में कमी आनी शुरूअ़ हो गई और कुछ देर के बा'द **इर्कुन्निसा का दर्द बिल्कुल जाता रहा।** اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह बयान देते वक़्त काफ़ी अ़र्सा हो चुका है वोह दिन, आज का दिन उन को फिर कभी **इर्कुन्निसा** की तक्लीफ़ नहीं हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हें अ़लाक़ाई **म-दनी क़ाफ़िला** ज़िम्मेदार की ह़ैसिय्यत से म-दनी क़ाफ़िलों की धूमें मचाने की ख़िदमत भी मिली।

गर हो इर्कुन्निसा, आ़रिज़ा कोई सा दे ख़ुदा सिह़्ह़तें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675, 677)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से **इर्कुन्निसा** जैसी मूज़ी बीमारी से नजात मिल गई। **इर्कुन्निसा** की पहचान येह है कि इस में चढ्ढे (या'नी रान के जोड़) से ले कर पाउं के टख़्ने तक शदीद दर्द होता है। येह मरज़ बरसों तक पीछा नहीं छोड़ता।

इर्कुन्निसा के दो रूह़ानी इलाज : ﴿1﴾ दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़, **सू-रतुल फ़ातिह़ा** एक बार और सात मर्तबा येह दुआ़ पढ़ कर दम कर दीजिये :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّیْ سُوْءَ مَا اَجِدُ (या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा दम करे तो عَنِّیْ की जगह عَنْهُ (या'नी इस से) और اَجِدُ (या'नी मैं पाता हूं) की जगह یَجِدُ (या'नी वोह पाता है) कहे। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) ﴿2﴾ **یَا مُحْیِیُ** सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या इर्कुन्निसा या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

(मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

रोज़ा तोड़ने वाली 14 चीज़ें

﴿1﴾ **खाने**, पीने या हम-बिस्तरी करने से रोज़ा जाता रहता है जब कि रोज़ादार होना याद हो।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 985)

﴿2﴾ **हुक़्क़ा**, सिगार, सिगरेट, चुरट वग़ैरा पीने से भी रोज़ा जाता रहता है, अगर्चे अपने ख़याल में ह़ल्क़ तक धूआं न पहुंचता हो। (ऐज़न, स. 986)

﴿3﴾ **पान** या सिर्फ़ तम्बाकू खाने से भी रोज़ा जाता रहेगा अगर्चे बार बार उस की पीक थूकते रहें, क्यूं कि ह़ल्क़ में उस के बारीक अज्ज़ा ज़रूर पहुंचते हैं। (ऐज़न)

﴿4﴾ **शकर** वग़ैरा ऐसी चीज़ें जो मुंह में रखने से घुल जाती हैं मुंह में रखी और थूक निगल गए, रोज़ा जाता रहा। (ऐज़न)

﴿5﴾ **दांतों** के दरमियान कोई चीज़ चने के बराबर या ज़ियादा थी उसे खा गए या कम ही थी मगर मुंह से निकाल कर फिर खा ली तो रोज़ा टूट गया। (دُرِّ مُخْتَار ج۳ص۴۵۲)

﴿6﴾ **दांतों** से ख़ून निकल कर ह़ल्क़ से नीचे उतरा और ख़ून थूक से ज़ियादा या बराबर या कम था मगर उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस हुवा तो रोज़ा जाता रहा और अगर कम था और मज़ा भी ह़ल्क़ में मह़सूस न हुवा तो रोज़ा न गया। (ایضاًص۴۲۲)

﴿7﴾ **रोज़ा** याद रहने के बा वुजूद हुक़्ना[1] लिया। या नाक के नथनों से दवा चढ़ाई रोज़ा जाता रहा। (عالمگیری ج۱ ص۲۰۴)

1 : या'नी किसी दवा की बत्ती या पिचकारी पीछे के मक़ाम में चढ़ाना जिस से इजाबत हो जाए।

www.dawateislami.net

《8》 **कुल्ली** कर रहे थे बिला क़स्द (या'नी बिग़ैर इरादे के) पानी ह़ल्क़ से उतर गया या नाक में पानी चढ़ाया और दिमाग़ को चढ़ गया रोज़ा जाता रहा मगर जब कि रोज़ादार होना भूल गया हो तो न टूटेगा अगर्चे क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) हो। यूं ही रोज़ेदार की त़रफ़ किसी ने कोई चीज़ फेंकी वोह उस के ह़ल्क़ में चली गई तो रोज़ा जाता रहा। (عالمگیری ج۱ص ۲۰۲)

《9》 **सोते** में (या'नी नींद की ह़ालत में) पानी पी लिया या कुछ खा लिया, या मुंह खुला था, पानी का क़त़रा या बरिश का ओला ह़ल्क़ में चला गया तो रोज़ा जाता रहा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 986, جوہرہ ج۱ص۱۷۸)

《10》 **दूसरे** का थूक निगल लिया या अपना ही थूक हाथ में ले कर निगल लिया तो रोज़ा जाता रहा। (عالمگیری ج۱ص ۲۰۳)

《11》 **जब** तक थूक या बल्ग़म मुंह के अन्दर मौजूद हो उसे निगल जाने से रोज़ा नहीं जाता, बार बार थूकते रहना ज़रूरी नहीं।

《12》 **मुंह** में रंगीन डोरा वग़ैरा रखा जिस से थूक रंगीन हो गया फिर थूक निगल लिया रोज़ा जाता रहा। (اَیضاً)

《13》 **आंसू** मुंह में चला गया और निगल लिया, अगर क़त़रा दो क़त़रा है तो रोज़ा न गया और ज़ियादा था कि उस की नमकीनी पूरे मुंह में मह़सूस हुई तो जाता रहा। पसीने का भी येही हुक्म है। (اَیضاً)

《14》 **पाख़ाने** का मक़ाम बाहर निकल पड़ा तो हुक्म है कि कपड़े से ख़ूब पोंछ कर उठे कि तरी बिल्कुल बाक़ी न रहे। और अगर कुछ पानी उस पर बाक़ी था और खड़ा हो गया कि पानी अन्दर को चला गया तो रोज़ा फ़ासिद हो (या'नी टूट) गया। इसी वज्ह से फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि रोज़ादार **इस्तिन्जा** (या'नी पानी से पाकी ह़ासिल) करने में सांस न ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 988, عالمگیری ج۱ص ۲۰٤)

रोज़े में क़ै (Vomiting) होना : दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : 《1》 जिस

www.dawateislami.net

को माहे र-मज़ान में ख़ुद बख़ुद **क़ै** आई उस का रोज़ा न टूटा और जिस ने जान बूझ कर क़ै की उस का रोज़ा टूट गया (کنزُ العُمّال ج٨ص ٢٣٠ حدیث ٢٣٨١٤) ﴿2﴾ "जिस को ख़ुद बख़ुद क़ै आई उस पर **क़ज़ा** नहीं और जिस ने जान बूझ कर क़ै की वोह रोज़े की **क़ज़ा** करे।" (ترمذی ج٢ ص١٧٣ حدیث ٧٢٠)

क़ै के सात अह़काम

﴿1﴾ **रोज़े** में ख़ुद बख़ुद कितनी ही **क़ै** (या'नी उलटी। Vomiting) हो जाए (ख़्वाह बालटी ही क्यूं न भर जाए) इस से रोज़ा नहीं टूटता (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٥٠) ﴿2﴾ **अगर** रोज़ा याद होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) **क़ै** की और अगर वोह मुंह भर है (मुंह भर की ता'रीफ़ आगे आती है) तो अब रोज़ा टूट जाएगा (ایضاً ص ٤٥١) ﴿3﴾ **क़स्दन** (या'नी जान बूझ कर) मुंह भर होने वाली **क़ै** से भी इस सूरत में रोज़ा टूटेगा जब कि क़ै में खाना (या पानी) या सफ़्रा (या'नी कड़वा पानी) या ख़ून आए (عالمگیری ج١ص٢٠٤) ﴿4﴾ **अगर** (मुंह भर) **क़ै** में सिर्फ़ बल्ग़म निकला तो **रोज़ा** नहीं टूटेगा (دُرِّمُختار ج٣ص٤٥٢) ﴿5﴾ **क़स्दन क़ै** की मगर थोड़ी सी आई, मुंह भर न आई तो अब भी **रोज़ा** न टूटा (ایضاً ص ٤٥١) ﴿6﴾ **मुंह भर** से कम क़ै हुई और मुंह ही से दोबारा लौट गई या ख़ुद ही लौटा दी, इन दोनों सूरतों में रोज़ा नहीं टूटेगा (اَیضاً ص٤٥٠) ﴿7﴾ **मुंह भर** क़ै बिला इख़्तियार हो गई तो **रोज़ा** तो न टूटा अलबत्ता अगर इस में से एक चने के बराबर भी वापस लौटा दी तो **रोज़ा** टूट जाएगा और एक चने से कम हो तो **रोज़ा** न टूटा। (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٥٠)

मुंह भर क़ै की ता'रीफ़ : मुंह भर क़ै के मा'ना येह हैं : "उसे बिला तकल्लुफ़ न रोका जा सके।" (عالمگیری ج١ص١١)

"मदीना" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू में क़ै के 5 अह़कामे शर-ई

﴿1﴾ **वुज़ू** की ह़ालत में (जान बूझ कर क़ै करें या ख़ुद बख़ुद हो जाए दोनों सूरतों में) अगर मुंह भर **क़ै** आई और इस में खाना, पानी या सफ़्रा (कड़वा पानी) आया तो वुज़ू टूट जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306)

www.dawateislami.net

﴿2﴾ **अगर** बल्ग़म की मुंह भर **क़ै** हुई तो **वुज़ू** नहीं टूटेगा। (ऐज़न)

﴿3﴾ **बहते** ख़ून की **क़ै** वुज़ू तोड़ देती है। (ऐज़न)

﴿4﴾ **बहते** ख़ून की **क़ै** से **वुज़ू** उस वक़्त टूटता है जब कि ख़ून थूक से मग़्लूब (या'नी कम) न हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306, رَدُّالْمُحتار ج١ص٢٦٧) या'नी ख़ून की वज्ह से **क़ै** सुर्ख़ हो रही है तो ख़ून ग़ालिब है **वुज़ू** टूट गया और अगर थूक ज़ियादा है और ख़ून कम तो **वुज़ू** नहीं टूटेगा। ख़ून कम होने की निशानी येह है कि पूरी क़ै जो थूक पर मुश्तमिल है वोह ज़र्द (या'नी पीली) होगी।

﴿5﴾ **अगर क़ै** में जमा हुवा ख़ून निकला और वोह मुंह भर से कम है तो **वुज़ू** नहीं टूटेगा।

(मुलख़्ख़स अज़ : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 306)

क़ै का अहम मस्अला : मुंह भर क़ै (इलावा बल्ग़म के) नापाक है, इस का कोई छींटा कपड़े या जिस्म पर न गिरने पाए इस की एह़तियात़ फ़रमाइये। अक्सर लोग इस में बड़ी बे एह़तियात़ी करते हैं, कपड़ों पर छींटे पड़ने की कोई परवा नहीं की जाती और मुंह वग़ैरा पर जो नापाक **क़ै** लग जाती है उस को भी बिला झिजक अपने कपड़ों से पोंछ लेते हैं। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हमें नजासत से बचने का ज़ेह्न इनायत फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं जाता : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस रोज़ादार ने भूल कर खाया पिया वोह अपना **रोज़ा** पूरा करे कि उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने खिलाया और पिलाया।" (مسلم ص٥٨٢ حدیث ١١٥٥)

"वाह क्या बात है माहे र-मज़ान की" के इक्कीस हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा न टूटने के 21 अह़काम

﴿1﴾ **भूल** कर खाया, पिया या जिमाअ़ किया रोज़ा फ़ासिद न हुवा, ख़्वाह वोह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल। (دُرِّمُختار، رَدُّ المحتار ج٣ص٤١٩)

www.dawateislami.net

रोज़ादार को भूल कर खाता पीता देखे तो क्या करे

(2) **किसी** रोज़ादार को इन अफ़्आ़ल में देखें तो याद दिलाना वाजिब है, हां रोज़ादार बहुत ही कमज़ोर हो कि याद दिलाने पर वोह खाना छोड़ देगा जिस की वज्ह से कमज़ोरी इतनी बढ़ जाएगी कि इस के लिये **रोज़ा** रखना ही दुश्वार हो जाएगा और अगर खा लेगा तो **रोज़ा** भी अच्छी त़रह़ पूरा कर लेगा और दीगर इबादतें भी बख़ूबी अदा कर सकेगा (और चूंकि भूल कर खा पी रहा है इस लिये इस का रोज़ा तो हो ही जाएगा) लिहाज़ा इस सूरत में याद न दिलाना ही बेहतर है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 981) बा'ज़ मशाइख़े किराम (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) फ़रमाते हैं : "**जवान** को देखे तो याद दिला दे और **बूढ़े** को देखे तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं।" मगर येह हुक्म अक्सर के लिह़ाज़ से है क्यूं कि **जवान** अक्सर क़वी (या'नी त़ाक़त वर) होते हैं और **बूढ़े** अक्सर कमज़ोर। चुनान्चे अस्ल हुक्म येही है कि जवानी और बुढ़ापे को कोई दख़्ल नहीं, बल्कि क़ुव्वत व ज़ो'फ़ (या'नी त़ाक़त और कमज़ोरी) का लिह़ाज़ है लिहाज़ा अगर **जवान** इस क़दर कमज़ोर हो तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं और **बूढ़ा** क़वी (या'नी त़ाक़त वर) हो तो याद दिलाना वाजिब है। (رَدُّ الْمُحتَار ج۳ ص۴۲۰)

(3) **रोज़ा** याद होने के बा वुजूद भी मख्खी या गुबार या धूआं ह़ल्क़ में चले जाने से **रोज़ा** नहीं टूटता। ख़्वाह गुबार आटे का हो जो चक्की पीसने या आटा छानने में उड़ता है या ग़ल्ले (या'नी अनाज) का गुबार हो या हवा से ख़ाक उड़ी या जानवरों के खुर या टाप से। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 982/ دُرِّ مُختَار، رَدُّ المحتار ج۳ ص۴۲۰)

(4) **इसी** त़रह़ बस या कार का धूआं या उन से गुबार उड़ कर ह़ल्क़ में पहुंचा अगर्चे **रोज़ादार** होना याद था, **रोज़ा** नहीं जाएगा।

(5) **अगरबत्ती** सुलग रही है और उस का धूआं नाक में गया तो **रोज़ा** नहीं टूटेगा। हां लोबान या अगरबत्ती सुलग रही हो और **रोज़ा** याद होने के बा वुजूद मुंह क़रीब ले जा कर उस का धूआं नाक से खींचा तो **रोज़ा** फ़ासिद हो जाएगा। (اَیضاً، اَیضاً ص۴۲۱)

www.dawateislami.net

《6》 **भरी** सींगी[1] लगवाई या तेल या सुरमा लगाया तो रोज़ा न गया, तेल या सुरमे का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस होता हो बल्कि थूक में सुरमे का रंग भी दिखाई देता हो जब भी रोज़ा नहीं टूटता । (رَدُّالْمُحتَارج۳ص۴۲۰)

《7》 **ग़ुस्ल** किया और पानी की ख़ुनुकी (या'नी ठन्डक) अन्दर मह़सूस हुई जब भी **रोज़ा** नहीं टूटा । (عالمگیری ج۱ص۲۰۳)

《8》 **कुल्ली** की और पानी बिल्कुल फेंक दिया सिर्फ़ कुछ तरी मुंह में बाक़ी रह गई थी थूक के साथ इसे निगल लिया, **रोज़ा** नहीं टूटा । (رَدُّالْمُحتَارج۳ص۴۲۰)

《9》 **दवा** कूटी और ह़ल्क़ में इस का मज़ा मह़सूस हुवा **रोज़ा** नहीं टूटा । (اَیضاً ص۴۲۲)

《10》 **कान** में पानी चला गया जब भी **रोज़ा** नहीं टूटा बल्कि ख़ुद पानी डाला जब भी न टूटा । (دُرِّمُختَار ج۳ص۴۲۲) अलबत्ता कान का पर्दा फटा हुवा हो तो कान में पानी डालने से ह़ल्क़ के नीचे चला जाएगा और रोज़ा टूट जाएगा ।

《11》 **तिन्के** से कान खुजाया और उस पर कान का मैल लग गया फिर वोही मैल लगा हुवा तिन्का कान में डाला अगर्चे चन्द बार ऐसा किया हो जब भी **रोज़ा** न टूटा । (اَیضاً)

《12》 **दांत** या मुंह में ख़फ़ीफ़ (या'नी मा'मूली) चीज़ बे मा'लूम सी रह गई कि लुआ़ब के साथ ख़ुद ही उतर जाएगी और वोह उतर गई, **रोज़ा** नहीं टूटा । (اَیضاً)

《13》 **तिल** या तिल के बराबर कोई चीज़ चबाई और थूक के साथ ह़ल्क़ से उतर गई तो **रोज़ा** न गया मगर जब कि उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस होता हो तो **रोज़ा** जाता रहा । (فَتْحُ القدیر ج۲ص۲۵۹)

《14》 **थूक** या बल्ग़म मुंह में आया फिर उसे निगल गया तो **रोज़ा** न गया । (دُرِّ مُختَار، رَدُّ المحتار ج۳ ص۴۲۸)

---

1 : येह दर्द के इलाज का एक मख़्सूस त़रीक़ा है जिस में सूराख़ किया हुवा सींग दर्द की जगह रख कर मुंह के ज़रीए जिस्म की गरमी खींचते हैं ।

www.dawateislami.net

15 **इसी** त़रह़ नाक में रींठ जम्अ़ हो गई, सांस के ज़रीए़ खींच कर निगल जाने से भी **रोज़ा** नहीं जाता। (دُرِّمُختار ج۳ص۴۲۲)

16 **दांतों** से ख़ून निकल कर ह़ल्क़ तक पहुंचा मगर ह़ल्क़ से नीचे न उतरा तो **रोज़ा** न गया। (اَیضاً)

17 **मख्खी** ह़ल्क़ में चली गई **रोज़ा** न गया और क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) निगली तो चला गया। (عالمگیری ج۱ص۲۰۳)

18 **भूले** से खाना खा रहे थे, याद आते ही लुक़्मा फेंक दिया या पानी पी रहे थे याद आते ही मुंह का पानी फेंक दिया तो **रोज़ा** न गया। अगर मुंह में का लुक़्मा या पानी याद आने के बा वुजूद निगल गए तो **रोज़ा** गया। (اَیضاً)

19 **सुब्ह़े** सादिक़ से पहले खा या पी रहे थे और सुब्ह़ होते ही (या'नी स-ह़री का वक़्त ख़त्म होते ही) मुंह में का सब कुछ उगल दिया तो **रोज़ा** न गया, और अगर निगल लिया तो जाता रहा। (اَیضاً)

20 **ग़ीबत** की तो **रोज़ा** न गया। अगर्चे ग़ीबत सख़्त कबीरा गुनाह है, क़ुरआने मजीद में ग़ीबत करने की निस्बत फ़रमाया : "जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना।" और ह़दीसे पाक में फ़रमाया : "ग़ीबत ज़िना से सख़्त तर है।" (مُعجَم اَوسَط ج ۵ ص ۶۳ حدیث ۶۵۹۰) ग़ीबत की वज्ह से **रोज़े की नूरानिय्यत** जाती रहती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 984)

21 **जनाबत** (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने) की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि अगर्चे सारे दिन **जुनुब** (या'नी बे ग़ुस्ल) रहा रोज़ा न गया। (دُرِّ مُختار ج۳ص۴۲۸) मगर इतनी देर तक क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) **ग़ुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह व ह़राम है। ह़दीस शरीफ़** में फ़रमाया : "जिस घर में **जुनुब** हो उस में रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते।" (ابوداؤد ج۱ص۱۰۹حدیث۲۲۷, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 984)

मकरूहाते रोज़ा : अब रोज़े के मकरूहात का बयान किया जाता है जिन के करने से **रोज़ा** हो

www.dawateislami.net

तो जाता है मगर उस की नूरानिय्यत चली जाती है। लफ़्ज़ "**नबी**" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से पहले **तीन अह़ादीसे मुबा-रका** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये। फिर फ़िक़्ही अह़काम अ़र्ज़ किये जाएंगे

《1》 "जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना, पीना छोड़ दिया है"[1] 《2》 "**रोज़ा** इस का नाम नहीं कि खाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो येह है कि लग़्व व बेहूदा बातों से बचा जाए"[2] 《3》 **रोज़ा** सिपर (या'नी ढाल) है जब तक उसे फाड़ा न हो। अ़र्ज़ की गई : किस चीज़ से फाड़ेगा ? इर्शाद फ़रमाया : "झूट या ग़ीबत से।"[3]

"२-मज़ानुल मुबारक" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से मक्रूहाते रोज़ा पर मुश्तमिल 12 पैरे

《1》 **झूट**, चुग़ली, ग़ीबत, गाली देना, बेहूदा बात, किसी को तक्लीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व ह़राम हैं **रोज़े** में और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से **रोज़े** में कराहत आती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 996)

《2》 **रोज़ादार** को बिला उ़ज़्र किसी चीज़ का चखना या चबाना मक्रूह है। चखने के लिये उ़ज़्र येह है कि म-सलन औ़रत का शोहर बद मिज़ाज है कि नमक कम या ज़ियादा होगा तो उस की नाराज़ी का बाइ़स होगा, इस वज्ह से चखने में ह़रज नहीं। चबाने के लिये उ़ज़्र येह है कि इतना छोटा बच्चा है कि रोटी नहीं चबा सकता और कोई नर्म ग़िज़ा नहीं जो उसे खिलाई जा सके, न ह़ैज़ व निफ़ास[4] वाली या कोई और ऐसा है कि उसे चबा कर दे। तो बच्चे के खिलाने के लिये रोटी वग़ैरा चबाना मक्रूह नहीं। (دُرِّ مُختار ج۳ ص۴۰۳) मगर पूरी एह़तियात़ रखिये कि ग़िज़ा का कोई ज़र्रा ह़ल्क़ से नीचे न उतरने पाए।

مدینہ

١ : بُخاری ج ١ ص ٦٢٨ حدیث١٩٠٣۔ ٢ : اَلْمُستَدرَک ج ٢ ص٦٧ حدیث ١٦١١۔ ٣ : مُعجَم اَوسَط ج٣ ص٢٦٤ حدیث٤٥٣٦۔

4 : ह़ैज़ व निफ़ास की ह़ालत में औ़रत को रोज़ा, नमाज़, तिलावत, मस्जिद में जाना, त़वाफ़े का'बा करना ह़राम है। नमाज़ मुआ़फ़ है मगर बा'दे फ़राग़त रोज़ा क़ज़ा करना फ़र्ज़ है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

चखना किसे कहते हैं ? : चखने के मा'ना वोह नहीं जो आज कल आ़म मुहा़-वरा है या'नी किसी चीज़ का मज़ा दरयाफ़्त करने के लिये उस में से थोड़ा खा लिया जाता है ! कि यूं हो तो कराहत कैसी **रोज़ा** ही जाता रहेगा बल्कि कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए जाएं तो कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा। चखने से मुराद येह है कि सिर्फ़ ज़बान पर रख कर मज़ा दरयाफ़्त कर लें और उसे थूक दें, उस में से ह़ल्क़ में कुछ भी न जाने पाए। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 996)

﴾3﴿ **कोई** चीज़ ख़रीदी और उस का चखना ज़रूरी है कि अगर न चखा तो नुक़्सान होगा तो ऐसी सूरत में चखने में ह़रज नहीं वरना मक्रूह है। (دُرِّ مُختار ج۳ ص۴۵۳)

﴾4﴿ **बीवी** का बोसा लेना और गले लगाना और बदन को छूना मक्रूह नहीं। हां येह अन्देशा हो कि **इन्ज़ाल** हो जाएगा (या'नी मनी निकल जाएगी) या जिमाअ़ में मुब्तला होगा और होंट और ज़बान चूसना रोज़े में मुत़्लक़न मक्रूह हैं। यूं ही मुबा-श-रते फ़ाह़िशा (या'नी शर्मगाह से शर्मगाह टकराना[1]) (رَدُّالْمُحتَار ج۳ ص۴۵٤)

﴾5﴿ **गुलाब** या मुश्क वग़ैरा सूंघना, दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना और सुरमा लगाना मक्रूह नहीं। (اَیضاً ص۴۵۵)

﴾6﴿ **रोज़े** की ह़ालत में हर क़िस्म का **इ़त्र** सूंघ भी सकते हैं और लगा भी सकते हैं। (اَیضاً) इसी त़रह़ रोज़े में बदन पर तेल की मालिश (Massage) करने में भी ह़रज नहीं।

﴾7﴿ **रोज़े** में मिस्वाक करना मक्रूह नहीं बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है वैसे ही **रोज़े** में भी सुन्नत है, **मिस्वाक** ख़ुश्क हो या तर, अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करें या बा'द, किसी वक़्त भी मक्रूह नहीं। (اَیضاً ص۴۵۸)

﴾8﴿ **अक्सर** लोगों में मश्हूर है कि दो पहर के बा'द रोज़ादार के लिये मिस्वाक करना मक्रूह है येह हमारे मज़्हबे ह़-नफ़िय्या के ख़िलाफ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 997) ह़ज़रते सय्यिदुना

1 : शादी शुदगान "मिलाप" की निय्यतों वग़ैरा की मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा नम्बर 385 ता 386 पर मस्अला नम्बर 141 ता 142 का मुता़-लआ़ फ़रमा लें।

www.dawateislami.net

आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है : "मैं ने रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बे शुमार बार **रोज़े** में मिस्वाक करते देखा।" (ترمذی ج ۲ ص ۱۷۶ حدیث ۷۲۵)

9 **अगर** मिस्वाक चबाने से रेशे छूटें या मज़ा मह़सूस हो तो ऐसी **मिस्वाक** रोज़े में नहीं करना चाहिये। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 511) अगर रोज़ा याद होते हुए **मिस्वाक** चबाते या दांत मांझते हुए इस का रेशा या कोई जुज़ ह़ल्क़ से नीचे उतर गया और उस का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस हुवा तो **रोज़ा** फ़ासिद हो जाएगा। और अगर इतने सारे रेशे ह़ल्क़ से नीचे उतर गए जो एक चने की मिक़्दार के बराबर हों तो अगर्चे ह़ल्क़ में ज़ाएक़ा मह़सूस न हो तब भी रोज़ा टूट जाएगा।

10 **वुज़ू** व ग़ुस्ल के इलावा ठन्डक पहुंचाने की ग़रज़ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना या ठन्डक के लिये नहाना बल्कि बदन पर भीगा कपड़ा लपेटना भी मक्रूह नहीं। हां परेशानी ज़ाहिर करने के लिये भीगा कपड़ा लपेटना मक्रूह है कि इबादत में दिल तंग होना अच्छी बात नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 997, رَدُّالْمُحتَار ج ۳ ص ۴۰۹)

11 **बा'ज़** इस्लामी भाई रोज़े में बार बार थूकते रहते हैं, शायद वोह समझते हैं कि रोज़े में थूक नहीं निगलना चाहिये, ऐसा नहीं। अलबत्ता मुंह में थूक इकठ्ठा कर के निगल जाना, येह तो बिग़ैर **रोज़ा** के भी ना पसन्दीदा है और रोज़े में मक्रूह। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 998)

12 **र-मज़ानुल मुबारक** के दिनों में ऐसा काम करना जाइज़ नहीं जिस से ऐसा ज़ो'फ़ (या'नी कमज़ोरी) आ जाए कि **रोज़ा** तोड़ने का ज़न्ने ग़ालिब हो। लिहाज़ा नानबाई को चाहिये कि दो पहर तक रोटी पकाए फिर बाक़ी दिन में आराम करे। (دُرِّمُختَار ج ۳ ص ۴۶۰) मि'मार व मज़दूर और दीगर मशक़्क़त के काम करने वाले इस मस्अले पर ग़ौर फ़रमा लें।

आस्मान पर से काग़ज़ का पुर्ज़ा गिरा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रोज़ों के शर-ई अह़काम सीखने का जज़्बा उजागर करने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने**

www.dawateislami.net

रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। एक बार सफ़र कर के तजरिबा कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह वोह दीनी मनाफ़ेअ़ ह़ासिल होंगे कि आप ह़ैरान रह जाएंगे। तरग़ीब के लिये **म–दनी क़ाफ़िले** की एक **म–दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है : क़स्बा कॉलोनी (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के ख़ानदान में लड़कियां काफ़ी थीं, चचाजान के यहां सात लड़कियां तो बड़े भाईजान के यहां 9 लड़कियां ! इन की शादी हुई तो इन के यहां भी लड़की की विलादत हुई। सब को तश्वीश सी होने लगी और आज कल के एक आ़म ज़ेह्न के मुत़ाबिक़ सब को वह्म सा होने लगा कि किसी ने जादू कर के औलादे नरीना का सिल्सिला बन्द करवा दिया है ! उन्हों ने मन्नत मानी कि मेरे यहां लड़का पैदा हुवा तो **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **एक माह के म–दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा। उन की म–दनी मुन्नी की अम्मी ने एक बार ख़्वाब देखा कि आस्मान से कोई काग़ज़ का पुर्ज़ा उन के क़रीब आ कर गिरा, उठा कर देखा तो उस पर लिखा था : "**बिलाल।**" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक माह के म–दनी क़ाफ़िले की (निय्यत की) ब–र–कत से उन के यहां **म–दनी मुन्ने** की आमद हो गई ! न सिर्फ़ एक बल्कि आगे चल कर यके बा'द दीगरे **दो म–दनी मुन्ने** मज़ीद पैदा हुए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम देखिये ! **एक माह के म–दनी क़ाफ़िले** की (निय्यत की) ब–र–कत सिर्फ़ उन तक मह़दूद न रही, बल्कि उन के ख़ानदान में जो भी औलादे नरीना से मह़रूम था सब के यहां **म–दनी मुन्ने** तवल्लुद (या'नी पैदा) हुए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़लाक़ाई म–दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से म–दनी क़ाफ़िलों की बहारें लुटाने की कोशिशें करने की सआ़दत भी मिली।

आ के तुम बा अदब, देख लो फ़ज़्ले रब — म–दनी मुन्ने मिलें, क़ाफ़िले में चलो
खोटी क़िस्मत खरी, गोद होगी हरी — मुन्ना मुन्नी मिलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मांगी मुराद न मिलना भी इन्आ़म ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-र-कत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़्मुर्दा कलियां खिल उठती हैं और ख़ानमां बरबादों की ख़ुशियां लौट आती हैं। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाज़िमी ही पूरी हो। बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता, उस की मुंह मांगी मुराद न मिलना ही उस के लिये इन्आ़म होता है। म-सलन येही कि वोह **औलादे नरीना** मांगता है मगर उस को म-दनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बारहा बेहतर भी होता है। चुनान्चे पारह दूसरा **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है :

عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْؕ

(پ۲،البقرة:۲۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

बेटी के फ़ज़ाइल : याद रखिये ! बेटी की फ़ज़ीलत किसी त़रह़ कम नहीं इस ज़िम्न में मुला-ह़ज़ा हों **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ﴿1﴾ जिस ने अपनी तीन बेटियों की परवरिश की वोह जन्नत में जाएगा और उसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में उस जिहाद करने वाले की मिस्ल अज्र मिलेगा जिस ने दौराने जिहाद रोज़े रखे और नमाज़ क़ाइम की। (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج۳ص۴۶حديث۲۶) ﴿2﴾ जिस की **तीन बेटियां** हों, वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो उस के लिये **जन्नत** वाजिब हो जाती है। अ़र्ज़ की गई : और दो हों तो ? फ़रमाया : "और दो हों तब भी।" अ़र्ज़ की गई : अगर एक हो तो ? फ़रमाया : "अगर एक हो तो भी।" (مُعجَم اَوسَط ج۴ص۳۴۷حديث۶۱۹۹مُلَخَّصاً) ﴿3﴾ जिस ने अपनी दो बेटियों या दो बहनों या दो रिश्तेदार बच्चियों पर सवाब की निय्यत से ख़र्च किया यहां तक कि **अल्लाह तआ़ला** उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी उन का निकाह़ हो जाए या वोह साहि़बे माल हो जाएं या उन की वफ़ात हो जाए) तो वोह उस के लिये आग से आड़ हो जाएंगी। (مسند امام احمد ج ۱۰ ص ۱۷۹ حديث ۲۶۵۷۸)

www.dawateislami.net

रोज़ा न रखने की मजबूरियां : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ मजबूरियां ऐसी हैं जिन के सबब **र-मज़ानुल मुबारक** में **रोज़ा** न रखने की इजाज़त है। मगर येह याद रहे कि मजबूरी में **रोज़ा** मुआ़फ़ नहीं वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने के बा'द उस की **क़ज़ा** रखना फ़र्ज़ है, अलबत्ता **क़ज़ा** का गुनाह नहीं होगा जैसा कि "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 1002" पर "दुर्रे मुख़्तार" के ह़वाले से लिखा है कि सफ़र व ह़म्ल और बच्चे को दूध पिलाना और मरज़ और बुढ़ापा और ख़ौफ़े हलाकत व इक्राह (या'नी अगर कोई जान से मार डालने या किसी उ़ज़्व के काट डालने या सख़्त मार मारने की सह़ीह़ धम्की दे कर कहे कि रोज़ा तोड़ डाल अगर रोज़ादार जानता हो कि येह कहने वाला जो कुछ कहता है कर गुज़रेगा तो ऐसी सूरत में रोज़ा फ़ासिद कर देना या तर्क करना गुनाह नहीं। "इक्राह से मुराद येही है") व नुक़्साने अ़क़्ल और जिहाद येह सब रोज़ा न रखने के उ़ज़्र हैं इन वुजूह से अगर कोई **रोज़ा** न रखे तो गुनाहगार नहीं। (دُرِّمُختار ج٣ص٤٦٢)

शर-ई सफ़र की ता'रीफ़ : दौराने सफ़र भी **रोज़ा** न रखने की इजाज़त है। सफ़र की मिक़्दार भी ज़ेह्न नशीन कर लीजिये। सय्यिदी व मुर्शिदी इमामे अहले सुन्नत, **आ'ला ह़ज़रत**, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ शरअ़न **सफ़र** की मिक़्दार **साढ़े सत्तावन मील** (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) है जो कोई इतनी मिक़्दार का फ़ासिला त़ै करने की ग़रज़ से अपने शह्र या गाउं की आबादी से बाहर निकल आया, वोह अब शरअ़न **मुसाफ़िर** है, उसे **रोज़ा** क़ज़ा कर के रखने की इजाज़त है और **नमाज़** में भी वोह **क़स्र** करेगा। **मुसाफ़िर** अगर **रोज़ा** रखना चाहे तो रख सकता है मगर चार रक्अ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ों में उसे क़स्र करना वाजिब है, नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा। और क़स्दन चार पढ़ीं और दो पर क़ा'दा किया तो फ़र्ज़ अदा हो गए और पिछली दो रक्अ़तें नफ़्ल हो गईं मगर गुनहगार व अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है कि वाजिब तर्क किया लिहाज़ा तौबा करे (और नमाज़ का इआ़दा भी वाजिब है) और दो रक्अ़त पर क़ा'दा न किया तो फ़र्ज़ अदा न हुए और वोह नमाज़ नफ़्ल हो गई। (बहारे शरीअ़त, जि.

www.dawateislami.net

1, स. 743 मुलख़्ख़सन) "और जहालतन (या'नी इ़ल्म न होने की वज्ह से) पूरी (चार) पढ़ी तो उस **नमाज़** का फैरना भी वाजिब है" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 270 मुलख़्ख़सन) या'नी मा'लूमात न होने की बिना पर भी आज तक जितनी नमाज़ें **सफ़र** में पूरी पढ़ी हैं उन का ह़िसाब लगा कर चार रक्अ़ती फ़र्ज़ की जगह **क़स्र** की निय्यत से दो दो फ़र्ज़ लौटाने होंगे। हां **मुसाफ़िर** को मुक़ीम इमाम के पीछे फ़र्ज़ चार पूरे पढ़ने होते हैं, सुन्नतें और वित्र लौटाने की ज़रूरत नहीं। **क़स्र** सिर्फ़ ज़ोहर, अ़स्र और इ़शा की फ़र्ज़ रक्अ़तों में करना है। या'नी इन में चार रक्अ़त फ़र्ज़ की जगह दो रक्अ़त अदा की जाएंगी, बाक़ी सुन्नतों और वित्र की रक्अ़तें पूरी अदा की जाएंगी, दूसरे शहर या गाउं वग़ैरा में पहुंचने के बा'द जब तक पन्द्रह दिन से कम मुद्दत तक क़ियाम की निय्यत थी **मुसाफ़िर** ही कहलाएगा और **मुसाफ़िर** के अह़काम रहेंगे और अगर **मुसाफ़िर** ने वहां पहुंच कर पन्द्रह दिन या उस से ज़ियादा क़ियाम की निय्यत कर ली तो अब **मुसाफ़िर** के अह़काम ख़त्म हो जाएंगे और वोह मुक़ीम कहलाएगा। अब उसे **रोज़ा** भी रखना होगा और नमाज़ भी क़स्र नहीं करेगा। सफ़र के मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी अह़काम की तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सए चहारुम के बाब "नमाज़े मुसाफ़िर का बयान" या मक-त-बतुल मदीना के रिसाले "मुसाफ़िर की नमाज़" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं।

"اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا سَیِّدِیْ یَا رَسُوْلَ اللّٰه" के तेंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से रोज़ा न रखने की इजाज़ात पर मब्नी 33 म-दनी फूल

(वोह मजबूरी ख़त्म हो जाने की सूरत में हर रोज़े के बदले एक रोज़ा क़ज़ा रखना होगा)

﴾1﴿ **मुसाफ़िर** को रोज़ा रखने या न रखने का इख़्तियार है। (رَدُّالْمُحتَار ج۳ص٤٦٢)

﴾2﴿ **अगर** ख़ुद उस **मुसाफ़िर** को और उस के साथ वाले को **रोज़ा** रखने में ज़रर (या'नी नुक़्सान) न पहुंचे तो **रोज़ा** रखना **सफ़र** में बेहतर है और अगर दोनों या उन में से किसी एक को नुक़्सान हो रहा हो तो **रोज़ा** न रखना बेहतर है। (دُرِّمُختَار ج۳ ص٤٦٥)

www.dawateislami.net

《3》 **मुसाफ़िर** ने **ज़हवए कुब्रा**[1] से पेशतर इक़ामत की और अभी कुछ खाया नहीं तो **रोज़े** की निय्यत कर लेना वाजिब है । (جَوْهَره ج١ ص١٨٦)

《4》 **दिन** में अगर सफ़र किया तो उस दिन का **रोज़ा** छोड़ देने के लिये आज का सफ़र उ़ज़्र नहीं । अलबत्ता अगर दौराने सफ़र तोड़ देंगे तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम न आएगा मगर गुनाह ज़रूर होगा । (عالمگیری ج١ ص٢٠٦) और रोज़ा क़ज़ा करना फ़र्ज़ रहेगा ।

《5》 **अगर** सफ़र शुरूअ़ करने से पहले तोड़ दिया फिर सफ़र किया तो (अगर कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए गए तो क़ज़ा के साथ साथ) **कफ़्फ़ारा** भी लाज़िम आएगा । (اَیضاً)

《6》 **अगर** दिन में **सफ़र** शुरूअ़ किया (और दौराने सफ़र रोज़ा तोड़ा न था) और मकान पर कोई चीज़ भूल गए थे उसे लेने वापस आए और अब अगर आ कर **रोज़ा** तोड़ डाला तो (शराइत़ पाए जाने की सूरत में) **कफ़्फ़ारा** भी वाजिब है । अगर दौराने सफ़र ही तोड़ दिया होता तो सिर्फ़ **क़ज़ा** रखना फ़र्ज़ होता जैसा कि नम्बर 4 में गुज़रा । (عالمگیری ج١ ص٢٠٧)

《7》 **किसी** को **रोज़ा** तोड़ डालने पर मजबूर किया गया तो **रोज़ा** तो तोड़ सकता है मगर सब्र किया तो अज्र मिलेगा । (رَدُّالْمُحتَار ج٣ ص٤٦٢) (मजबूरी की ता'रीफ़ सफ़्हा 142 पर देख लीजिये)

《8》 **सांप** ने डस लिया और जान ख़त़रे में पड़ गई तो **रोज़ा** तोड़ दे । (اَیضاً)

《9》 **जिन** लोगों ने इन मजबूरियों के सबब **रोज़ा** तोड़ा उन पर फ़र्ज़ है कि उन रोज़ों की **क़ज़ा** रखें और इन क़ज़ा रोज़ों में तरतीब फ़र्ज़ नहीं, लिहाज़ा अगर उन रोज़ों की क़ज़ा करने से क़ब्ल **नफ़्ल रोज़े** रखे तो येह नफ़्ल रोज़े हो गए, मगर हुक्म येह है कि उ़ज़्र जाने के बा'द आयिन्दा **र-मज़ानुल मुबारक** के आने से पहले पहले **क़ज़ा** रख लें । ह़दीसे पाक में फ़रमाया : "जिस पर गुज़श्ता **र-मज़ानुल मुबारक** की क़ज़ा बाक़ी है और वोह न रखे, उस के इस **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े क़बूल न होंगे ।" (مسند امام احمد ج٣ ص٢٦٦ حدیث ٨٦٢٩) अगर वक़्त गुज़रता गया

1 : ज़हवए कुब्रा की ता'रीफ़ सफ़्हा 100 पर देख लीजिये ।

www.dawateislami.net

और क़ज़ा रोज़े न रखे यहां तक कि दूसरा **र-मज़ान शरीफ़** आ गया तो अब **क़ज़ा** रोज़े रखने के बजाए पहले इसी **र-मज़ानुल मुबारक** के **रोज़े** रख लीजिये, **क़ज़ा** बा'द में रख लीजिये । बल्कि अगर ग़ैरे मरीज़ व मुसाफ़िर ने क़ज़ा की निय्यत की जब भी **क़ज़ा** नहीं बल्कि इसी र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े हैं । (دُرِّ مُختار ج۳ ص٤٦٥)

10 **भूक** और प्यास ऐसी हो कि हलाक (या'नी जान चली जाने) का ख़ौफ़े सह़ीह़ हो या नुक़्साने अ़क़्ल का अन्देशा हो तो **रोज़ा** न रखे । (دُرِّمُختار، ردُّ المُحتار ج۳ ص٤٦٢)

फ़ासिक़ या ग़ैर मुस्लिम डॉक्टर रोज़ा न रखने का मश्वरा दे तो ?

11 **फ़ु-क़हाए** किराम ने रोज़ा न रखने के लिये जो रुख़्सतें बयान की हैं उन में येह भी दाख़िल है कि **मरीज़** को मरज़ बढ़ जाने या देर में अच्छा होने या तन्दुरुस्त को बीमार हो जाने का गुमाने ग़ालिब हो तो इजाज़त है कि उस दिन **रोज़ा** न रखे । इस गुमाने ग़ालिब के ह़ुसूल (या'नी ह़ासिल करने) की तीसरी सूरत किसी मुसल्मान, ह़ाज़िक़ त़बीब मस्तूर या'नी ग़ैरे फ़ासिक़ माहिर डॉक्टर की ख़बर भी है लेकिन फ़ी ज़माना ऐसे त़बीब (डॉक्टर) का मिलना बहुत ही मुश्किल है तो अब ज़रूरते ज़माना का लिह़ाज़ करते हुए इस बात की इजाज़त है कि अगर कोई क़ाबिले ए'तिमाद फ़ासिक़ या ग़ैर मुस्लिम त़बीब (डॉक्टर) भी रोज़ा रखने को सिह़ह़त के लिये नुक़्सान देह क़रार दे और रोज़ा तर्क करने का कहे और मरीज़ भी अपनी त़रफ़ से ज़न व तह़र्री (या'नी अच्छी त़रह ग़ौर) करे जिस से उसे रोज़ा तोड़ना या न रखना ही समझ आए तो अब अगर उस ने अपने ज़न्ने ग़ालिब (या'नी मज़बूत़ सोच) पर अ़मल करते हुए रोज़ा तोड़ा या रोज़ा न रखा तो उसे गुनाह नहीं होगा और रोज़ा तोड़ने की सूरत में कफ़्फ़ारा भी उस पर लाज़िम न होगा मगर क़ज़ा बहर सूरत ज़रूर फ़र्ज़ होगी और तह़र्री (या'नी ग़ौर करने) में येह भी ज़रूरी है कि मरीज़ का दिल इस बात पर जमे कि येह त़बीब (या'नी डॉक्टर) ख़्वाह म ख़्वाह रोज़ा तोड़ने का नहीं कह रहा और इस में भी ज़ियादा बेहतर येह होगा कि एक से ज़ाइद डॉक्टर्ज़ से राय ले ।

www.dawateislami.net

रोज़ा और ह़ैज़ व निफ़ास

﴾12﴿ **रोज़े** की ह़ालत में ह़ैज़ या निफ़ास शुरूअ़ हो गया तो वोह रोज़ा जाता रहा उस की क़ज़ा रखे, फ़र्ज़ था तो क़ज़ा फ़र्ज़ है और नफ़्ल था तो क़ज़ा वाजिब । ह़ैज़ व निफ़ास की ह़ालत में सज्दए शुक्र व सज्दए तिलावत ह़राम है और आयते सज्दा सुनने से इस पर सज्दा वाजिब नहीं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 382) ﴾13﴿ **ह़ैज़** या निफ़ास की ह़ालत में **नमाज़, रोज़ा** ह़राम है और ऐसी ह़ालत में नमाज़ व रोज़ा सह़ीह़ होते ही नहीं । नीज़ तिलावते क़ुरआने पाक या क़ुरआने पाक की आयाते मुक़द्दसा या उन का तरजमा छूना येह सब भी **ह़राम** है । (ऐज़न, स. 379, 380) ﴾14﴿ **ह़ैज़** या निफ़ास वाली के लिये इख़्तियार है कि छुप कर खाए या ज़ाहिरन, रोज़ादार की त़रह़ रहना उस पर ज़रूरी नहीं । (جوہرہ ج۱ص۱۸۶) ﴾15﴿ **मगर** छुप कर खाना बेहतर है ख़ुसूसन ह़ैज़ वाली के लिये । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1004) ﴾16﴿ **ह़म्ल** वाली या दूध पिलाने वाली औ़रत को अगर अपनी या बच्चे की जान जाने का सह़ीह़ अन्देशा है तो इजाज़त है कि इस वक़्त **रोज़ा** न रखे, ख़्वाह दूध पिलाने वाली बच्चे की मां हो या दाई, अगर्चे **र-मज़ानुल मुबारक** में दूध पिलाने की नोकरी इख़्तियार की हो ।

(دُرِّمُختار، رَدُّ الْمُحتار ج۳ص۴۶۳)

उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग के रोज़े

﴾17﴿ **"शैख़े फ़ानी"** या'नी वोह मुअ़म्मर बुज़ुर्ग जिन की उ़म्र ऐसी हो गई कि अब वोह रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होते जाएंगे, जब वोह रोज़ा रखने से आ़जिज़ (या'नी मजबूर व बेबस) हो जाएं या'नी न अब रख सकते हैं न आयिन्दा रोज़े की त़ाक़त आने की उम्मीद है उन्हें अब रोज़ा न रखने की इजाज़त है, लिहाज़ा हर रोज़े के बदले में "फ़िद्या" या'नी दोनों वक़्त एक मिस्कीन को भरपेट खाना खिलाना उस पर वाजिब है या हर रोज़े के बदले एक **स-द-क़ए फ़ित्र** की मिक़्दार **मिस्कीन** को दे दें । (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۴۷۱) (स-द-क़ए फ़ित्र की

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مجمع الزوائد)

एक मिक़्दार 2 किलो में 80 ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उन गेहूं की रक़म है)

18 **अगर** ऐसा बूढ़ा गर्मियों में रोज़े नहीं रख सकता तो न रखे मगर इस के बदले सर्दियों में रखना फ़र्ज़ है। (ردُّالْمحتار ج۳ص۴۷۲)

19 **अगर** फ़िदया देने के बा'द रोज़ा रखने की ताक़त आ गई तो दिया हुवा **फ़िदया** स-द-क़ए नफ़्ल हो गया। उन रोज़ों की **क़ज़ा** रखें। (عالمگیری ج۱ص۲۰۷)

20 **येह** इख़्तियार है कि शुरूए र-मज़ान ही में पूरे र-मज़ान (के तमाम रोज़ों) का एक दम **फ़िदया** दे दें या आख़िर में (सब इकट्ठे दे) दें। (دُرِّمُختار ج۳ص۴۷۲)

21 **फ़िदया** देने में येह ज़रूरी नहीं कि जितने फ़िदये हों उतने ही मसाकीन को अलग अलग दें, बल्कि एक ही मिस्कीन को कई दिन के (एक साथ) भी दिये जा सकते हैं। (اَیضاً)

नफ़्ल रोज़ा तोड़ने में सिर्फ़ क़ज़ा होती है कफ़्फ़ारा नहीं

22 **नफ़्ल** रोज़ा क़स्दन शुरूअ़ करने वाले पर अब पूरा करना वाजिब हो जाता है कि तोड़ दिया तो **क़ज़ा** वाजिब होगी। (ردُّالْمحتار ج ۳ ص ۴۷۳)

23 **अगर** आप ने येह गुमान कर के **रोज़ा** रखा कि मेरे ज़िम्मे कोई **रोज़ा** है मगर **रोज़ा** शुरूअ़ करने के बा'द मा'लूम हुवा कि मुझ पर किसी क़िस्म का कोई **रोज़ा** नहीं है, अब अगर फ़ौरन तोड़ दिया तो कुछ नहीं और येह मा'लूम करने के बा'द अगर फ़ौरन न तोड़ा, तो अब नहीं तोड़ सकते, अगर तोड़ेंगे तो **क़ज़ा** वाजिब होगी। (دُرِّمُختار ج۳ص۴۷۳)

24 **नफ़्ल** रोज़ा क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया, म-सलन दौराने **रोज़ा** औरत को हैज़ आ गया, जब भी **क़ज़ा** वाजिब है। (اَیضاص۴۷۴)

साल में पांच रोज़े ह़राम हैं

25 **ईदुल** फ़ित्र या बक़र ईद के चार दिन या'नी 10, 11, 12, 13 **ज़ुल हिज्जतिल ह़राम** में से किसी भी दिन का रोज़ए नफ़्ल रखा तो (चूंकि इन पांच दिनों में रोज़ा रखना **ह़राम** है

www.dawateislami.net

लिहाज़ा) इस रोज़े का पूरा करना वाजिब नहीं, न इस के तोड़ने पर **क़ज़ा** वाजिब, बल्कि इस का तोड़ देना ही **वाजिब** है और अगर इन दिनों में रोज़ा रखने की मन्नत मानी तो मन्नत पूरी करनी वाजिब है मगर इन दिनों में नहीं बल्कि और दिनों में। (ردُّ الْمُحتار ج٣ص٤٧٤)

26 **नफ़्ल** रोज़ा बिला उ़ज़्र तोड़ देना **ना जाइज़** है, मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे ना गवार होगा या मेहमान अगर खाना न खाएगा तो मेज़बान को अज़िय्यत होगी तो नफ़्ल रोज़ा तोड़ देने के लिये येह उ़ज़्र है, बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और **ज़ह्वए कुब्रा** से पहले तोड़ दे बा'द को नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1007, عالمگیری ج ١ص ٢٠٨)

दा'वत के सबब रोज़ा तोड़ना

27 **दा'वत** के सबब **ज़ह्वए कुब्रा** से पहले (नफ़्ल) रोज़ा तोड़ सकता है जब कि दा'वत करने वाला मह्ज़ (या'नी सिर्फ़) इस की मौजू-दगी पर राज़ी न हो और इस के न खाने के सबब नाराज़ हो बशर्ते कि येह भरोसा हो कि बा'द में रख लेगा, लिहाज़ा अब रोज़ा तोड़ ले और उस की क़ज़ा रखे। लेकिन अगर दा'वत करने वाला मह्ज़ (या'नी सिर्फ़) इस की मौजू-दगी पर राज़ी हो जाए और न खाने पर नाराज़ न हो तो रोज़ा तोड़ने की इजाज़त नहीं।

(عالمگیری ج ١ص ٢٠٨)

28 **नफ़्ल** रोज़ा ज़वाल के बा'द मां बाप की नाराज़ी के सबब तोड़ सकता है, और इस में **अ़स्र** से पहले तक तोड़ सकता है बा'दे अ़स्र नहीं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتَار ج٣ص ٤٧٧)

बीवी बिला इजाज़ते शोहर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती

29 **औ़रत** बिग़ैर शोहर की इजाज़त के नफ़्ल और मन्नत व क़सम के रोज़े न रखे और रख लिये तो शोहर तुड़वा सकता है मगर तोड़ेगी तो **क़ज़ा** वाजिब होगी मगर इस की **क़ज़ा** में भी शोहर की इजाज़त दरकार है। या शोहर और उस के दरमियान जुदाई हो जाए

www.dawateislami.net

या'नी त़लाके़ बाइन (त़लाके़ बाइन : उस त़लाक़ को कहते हैं जिस से बीवी निकाह़ से बाहर हो जाती है, अब शोहर रुजूअ़ नहीं कर सकता) दे दे या मर जाए। हां अगर **रोज़ा** रखने में शोहर का कुछ ह़रज न हो, म-सलन वोह सफ़र में है या बीमार है या एह़राम में है तो इन ह़ालतों में बिग़ैर इजाज़त के भी **क़ज़ा** रख सकती है बल्कि वोह मन्अ़ करे जब भी रख सकती है। अलबत्ता इन दिनों में भी शोहर की इजाज़त के बिग़ैर नफ़्ल रोज़ा नहीं रख सकती। (رَدُّالْمحتار ج٣ص٤٧٧،٤٧٨)

30 **र-मज़ानुल मुबारक** और क़ज़ाए **र-मज़ानुल मुबारक** के लिये शोहर की इजाज़त की कुछ ज़रूरत नहीं बल्कि उस की मुमा-न-अ़त पर भी रखे। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتَار ج٣ص٤٧٨)

31 **अगर** आप किसी के मुलाज़िम हैं या उस के यहां मज़दूरी पर काम करते हैं तो उस की इजाज़त के बिग़ैर **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकते क्यूं कि **रोजे़** की वज्ह से काम में सुस्ती आएगी। हां **रोज़ा** रखने के बा वुजूद आप बा क़ाइदा काम कर सकते हैं, उस के काम में किसी क़िस्म की कोताही नहीं होती, काम पूरा हो जाता है तो अब **नफ़्ल रोजे़** की इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं। (رَدُّالْمحتار ج٣ص٤٧٨)

32 **नफ़्ल** रोजे़ के लिये बेटी को बाप, मां को बेटे, बहन को भाई से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं। (اَیضاً)

33 **मां** बाप अगर बेटे को **रोज़ए नफ़्ल** से मन्अ़ कर दें इस वज्ह से कि मरज़ का अन्देशा है तो मां बाप की इत़ाअ़त करे। (اَیضاً)

अब "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से "12 म-दनी फूल" उन चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ बयान किये जाते हैं जिन के करने से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है। क़ज़ा का त़रीक़ा येह है कि हर रोजे़ के बदले र-मज़ानुल मुबारक के बा'द क़ज़ा की निय्यत से एक रोज़ा रख लें।

www.dawateislami.net

"لَا اِلٰهَ اِلَّا الله" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से उन चीज़ों से मु-तअ़ल्लिक़ "12 म-दनी फूल" जिन से सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम आती है

(1) **येह** गुमान था कि सुब्ह़ नहीं हुई और खाया, पिया या जिमाअ़ किया बा'द को मा'लूम हुवा कि सुब्ह़ हो चुकी थी तो **रोज़ा** न हुवा, इस **रोज़े की क़ज़ा** करना ज़रूरी है या'नी इस **रोज़े** के बदले में एक **रोज़ा** रखना होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989, رَدُّالْمُحتَار ج۳ص ٤٣٠)

किसी के मजबूर करने पर रोज़ा तोड़ना

(2) **खाने** पर सख़्त मजबूर किया गया या'नी **इक्राहे शर-ई** पाया गया, अब चूंकि मजबूरी है, लिहाज़ा ख़्वाह अपने हाथ से ही खाया हो सिर्फ़ **क़ज़ा** लाज़िम है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989) इस मस्अले का ख़ुलासा येह है कि कोई शख़्स क़त्ल या उ़ज़्व काट डालने या शदीद मार लगाने की सह़ीह़ धम्की दे कर कहे कि रोज़ा तोड़ डाल! अगर रोज़ादार येह समझे कि धम्की देने वाला जो कुछ कह रहा है वोह कर गुज़रेगा तो अब "इक्राहे शर-ई" पाया गया और ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ डालने की रुख़्सत है मगर बा'द में इस रोज़े की क़ज़ा लाज़िमी है।

(3) **भूल** कर खाया, पिया या जिमाअ़ किया था या नज़र करने से इन्ज़ाल हुवा था (या'नी मनी निकल गई थी) या एह़तिलाम हुवा या क़ै हुई और इन सब सूरतों में येह गुमान किया कि **रोज़ा** जाता रहा, अब क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) खा लिया तो सिर्फ़ **क़ज़ा** फ़र्ज़ है। (دُرِّ مُختار ج۳ص ٤٣١)

(4) **रोज़े** की ह़ालत में नाक में दवा चढ़ाई तो रोज़ा टूट गया और इस की **क़ज़ा** लाज़िम है। (اَیضاً ص ٤٣٢)

(5) **पथ्थर**, कंकरी, मिट्टी, रूई, घास, काग़ज़ वग़ैरा ऐसी चीज़ खाई जिन से लोग घिन करते हों, इन से रोज़ा तो टूट गया मगर सिर्फ़ **क़ज़ा** करना होगा। (دُرِّ مُختار ج۳ص ٤٣٣ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

《6》 **बारिश** का पानी या ओला ह़ल्क़ में चला गया तो **रोज़ा** टूट गया और **क़ज़ा** लाज़िम है। (اَیضاًص۴۳۴ مُلَخّصا)

《7》 **बहुत** सारा पसीना या आंसू निगल लिया तो रोज़ा टूट गया, **क़ज़ा** करना होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989)

《8》 **गुमान** किया कि अभी तो रात बाक़ी है, स-ह़री खाते रहे और बा'द में पता चला कि स-ह़री का वक़्त ख़त्म हो चुका था। इस सूरत में भी **रोज़ा** गया और क़ज़ा करना होगा। (دُرِّ مُختار ج۳ص۴۳۶)

《9》 **इसी** त़रह़ गुमान कर के कि सूरज ग़ुरूब हो चुका है, खा पी लिया और बा'द में मा'लूम हुवा कि सूरज नहीं डूबा था जब भी **रोज़ा** टूट गया और **क़ज़ा** करें। (دُرِّ مُختار ج۳ص۴۳۶, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 989)

《10》 **अगर** ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले ही **साइरन** की आवाज़ गूंज उठी या **अज़ाने** मग़रिब शुरूअ़ हो गई और **रोज़ा इफ़्त़ार** कर लिया और बा'द में मा'लूम हुवा कि **साइरन** या **अज़ान** वक़्त से पहले ही शुरूअ़ हो गए थे, **रोज़ा** टूट गया **क़ज़ा** करना होगा। (رَدُّالمحتار ج۳ص۴۳۹ ماخوذاً)

《11》 **आज** कल बे परवाई का दौर दौरा है, हर एक को चाहिये कि अपने रोज़े की ख़ुद ह़िफ़ाज़त करे। **साइरन, रेडियो, टीवी** के ए'लान बल्कि मस्जिद की **अज़ान** पर भी इक्तिफ़ा करने के बजाए ख़ुद **स-ह़री व इफ़्त़ार** के वक़्त की सह़ीह़ सह़ीह़ मा'लूमात रखे।

《12》 **वुज़ू** कर रहा था पानी नाक में डाला और दिमाग़ तक चढ़ गया या ह़ल्क़ के नीचे उतर गया, रोज़ादार होना याद था तो **रोज़ा** टूट गया और **क़ज़ा** लाज़िम है। हां उस वक़्त रोज़ादार होना याद नहीं था तो **रोज़ा** न गया। (عالمگیری ج۱ص۲۰۲)

www.dawateislami.net

कफ़्फ़ारे के अह़काम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ानुल मुबारक का रोज़ा रख कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के जान बूझ कर तोड़ देने से बा'ज़ सूरतों में सिर्फ़ **क़ज़ा** लाज़िम आती है और बा'ज़ सूरतों में **क़ज़ा** के साथ साथ **कफ़्फ़ारा** भी वाजिब हो जाता है ।

रोज़े के कफ़्फ़ारे का त़रीक़ा : रोज़ा तोड़ने का **कफ़्फ़ारा** येह है कि मुम्किन हो तो एक बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके म-सलन इस के पास न लौंडी, ग़ुलाम है न इतना माल कि ख़रीद सके, या माल तो है मगर ग़ुलाम मुयस्सर नहीं, जैसा कि आज कल लौंडी ग़ुलाम नहीं मिलते तो अब **पै दर पै साठ रोज़े** रखे । (याद रहे ! अगर सिने हिजरी के महीने की यकुम (पहली) से शुरूअ़ करें तो दो माह पूरे रोज़े रखिये, हो सकता है कि दोनों महीने उन्तीस उन्तीस के हों तो 58 रोज़ों से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा और अगर यकुम के बा'द किसी दिन से रोज़े शुरूअ़ करें तो अब पै दर पै 60 रोज़े रखने होंगे) येह भी अगर मुम्किन न हो तो **साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों वक़्त खाना खिलाए** येह ज़रूरी है कि जिस को एक वक़्त खिलाया दूसरे वक़्त भी उसी को खिलाए । येह भी हो सकता है कि **साठ मसाकीन को एक एक स-द-क़ए फ़ित्र** (म-सलन 2 किलो में 80 ग्राम कम गेहूं या उस की रक़म) का मालिक कर दिया जाए । एक ही मिस्कीन को इकट्ठे साठ स-द-क़ए फ़ित्र नहीं दे सकते, हां येह कर सकते हैं कि एक ही को साठ दिन तक रोज़ाना एक एक स-द-क़ए फ़ित्र दें ।[1] रोज़ों की सूरत में (दौराने कफ़्फ़ारा) अगर दरमियान में एक दिन का भी **रोज़ा** छूट गया तो फिर नए सिरे से **साठ रोज़े** रखने होंगे पहले के रोज़े शामिले ह़िसाब न होंगे अगर्चे **उन्सठ (59)** रख चुका था, चाहे बीमारी वग़ैरा किसी भी उ़ज़्र के सबब छूटा हो ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 994 मुलख़्ख़सन)

औ़रत और कफ़्फ़ारे के रोज़े : अगर औ़रत ने **र-मज़ान** का **रोज़ा** तोड़ दिया और कफ़्फ़ारे में **रोज़े** रख रही थी और ह़ैज़ आ गया तो सिरे से रखने का हुक्म नहीं बल्कि जितने बाक़ी हैं उन

1 : कफ़्फ़ारे में स-द-क़ए फ़ित्र देने का मस्अला बहारे शरीअ़त जिल्द 2 सफ़ह़ा 215 पर से देखा जा सकता है ।

www.dawateislami.net

का रखना काफ़ी है। हां अगर उस ह़ैज़ के बा'द "आइसा" हो गई या'नी अब ऐसी उ़म्र हो गई कि ह़ैज़ न आएगा, तो सिरे से रखने का हुक्म दिया जाएगा कि अब वोह पै दर पै **दो महीने के रोज़े** रख सकती है और अगर इस्नाए कफ़्फ़ारा में (या'नी कफ़्फ़ारा के रोज़े रखने के दौरान) औ़रत के बच्चा हुवा तो सिरे से रखे। (बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 214)

आइसा कितनी उ़म्र में ? : **कम** से कम नव बरस की उ़म्र से ह़ैज़ शुरूअ़ होगा और इन्तिहाई उ़म्र ह़ैज़ आने की पचपन साल है। इस उ़म्र वाली औ़रत को **आइसा** और इस उ़म्र को "सिने अयास" कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 372)

कफ़्फ़ारा वाजिब होने की एक सूरत : **जो** कोई रात से ही **र-मज़ान** के अदा रोज़े की **निय्यत** कर चुका हो और फिर सुब्ह़ या दिन में किसी भी वक़्त बल्कि अगर **इफ़्त़ार** से एक लम्ह़ा भी क़ब्ल किसी सही़ह़ मजबूरी के बिग़ैर किसी ऐसी चीज़ जिस से त़बीअ़ते इन्सानी नफ़रत न करती हो (म-सलन खाना, पानी, चाय, फल, बिस्किट, शरबत, शह्द, मिठाई वग़ैरा वग़ैरा) से अ़म्दन (या'नी जान बूझ कर) रोज़ा तोड़ डाले तो अब **र-मज़ान शरीफ़** के बा'द इस रोज़े की **क़ज़ा** की निय्यत से **एक रोज़ा** रखना होगा और उस का **कफ़्फ़ारा** भी देना होगा। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : किसी ने बिला उ़ज़्रे शर-ई **र-मज़ानुल मुबारक** का अदा रोज़ा जिस की निय्यत रात से की थी बिल क़स्द (या'नी जान बूझ कर) किसी ग़िज़ा या दवा या नफ़अ़ रसां शै (या'नी नफ़अ़ पहुंचाने वाली चीज़) से तोड़ डाला और शाम तक (या'नी इफ़्त़ार से पहले) कोई ऐसा आ़रिज़ा लाह़िक़ न हुवा जिस के बाइस शरअ़न आज रोज़ा रखना ज़रूर न होता (म-सलन औ़रत को उसी दिन में ह़ैज़ या निफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बा'द उसी दिन में ऐसा बीमार हो गया जिस में रोज़ा न रखने की इजाज़त है) तो इस जुर्म के जुर्माने में साठ रोज़े पै दर पै रखने होते हैं। वैसे जो रोज़ा न रखा हो उस की क़ज़ा सिर्फ़ एक रोज़ा है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 519)

www.dawateislami.net

"या अल्लाह करम कर" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से कफ़्फ़ारे से मु-तअ़ल्लिक़ 11 म-दनी फूल

﴾1﴿ **र-मज़ानुल मुबारक** में किसी आ़क़िल बालिग़ मुक़ीम (या'नी जो शर-ई मुसाफ़िर न हो) ने अदाए रोज़ए र-मज़ान की निय्यत से रोज़ा रखा और बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के जान बूझ कर जिमाअ़ किया या करवाया, या कोई भी चीज़ लज़्ज़त के लिये खाई या पी तो रोज़ा टूट गया और इस की **क़ज़ा** और **कफ़्फ़ारा** दोनों लाज़िम हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 991)

﴾2﴿ **जिस** जगह रोज़ा तोड़ने से **कफ़्फ़ारा** लाज़िम आता है, उस में शर्त़ येह है कि **रात** ही से रोज़ए **र-मज़ानुल मुबारक** की निय्यत की हो, अगर **दिन** में निय्यत की और तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं सिर्फ़ **क़ज़ा** काफ़ी है। (جَوْهَره ج ۱ ص ۱۸۰)

﴾3﴿ **क़ै** आई या भूल कर खाया या जिमाअ़ किया और इन सब सूरतों में इसे मा'लूम था कि रोज़ा न गया फिर भी खा लिया तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम नहीं। (رَدُّالْمُحتَار ج ۳ ص ۴۳۱)

﴾4﴿ **एह़तिलाम** हुवा और इसे मा'लूम भी था कि रोज़ा न गया इस के बा वुजूद खा लिया तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम है। (اَیضاً)

﴾5﴿ **अपना** लुआ़ब (या'नी थूक) थूक कर चाट लिया या दूसरे का थूक निगल लिया तो **कफ़्फ़ारा** नहीं मगर मह़बूब (या'नी प्यारे) का लज़्ज़त या मुअ़ज़्ज़मे दीनी (या'नी बुज़ुर्ग) का **तबर्रुक** के तौ़र पर थूक निगल लिया तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम है। (اَیضاً ص ۴۴۴) **ख़रबूज़े** या तरबूज़ का छिलका खाया, अगर ख़ुश्क हो या ऐसा हो कि लोग इस के खाने से घिन करते हों, तो **कफ़्फ़ारा** नहीं, वरना है। (عالمگیری ج ۱ ص ۲۰۲)

﴾6﴿ **कच्चे** चावल, बाजरा, मसूर, मूंग खाई तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम नहीं, येही हुक्म कच्चे जव का है और भुने हुए हों तो **कफ़्फ़ारा** लाज़िम। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 993, عالمگیری ج ۱ ص ۲۰۲)

﴾7﴿ **स-ह़री** का निवाला मुंह में था कि सुब्ह़े सादिक़ का वक़्त हो गया, या भूल कर खा रहे थे,

www.dawateislami.net

निवाला मुंह में था कि याद आ गया, फिर भी निगल लिया तो इन दोनों सूरतों में **कफ़्फ़ारा** वाजिब और अगर निवाला मुंह से निकाल कर फिर खा लिया हो तो सिर्फ़ **क़ज़ा** वाजिब होगी **कफ़्फ़ारा** नहीं। (عالمگیری ج۱ص۲۰۳)

《8》 **बारी** से बुख़ार आता था और आज बारी का दिन था लिहाज़ा येह गुमान कर के कि बुख़ार आएगा, रोज़ा क़स्दन (या'नी इरादतन) तोड़ दिया तो इस सूरत में **कफ़्फ़ारा** साक़ित (या'नी कफ़्फ़ारे की ज़रूरत नहीं सिर्फ़ क़ज़ा काफ़ी है) यूं ही औ़रत को मुअ़य्यन (या'नी मुक़र्ररा) तारीख़ पर हैज़ आता था और आज हैज़ आने का दिन था उस ने क़स्दन रोज़ा तोड़ दिया और हैज़ न आया तो **कफ़्फ़ारा** साक़ित हो गया। (मगर क़ज़ा फ़र्ज़ है) (دُرِّ مُختار، رَدُّالْمُحتَار ج۳ص۴۴۸)

《9》 **अगर** दो रोज़े तोड़े तो दोनों के लिये **दो कफ़्फ़ारे** दे अगर्चे पहले का अभी कफ़्फ़ारा अदा न किया था जब कि दोनों दो र-मज़ान के हों, और अगर दोनों रोज़े एक ही र-मज़ान के हों और पहले का **कफ़्फ़ारा** न अदा किया हो तो एक ही **कफ़्फ़ारा** दोनों के लिये काफ़ी है। (جَوْهَره ج۱ص۱۸۲)

《10》 **कफ़्फ़ारा** लाज़िम होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि रोज़ा तोड़ने के बा'द कोई ऐसा अम्र (या'नी मुआ़-मला) वाक़ेअ़ न हुवा हो जो रोज़े के मुनाफ़ी (या'नी ख़िलाफ़, उलट) है या बिग़ैर इख़्तियार ऐसा अम्र (या'नी मुआ़-मला) न पाया गया हो जिस की वज्ह से रोज़ा तोड़ने की रुख़्सत होती, म-सलन औ़रत को उस दिन हैज़ या निफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बा'द उसी दिन में ऐसा बीमार हुवा जिस में रोज़ा न रखने की इजाज़त है तो कफ़्फ़ारा साक़ित है और सफ़र से साक़ित न होगा कि येह इख़्तियारी अम्र (मुआ़-मला) है। (اَیضاً ص۱۸۱)

ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !

《11》 **जिन सूरतों में रोज़ा तोड़ने पर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं उन में शर्त़ है कि एक बार ऐसा हुवा हो और मा'सियत** (या'नी ना फ़रमानी) **का क़स्द** (इरादा) **न किया हो वरना उन में कफ़्फ़ारा देना होगा।** (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۴۴۰)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل मैं बदल गया ! : **तब्लीगे** कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माहोल के क्या कहने और म–दनी क़ाफ़िलों की भी क्या ही बात है ! तरग़ीब के लिये एक **म–दनी बहार** मुला–हज़ा हो। शालीमार टाउन (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई बेहद बिगड़े हुए इन्सान थे, फ़िल्मों डिरामों के रसिया होने के साथ साथ जवान लड़कियों के साथ छेड़ ख़ानियां, औबाश नौ जवानों के साथ दोस्तियां, रात गए तक आवारा गर्दियां वग़ैरा उन के मा'मूलात थे। इन ह–रकाते बद के बाइस ख़ानदान वाले भी उन से कतराते, अपने घरों में उन की आमद से घबराते नीज़ अपनी औलाद को उन की सोहबत से बचाते थे। उन की गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम के सुब्हे बहारां बनने की सबील यूं हुई कि **दा'वते इस्लामी** वाले एक **आशिक़े रसूल** की उन पर शफ़्क़त भरी नज़र पड़ गई, उन्हों ने निहायत शफ़्क़त के साथ **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **म–दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की रग़बत दिलाई, बात उन के दिल में उतर गई और उन्हों ने म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआदत हासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل म–दनी क़ाफ़िलों में आशिक़ाने रसूल की सोहबतों ने उन के दिल में नेकियों की महब्बत डाल दी। गुनाहों से तौबा का तोहफ़ा और सुन्नतों भरे **म–दनी लिबास** का जज़्बा मिला, सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा** सजा और सुन्नतों के म–दनी फूल लुटाने में मश्ग़ूल हो गए। जो अज़ीज़ो अक़्रिबा देख कर कतराते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل अब वोह गले लगाते हैं, पहले वोह ख़ानदान के अन्दर बद तरीन थे اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل दा'वते इस्लामी के **म–दनी क़ाफ़िले** की ब–र–कत से अब अज़ीज़ तरीन हो गए हैं।

जब तक बिके न थे तो कोई पूछता न था
तू ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

बे नमाज़ियों में बैठना कैसा ? : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! बुरी सोहबतों का कितना ज़बर दस्त नुक़्सान होता है। बुरी सोहबत में रह कर बिगड़ जाने वाले आदमी पर लोग थू थू करते हैं और अच्छी सोहबतों की भी क्या ख़ूब ब–र–कत है कि गुनाहों से भी बचत होती

www.dawateislami.net

और लोग भी मह़ब्बत करते हैं । हमेशा ऐसी सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये जिस से इ़बादत का शौक़ और सुन्नत पर अ़मल करने का ज़ौक़ बढ़े । हम-नशीन (या'नी हम-सोह़बत) ऐसा हो जिसे देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए, उस की बातों से नेकियों की त़रफ़ रग़्बत बढ़े, दुन्या की मह़ब्बत में कमी और फ़िक्रे आख़िरत में ज़ियादती हो । मुसाहिब (या'नी जिस की सोह़बत में रहें वोह) ऐसा हो कि उस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में इज़ाफ़ा हो । ग़ैर सन्जीदा ह़-र-कतें करने वालों, फ़ेशन परस्तों और बे नमाज़ियों की सोह़बत से बचना चाहिये । बे नमाज़ियों की बाबत किये गए एक सुवाल के जवाब में मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : (बे नमाज़ियों को) ब नरमी समझाएं, तर्के नमाज़ व तर्के जमाअ़त व तर्के मस्जिद पर क़ुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीस में जो सख़्त वई़दें हैं बार बार सुनाएं जिन के दिलों में ईमान है उन्हें ज़रूर नफ़्अ़ पहुंचेगा । **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह 27 **सू-रतुज़्ज़ारियात** की आयत नम्बर 55 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَّ ذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसल्मानों को फ़ाएदा देता है ।

अल्लाह के कलाम व अह़काम याद दिलाओ कि बेशक इन का याद दिलाना ईमान वालों को नफ़्अ़ देगा । और जो किसी त़रह़ न मानें उस पर अगर किसी का दबाव है उस के ज़रीए़ से दबाव डालें और यूं भी बाज़ न आए तो उस से सलाम व कलाम, मेलजोल यक-लख़्त (या'नी बिल्कुल) तर्क कर दें, قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है :)

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾ (پ۷،الانعام:۶۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 191, 192)

www.dawateislami.net

रोज़ए र-मज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार

सुवाल : जो रोज़ए र-मज़ान की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे वोह कैसा है ?

जवाब : **काफ़िर** है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 356)

रोज़ादार को बुरा भला कहना कैसा ?

सुवाल : जो र-मज़ानुल मुबारक के **रोज़े** रखने की वज्ह से किसी मुसल्मान को बुरा भला कहे उस के लिये क्या हुक्म है ?

जवाब : ऐसे के बारे में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जो रोज़ा रखने वाले पर रोज़ा रखने के सबब त़ा'नो तश्नीअ़ करे (या'नी बुरा भला कहे) वोह **काफ़िर** है।"

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 356)

"रोज़ा वोह रखे जिस के पास खाना न हो" कहना कैसा ?

सुवाल : वलीद एक बार र-मज़ानुल मुबारक में कहने लगा : "रोज़ा तो वोह रखे जिस के पास खाने पीने को न हो !" क्या वलीद ने येह **कुफ़्र** नहीं बका ?

जवाब : ज़रूर **कुफ़्र** बका। इस क़ौले बदतर अज़ बौल में रोज़ए र-मज़ानुल मुबारक की तह़क़ीर के साथ साथ इस की फ़र्ज़िय्यत का भी इन्कार पाया जा रहा है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**रोज़ए र-मज़ान** नहीं रखता और कहता येह है कि **रोज़ा** वोह रखे जिसे खाना न मिले या कहता है : जब ख़ुदा ने खाने को दिया है तो भूके क्यूं मरें या इसी क़िस्म की और बातें जिन से **रोज़े** की हतक व तह़क़ीर हो कहना **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 2, स. 465)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने तरावीह़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "बेशक दुआ़ ज़मीन व आस्मान के दरमियान ठहरी रहती है और उस से कोई चीज़ ऊपर की त़रफ़ नहीं जाती जब तक तुम अपने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो।" (تِرمِذی ج ۲ ص ۲۸ حدیث ۴۸۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरावीह़ से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ होते हैं : **रसूले** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो **र-मज़ान** में ईमान के साथ और त़-लबे सवाब के लिये क़ियाम करे, तो उस के गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (مسلم ص ۳۸۲ حدیث ۷۵۹) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : तरावीह़ की पाबन्दी की ब-र-कत से सारे सग़ीरा (या'नी छोटे) गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे क्यूं कि गुनाहे कबीरा (या'नी बड़े गुनाह) तौबा से और हुक़ूक़ुल इ़बाद (**अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में तौबा के साथ) ह़क़ वाले के मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ होते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 288)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेशक **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने **र-मज़ान** के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये और मैं ने तुम्हारे लिये **र-मज़ान** के क़ियाम को सुन्नत क़रार दिया

www.dawateislami.net

है लिहाज़ा जो शख़्स **र-मज़ान** में रोज़े रखे और ईमान के साथ और ह़ुसूले सवाब की निय्यत से क़ियाम करे (या'नी तरावीह़ पढ़े) तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे विलादत के दिन उस को उस की मां ने जना था। (نَسائی ص ٣٦٩ حدیث ٢٢٠٧)

सुन्नत की फ़ज़ीलत : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **र-मज़ानुल मुबारक** में जहां हमें बे शुमार ने'मतें मुयस्सर आती हैं उन्ही में **तरावीह़ की सुन्नत** भी शामिल है और **सुन्नत** की अ़-ज़मत के क्या कहने! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।" (ابن عساکر ج٩ ص٣٤٣)

तरावीह़ सुन्नते मुअक्कदा है और इस में कम अज़ कम एक बार ख़त्मे क़ुरआन भी सुन्नते मुअक्कदा।

आ़शिक़ाने कलामुल्लाह की सात ह़िकायात : ﴾1﴿ हमारे इमामे आ'ज़म सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **र-मज़ानुल मुबारक** में 61 बार क़ुरआने करीम ख़त्म किया करते। **तीस** दिन में, **तीस** रात में और **एक तरावीह़** में, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने 45 बरस इशा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र अदा फ़रमाई। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 688, 689, 695) ﴾2﴿ एक रिवायत के मुत़ाबिक़ इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने ज़िन्दगी में 55 ह़ज किये और जिस मकान में वफ़ात पाई उस में सात हज़ार बार क़ुरआने मजीद ख़त्म फ़रमाए थे। (دُرِّمُختار ج١ ص١٢٦، الخیرات الحسان ص ٥٠) ﴾3﴿ मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इमामुल अइम्मा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म (अबू ह़नीफ़ा) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने तीस बरस कामिल हर रात एक रक्अ़त में क़ुरआने करीम ख़त्म किया है।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 476) ﴾4﴿ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया है : सलफ़ सालिह़ीन (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين) में बा'ज़ अकाबिर दिन रात में दो ख़त्म फ़रमाते बा'ज़ चार बा'ज़ आठ। ﴾5﴿ मीज़ानुश्शरीअ़ह अज़ इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी (قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عزّوجلّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

में है कि सय्यिदी अ़ली मर्सफ़ी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने एक रात दिन में तीन लाख साठ हज़ार ख़त्म फ़रमाए। (المیزانُ الشریعۃ الکبرٰی ج۱ ص۷۹) ﴾6﴿ आसार में है, अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बायां पाउं रिकाब में रख कर क़ुरआने मजीद शुरूअ़ फ़रमाते और दहना (सीधा) पाउं रिकाब तक न पहुंचता कि कलाम शरीफ़ ख़त्म हो जाता। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 477) ﴾7﴿ बुख़ारी शरीफ़ में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी सुवारी तय्यार करने का हुक्म फ़रमाते और इस से पहले कि सुवारी पर ज़ीन कस दी जाए ज़बूर शरीफ़ ख़त्म फ़रमा लेते। (بُخاری ج ۲ ص۴۴۷ حدیث۳۴۱۷ ملخّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

वस्वसा और उस का इलाज : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हो सकता है किसी को वस्वसा आए कि एक दिन में कई बार बल्कि लम्ह़े भर में ख़त्मे क़ुरआने पाक या ख़त्मे ज़बूर शरीफ़ कैसे मुम्किन है? इस का जवाब येह है कि येह औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की करामात और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है और मो'जिज़ा और करामत आ़दतन मुह़ाल होते हैं या'नी इन का बत़ौरे आ़दत ज़ाहिर होना मुम्किन नहीं होता।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दौराने तिलावत ह़र्फ़ चबाना : अफ़्सोस! आज कल दीनी मुआ़-मलात में सुस्ती का दौर दौरा है, उ़मूमन **तरावीह़** में क़ुरआने करीम एक बार भी सह़ीह़ मा'नों में ख़त्म नहीं हो पाता। क़ुरआने पाक तरतील के साथ या'नी ठहर ठहर कर पढ़ना चाहिये, मगर ह़ाल येह है कि अगर कोई ऐसा करे तो अक्सर लोग उस के साथ **तरावीह़** पढ़ने के लिये तय्यार ही नहीं होते! अब वोही **ह़ाफ़िज़** पसन्द किया जाता है जो **तरावीह़** से जल्द फ़ारिग़ कर दे। याद रखिये! **तरावीह़** और

www.dawateislami.net

नमाज़ के इलावा भी तिलावत में ह़र्फ़ चबा जाना ह़राम है। अगर **तरावीह़** में ह़ाफ़िज़ साह़िब पूरे क़ुरआने करीम में से सिर्फ़ एक ह़र्फ़ भी चबा गए तो **ख़त्मे क़ुरआन** की सुन्नत अदा न होगी। बल्कि दौराने नमाज़ ह़र्फ़ चब जाने की वज्ह से मा'ना फ़ासिद होने या मोह्मल या'नी बे मा'ना हो जाने की सूरत में वोह नमाज़ भी फ़ासिद हो जाएगी। लिहाज़ा किसी आयत में कोई ह़र्फ़ ''चब'' गया या दुरुस्त ''मख़्रज'' से न निकला और बदल गया तो लोगों से शरमाए बिग़ैर पलट पढ़िये और दुरुस्त पढ़ कर फिर आगे बढ़िये। एक अफ़्सोस नाक अम्र येह भी है कि हुफ़्फ़ाज़ की एक ता'दाद ऐसी होती है जिसे **तरतील** के साथ पढ़ना ही नहीं आता! तेज़ी से न पढ़ें तो भूल जाते हैं! ऐसों की ख़िदमतों में हमदर्दाना मश्वरा है, लोगों से न शरमाएं, ख़ुदा की क़सम! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी बहुत भारी पड़ेगी लिहाज़ा बिला ताख़ीर तज्वीद के साथ पढ़ाने वाले किसी क़ारी साह़िब की मदद से अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा अपना ह़िफ़्ज़ दुरुस्त फ़रमा लें। मद व लीन[1] का ख़याल रखना लाज़िमी है नीज़ **मद, ग़ुन्ना, इज़्हार, इख़्फ़ा** वग़ैरा की भी रिआ़यत फ़रमाएं। साह़िबे बहारे शरीअ़त ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''**फ़र्ज़ों** में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और **तरावीह़** में मु-तवस्सित़ (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और **रात के नवाफ़िल** में जल्द पढ़ने की इजाज़त है, मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम ''मद'' का जो द-रजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना **ह़राम** है। इस लिये कि तरतील से (या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर) क़ुरआन पढ़ने का हुक्म है।'' (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 547, دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۳۲۰)

पारह 29 **सू-रतुल मुज़्ज़म्मिल** की चौथी आयत में इर्शादे रब्बानी है :

وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ؕ (۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क़ुरआन ख़ूब ठहर ठहर कर पढ़ो।

---

1 : **वाव, या** और **अलिफ़** साकिन और क़ब्ल की ह़-र-कत मुवाफ़िक़ हो (या'नी वाव के पहले पेश और या के पहले ज़ेर और अलिफ़ के पहले ज़बर) तो इस को मद और वाव और या साकिन मा क़ब्ल मफ़्तूह़ को लीन कहते हैं।

www.dawateislami.net

तरतील से पढ़ना किसे कहते हैं ! : मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "कमालैन अ़ला ह़ाशिया जलालैन" के ह़वाले से "तरतील" की वज़ाह़त करते हुए नक़्ल करते हैं : "क़ुरआने मजीद इस त़रह़ आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो कि सुनने वाला इस की आयात व अल्फ़ाज़ गिन सके ।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 276) नीज़ फ़र्ज़ नमाज़ में इस त़रह़ तिलावत करे कि जुदा जुदा हर ह़र्फ़ समझ आए, तरावीह़ में मु-तवस्सित़ (या'नी दरमियाना) त़रीक़े पर और रात के नवाफ़िल में इतनी तेज़ पढ़ सकता है जिसे वोह समझ सके । (دُرِّمُختار ج۲ ص۳۲۰) "**मदारिकुत्तन्ज़ील**" में है : "क़ुरआन को आहिस्ता और ठहर कर पढ़ो, इस का मा'ना येह है कि इत़्मीनान के साथ, ह़ुरूफ़ जुदा जुदा, वक़्फ़ की ह़िफ़ाज़त और तमाम ह़-रकात की अदाएगी का ख़ास ख़याल रखना है, "تَرْتِيْلًا" इस मस्अले में ताकीद पैदा कर रहा है कि येह बात तिलावत करने वाले के लिये निहायत ही ज़रूरी है ।" (مدارکُ التّنزیل ص۱۲۹۲, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 278, 279) (तरतील के अह़काम जानने के लिये फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 6 सफ़ह़ा 275 ता 282 का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरावीह़ की उजरत लेना देना कैसा ? : **क़ुरआने करीम** पढ़ने पढ़ाने वालों को अपने अन्दर **इख़्लास** पैदा करना ज़रूरी है अगर **ह़ाफ़िज़** अपनी तेज़ी दिखाने, ख़ुश आवाज़ी की दाद पाने और नाम चमकाने के लिये क़ुरआने करीम पढ़ेगा तो सवाब तो दूर की बात है, उलटा **ह़ुब्बे जाह और रियाकारी** की तबाहकारी में जा पड़ेगा ! इसी त़रह़ **उजरत** का लैन दैन भी न हो, त़ै करने ही को **उजरत** नहीं कहते बल्कि अगर यहां **तरावीह़** पढ़ाने आते इसी लिये हैं कि मा'लूम है कि यहां कुछ मिलता है अगर्चे त़ै न हुवा हो, तो येह भी उजरत ही है । उजरत रक़म ही का नाम नहीं बल्कि कपड़े या ग़ल्ला (या'नी अनाज) वग़ैरा की सूरत में भी उजरत, उजरत ही है । हां अगर ह़ाफ़िज़ साह़िब निय्यत के साथ साफ़ साफ़ कह दें कि मैं कुछ नहीं लूंगा या पढ़वाने वाला कह दे कि कुछ नहीं दूंगा । फिर बा'द में ह़ाफ़िज़ साह़िब की ख़िदमत कर दें तो ह़रज नहीं कि बुख़ारी

www.dawateislami.net

शरीफ़ की पहली ह़दीसे मुबारक में है : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات या'नी आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है । (بُخاری ج۱ص۶حدیث۱)

तिलावत व ज़िक्रो ना'त की उजरत ह़राम है : **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن की बारगाह में उजरत दे कर मय्यित के ईसाले सवाब के लिये **ख़त्मे कुरआन** व **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करवाने से मु-तअ़ल्लिक़ जब इस्तिफ़्ता पेश हुवा तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "**तिलावते कुरआन व ज़िक्रे इलाही पर उजरत लेना देना दोनों ह़राम है,** लेने देने वाले दोनों गुनाहगार होते हैं और जब येह फ़े'ले ह़राम के मुर-तकिब हैं तो सवाब किस चीज़ का अम्वात (या'नी मरने वालों) को भेजेंगे ? गुनाह पर सवाब की उम्मीद और ज़ियादा सख़्त व अशद (या'नी शदीद तरीन जुर्म) है । अगर लोग चाहें कि ईसाले सवाब भी हो और त़रीक़ए जाइज़ा शरइय्या भी ह़ासिल हो (या'नी शरअ़न जाइज़ भी रहे) तो इस की सूरत येह है कि पढ़ने वालों को घन्टे दो घन्टे के लिये नोकर रख लें और तन-ख़्वाह उतनी देर की हर शख़्स की मुअ़य्यन (मुक़र्रर) कर दें । म-सलन पढ़वाने वाला कहे : "मैं ने तुझे आज फ़ुलां वक़्त से फ़ुलां वक़्त के लिये इस उजरत पर नोकर रखा (कि) जो काम चाहूंगा लूंगा ।" वोह कहे : "मैं ने क़बूल किया ।" अब वोह उतनी देर के वासिते़ अजीर (या'नी मुलाज़िम) हो गया, जो काम चाहे ले सकता है इस के बा'द उस से कहे फ़ुलां मय्यित के लिये इतना कुरआने अ़ज़ीम या इस क़दर कलिमए त़य्यिबा या दुरूदे पाक पढ़ दो । येह सूरत जवाज़ (या'नी जाइज़ होने) की है ।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 537)

तरावीह़ की उजरत का शर-ई ह़ीला : **इस** मुबारक फ़तवे की रोशनी में **तरावीह़** के लिये ह़ाफ़िज़ साह़िब की भी तरकीब हो सकती है । म-सलन मस्जिद कमेटी वाले उजरत तै़ कर के ह़ाफ़िज़ साह़िब को **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में नमाज़े इशा के लिये **इमामत** पर रख लें और ह़ाफ़िज़ साह़िब बित्तबअ़ या'नी साथ ही साथ **तरावीह़** भी पढ़ा दिया करें क्यूं कि **र-मज़ानुल मुबारक** में तरावीह़ भी नमाज़े इशा के साथ ही शामिल होती है । या यूं करें कि **माहे र-मज़ानुल**

www.dawateislami.net

मुबारक में रोज़ाना दो या तीन घन्टे के लिये (म-सलन रात 8 ता 11) ह़ाफ़िज़ साह़िब को नोकरी की ऑफ़र करते हुए कहें कि हम जो काम देंगे वोह करना होगा, तन-ख़्वाह की रक़म भी बता दें, अगर ह़ाफ़िज़ साह़िब मन्ज़ूर फ़रमा लेंगे तो वोह मुलाज़िम हो गए । अब रोज़ाना ह़ाफ़िज़ साह़िब की इन तीन घन्टों के अन्दर ड्यूटी लगा दें कि वोह **तरावीह़** पढ़ा दिया करें । याद रखिये ! चाहे इमामत हो या मुअज़्ज़िनी हो या किसी क़िस्म की मज़दूरी जिस काम के लिये भी **इजारा** करते वक़्त येह मा'लूम हो कि यहां उजरत या तन-ख़्वाह का लैन दैन यक़ीनी है तो पहले से रक़म **तै़ करना वाजिब** है, वरना देने वाला और लेने वाला दोनों गुनहगार होंगे । हां जहां पहले ही से उजरत की मुक़र्ररा रक़म मा'लूम हो म-सलन बस का किराया, या बाज़ार में बोरी लादने, ले जाने की फ़ी बोरी मज़दूरी की रक़म वग़ैरा । तो अब बार बार तै़ करने की ह़ाजत नहीं । येह भी ज़ेह्न में रखिये कि जब ह़ाफ़िज़ साह़िब को (या जिस को भी जिस काम के लिये) नोकर रखा उस वक़्त येह कह देना जाइज़ नहीं कि हम जो मुनासिब होगा दे देंगे या आप को राज़ी कर देंगे, बल्कि सरा-ह़तन या'नी वाज़ेह़ तौ़र पर रक़म की मिक़्दार बतानी होगी, म-सलन हम आप को 12 हज़ार रुपै पेश करेंगे और येह भी ज़रूरी है कि ह़ाफ़िज़ साह़िब भी मन्ज़ूर फ़रमा लें । अब बारह हज़ार देने ही होंगे । याद रहे ! मस्जिद के चन्दे से दी जाने वाली उजरत वहां के उ़र्फ़ से ज़ाइद नहीं होनी चाहिये, पहले से मौजूद इमाम साह़िब दिल बरदाश्ता न हों इस का भी ख़याल रखा जाए, पूरे माहे र-मज़ान में नमाज़े इशा की इमामत की छुट्टी के सबब इमाम साह़िब को मस्जिद के चन्दे से उस माह की इशा की नमाज़ों की तन-ख़्वाह दे सकते हैं क्यूं कि हमारे हां इसी त़रह़ का उ़र्फ़ या'नी मा'मूल जारी है । हां ह़ाफ़िज़ साह़िब को मुत़ा-लबे के बिग़ैर अपनी मरज़ी से तै़ शुदा से ज़ाइद मस्जिद के चन्दे से नहीं बल्कि अपने पल्ले से या इसी मक़्सद के लिये जम्अ़ की हुई रक़म दे दें तब भी जाइज़ है । जो ह़ाफ़िज़ साह़िबान, या ना'त ख़्वान बिग़ैर पैसों के **तरावीह़**, क़ुरआन ख़्वानी या ना'त ख़्वानी में ह़िस्सा नहीं ले सकते वोह शर्म की वज्ह से ना जाइज़ काम का इरतिकाब न करें । मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बताए हुए त़रीके़ के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के

www.dawateislami.net

पाक रोज़ी ह़ासिल करें । और अगर सख़्त मजबूरी न हो तो ह़ीले के ज़रीए भी रक़म ह़ासिल करने से गुरेज़ करें कि **जिस का अ़मल हो बे ग़रज़ उस की जज़ा कुछ और है ।** एक इम्तिह़ान सख़्त इम्तिह़ान येह है कि जो रक़म क़बूल नहीं करता उस की काफ़ी वाह ! वाह ! होती है । यहां अपने आप को हुब्बे जाह और रियाकारी से बचाना ज़रूरी है, बिला ह़ाजत दूसरों से तज़्किरा करने से बचना और दुआ़ए इख़्लास करते रहना ऐसे मवाक़ेअ़ पर मुफ़ीद होता है ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो   कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़त्मे क़ुरआन और रिक़्क़त : जहां तरावीह़ में एक बार क़ुरआने पाक की तिलावत की जाए वहां बेहतर येह है कि **सत्ताईसवीं शब** को ख़त्म करें, रिक़्क़त व सोज़ के साथ इख़्तिताम हो और येह एह़सास दिल को तड़पा कर रख दे कि मैं ने सह़ीह़ मा'नों में क़ुरआने पाक पढ़ा या सुना नहीं, कोताहियां भी हुईं, दिल जम्ई भी न रही, **इख़्लास** में भी कमी थी । **सद हज़ार अफ़्सोस !** दुन्यवी शख़्सिय्यत का कलाम तो तवज्जोह के साथ सुना जाता है मगर सब के ख़ालिक़ो मालिक अपने प्यारे प्यारे **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ का पाकीज़ा कलाम ध्यान से न सुना, साथ ही येह भी ग़म हो कि अफ़्सोस ! अब **माहे र-मज़ानुल मुबारक** चन्द घड़ियों का मेहमान रह गया, न जाने आयिन्दा साल इस की तशरीफ़ आ-वरी के वक़्त इस की बहारें लूटने के लिये मैं ज़िन्दा रहूंगा या नहीं ! इस त़रह़ के तसव्वुरात जमा कर अपनी ग़फ़्लतों पर ख़ुद को शरमिन्दा करे और हो सके तो रोए अगर रोना न आए तो रोने की सी सूरत बनाए कि अच्छों की नक़्ल भी अच्छी है, अगर किसी की आंख से मह़ब्बते क़ुरआन व फ़िराक़े र-मज़ान में एकआध क़त़रा आंसू टपक कर मक़्बूले बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ हो गया तो क्या बई़द कि उसी के सदक़े ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ सभी ह़ाज़िरीन को बख़्श दे ।

www.dawateislami.net

लाज रख ले गुनाहगारों की नाम रह़मान है तेरा या रब !
ऐब मेरे न खोल मह़शर में नाम सत्तार है तेरा या रब !
बे सबब बख़्श दे न पूछ अ़मल नाम ग़फ़्फ़ार है तेरा या रब !
तू करीम और करीम भी ऐसा !
कि नहीं जिस का दूसरा या रब !

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तरावीह़ की जमाअ़त बिद्अ़ते ह़-सना है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी **तरावीह़** अदा फ़रमाई और इसे ख़ूब पसन्द भी फ़रमाया, चुनान्चे साह़िबे क़ुरआन, मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : "जो ईमान व त़-लबे सवाब के सबब से **र-मज़ान** में **क़ियाम** करे उस के पिछले गुनाह (या'नी सग़ीरा गुनाह) बख़्श दिये जाएंगे ।"[1] फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस अन्देशे की वज्ह से तर्क फ़रमाई कि कहीं उम्मत पर (तरावीह़) फ़र्ज़ न कर दी जाए ।[2] "बुख़ारी शरीफ़" में है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने (अपने दौरे ख़िलाफ़त में) **माहे र-मज़ानुल मुबारक** की एक रात मस्जिद में देखा कि लोग जुदा जुदा अन्दाज़ पर (तरावीह़) अदा कर रहे हैं, कोई अकेला तो कुछ ह़ज़रात किसी की इक्तिदा में पढ़ रहे हैं । येह देख कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं मुनासिब ख़याल करता हूं कि इन सब को एक इमाम के साथ जम्अ़ कर दूं । लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को सब का इमाम बना दिया, फिर जब दूसरी रात तशरीफ़ लाए और देखा कि लोग बा जमाअ़त (तरावीह़) अदा कर रहे हैं (तो बहुत ख़ुश हुए और) फ़रमाया : نِعْمَ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ या'नी "येह अच्छी बिद्अ़त है ।" (بُخاری ج۱ص۶۵۸حدیث۲۰۱۰)

[1] بخاری ج۱ص۶۵۸حدیث۲۰۰۹ [2] ایضاً حدیث۲۰۱۲

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हमारा कितना ख़याल है ! मह़ज़ इस ख़ौफ़ से जमाअ़ते तरावीह़ पर हमेशगी न फ़रमाई कि कहीं उम्मत पर फ़र्ज़ न कर दी जाए। इस ह़दीसे पाक से बा'ज़ **वसाविस** का इलाज भी हो गया। म-सलन **तरावीह़** की बा क़ाइदा जमाअ़त सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी जारी फ़रमा सकते थे मगर न फ़रमाई और यूं इस्लाम में अच्छे अच्छे त़रीक़े राइज करने का अपने ग़ुलामों को मौक़अ़ फ़राहम किया। जो काम शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नहीं किया वोह काम सय्यिदुना **फ़ारूक़े आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मह़ज़ अपनी मरज़ी से नहीं किया बल्कि सरकारे आ़लम मदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता क़ियामत ऐसे अच्छे अच्छे काम जारी करते रहने की अपनी ह़याते ज़ाहिरी में ही इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी थी। चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो कोई इस्लाम में **अच्छा त़रीक़ा** जारी करे उस को उस का सवाब मिलेगा और उस का भी जो (लोग) इस के बा'द उस पर अ़मल करेंगे और उन के सवाब से कुछ कम न होगा और जो शख़्स इस्लाम में **बुरा त़रीक़ा** जारी करे उस पर इस का गुनाह भी है और उन (लोगों) का भी जो इस के बा'द इस पर अ़मल करें और उन के गुनाह में कुछ कमी न होगी।" (مُسلم ص۵۰۸حدیث۱۰۱۷)

"करम या नबिय्यल्लाह" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 12 अच्छे काम या'नी बिद्अ़ते ह़-सना

इस ह़दीसे मुबारक से मा'लूम हुवा, क़ियामत तक इस्लाम में अच्छे अच्छे नए त़रीक़े जारी करने की इजाज़त है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ निकाले भी जा रहे हैं जैसा कि ﴾1﴿ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **तरावीह़** की बा क़ाइदा जमाअ़त का एहतिमाम किया और इस को ख़ुद "अच्छी बिद्अ़त" भी क़रार दिया। इस से येह भी मा'लूम हुवा कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी जो नया अच्छा काम जारी करें वोह भी **बिद्अ़ते ह़-सना** कहलाता है ﴾2﴿ मस्जिद में इमाम के लिये त़ाक़ नुमा **मेह़राब** नहीं होती थी सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन**

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में **मेह़राब** बनाने की सआ़दत ह़ासिल की इस नई ईजाद (बिद्अ़ते ह़-सना) को इस क़दर मक़्बूलिय्यत ह़ासिल है कि अब दुन्या भर में मस्जिद की पहचान इसी से है ﴾3﴿ इसी त़रह़ मसाजिद पर **गुम्बद व मीनार** बनाना भी बा'द की ईजाद है, यहां तक कि मस्जिदुल ह़राम के **मनारे** भी सरकारे मदीना व सह़ाबए किराम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم وعَلَیہِمُ الرِّضْوَان के दौर में नहीं थे ﴾4﴿ ईमाने मुफ़स्सल ﴾5﴿ ईमाने मुज्मल ﴾6﴿ छ[6] कलिमे और इन की ता'दाद व तरकीब कि येह पहला येह दूसरा और इन के नाम ﴾7﴿ क़ुरआने करीम के तीस पारे बनाना, ए'राब लगाना, इन में रुकूअ़ बनाना, रुमूज़े अवक़ाफ़ की अ़लामात लगाना। बल्कि नुक़्ते भी बा'द में लगाए गए, ख़ूब सूरत जिल्दें छापना वग़ैरा ﴾8﴿ अह़ादीसे मुबा-रका को किताबी शक्ल देना, इस की अस्नाद पर जर्ह़ करना, इन की सह़ीह़, ह़सन, ज़ईफ़ और मौज़ूअ़ वग़ैरा अक़्साम बनाना ﴾9﴿ फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह व इल्मे कलाम ﴾10﴿ ज़कात व फ़ित्रा सिक्कए राइजुल वक़्त बल्कि बा तस्वीर नोटों से अदा करना ﴾11﴿ ऊंटों वग़ैरा के बजाए सफ़ीने या हवाई जहाज़ के ज़रीए़ **सफ़रे ह़ज** करना ﴾12﴿ शरीअ़त व त़रीक़त के चारों सिल्सिले या'नी ह़-नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली इसी त़रह़ क़ादिरी, नक़्शबन्दी, सोह्रवर्दी और चिश्ती।

हर बिद्अ़त गुमराही नहीं है : हो सकता है कि किसी के ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा हो कि इन दो अह़ादीसे मुबा-रका (1) كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَّكُلُّ ضَلَالَةٍ فِى النَّار या'नी हर बिद्अ़त (नई बात) गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में (ले जाने वाली) है। (صحیح اِبنِ خُزَیمہ ج۳ ص۱۴۳ حدیث۱۷۸۵) (2) شَرَّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا وَكُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَة या'नी बद तरीन काम नए त़रीक़े हैं हर **बिद्अ़त** (नई बात) गुमराही है। (مسلم ص۴۳۰ حدیث۸۶۷) के क्या मा'ना हैं ? इस का जवाब येह है कि दोनों अह़ादीसे मुबा-रका ह़क़ हैं। यहां **बिद्अ़त** से मुराद **बिद्अ़ते सय्यिअह** या'नी **बुरी बिद्अ़त** है और यक़ीनन हर वोह **बिद्अ़त** बुरी है जो किसी सुन्नत के ख़िलाफ़ या सुन्नत को मिटाने वाली हो। जैसा कि दीगर अह़ादीसे मुक़द्दसा में इस मस्अले की वज़ाह़त मौजूद है, चुनान्चे हमारे प्यारे प्यारे आक़ा मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हर वोह गुमराह करने

www.dawateislami.net

वाली **बिद्अ़त** जिस से **अल्लाह** और उस का रसूल राज़ी न हो, तो उस गुमराही वाली **बिद्अ़त** को जारी करने वाले पर उस **बिद्अ़त** पर अ़मल करने वालों की मिस्ल गुनाह है, उसे गुनाह मिल जाना लोगों के गुनाहों में कमी नहीं करेगा।" (ترمذی ج ٤ ص ٣٠٩ حدیث ٢٦٨٦) बुख़ारी शरीफ़ में **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "مَنْ اَحْدَثَ فِیْ اَمْرِنَا هٰذَا مَا لَیْسَ فِیْهِ فَهُوَ رَدٌّ۔" (بخاری ج ٢ ص ٢١١ حدیث ٢٦٩٧) या'नी "जो हमारे दीन में ऐसी नई बात निकाले जो उस (की अस्ल) में से न हो वोह मरदूद है।" इन अहादीसे मुबा-रका से मा'लूम हुवा ऐसी नई बात जो सुन्नत से दूर कर के गुमराह करने वाली हो, जिस की अस्ल दीन में न हो वोह **बिद्अ़ते सय्यिअह** या'नी बुरी बिद्अ़त है, जब कि दीन में ऐसी नई बात जो **सुन्नत** पर अ़मल करने में मदद करने वाली हो या जिस की अस्ल दीन से साबित हो वोह बिद्अ़ते ह़-सना या'नी अच्छी बिद्अ़त है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ह़दीसे पाक, "كُلُّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ وَّكُلُّ ضَلَالَةٍ فِى النَّار" के तह़त फ़रमाते हैं : जो बिद्अ़त उसूल और क़वाइदे सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुत़ाबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअ़त व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को **बिद्अ़ते ह़-सना** कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो वोह बिद्अ़त गुमराही कहलाती है। (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج ١ ص ١٣٥)

बिद्अ़ते ह़-सना के बिग़ैर गुज़ारा नहीं : **अच्छी** और बुरी बिदआ़त की तक़्सीम ज़रूरी है क्यूं कि कई अच्छी अच्छी बिद्अ़तें ऐसी हैं कि अगर इन को सिर्फ़ इस लिये तर्क कर दिया जाए कि **क़ुरूने सलासा** या'नी (1) शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان (2) ताबिई़ने इ़ज़ाम और (3) तबए़ ताबिई़ने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अदवारे पुर अन्वार में नहीं थीं, तो दीन का मौजूदा निज़ाम ही न चल सके, जैसा कि दीनी मदारिस, इन में दर्से निज़ामी, क़ुरआन व अह़ादीस और इस्लामी किताबों की प्रेस में छपाई वग़ैरा वग़ैरा येह तमाम काम पहले न थे बा'द में जारी हुए और **बिद्अ़ते ह़-सना** में शामिल हैं। रब्बे मुजीब عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यक़ीनन येह सारे अच्छे अच्छे काम अपनी ह़याते ज़ाहिरी में भी राइज फ़रमा सकते थे मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के

www.dawateislami.net

गु़लामों के लिये सवाबे जारिया कमाने के बे शुमार मवाक़ेअ़ फ़राहम कर दिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों ने स-द-क़ए जारिया की ख़ातिर जो शरीअ़त से नहीं टकराती हैं ऐसी नई ईजादों की धूम मचा दी । किसी ने अज़ान से पहले दुरूदो सलाम पढ़ने का रवाज डाला, किसी ने ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मनाने का त़रीक़ा निकाला फिर इस में चरागां और सब्ज़ सब्ज़ परचमों और मरह़बा की धूमें मचाते जुलूसे मीलाद का सिल्सिला हुवा, किसी ने ग्यारहवीं शरीफ़ तो किसी ने आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की बुन्याद रख दी और अब भी येह सिल्सिले जारी हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** वालों ने सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त वगै़रा में اُذْكُرُوا اللّٰه! (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो !) और صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! (या'नी ह़बीब पर दुरूद भेजो !) के ना'रे लगाने की बिल्कुल नई तरकीब निकाल कर **अल्लाह अल्लाह** और दुरूदो सलाम की पुरकैफ़ सदाओं का ह़सीन समां क़ाइम कर दिया !

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 315)

सब्ज़ गुम्बद की तारीख़ : **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** जिस के दीदार के लिये हर आ़शिक़ का दिल बे क़रार होता और आंख अश्कबार हो जाया करती है येह भी **बिद्अ़ते ह़-सना** है क्यूं कि वोह सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के सेंकड़ों बरस बा'द बना है, इस की मुख़्तसरन मा'लूमात भी ह़ासिल कर लीजिये :

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर पर सब से पहला गुम्बद शरीफ़ 678 सि.हि. (1269 सि.ई.) में ता'मीर हुवा और उस पर ज़र्द (या'नी पीला) रंग करवाया गया । फिर मुख़्तलिफ़ अदवार में तग़य्युरो तबद्दुल होता रहा यहां तक कि 888 सि.हि. (1483 सि.ई.) में काले पथ्थर से नया गुम्बद बनाया गया और उस पर सफे़द रंग करवाया गया, 980 सि.हि. (1572 सि.ई.) में इन्तिहाई ह़सीन गुम्बद बनाया गया और उस को रंग बिरंगे पथ्थरों से सजाया

www.dawateislami.net

गया। 1233 सि.हि. (1818 सि.ई.) में अज़ सरे नौ इस की ता'मीर की गई। 1253 सि.हि. मुताबिक़ 1837 सि.ई. में इसे **सब्ज़ रंग** कर दिया गया। जो **अल क़ुब्बतुल ख़ज़रा** या'नी **सब्ज़ गुम्बद** के नाम से मश्हूर हुवा। इस के बा'द अब तक किसी ने इस में रद्दो बदल नहीं किया। हां सब्ज़ रंग को येह सआदत मिलती रहती है कि वोह खुद्दाम के हाथों ऊपर पहुंच कर लिपट जाता है। गुम्बदे ख़ज़रा जो कि यक़ीनन क़त्अन बिद्अ़ते ह़-सना है वोह अब दुन्या भर के मुसल्मानों का मरजअ़, आंखों का नूर और दिल का सुरूर है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस को दुन्या की कोई त़ाक़त नहीं मिटा सकती, जो इस को इनादन (या'नी बुग़्ज़ की वज्ह से) मिटाना चाहेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ खुद ही मिट जाएगा।

गुम्बदे ख़ज़रा ! खुदा तुझ को सलामत रखे
देख लेते हैं तुझे प्यास बुझा लेते हैं

इन जैसे तमाम नौ ईजाद नेक कामों की बुन्याद वोही ह़दीसे पाक है जो **मुस्लिम शरीफ़** के ह़वाले से, सफ़्ह़ा 168 पर गुज़री जिस में फ़रमाया गया है : "जो कोई इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा जारी करे उस को इस का सवाब मिलेगा और उस का भी जो इस के बा'द उस पर अ़मल करें।"[1]

दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अ़क़ाइदो आ'माल की इस्लाह़ और ज़रूरी मा'लूमात के ह़ुसूल की ख़ात़िर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लीजिये। इस की एक ईमान अफ़्रोज़ म-दनी बहार सुनिये और झूमिये चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के **तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी** सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (मुलतान शरीफ़) के इख़्तिताम पर आगरा ताज कोलोनी (बाबुल मदीना कराची) का एक म-दनी क़ाफ़िला सफ़र करता हुवा तरकीब के मुताबिक़ एक मस्जिद में क़ियाम पज़ीर हुवा। शब को जब सब सो गए तो **म-दनी क़ाफ़िले** में

1 : **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की किताबे मुस्तत़ाब "जाअल ह़क़ व ज़-हक़ल बात़िल" में बिदआ़त और इन की अक़्साम वग़ैरा के बारे में मज़ीद तफ़्सीलात देखी जा सकती हैं।

www.dawateislami.net

शरीक एक नए इस्लामी भाई की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और उन को ख़्वाब में **मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार हो गया ! वोह बहुत ख़ुश हुए, **दा'वते इस्लामी** की ह़क़्क़ानिय्यत के दिलो जान से मो'तरिफ़ हो कर **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

कोई आया पा के चला गया कोई उ़म्र भर भी न पा सका
मेरे मौला तुझ से गिला नहीं येह तो अपना अपना नसीब है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अच्छों से मह़ब्बत के फ़ज़ाइल : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से एक ख़ुश क़िस्मत इस्लामी भाई को اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हो गई। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले ख़ुश नसीबों को अच्छों की सोह़बत और नेक बन्दों से मह़ब्बत करने का बेहतरीन मौक़अ़ नसीब हो जाता है। रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अच्छों से मह़ब्बत रखने के **आठ फ़ज़ाइल** सुनिये और झूमिये :

''मह़ब्बते रसूल'' के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत रखने के मु-तअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **अल्लाह तआ़ला** क़ियामत के दिन फ़रमाएगा : कहां हैं जो मेरे जलाल की वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते थे ! आज मैं उन को अपने साए में रखूंगा, आज मेरे साए के सिवा कोई साया नहीं[1] ﴾2﴿ **अल्लाह तआ़ला** इर्शाद फ़रमाता है : जो लोग मेरी वज्ह से आपस में मह़ब्बत रखते हैं और मेरी वज्ह से एक दूसरे के पास बैठते हैं और आपस में मिलते जुलते हैं और माल ख़र्च करते हैं उन से मेरी मह़ब्बत वाजिब हो गई[2] ﴾3﴿ **अल्लाह तआ़ला** ने फ़रमाया : जो लोग मेरे जलाल की वज्ह से आपस में

۱: مُسلِم ص۱۳۸۸ حدیث۲۵۶۶ ۲: الموطا ج۲ ص۴۳۹ حدیث۱۸۲۸۔

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते रहेंगे। (طبرانی)

मह़ब्बत रखते हैं उन के लिये नूर के मिम्बर होंगे, अम्बिया व शु–हदा उन पर ग़िब्त़ा (या'नी रश्क) करेंगे[1] ﴿4﴾ दो शख़्सों ने **अल्लाह** के लिये बाहम मह़ब्बत की और एक मशरिक़ में है दूसरा मग़रिब में, क़ियामत के दिन **अल्लाह तआ़ला** दोनों को जम्अ़ करेगा और फ़रमाएगा : येही वोह है जिस से तूने मेरे लिये मह़ब्बत की थी[2] ﴿5﴾ जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं, उन पर ज़बर–जद के बालाख़ाने हैं, उन के दरवाज़े खुले हुए हैं, वोह ऐसे रोशन हैं जैसे चमक्दार सितारे। लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन में कौन रहेगा ? फ़रमाया : "वोह लोग जो **अल्लाह** के लिये आपस में मह़ब्बत रखते हैं, एक जगह बैठते हैं, आपस में मिलते हैं"[3] ﴿6﴾ **अल्लाह** के लिये मह़ब्बत रखने वाले अ़र्श के गिर्द याक़ूत की कुर्सियों पर होंगे[4] ﴿7﴾ जो किसी से **अल्लाह** के लिये मह़ब्बत रखे और **अल्लाह** के लिये दुश्मनी रखे और **अल्लाह** के लिये दे और **अल्लाह** के लिये मन्अ़ करे उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया[5] ﴿8﴾ दो शख़्स जब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये बाहम मह़ब्बत रखते हैं, उन के दरमियान में जुदाई उस वक़्त होती है कि उन में से एक ने कोई गुनाह किया।[6] या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जो मह़ब्बत हो उस की पहचान येह है कि अगर एक ने गुनाह किया तो दूसरा उस से जुदा हो जाए। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये पढ़िये मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 3 सफ़्ह़ा 576 ता 579)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"तरावीह़ पढ़ें और ख़ुदा व रसूल की रह़मतें लूटें"
के पेंतीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तरावीह़ के 35 म–दनी फूल

﴿1﴾ **तरावीह़** हर आ़क़िल व बालिग़ इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये सुन्नते मुअक्कदा है। (دُرِّ مُختار ج۲ ص۵۹٦) इस का तर्क जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 688)

مدینہ

۱: ترمذی ج٤ ص١٧٤ حدیث٢٣٩٧- ۲: شعب الایمان ج٦ ص٤٩٢ حدیث٩٠٢٢- ۳: شعب الایمان ج٦ ص٤٨٧ حدیث٩٠٠٢- ٤: مُعجَم کبیر ج٤ ص١٥٠ حدیث٣٩٧٣-
٥: ابو داوٗد ج٤ ص٢٩٠ حدیث٤٦٨١- ٦: الادب المفرد ص١٠٩ حدیث٤٠١-

www.dawateislami.net

﴿2﴾ **तरावीह़** की बीस रक्अ़तें हैं। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़ह्द में बीस रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं। (السُّنَنُ الکبریٰ لِلْبَیہقی ج۲ص۶۹۹حدیث۴۶۱۷)

﴿3﴾ **तरावीह़** की जमाअ़त सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है, अगर मस्जिद के सारे लोगों ने छोड़ दी तो सब **इसाअत** के मुर–तकिब हुए (या'नी बुरा किया) और अगर चन्द अफ़राद ने बा जमाअ़त पढ़ ली तो तन्हा पढ़ने वाला जमाअ़त की फ़ज़ीलत से मह़रूम रहा। (ہِدایہ ج۱ص۷۰)

﴿4﴾ **तरावीह़** का वक़्त इशा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्ह़े सादिक़ तक है। इशा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले अगर पढ़ ली तो न होगी। (عالمگیری ج۱ص ۱۱۵)

﴿5﴾ **वित्र** के बा'द भी तरावीह़ पढ़ी जा सकती है। (دُرِّمُختار ج۲ص۵۹۷) जैसा कि बा'ज़ अवक़ात 29 को रूयते हिलाल की शहादत (या'नी चांद नज़र आने की गवाही) मिलने में ताख़ीर के सबब ऐसा हो जाता है।

﴿6﴾ **मुस्तह़ब** येह है कि **तरावीह़** में तिहाई रात तक ताख़ीर करें, अगर आधी रात के बा'द पढ़ें तब भी कराहत नहीं। (लेकिन इशा के फ़र्ज़ इतने मुअख़्ख़र (LATE) न किये जाएं) (اَیضاًص۵۹۸)

﴿7﴾ **तरावीह़** अगर फ़ौत हुई तो इस की क़ज़ा नहीं। (اَیضاً)

﴿8﴾ **बेहतर** येह है कि **तरावीह़** की बीस रक्अ़तें दो दो कर के दस सलाम के साथ अदा करें। (اَیضاص۵۹۹)

﴿9﴾ **तरावीह़** की बीस रक्अ़तें एक सलाम के साथ भी अदा की जा सकती हैं, मगर ऐसा करना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है। (اَیضاً) हर दो रक्अ़त पर **क़ा'दा** करना फ़र्ज़ है, हर **क़ा'दे में** अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और त़ाक़ रक्अ़त (या'नी पहली, तीसरी, पांचवीं वग़ैरा) में सना पढ़े और इमाम तअ़व्वुज़ व तस्मिया भी पढ़े।

﴿10﴾ **जब** दो दो रक्अ़त कर के पढ़ रहा है तो हर दो रक्अ़त पर अलग अलग निय्यत करे और अगर बीस रक्अ़तों की एक साथ निय्यत कर ली तब भी जाइज़ है। (رَدُّالْمُحتار ج۲ص۵۹۷)

www.dawateislami.net

《11》 **बिला उ़ज़्र** तरावीह़ बैठ कर पढ़ना मक्रूह है बल्कि बा'ज़ फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक तो होती ही नहीं। (دُرِّمُختار ج۲ص۶۰۳)

《12》 **तरावीह़** मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करना अफ़्ज़ल है, अगर घर में बा जमाअ़त अदा की तो तर्के जमाअ़त का गुनाह न हुवा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो **मस्जिद** में पढ़ने का था। (عالمگیری ج۱ص۱۱۶) इशा के फ़र्ज़ मस्जिद में बा जमाअ़त अदा कर के फिर घर या हॉल वग़ैरा में तरावीह़ अदा कीजिये अगर बिला उ़ज़्रे शर-ई मस्जिद के बजाए घर या हॉल वग़ैरा में इशा के फ़र्ज़ की जमाअ़त क़ाइम कर ली तो तर्के वाजिब के गुनाहगार होंगे। इस का तफ़्सीली मस्अला फ़ैज़ाने सुन्नत (जिल्द अव्वल) के बाब ''पेट का क़ुफ़्ले मदीना'' सफ़ह़ा 135 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

《13》 **ना बालिग़** इमाम के पीछे सिर्फ़ ना बालिग़ान ही **तरावीह़** पढ़ सकते हैं।

《14》 **बालिग़** की तरावीह़ (बल्कि कोई भी नमाज़ ह़त्ता कि नफ़्ल भी) ना बालिग़ के पीछे नहीं होती।

《15》 **तरावीह़** में पूरा **कलामुल्लाह** शरीफ़ पढ़ना और सुनना सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया है लिहाज़ा अगर चन्द लोगों ने मिल कर तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन का एहतिमाम कर लिया तो बक़िय्या अ़लाक़े वालों के लिये किफ़ायत करेगा। ''फ़तावा र-ज़विय्या'' जिल्द 10 सफ़ह़ा 334 पर है : قُرآن دَرْ تراویح خَتْم کَرْدَنْ نه فَرض سُت وَنه سُنَّتِ عین۔ या'नी तरावीह़ में क़ुरआने करीम ख़त्म करना न फ़र्ज़ न सुन्नते ऐन है। और सफ़ह़ा 335 पर है : خَتْمِ قُرآن دَرْ تراویح سنّتِ کِفایه اَسْت۔ या'नी तरावीह़ में ख़त्मे क़ुरआन सुन्नते किफ़ाया है।

《16》 **अगर** बा शराइत़ ह़ाफ़िज़ न मिल सके या किसी वज्ह से ख़त्म न हो सके तो **तरावीह़** में कोई सी भी सूरतें पढ़ लीजिये अगर चाहें तो اَلَمْ تَرَ से وَالنَّاس दो बार पढ़ लीजिये, इस त़रह़ बीस रक्अ़तें याद रखना आसान रहेगा। (ماخوذ از عالمگیری ج۱ص۱۱۸)

《17》 **एक** बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط जह्‌र के साथ (या'नी ऊंची आवाज़ से) पढ़ना सुन्नत

www.dawateislami.net

है और हर सूरत की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मुस्तह़ब है । मु-तअख़्ख़िरीन (या'नी बा'द में आने वाले फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) ने **ख़त्मे तरावीह़** में तीन बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ शरीफ़ पढ़ना **मुस्तह़ब** कहा नीज़ बेहतर येह है कि ख़त्म के दिन पिछली रक्अ़त में الٓمّٓ से مُفْلِحُوْن तक पढ़े । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 694, 695)

﴾18﴿ **अगर** किसी वज्ह से **तरावीह़ की नमाज़** फ़ासिद हो जाए तो जितना क़ुरआने पाक उन रक्अ़तों में पढ़ा था उन का इआ़दा करें ताकि ख़त्म में नुक़्सान न रहे । (عالمگیری ج١ص١١٨)

﴾19﴿ **इमाम** ग़-लती से कोई आयत या सूरत छोड़ कर आगे बढ़ गया तो मुस्तह़ब येह है कि उसे पढ़ कर फिर आगे बढ़े । (اَیضاً)

﴾20﴿ **अलग** अलग मस्जिद में **तरावीह़** पढ़ सकता है जब कि ख़त्मे क़ुरआन में नुक़्सान न हो, म-सलन तीन मसाजिद ऐसी हैं कि उन में हर रोज़ सवा पारह पढ़ा जाता है तो तीनों में रोज़ाना बारी बारी जा सकता है ।

﴾21﴿ **दो रक्अ़त** पर बैठना भूल गया तो जब तक तीसरी का सज्दा न किया हो बैठ जाए, आख़िर में सज्दए सह्व कर ले । और अगर तीसरी का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर ले मगर येह दो शुमार होंगी । हां दो पर क़ा'दा किया था तो चार हुईं । (اَیضاً)

﴾22﴿ **तीन** रक्अ़तें पढ़ कर सलाम फैरा अगर दूसरी पर बैठा नहीं था तो न हुईं उन के बदले की दो रक्अ़तें दोबारा पढ़े । (اَیضاً)

﴾23﴿ **सलाम** फैरने के बा'द कोई कहता है दो हुईं कोई कहता है तीन, तो इमाम को जो याद हो उस का ए'तिबार है, अगर इमाम ख़ुद भी तज़ब्ज़ुब (या'नी शक व शुबा) का शिकार हो तो जिस पर ए'तिमाद हो उस की बात मान ले । (اَیضاص١١٧)

﴾24﴿ **अगर** लोगों को शक हो कि बीस हुईं या अठ्ठारह ? तो दो रक्अ़त तन्हा तन्हा पढ़ें । (اَیضاً)

﴾25﴿ **अफ़्ज़ल** येह है कि तमाम शुफ़्ओं में क़िराअत बराबर हो अगर ऐसा न किया जब भी ह़रज नहीं, इसी त़रह़ हर शुफ़्अ़ (कि दो रक्अ़त पर मुश्तमिल होता है उस) की पहली और दूसरी

www.dawateislami.net

रक्अ़त की क़िराअत मसावी (या'नी यक्सां) हो, दूसरी की क़िराअत पहली से ज़ाइद नहीं होनी चाहिये । (اَیضاً)

﴾26﴿ **इमाम** व मुक़्तदी हर दो रक्अ़त की पहली में **सना** पढ़ें (इमाम अऊ़ज़ु और बिस्मिल्लाह भी पढ़े) और अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ भी । (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۲ص۶۰۲)

﴾27﴿ **अगर** मुक़्तदियों पर गिरानी (दुश्वारी) होती हो तो तशह्हुद के बा'द اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ पर इक्तिफ़ा करे । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 690, دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتار ج۲ص۶۰۲)

﴾28﴿ **अगर** सत्ताईसवीं को या इस से क़ब्ल क़ुरआने पाक ख़त्म हो गया तब भी आख़िरे र-मज़ान तक **तरावीह़** पढ़ते रहें कि सुन्नते मुअक्कदा है । (عالمگیری ج۱ص۱۱۸)

﴾29﴿ **हर** चार रक्अ़तों के बा'द उतनी देर बैठना मुस्तह़ब है जितनी देर में चार रक्आ़त पढ़ी हैं । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 690, عالمگیری ج۱ص۱۱۵)

﴾30﴿ **इस** बैठने में इसे इख़्तियार है कि चुप बैठा रहे या ज़िक्रो दुरूद और तिलावत करे या चार रक्अ़तें तन्हा नफ़्ल पढ़े (دُرِّمُختار ج۲ص۶۰۰, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 690) येह तस्बीह़ भी पढ़ सकते हैं :

سُبْحٰنَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ، سُبْحٰنَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ، سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ، سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ، اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ، يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ، بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ۔

﴾31﴿ **बीस** रक्अ़तें हो चुकने के बा'द पांचवां तरवीह़ा भी मुस्तह़ब है, अगर लोगों पर गिरां हो तो पांचवीं बार न बैठे । (عالمگیری ج۱ص۱۱۵)

﴾32﴿ **मुक़्तदी** को जाइज़ नहीं कि बैठा रहे, जब इमाम रुकूअ़ करने वाला हो तो खड़ा हो जाए,

www.dawateislami.net

येह मुनाफ़िक़ीन से मुशा-बहत है। **सू-रतुन्निसाअ** की आयत नम्बर 142 में है : وَ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और (मुनाफ़िक़) जब नमाज़ को खड़े हों तो हारे जी से) (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 693, غنیہ ص ٤١٠) फ़र्ज़ की जमाअ़त में भी अगर इमाम रुकूअ़ से उठ गया तो सज्दों वग़ैरा में फ़ौरन शरीक हो जाएं नीज़ इमाम क़ा'दए ऊला में हो तब भी उस के खड़े होने का इन्तिज़ार न करें बल्कि शामिल हो जाएं। अगर **क़ा'दे** में शामिल हो गए और इमाम खड़ा हो गया तो अत्तहिय्यात पूरी किये बिग़ैर न खड़े हों।

﴾33﴿ **र-मज़ान** शरीफ़ में **वित्र** जमाअ़त से पढ़ना अफ़्ज़ल है, मगर जिस ने इशा के फ़र्ज़ बिग़ैर जमाअ़त के पढ़े वोह **वित्र** भी तन्हा पढ़े। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 692, 693, मुलख़्ख़सन)

﴾34﴿ **येह** जाइज़ है कि एक शख़्स इशा व वित्र पढ़ाए और दूसरा तरावीह़।

﴾35﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़र्ज़ व वित्र की जमाअ़त करवाते थे और ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **तरावीह़** पढ़ाते। (عالمگیری ج ١ ص ١١٦)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें नेक, मुख़्लिस और दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ने वाले ह़ाफ़िज़ साह़िब के पीछे ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ **तरावीह़** अदा करने की सआ़दत नसीब कर और क़बूल भी फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

केन्सर का मरीज़ ठीक हो गया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बेह़द करम है। बारहा सुनने में आया कि डॉक्टरों ने जिन मरीज़ों को ला इलाज क़रार दे दिया उन का म-दनी क़ाफ़िलों में ख़ैर से इलाज हो गया ! चुनान्चे **माड़ीपूर** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने एक ईमान अफ़्रोज़ **म-दनी बहार** लिख कर दी जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है : हाक्स बे (बाबुल मदीना कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई जो कि केन्सर के मरीज़ थे, उन्हों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की

www.dawateislami.net

आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। दौराने सफ़र बेचारे काफ़ी सहमे हुए और मायूस से थे। शु-रकाए क़ाफ़िला ढारस बंधाते और उन के लिये दुआ़एं भी फ़रमाते। एक दिन सुब्ह़ के वक़्त बैठे बैठे अचानक उन्हें क़ै हुई और उस में एक गोश्त की बोटी ह़ल्क़ से निकल पड़ी! क़ै के बा'द उन को काफ़ी सुकून मिल गया। म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर जब डॉक्टरों से रुजूअ़ किया और दोबारा टेस्ट करवाए तो ह़ैरत बालाए ह़ैरत कि **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-र-कत से उन का **केन्सर** ख़त्म हो चुका था।

अल्सर और केन्सर अब, या हो दर्दे कमर　　चलिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां और परेशानियां　　होंगी बस चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَى الله !　　اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ीमती लिबास में नमाज़

करोड़ों ह-नफ़ियों की अ़ज़ीम पेश्वा, सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आ'ज़म, फ़क़ीहे अफ़्ख़म ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه रात की नमाज़ के लिये बेश क़ीमत क़मीस, शलवार, इमामा और चादर पहनते थे जिस की क़ीमत डेढ़ हज़ार दिरहम थी, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हर रात नमाज़ ऐसे लिबास में पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि जब हम लोगों से अच्छे लिबास में मिलते हैं तो **अल्लाह** तआ़ला से आ'ला लिबास में मुलाक़ात क्यूं न करें।

(تفسير رُوحُ البَيان ج٣ ص١٠٤ ملخصاً)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

फ़ैज़ाने लय-लतुल क़द्र

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मुझ पर दिन में **एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक** पढ़ा, वोह मरेगा नहीं जब तक **जन्नत** में अपना ठिकाना न देख ले।"

(التَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लय-लतुल क़द्र को "लय-लतुल क़द्र" क्यूं कहते हैं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लय-लतुल क़द्र इन्तिहाई ब-र-कत वाली रात है इस को **लय-लतुल क़द्र** इस लिये कहते हैं कि इस में साल भर के अह़काम नाफ़िज़ किये जाते हैं और फ़िरिश्तों को साल भर के कामों और ख़िदमात पर मामूर किया जाता है और येह भी कहा गया है कि इस रात की दीगर रातों पर शराफ़त व क़द्र के बाइस इस को **लय-लतुल क़द्र** कहते हैं और येह भी मन्क़ूल है कि चूंकि इस शब में नेक आ'माल मक़्बूल होते हैं और बारगाहे इलाही में उन की क़द्र की जाती है इस लिये इस को **लय-लतुल क़द्र** कहते हैं। (تفسير خازن ج ٤ ص ٤٧٣) और भी मु-तअ़द्दिद शराफ़तें इस मुबारक रात को ह़ासिल हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में है, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने **लय-लतुल क़द्र** में ईमान और **इख़्लास** के साथ क़ियाम किया (या'नी नमाज़ पढ़ी) तो उस के गुज़श्ता (सग़ीरा) गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।"

(بُخاری ج ١ ص ٦٦٠ حديث ٢٠١٤)

www.dawateislami.net

83 साल 4 माह की इबादत से ज़ियादा सवाब : इस मुक़द्दस रात को हरगिज़ हरगिज़ ग़फ़लत में नहीं गुज़ारना चाहिये, **इस रात इबादत करने वाले को एक हज़ार माह या'नी तिरासी साल चार माह से भी ज़ियादा इबादत का सवाब अ़ता किया जाता है** और इस "ज़ियादा" का इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने या उस के बताए से उस के प्यारे **ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जानें कि कितना है। इस रात में ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्रील** عَلَيْهِ السَّلَام और फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं और फिर इबादत करने वालों से **मुसा-फ़ह़ा** करते हैं। इस मुबारक शब का हर एक लम्ह़ा सलामती ही सलामती है और येह सलामती सुब्ह़े सादिक़ तक बर क़रार रहती है। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ासुल ख़ास करम है कि येह अ़ज़ीम रात सिर्फ़ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को अ़ता की गई है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ۚ﴿ۖ۱﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَیْلَةُ الْقَدْرِ ؕ﴿۲﴾ لَیْلَةُ الْقَدْرِ ۙ۬ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ؕ﴿ؔ۳﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ الرُّوْحُ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۙۛ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ۛ۫ هِیَ حَتّٰی مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۠﴿۵﴾ (پ۳۰،سورة القدر)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला। बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना, क्या शबे क़द्र ? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर, इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से, हर काम के लिये, वोह सलामती है सुब्ह़ चमकने तक।

मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تعالٰی **सू-रतुल क़द्र** के ज़िम्न में फ़रमाते हैं : "इस रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल फ़रमाया और फिर तक़रीबन 23 बरस की मुद्दत में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर इसे ब तदरीज नाज़िल किया।" (تفسیرِ صاوی ج۶ ص۲۳۹۸)

नबिय्ये मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़तरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक

www.dawateislami.net

अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत को **शबे क़द्र** अ़त़ा की और येह रात तुम से पहले किसी उम्मत को अ़त़ा नहीं फ़रमाई। (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج١ص١٧٣حديث٦٤٧)

हज़ार महीनों से बेहतर एक रात : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : बनी इसराईल का एक शख़्स सारी रात इबादत करता और सारा दिन जिहाद में मसरूफ़ रहता था और इस त़रह़ उस ने हज़ार महीने गुज़ारे थे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई : "لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ" (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर) या'नी शबे क़द्र का क़ियाम उस आ़बिद (या'नी इबादत गुज़ार) की एक हज़ार महीने की इबादत से बेहतर है। (تَفسيرِ طَبَرى ج ٢٤ ص ٥٣٣)

हमारी उ़म्रें तो बहुत क़लील हैं : और "तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी" में है : **ह़ज़राते** सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने जब ह़ज़रते **शम्ऊ़न** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इबादात व जिहाद का तज़्किरा सुना तो उन्हें ह़ज़रते शम्ऊ़न رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर बड़ा रश्क आया और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें तो बहुत थोड़ी उ़म्रें मिली हैं, इस में भी कुछ ह़िस्सा नींद में गुज़रता है तो कुछ त़-लबे मआ़श में, खाने पकाने में और दीगर उमूरे दुन्यवी में भी कुछ वक़्त सर्फ़ हो जाता है। लिहाज़ा हम तो ह़ज़रते **शम्ऊ़न** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रह़ इबादत कर ही नहीं सकते, यूं बनी इसराईल हम से इबादत में बढ़ जाएंगे।" **उम्मत** के ग़म-ख़्वार आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर ग़मगीन हो गए। उसी वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्राईले अमीन** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **सू-रतुल क़द्र** ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हो गए और तसल्ली दे दी गई कि **प्यारे ह़बीब** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) रन्जीदा न हों, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को हम ने हर साल में एक ऐसी रात इनायत फ़रमा दी कि **अगर वोह उस रात में इबादत करेंगे तो** (ह़ज़रते) **शम्ऊ़न** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **की हज़ार माह की इबादत से भी बढ़ जाएंगे।** (ماخوذ از تفسيرِ عَزيزى ج٣ص٢٥٧)

www.dawateislami.net

बा करामत शम्ऊ़न की ईमान अफ़रोज़ हि़कायत : **इन्हीं** हज़रते शम्ऊ़न رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में "मुका-श-फ़तुल कुलूब" में एक निहायत **ईमान अफ़रोज़ हि़कायत** बयान की गई है, इस का मज़्मून कुछ इस त़रह़ है : बनी इसराईल के एक बुज़ुर्ग **हज़रते शम्ऊ़न** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़ार माह इस त़रह़ इबादत की, कि रात को क़ियाम और दिन को रोज़ा रखने के साथ साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कुफ़्फ़ार के साथ जिहाद भी करते । वोह इस क़दर **त़ाक़त वर** थे कि लोहे की वज़्नी और मज़बूत़ **ज़न्जीरें** हाथों से तोड़ डालते थे । **कुफ़्फ़ारे** ना हन्जार ने जब देखा कि **हज़रते शम्ऊ़न** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर कोई भी ह़र्बा कारगर नहीं होता तो **बाहम** मश्वरा करने के बा'द मालो दौलत का लालच दे कर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजा को इस बात पर आमादा कर लिया कि वोह किसी रात नींद की ह़ालत में पाए तो उन्हें **मज़बूत़ रस्सियों** से बांध कर इन के ह़वाले कर दे । **बे वफ़ा बीवी** ने ऐसा ही किया । जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बेदार हुए और अपने आप को **रस्सियों** से बंधा हुवा पाया तो फ़ौरन अपने आ'ज़ा को ह़-र-कत दी, देखते ही देखते रस्सियां टूट गईं और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ आज़ाद हो गए । फिर अपनी बीवी से इस्तिफ़्सार किया : "मुझे किस ने बांध दिया था ?" **बे वफ़ा बीवी** ने झूटमूट कह दिया कि मैं ने तो आप की त़ाक़त का अन्दाज़ा करने के लिये ऐसा किया था । बात रफ़्अ़ दफ़्अ़ हो गई ।

बे वफ़ा बीवी मौक़अ़ की ताक में रही । एक बार फिर जब नींद का ग़-लबा हुवा तो उस ज़ालिमा ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को **लोहे की ज़न्जीरों** में अच्छी त़रह़ जकड़ दिया । जूं ही आंख खुली, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक ही झटके में **ज़न्जीर** की एक एक कड़ी अलग कर दी और आज़ाद हो गए । बीवी येह देख कर सट-पटा गई मगर फिर मक्कारी से काम लेते हुए वोही बात दोहरा दी कि मैं तो आप (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) को आज़्मा रही थी । दौराने गुफ़्त-गू (ह़ज़रते) **शम्ऊ़न** (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) ने अपनी बीवी के आगे अपना राज़ इफ़्शा (या'नी ज़ाहिर) करते हुए फ़रमाया : मुझ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बड़ा करम है, उस ने मुझे अपनी **विलायत** का शरफ़ इनायत फ़रमाया

www.dawateislami.net

है, मुझ पर दुन्या की कोई चीज़ असर नहीं कर सकती मगर, "**मेरे सर के बाल**।" चालाक औ़रत सारी बात समझ गई।

आह ! उसे दुन्या की मह़ब्बत ने अन्धा कर दिया था। आख़िर एक बार मौक़अ़ पा कर उस ने आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) को आप (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) ही के उन **आठ गेसूओं** (या'नी ज़ुल्फ़ों) से बांध दिया जिन की दराज़ी ज़मीन तक थी। (येह अगली उम्मत के बुज़ुर्ग थे, हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते गेसू आधे कान, पूरे कान और मुबारक कन्धों तक है, कन्धों से नीचे तक मर्द को बाल बढ़ाना ह़राम है) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने आंख खुलने पर ज़ोर लगाया मगर आज़ाद न हो सके। दुन्या की दौलत के नशे में बद मस्त बे वफ़ा औ़रत ने अपने नेक व पारसा शोहर को दुश्मनों के ह़वाले कर दिया।

कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार ने **ह़ज़रते शम्ऊ़न** (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **को एक सुतून से बांध दिया और इन्तिहाई बे दर्दी के साथ उन के होंट और कान काट डाले।** तब उस नेक बन्दे ने **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में दुआ़ की, कि उसे इन बन्धनों को तोड़ने की क़ुव्वत बख़्शे और इन काफ़िरों पर येह सुतून मअ़ छत गिरा दे और उसे इन से नजात दे दे चुनान्चे **अल्लाह तआ़ला** ने उन को क़ुव्वत बख़्शी वोह हिले तो उन के तमाम बन्धन टूट गए, तब उन्हों ने सुतून को हिलाया जिस की वज्ह से छत काफ़िरों पर आ गिरी और वोह सब हलाक हो गए और उस नेक बन्दे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नजात बख़्शी। (ماخوذ از مُكاشَفَةُ القُلُوب ص ٣٠٦ وغيره)

आह ! हमें क़द्र कहां ! : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूबे ज़ीशान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत पर किस क़दर मेहरबान है और उस ने हम पर कैसा अ़ज़ीमुश्शान एह़सान फ़रमाया कि अगर **शबे क़द्र** में इ़बादत कर लें तो **एक हज़ार माह** से भी ज़ियादा की इ़बादत का सवाब पा लें। मगर **आह !** हमें शबे क़द्र की क़द्र कहां ! एक सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी तो थे कि जिन की ह़सरत पर हम सब को इतना बड़ा **इन्आ़म** बिग़ैर किसी ख़्वाहिश के मिल गया ! बेशक उन्हों ने इस की क़द्र भी की

www.dawateislami.net

मगर अफ़्सोस ! हम ना क़द्रे ही रहे ! **आह !** हर साल मिलने वाले इस अ़ज़ीमुश्शान **इन्आ़म** को हम ग़फ़्लत की नज़्र कर देते हैं।

म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-र-कत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र की दिल में अ़-ज़मत बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों को नेक नमाज़ी बनाने के तअ़ल्लुक़ से इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40, ख़ुसूसी (या'नी गूंगे बहरे और नाबीना इस्लामी भाइयों) के लिये **25** और क़ैदियों के लिये **52 म-दनी इन्आ़मात** ब सूरते सुवालात मुरत्तब किये गए हैं। **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ा-सबा) करते हुए रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला** पुर कर के दा'वते इस्लामी के मक़ामी ज़िम्मेदार को हर म-दनी माह या'नी इस्लामी महीने की पहली तारीख़ को जम्अ़ करवाना होता है। म-दनी इन्आ़मात ने न जाने कितने ही इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया है ! इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो : न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे बड़े भाईजान को **म-दनी इन्आ़मात** का एक रिसाला तोह़फ़े में दिया। वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसल्मान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ार्मूला दे दिया गया है ! **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला** मिलने की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन को **नमाज़** का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के **नमाज़ी** बन चुके हैं, **दाढ़ी मुबारक** भी सजा ली और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला भी पुर करते हैं।

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू झड़ी

www.dawateislami.net

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये, चुनान्चे ज़मज़म नगर (हैदरआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 सि.हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली । लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा ।**

म-दनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है   क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह रात हर त़रह़ से ख़ैरियत व सलामती की ज़ामिन है । येह रात अव्वल ता आख़िर रह़मत ही रह़मत है । मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं : "येह रात सांप बिच्छू, आफ़ातो बलिय्यात और शयात़ीन से भी मह़फ़ूज़ है, इस रात में सलामती ही सलामती है ।"

तमाम भलाइयों से मह़रूम कौन ? : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार जब **माहे र-मज़ान शरीफ़** तशरीफ़ लाया तो सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास येह महीना आया है जिस में एक रात ऐसी भी है जो **हज़ार महीनों** से बेहतर है जो शख़्स इस रात से मह़रूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से मह़रूम रह गया और इस की भलाई से मह़रूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो ह़क़ीक़तन मह़रूम है ।" (ابن ماجه ج٢ص٢٩٨حديث١٦٤٤)

सब्ज़ झन्डा : एक फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हिस्सा है : "जब **शबे क़द्र** आती है तो हुक्मे इलाही से (ह़ज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) एक **सब्ज़ झन्डा** लिये फ़िरिश्तों की बहुत

www.dawateislami.net

बड़ी फ़ौज के साथ ज़मीन पर नुज़ूल फ़रमाते हैं (और एक रिवायत के मुताबिक़ : "इन फ़िरिश्तों की ता'दाद ज़मीन की कंकरियों से भी ज़ियादा होती है"[1]) और वोह **सब्ज़ झन्डा** का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर लहरा देते हैं। (हज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के सो बाज़ू हैं, जिन में से **दो बाज़ू** सिर्फ़ इसी रात खोलते हैं, वोह बाज़ू मशरिक़ व मग़रिब में फैल जाते हैं, फिर (हज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) फ़िरिश्तों को हुक्म देते हैं कि जो कोई मुसल्मान आज रात **क़ियाम, नमाज़** या **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल है उस से **सलाम व मुसा-फ़ह़ा** करो नीज़ उन की दुआ़ओं पर आमीन भी कहो। चुनान्चे सुब्ह़ तक येही सिलसिला रहता है। सुब्ह़ होने पर (हज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) फ़िरिश्तों को वापसी का हुक्म देते हैं। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : **ऐ जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **उम्मते मुह़म्मदिय्यह** (عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) की ह़ाजतों के बारे में क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? (हज़रते) **जिब्रील** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन लोगों पर ख़ुसूसी नज़रे करम फ़रमाई और चार क़िस्म के लोगों के इ़लावा सब को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह **चार** क़िस्म के लोग कौन हैं ?" इर्शाद फ़रमाया : "﴾1﴿ एक तो आ़दी शराबी ﴾2﴿ दूसरे वालिदैन के ना फ़रमान ﴾3﴿ तीसरे क़त्ए़ रेह़मी करने वाले (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात तोड़ने वाले) और ﴾4﴿ चौथे वोह लोग जो आपस में अ़दावत रखते हैं और आपस में क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ करने वाले।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۳۶حدیث۳۶۹۵)

लड़ाई का वबाल : **हज़रते** सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए ताकि हम को शबे क़द्र के बारे में बताएं (कि किस रात में है) दो मुसल्मान आपस में **झगड़** रहे थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं इस लिये आया था कि तुम्हें **शबे क़द्र** बताऊं लेकिन फ़ुलां फ़ुलां शख़्स **झगड़** रहे थे, इस लिये इस का तअ़य्युन उठा लिया गया, और मुम्किन है कि इसी में

مــــــــــــدینــه

[1] : مسند احمد ج۳ص۶۰۶ حدیث ۱۰۷۳۹.

www.dawateislami.net

तुम्हारी बेहतरी हो, अब इस को (आख़िरी अ़-शरे की) **नवीं, सातवीं** और **पांचवीं** रातों में ढूंडो।"

(بُخاری ج ۱ ص ٦٦٣ حديث٢٠٢٣)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 210 पर इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी मेरे इ़ल्म से इस का तक़र्रुर दूर कर दिया गया और मुझे भुला दी गई, येह मत़लब नहीं कि ख़ुद शबे क़द्र ही ख़त्म कर दी अब वोह हुवा ही न करेगी। मा'लूम हुवा कि दुन्यावी झगड़े मन्हूस हैं इन का वबाल बहुत ही ज़ियादा है इन की वज्ह से **अल्लाह** की आती हुई रह़मतें रुक जाती हैं।

हम तो शरीफ़ के साथ शरीफ़ और...... : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसल्मानों का आपस में लड़ाई झगड़ा करना रह़मत से दूरी का सबब बन जाता है। मगर आह ! अब कौन किस को समझाए ! आज तो बड़े फ़ख़्र से कहा जा रहा है कि "मियां इस दुन्या में शरीफ़ रह कर तो गुज़ारा ही नहीं, हम तो शरीफ़ों के साथ शरीफ़ और बद मआ़श के साथ बद मआ़श हैं !" सिर्फ़ इस क़ौल ही पर इक्तिफ़ा नहीं, अब तो मा'मूली सी बात पर पहले ज़बान दराज़ी, फिर दस्त अन्दाज़ी, इस के बा'द चाक़ूबाज़ी बल्कि गोलियां तक चल जाती हैं। **अफ़्सोस !** आज कल बा'ज़ मुसल्मान कभी **पठान** बन कर कभी **पंजाबी** कहला कर, कभी **मुहाजिर** हो कर, कभी **सिन्धी** और **बलोच** क़ौमिय्यत का ना'रा लगा कर एक दूसरे का गला काट रहे हैं, एक दूसरे की अम्लाक व अम्वाल को आग लगा रहे हैं। आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ सिर्फ़ नस्ली और लिसानी फ़र्क़ की बिना पर मह़ाज़ आराई हो रही है। मुसल्मानो ! आप तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ थे आप को क्या हो गया है ? हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान तो येह है कि : "मोमिनों की मिसाल तो एक जिस्म की त़रह़ है कि अगर एक उ़ज़्व को तक्लीफ़ पहुंचे तो सारा जिस्म उस तक्लीफ़ को मह़सूस करता है।" (بُخاری ج٤ص١٠٣ حديث٦٠١١)

एक शाइ़र ने कितने प्यारे अन्दाज़ में समझाया है :

www.dawateislami.net

मुब्तलाए दर्द कोई उ़ज़्व हो रोती है आंख

किस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आंख

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें आपस में **लड़ाई झगड़ा** करने के बजाए एक दूसरे की हमदर्दी और ग़म गुसारी करनी चाहिये। मुसल्मान एक दूसरे को मारने, काटने और लूटने वाला नहीं होता।

मुसल्मान, मोमिन और मुहाजिर की ता'रीफ़ : **ह़ज़रते** सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर इर्शाद फ़रमाया : "क्या तुम्हें मोमिन के बारे में ख़बर न दूं ?" फिर इर्शाद फ़रमाया : "**मोमिन** वोह है जिस से दूसरे मुसल्मान अपनी जान और अपने अम्वाल से बे ख़ौफ़ हों और **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान मह़फ़ूज़ रहें और **मुजाहिद** वोह है जिस ने इत़ाअ़ते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के मुआ-मले में अपने नफ़्स के साथ जिहाद किया और **मुहाजिर** वोह है जिस ने ख़त़ा और गुनाहों से अ़ला-ह़-दगी इख़्तियार की।" (اَلْمُستَدرَك ج١ ص١٥٨ حديث٢٤) और इर्शाद फ़रमाया : **मुसल्मान** के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे **मुसल्मान** की त़रफ़ **आंख** से इस त़रह़ इशारा करे जिस से तक्लीफ़ पहुंचे। (إتحاف السّادۃ ج٧ ص١٧٧) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : किसी **मुसल्मान** को जाइज़ नहीं कि वोह किसी **मुसल्मान** को ख़ौफ़ज़दा करे। (أبو داوٗد ج٤ ص٣٩١ حديث٥٠٠٤)

त़रीक़े मुस्त़फ़ा को छोड़ना है वज्हे बरबादी

इसी से क़ौम दुन्या में हुई बे इक़्तिदार अपनी

ना क़ाबिले बरदाश्त ख़ारिश : **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : दोज़ख़ियों को ऐसी **ख़ारिश** में मुब्तला कर दिया जाएगा कि खुजाते खुजाते उन की खाल उधड़ जाएगी यहां तक कि उन में से किसी की हड्डियां ज़ाहिर हो जाएंगी। फिर निदा सुनाई देगी, ऐ फ़ुलां : क्या इस से तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां। तब उन्हें बताया जाएगा : "दुन्या में जो तुम मुसल्मानों को सताया करते थे येह उस की सज़ा है।" (إتحاف السّادۃ ج٧ ص١٧٥)

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ दूर करने का सवाब : **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "मैं ने एक शख़्स को **जन्नत में घूमते हुए** देखा कि जिधर चाहता है निकल जाता है क्यूं कि उस ने इस दुन्या में एक ऐसे दरख़्त को रास्ते से काट दिया था जो कि लोगों को तक्लीफ़ देता था।" (مُسلم ص ۱۴۱۰ حدیث ۲۶۱۸)

लड़ना है तो नफ़्स के साथ लड़ो ! : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इन अहादीसे मुबा-रका से दर्स हासिल कीजिये और आपस में **लड़ाई झगड़ा** और लूटमार से परहेज़ कीजिये। अगर लड़ना ही है तो मरदूद शैतान से लड़िये, बल्कि ज़रूर लड़िये, **नफ़्से अम्मारा** से लड़ाई कीजिये, ब वक़्ते जिहाद दीन के दुश्मनों से क़िताल कीजिये, मगर आपस में भाई भाई बन कर रहिये।

फ़र्द क़ाइम रब्ते मिल्लत से है तन्हा कुछ नहीं
मौज है दरिया में और बैरूने दरिया कुछ नहीं

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा रहे थे ! : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** में किसी क़िस्म का लिसानी और क़ौमी इख़्तिलाफ़ नहीं, हर ज़बान बोलने वाला और हर बरादरी से तअ़ल्लुक़ रखने वाला **ताजदारे ह़रम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम ही में पनाह गुज़ीं है। आप भी हर दम **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहिये और इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबी हुई ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये अपने आप को **म-दनी इन्आ़मात** के सांचे में ढाल लीजिये। तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** करने के लिये तशरीफ़ लाए हुए **रावल पिन्डी** के एक मुबल्लिग़ ने जो कुछ ह़ल्फ़िय्या लिख कर दिया उस का ख़ुलासा है कि : मैं **आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में सो रहा था, सर की आंखें तो क्या बन्द हुईं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल की आंखें खुल गईं, आ़लमे ख़्वाब में देखा कि **सरकारे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बुलन्द चबूतरे पर जल्वा अफ़रोज़ हैं, क़रीब ही **म-दनी**

www.dawateislami.net

इन्आ़मात के कार्ड की बोरियां रखी हैं। सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **म-दनी इन्आ़मात** के एक एक कार्ड को मुस्कुराते हुए बग़ौर मुला-हज़ा फ़रमा रहे हैं। फिर मेरी आंख खुल गई।

म-दनी इन्आ़मात से अ़त्तार हम को प्यार है
اِنْ شَآءَ اللّٰه दो जहां में अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जादूगर का जादू नाकाम : हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल फ़रमाते हैं : येह रात आफ़ात से सलामती की है कि इस में रह़मत और ख़ैर (या'नी भलाई) ही ज़मीन पर उतरती है। और न इस में शैत़ान बुराई करवाने की त़ाक़त रखता है और न **जादूगर का जादू** इस में चलता है। (رُوحُ الْبَيان ج۱۰ ص۴۸۵ مُلَخَّصاً)

अ़लामाते शबे क़द्र : हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने बारगाहे रिसालत में **शबे क़द्र** के बारे में सुवाल किया तो सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**शबे क़द्र र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **त़ाक़ रातों** या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं या उन्तीसवीं शब में तलाश करो। तो जो कोई ईमान के साथ ब निय्यते सवाब इस मुबारक रात में इ़बादत करे, उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। उस की अ़लामात में से येह भी है कि वोह मुबारक शब खुली हुई, रोशन और बिल्कुल साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ होती है, इस में न ज़ियादा गरमी होती है न ज़ियादा सरदी बल्कि येह रात मो'तदिल होती है, गोया कि इस में चांद खुला हुवा होता है, इस पूरी रात में शयात़ीन को आस्मान के सितारे नहीं मारे जाते। मज़ीद निशानियों में से येह भी है कि इस रात के गुज़रने के बा'द जो सुब्ह़ आती है उस में सूरज बिग़ैर शुआ़अ के तुलूअ़ होता है और वोह ऐसा होता है गोया कि चौदहवीं का चांद। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन तुलूए़ आफ़्ताब के साथ शैत़ान को निकलने से रोक दिया है।" (इस एक दिन के इलावा हर रोज़ सूरज के साथ साथ शैत़ान भी निकलता है) (مُسند اِمام احمد ج۸ ص۴۰۲، ۴۱۴ حديث۲۲۷۷۶، ۲۲۸۲۹)

www.dawateislami.net

शबे क़द्र की पोशीदगी की हिक्मत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हृदीसे पाक में फ़रमाया गया है कि **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **ताक़ रातों** में या आख़िरी रात में से चाहे वोह 30वीं शब हो कोई एक रात शबे क़द्र है। इस रात को मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) रखने में एक हिक्मत येह भी है कि मुसल्मान इस रात की जुस्त-जू (या'नी तलाश) में हर रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में गुज़ारने की कोशिश करें कि न जाने कौन सी रात, **शबे क़द्र** हो।

समुन्दर का पानी मीठा लगा (हिकायत) : हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम ने उन से अ़र्ज़ की : "ऐ आक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! मुझे कश्ती-बानी करते एक अ़र्सा गुज़रा, मैं ने समुन्दर के पानी में एक ऐसी अ़जीब बात महसूस की।" पूछा : "वोह अ़जीब बात क्या है ?" अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे आक़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! हर साल एक ऐसी रात भी आती है कि जिस में समुन्दर का पानी मीठा हो जाता है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गुलाम से फ़रमाया : "इस बार ख़याल रखना जैसे ही रात में पानी मीठा हो जाए मुझे मुत्तलअ़ करना।" जब र-मज़ान की सत्ताईसवीं रात आई तो गुलाम ने आक़ा से अ़र्ज़ की, कि "आक़ा ! आज समुन्दर का पानी मीठा हो चुका है।" (تفسیرِ عزیزی ج۳ص۲۵۸، تفسیر کبیر ج۱۱ص۲۳۰) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हमें अ़लामात क्यूं नज़र नहीं आतीं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे क़द्र की मु-तअ़द्दिद अ़लामात का ज़िक्र गुज़रा। हमारे ज़ेहन में येह सुवाल उभर सकता है कि हमारी उ़म्र के काफ़ी साल गुज़रे हर साल शबे क़द्र आती और तशरीफ़ ले जाती है मगर हमें तो अब तक इस की अ़लामात नज़र नहीं आईं ? इस के जवाब में उ़-लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : इन बातों का तअ़ल्लुक़ **कश्फ़ो करामत** से है, इन्हें आ़म आदमी नहीं देख सकता। सिर्फ़ वोही देख सकता है जिस को बसीरत (या'नी क़ल्बी नज़र) की ने'मत ह़ासिल हो। हर वक़्त मा'सियत की नजासत में लतपत रहने वाला गुनहगार इन्सान इन नज़्ज़ारों को कैसे देख सकता है !

www.dawateislami.net

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे

दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

ताक़ रातों में ढूंडो : **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है : नबियों के सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**शबे क़द्र, र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **ताक़ रातों** (या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं और उन्तीसवीं रातों) में तलाश करो।" (بُخاری ج ۱ ص ۶۶۱ حدیث ۲۰۱۷)

आख़िरी सात रातों में तलाश करो : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं : बह़रो बर के बादशाह, दो आ़लम के शहन्शाह, उम्मत के ख़ैर ख़्वाह, आमिना رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के महरो माह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'ज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को ख़्वाब में आख़िरी सात रातों में **शबे क़द्र** दिखाई गई। मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं देखता हूं कि तुम्हारे ख़्वाब आख़िरी सात रातों में मुत्तफ़िक़ हो गए हैं। इस लिये इस का तलाश करने वाला इसे **आख़िरी सात रातों** में तलाश करे।" (بُخاری ج ۱ ص ۶۶۰ حدیث ۲۰۱۵)

लय-लतुल क़द्र पोशीदा क्यूं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सुन्नते करीमा है कि उस ने बा'ज़ अहम तरीन मुआ़-मलात को अपनी मशिय्यत से बन्दों पर पोशीदा रखा है। जैसा कि मन्क़ूल है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी **रिज़ा** को नेकियों में, अपनी **नाराज़ी** को गुनाहों में और अपने **औलिया** رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی को अपने बन्दों में पोशीदा रखा है।" (अख़्लाक़ुस्सालिहीन, स. 56) इस का ख़ुलासा है कि बन्दा छोटी समझ कर कोई नेकी न छोड़े। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस नेकी पर राज़ी होगा, हो सकता है ब ज़ाहिर छोटी नज़र आने वाली नेकी ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो जाए। म-सलन क़ियामत के रोज़ एक गुनहगार शख़्स सिर्फ़ इस नेकी के इ़वज़ बख़्श दिया जाएगा कि उस ने एक प्यासे कुत्ते को दुन्या में पानी पिला दिया था। इसी त़रह़ अपनी नाराज़ी को गुनाहों में पोशीदा रखने की ह़िक्मत येह है कि बन्दा किसी गुनाह को छोटा

www.dawateislami.net

तसव्वुर कर के कर न बैठे, बस हर गुनाह से बचता रहे। क्यूं कि वोह नहीं जानता कि **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** किस गुनाह से नाराज़ हो जाएगा। इसी त़रह़ औलिया رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی को बन्दों में इस लिये पोशीदा रखा है कि इन्सान हर नेक ह़क़ीक़ी पाबन्दे शर-अ़ मुसल्मान की रिआ़यत व ता'ज़ीम बजा लाए क्यूं कि हो सकता है कि "वोह" **वलिय्युल्लाह** हो। जब हम नेक लोगों की दिल से ता'ज़ीम किया करेंगे, बद गुमानी से बचते रहेंगे और हर मुसल्मान को अपने से अच्छा तसव्वुर करने लगेंगे तो हमारा मुआ़-शरा भी सह़ीह़ हो जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी आ़क़िबत भी संवर जाएगी।

ह़िक्मतों के म-दनी फूल : **इमाम** फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه "तफ़्सीरे कबीर" में फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **शबे क़द्र** को चन्द वुजूह की बिना पर पोशीदा रखा है। **अव्वल** येह कि जिस त़रह़ दीगर अश्या को पोशीदा रखा, म-सलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी **रिज़ा** को इत़ाअ़तों में पोशीदा फ़रमाया ताकि बन्दे हर इत़ाअ़त में रग़बत ह़ासिल करें। अपने **ग़ज़ब** को गुनाहों में पोशीदा फ़रमाया कि हर गुनाह से बचते रहें। अपने **वली** को लोगों में पोशीदा रखा ताकि लोग सब की ता'ज़ीम करें, **क़बूलिय्यते दुआ़** को दुआ़ओं में पोशीदा रखा कि सब दुआ़ओं में मुबा-लग़ा करें और **इस्मे आ'ज़म** को अस्मा में पोशीदा रखा कि सब अस्मा की ता'ज़ीम करें। और **सलाते वुस्ता** को नमाज़ों में पोशीदा रखा कि तमाम नमाज़ों पर मुह़ा-फ़ज़त (या'नी हमेशगी इख़्तियार) करें और **क़बूले तौबा** को पोशीदा रखा कि बन्दा तौबा की तमाम अक़्साम पर हमेशगी इख़्तियार करे, और **मौत** का वक़्त पोशीदा रखा कि मुकल्लफ़ (बन्दा) ख़ौफ़ खाता रहे। इसी त़रह़ **शबे क़द्र** को भी पोशीदा रखा कि **र-मज़ानुल मुबारक** की तमाम रातों की ता'ज़ीम करे। **दूसरे** येह कि गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "अगर मैं शबे क़द्र को मुअ़य्यन (Fix) कर (के तुझ पर ज़ाहिर फ़रमा) देता और येह कि मैं गुनाह पर तेरी जुरअत भी जानता हूं तो अगर कभी शह्वत तुझे इस रात में मा'सियत के कनारे ला छोड़ती और तू गुनाह में मुब्तला हो जाता तो तेरा इस रात को जानने के बा वुजूद गुनाह करना ला इल्मी के साथ गुनाह करने से बढ़ कर सख़्त होता,

www.dawateislami.net

पस इस वज्ह से मैं ने इसे पोशीदा रखा। **तीसरे** येह कि मैं ने इस रात को पोशीदा रखा ताकि बन्दा इस की तलब में मेहनत करे और इस मेहनत का सवाब कमाए। **चौथे** येह कि जब बन्दे को शबे क़द्र का तअ़य्युन हासिल न होगा तो **र-मज़ानुल मुबारक** की हर रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त में कोशिश करेगा इस उम्मीद पर कि हो सकता है येही रात **शबे क़द्र** हो।"

(تفسیرِ کبیر ج١١ ص٢٩ مُلَخَّصاً)

साल में कोई सी भी रात शबे क़द्र हो सकती है : **शबे क़द्र** के तअ़य्युन में उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का काफ़ी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। यहां तक कि बा'ज़ बुज़ुर्गों رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़्दीक शबे क़द्र पूरे साल में फिरती रहती है, म-सलन फ़क़ीहुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का फ़रमान है : शबे क़द्र वोही शख़्स पा सकता है जो पूरे साल की रातों पर तवज्जोह रखे। (تفسیر کبیر ج١١ ص٢٣٠) इस क़ौल की ताईद करते हुए इमामुल आ़रिफ़ीन सय्यिदुना शैख़ मुह़युद्दीन इब्ने अ़-रबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब (या'नी शबे बराअत) और एक बार शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म ही की उन्नीसवीं शब में शबे क़द्र पाई है। नीज़ **र-मज़ानुल मुबारक** की तेरहवीं शब और अठ्ठारहवीं शब में भी देखी, और मुख़्तलिफ़ सालों में **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की हर ताक़ रात में इसे पाया है। मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर्चे ज़ियादा तर **शबे क़द्र** र-मज़ान शरीफ़ में ही पाई जाती है ताहम मेरा तजरिबा तो येही है कि येह पूरा साल घूमती रहती है। या'नी हर साल के लिये इस की कोई एक ही रात मख़्सूस नहीं है। (اِتحافُ السّادۃ ج٤ ص٣٩٢ ملخّصاً)

रह़मते कौनैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मअ़ शैख़ैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जल्वा गरी : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में **र-मज़ानुल मुबारक** के ए'तिकाफ़ की ख़ूब बहारें होती हैं, दुन्या के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इस्लामी भाई मसाजिद में और इस्लामी बहनें "मस्जिदे बैत" में ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करते और ख़ूब जल्वे समेटते हैं तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है : तह़सील लियाक़त पूर, ज़िलअ़ रह़ीम यार

www.dawateislami.net

ख़ान (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं फ़िल्मों का ऐसा रसिया था कि हमारे गाउं की सीडीज़ की दुकान की तक़रीबन आधी सीडीज़ देख चुका था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे तलबानी गाउं की म-दनी मस्जिद में आख़िरी अशरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1422 सि.हि., 2001 सि.ई.) के **ए'तिकाफ़** की सआदत नसीब हो गई। दा'वते इस्लामी के आशिक़ाने रसूल की सोहबत की ब-र-कतों के क्या कहने ! **27 र-मज़ानुल मुबारक** का ना क़ाबिले फ़रामोश ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ तहदीसे ने'मत के लिये अ़र्ज़ करता हूं : शब भर बेदार रह कर मैं ने ख़ूब रो रो कर **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **दीदार** की भीक मांगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुब्ह दम मुझ पर बाबे करम खुल गया, मैं ने आ़लमे गुनू-दगी में अपने आप को किसी मस्जिद के अन्दर पाया, इतने में किसी ने ए'लान किया : "**सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **तशरीफ़ लाएंगे और नमाज़ की इमामत फ़रमाएंगे।**" कुछ ही देर में रहमते कौनैन, सुल्ताने दारैन, नानाए ह-सनैन, हम दुख्या दिलों के चैन, मअ़ शैख़ैने करीमैन صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم و رضی اللّٰہ تعالٰی عنہم اَجْمَعِیْن जल्वा नुमा हो गए और मेरी आंख खुल गई। सिर्फ़ एक झलक नज़र आई और वोह **हसीन जल्वा** निगाहों से ओझल हो गया, इस पर दिल एक दम भर आया और आंखों से सैले अश्क रवां हो गया यहां तक कि रोते रोते मेरी हिचकियां बंध गईं ऐ काश !

इतनी मुद्दत तक हो दीदे मुस्ह़फ़े आ़रिज़ नसीब

ह़िफ़्ज़ कर लूं नाज़िरा पढ़ पढ़ के क़ुरआने जमाल

(ज़ौक़े ना'त)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के बा'द मेरे दिल में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की महब्बत और बढ़ गई बल्कि मैं **दा'वते इस्लामी** ही का हो कर रह गया। घर से तरकीब बना कर मैं ने बाबुल मदीना कराची का रुख़ किया और **दर्से निज़ामी** करने के लिये **जामिअ़तुल मदीना** में दाख़िला ले लिया। येह बयान देते वक़्त द-र-जए ऊला में इल्मे

www.dawateislami.net

दीन ह़ासिल करने के साथ साथ तन्ज़ीमी तौर पर एक ज़ैली ह़ल्क़े के **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** की हैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं।

जल्वए यार की आरज़ू है अगर, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म, इमामे शाफ़ेई और साह़िबैन के अक़्वाल : **सय्यिदुना** इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इस बारे में दो क़ौल मन्क़ूल हैं : ﴿1﴾ **लय-लतुल क़द्र र-मज़ानुल मुबारक** ही में है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन (Fix) नहीं ﴿2﴾ सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **अबू ह़नीफ़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का एक मश्हूर क़ौल येह है कि **लय-लतुल क़द्र** पूरा साल घूमती रहती है, कभी **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में होती है और कभी दूसरे महीनों में। येही क़ौल सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास, सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मस्ऊ़द और सय्यिदुना इ़क्रमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِیْن से भी मन्क़ूल है। (عُمدۃ القاری ج۸ ص ۲۰۳ تحت الحدیث ۲۰۱۰)

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के नज़्दीक "शबे क़द्र" **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में है और इस की रात मुअ़य्यन (Fix) है, इस में क़ियामत तक तब्दीली नहीं होगी। (اَیضاً)

सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ और सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا के नज़्दीक **लय-लतुल क़द्र र-मज़ानुल मुबारक** ही में है लेकिन कोई रात मुअ़य्यन (Fix) नहीं। और इन का एक क़ौल येह है कि **र-मज़ानुल मुबारक** की **आख़िरी पन्दरह** रातों में **लय-लतुल क़द्र** होती है। (اَیضاً)

शबे क़द्र बदलती रहती है : **सय्यिदुना इमामे मालिक** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के नज़्दीक **शबे क़द्र र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे की **ताक़ रातों** में होती है। मगर कोई एक रात

www.dawateislami.net

मख़्सूस नहीं, हर साल इन ताक़ रातों में घूमती रहती है, या'नी कभी इक्कीसवीं शब **लय-लतुल क़द्र** हो जाती है तो कभी तेईसवीं, कभी पच्चीसवीं तो कभी सत्ताईसवीं और कभी कभी उन्तीसवीं शब भी **शबे क़द्र** हो जाया करती है। (عمدۃ القاری ج۱ ص۳۳۵)

शैख़ अबुल हसन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى और शबे क़द्र : सिलसिलए क़ादिरिय्या शाज़िलिय्या के अज़ीम पेश्वा हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल हसन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى (मु-तवफ़्फ़ा 656 हि.) फ़रमाते हैं : "जब कभी **इतवार** या **बुध** को पहला रोज़ा हुवा तो **उन्तीसवीं शब**, अगर **पीर** का पहला रोज़ा हुवा तो **इक्कीसवीं** शब, अगर पहला रोज़ा **मंगल** या **जुमुआ** को हुवा तो **सत्ताईसवीं** शब अगर पहला रोज़ा **जुम्अ़रात** को हुवा तो **पच्चीसवीं शब** और अगर पहला रोज़ा **हफ़्ते** को हुवा तो मैं ने **तेईसवीं शब** में **शबे क़द्र** को पाया।" (تفسیرِ صاوی ج٦ ص٢٤٠٠)

सत्ताईसवीं रात शबे क़द्र : अगर्चे बुज़ुर्गाने दीन और मुफ़स्सिरीन व मुहद्दिसीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى اَجْمَعِيْن का शबे क़द्र के तअ़य्युन में इख़्तिलाफ़ है, ताहम भारी अक्सरिय्यत की राय येही है कि हर साल माहे **र-मज़ानुल मुबारक** की **सत्ताईसवीं शब** ही **शबे क़द्र** है। सय्यिदुल अन्सार, सय्यिदुल क़ुर्रा, हज़रते सय्यिदुना उबय्यिब्नि का'ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के नज़्दीक **सत्ताईसवीं शबे र-मज़ान** ही "शबे क़द्र" है। (مسلم ص٣٨٣ حدیث٧٦٢)

हज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى भी फ़रमाते हैं कि **शबे क़द्र** र-मज़ान शरीफ़ की **सत्ताईसवीं रात** होती है। अपने बयान की ताईद के लिये उन्हों ने दो दलाइल बयान फ़रमाए हैं : ﴾1﴿ "**लय-लतुल क़द्र**" में नव हुरूफ़ हैं और येह कलिमा **सू-रतुल क़द्र** में तीन मर्तबा है, इस तरह "तीन" को "नव" से ज़र्ब देने से हासिले ज़र्ब "**सत्ताईस**" आता है जो कि इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि शबे क़द्र **सत्ताईसवीं रात** है। ﴾2﴿ इस सूरए मुबा-रका में तीस कलिमात (या'नी तीस अल्फ़ाज़) हैं। **सत्ताईसवां कलिमा** "هِیَ" है जिस का मर्कज़ **लय-लतुल क़द्र** है। गोया **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** की तरफ़ से नेक लोगों के लिये येह इशारा है कि र-मज़ान शरीफ़ की **सत्ताईसवीं शबे क़द्र** होती है। (تفسیر عزیزی ج٣ص٢٥٩ ملخّصاً)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली : **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने " لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم 1 " **तीन मर्तबा** पढ़ा तो उस ने गोया **शबे क़द्र** हासिल कर ली। (ابنِ عساکِر ج ٦٥ ص ٢٧٦) हो सके तो हर रात तीन बार येह दुआ़ पढ़ लेनी चाहिये।

रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ख़्वाहिश मन्दो ! हो सके तो सारा ही साल हर रात एहतिमाम के साथ कुछ न कुछ नेक अ़मल कर लेना चाहिये कि न जाने कब **शबे क़द्र** हो जाए। हर रात में दो फ़र्ज़ नमाज़ें आती हैं, दीगर नमाज़ों के साथ साथ मग़रिब व इ़शा की नमाज़ों की जमाअ़त का भी ख़ूब एहतिमाम होना चाहिये कि अगर **शबे क़द्र** में इन दोनों की जमाअ़त नसीब हो गई तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा ही पार है, बल्कि इसी त़रह़ पांचों नमाज़ों के साथ साथ रोज़ाना इ़शा व फ़ज्र की जमाअ़त की भी ख़ुसूसिय्यत के साथ आ़दत डाल लीजिये। दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा हों : ﴿1﴾ जिस ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी उस ने गोया आधी रात क़ियाम किया और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की उस ने गोया पूरी रात क़ियाम किया। (مُسلم ص ٣٢٩ حدیث ٦٥٦) ﴿2﴾ "जिस ने इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी तह़क़ीक़ उस ने **लय-लतुल क़द्र** से अपना हिस्सा ह़ासिल कर लिया।" (مُعجَم کبیر ج٨ ص١٧٩ حدیث٧٧٤٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के मु-तलाशियो ! अगर तमाम साल येही आ़दते जमाअ़त रही तो शबे क़द्र में भी इन दोनों नमाज़ों की जमाअ़त اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नसीब हो जाएगी और रात भर सोने के बा वुजूद اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना की त़रह़ शबे क़द्र में भी गोया सारी रात की इ़बादत करने वाले क़रार पाएंगे।

शबे क़द्र की दुआ़ : **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रिवायत फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह**

1 : **तरजमा :** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं जो ह़िल्म वाला और करम वाला है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और बड़े अ़र्श का मालिक है।

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे **शबे क़द्र** का इल्म हो जाए तो क्या पढ़ूं ?" फ़रमाया : "इस तरह दुआ मांगो : اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तू मुआफ़ फ़रमाने वाला है और मुआफ़ी देना पसन्द करता है लिहाज़ा मुझे मुआफ़ फ़रमा दे।"

(ترمذی ج٥ص٣٠٦حدیث٣٥٢٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! काश ! हम रोज़ाना रात येह दुआ कम अज़ कम एक बार ही पढ़ लिया करें कि कभी तो **शबे क़द्र** नसीब हो जाएगी। और सत्ताईसवीं शब तो येह दुआ बारहा पढ़नी चाहिये।

शबे क़द्र के नवाफ़िल : **हज़रते** सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "तफ़्सीरे रूहुल बयान" में येह रिवायत नक़्ल करते हैं : जो **शबे क़द्र** में इख़्लासे निय्यत से नवाफ़िल पढ़ेगा उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे। (رُوْحُ الْبَيَان ج١٠ ص٤٨٠)

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब **र-मज़ानुल मुबारक** के **आख़िरी दस दिन** आते तो इबादत पर कमर बांध लेते, उन में रातें जागा करते और अपने अह्ल को जगाया करते।

(ابنِ ماجه ج٢ص٣٥٧حديث١٧٦٨)

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल हक़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि **बुज़ुर्गाने दीन** رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن इस अ़शरे की हर रात में दो रक्अ़त नफ़्ल **शबे क़द्र** की निय्यत से पढ़ा करते थे। नीज़ बा'ज़ अकाबिर से मन्क़ूल है कि जो **हर रात दस आयात** इस निय्यत से पढ़ ले तो इस की ब-र-कत और सवाब से महरूम न होगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन येह रात मम्बए़ ब-रकात है। चुनान्चे **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक बार जब **माहे र-मज़ान शरीफ़** तशरीफ़ लाया तो हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, मह़बूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास येह महीना आया है जिस में

www.dawateislami.net

एक रात ऐसी भी है जो **हज़ार महीनों** से बेहतर है जो शख़्स इस रात से महरूम रह गया, गोया तमाम की तमाम भलाई से महरूम रह गया और इस की भलाई से महरूम नहीं रहता मगर वोह शख़्स जो हक़ीक़तन महरूम है।" (ابنِ ماجہ ج۲ص۲۹۸حدیث۱٦٤٤)

ऐ हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हम गुनाहगारों को **लय-लतुल क़द्र** की ब-र-कतों से मालामाल कर और ज़ियादा से ज़ियादा अपनी इबादत की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلم

लय-लतुल क़द्र में मत़्लइल फ़ज्रे हक़

मांग की इस्तिक़ामत पे लाखों सलाम

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 299)

बेटी के सात हुक़ूक़

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं ۞ बेटी के पैदा होने पर ना ख़ुशी न करे बल्कि ने'मते इलाहिय्यह जाने ۞ बेटियों से ज़ियादा दिलजोई व ख़ातिर दारी रखे कि इन का दिल बहुत थोड़ा होता है ۞ देने में इन्हें और बेटों को कांटे (या'नी तराज़ू) की तोल बराबर रखे ۞ जो चीज़ दे पहले इन्हें (या'नी बेटियों को) दे कर (फिर) बेटों को दे ۞ नव बरस की उ़म्र से न अपने पास सुलाए न (इस के सगे) भाई वग़ैरा के साथ सोने दे ۞ इस उ़म्र से ख़ास निगह दाश्त (कड़ी देखभाल) शुरूअ़ करे, शादी बरात में जहां गाना नाच हो हरगिज़ न जाने दे ۞ किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर ख़ुसूसन बद मज़्हब के निकाह में न दे। (माख़ूज़ अज़ : मश्अ़-लतुल इर्शाद, स. 27 ता 28)

www.dawateislami.net

ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

आह ! क्या माहे मुबारक हम से होता है जुदा
आह ! जब इस में नहीं हम से हुई त़ाअ़त अदा
अल वदाओ़ वल वदाअ़ ऐ माहे ग़ुफ़्रां ! अल वदाअ़

अल फ़िराक़ ! ऐ माहे रमज़ां ! अल फ़िराक़ो वल फ़िराक़ !
दर्द पहुंचाता रहेगा दिल को तेरा इश्तियाक़
फिर न क्यूं कहते रहें ऐ वक़्ते हिजरां ! अल वदाअ़

ऐ महे फ़रख़ुन्दा पे ! अफ़्सोस ! हम ग़ाफ़िल रहे
नीं हुई हैहात ! हम से नेकियां जूं चाहिये
इस लिये कहते हैं अब हम अश्क रेज़ां अल वदाअ़

तेरे आने से ज़माना चौ त़रफ़ पुरनूर था
रोज़ादारों का भी था चेहरा बड़ा रौनक़ भरा
हैं ज़बानो जानो दिल गोया हिरासां अल वदाअ़

आह ! ऐ रमज़ां ! कोई दम का तू अब मेहमान है
कोई तड़पे तो कोई तस्वीर सा हैरान है
फिर न क्यूं रो रो कहें, उ़श्शाक़े रमज़ां अल वदाअ़

आह ! अब जाता है तू ऐ माहे रमज़ां ! अस्सलाम
फिर तेरे बरकात होवें नश्र आ़लम में तमाम
अस्सलाम ऐ आ़ज़िमे दरगाहे सुब्ह़ां ! अल वदाअ़

ऐ महे रमज़ान ! मह़शर में ब दरगाहे इलाह
और हमारी मग़्फ़िरत के वासित़े हो उ़ज़्र ख़्वाह
ऐ शफ़ीए़ साइरे अरबाबे इस्यां ! अल वदाअ़

आह ! कैसा मम्बए़ बरकात दुन्या से चला
फिर वदाअ़ इस को न क्यूं रो रो करें ऐसा बजा
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

तेरी फ़ुरक़त और जुदाई है निहायत हम पे शाक़
तुझ से फिर मिलने का होगा या न होगा इत्तिफ़ाक़
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

क़द्रदानी से तेरी हम रोज़ो शब काहिल रहे
तेरी ह़ुरमत कुछ न की हम ने पशेमां ही रहे
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

मस्जिदो मेह़राबो मिम्बर जग-मगाते जा बजा
आह ! ऐसी बरकतें अब हम से होती हैं जुदा
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

तेरा हर आ़शिक़ जुदाई से तेरी बे जान है
आह ! येह ग़मगीं दिलों का दर्द बे दरमान है
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

काश ! फिर लावे तुझे दुन्या में जब रब्बुल अनाम
हम भी ज़िन्दा रह के देखें फिर सुहाने सुब्ह़ो शाम
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

हम गुनहगारों के ईमां पर करम से हो गवाह
और दिलवा दे हमें नारे जहन्नम से पनाह
ह़स्रता वा ह़स्रता ऐ माहे रमज़ां ! अल वदाअ़

www.dawateislami.net

हुवा जाता है रुख़्सत माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

हुवा जाता है रुख़्सत माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह
रहा अब चन्द घड़ियों का येह मेहमां या रसूलल्लाह

ख़ुशी की लह्र दौड़ी हर त़रफ़ र-मज़ान जब आया
है अब रन्जीदा रन्जीदा मुसल्मां या रसूलल्लाह

मसर्रत ही मसर्रत और ख़ुशी ही थी ख़ुशी जिस दम
नज़र आया हिलाले माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

शहा ! अब ग़म के मारे ख़ून के आंसू बहाते हैं
चला तड़पा के हाए माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

चला अब जल्द येह र-मज़ां सताईस[27] आ गई तारीख़
फ़क़त़ दो[2] दिन का अब र-मज़ां है मेहमां या रसूलल्लाह

फ़ज़ाएं नूर बरसातीं हवाएं मुस्कुराती थीं
समां अब हो गया हर सम्त वीरां या रसूलल्लाह

रियाज़त कुछ न की हम ने इबादत कुछ न की हम ने
रहे बस हर घड़ी मश्ग़ूले इस्यां या रसूलल्लाह

मैं हाए जी चुराता ही रहा रब की इबादत से
गुज़ारा ग़फ़्लतों में सारा र-मज़ां या रसूलल्लाह

मैं सोता रह गया ग़फ़्लत की चादर तान कर अफ़्सोस
ख़ुदारा मेरी बख़्शिश का हो सामां या रसूलल्लाह

जुदाई की घड़ी जां-सोज़ है उ़श्शाक़े र-मज़ां पर
चला इन को रुला कर माहे र-मज़ां या रसूलल्लाह

तड़पते हैं बिलक्ते हैं क़रार आता नहीं इन को
बहुत बेचैन हैं उ़श्शाक़े र-मज़ां या रसूलल्लाह

गुनाहों की सियाही छा रही है रुख़ पे मह्शर में
मेरा चेहरा पए र-मज़ां हो ताबां या रसूलल्लाह

महे र-मज़ां की रुख़्सत जाने आ़शिक़ पर क़ियामत है
गदा तेरे हैं हैरानो परेशां या रसूलल्लाह

ख़ुदा के नेक बन्दे नेकियों में लग गए लेकिन
गुनह करता रहा अ़त्त़ारे नादां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 678)

www.dawateislami.net

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(इस कलाम में बीच में कहीं कहीं मिस्रए़ किसी ना मा'लूम शाइ़र के हैं, कलाम निहायत पुरसोज़ था इस लिये किसी की फ़रमाइश पर उसी कलाम की मदद से अपने मु-तलातिम जज़्बात को अल्फ़ाज़ के क़ालिब में ढालने की सअ़्य की है)

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
कुल्फ़ते[1] हिज्रो फ़ुरक़त ने मारा	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
तेरे आने से दिल ख़ुश हुवा था	और ज़ौक़े इ़बादत बढ़ा था
आह ! अब दिल पे है ग़म का ग़-लबा	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
मस्जिदों में बहार आ गई थी	जूक़ दर जूक़ आते नमाज़ी
हो गया कम नमाज़ों का जज़्बा	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
बज़्मे इफ़्त़ार सजती थी कैसी !	ख़ूब स-ह़री की रौनक़ भी होती
सब समां हो गया सूना सूना	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
तेरे दीवाने अब रो रहे हैं	मुज़्त़रिब सब के सब हो रहे हैं
हाए अब वक़्ते रुख़्सत है आया	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
तेरा ग़म हम को तड़पा रहा है	आ-तशे शौक़ भड़का रहा है
फट रहा है तेरे ग़म में सीना	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
याद र-मज़ां की तड़पा रही है	आंसूओं की झड़ी लग गई है
कह रहा है येह हर एक क़त़रा	अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
दिल के टुकड़े हुए जा रहे हैं	तेरे आ़शिक़ मरे जा रहे हैं

1 : रन्ज, तक्लीफ़

www.dawateislami.net

रो रो कहता है हर इक बिचारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

ह़स्रता माहे र-मज़ां की रुख़्सत
क़ल्बे उ़श्शाक़ पर है क़ियामत

कौन देगा इन्हें अब दिलासा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

कोहे ग़म आ़शिक़ों पर पड़ा है
हर कोई ख़ून अब रो रहा है

कह रहा है येह हर ग़म का मारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

तुम पे लाखों सलाम आह ! र-मज़ां
अल वदाअ़ आह ! ऐ रब के मेहमां !

जाओ ह़ाफ़िज़ ख़ुदा अब तुम्हारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

नेकियां कुछ न हम कर सके हैं
आह ! इ़स्यां में ही दिन कटे हैं

हाए ! ग़फ़्लत में तुझ को गुज़ारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

वासित़ा तुझ को मीठे नबी का
ह़श्र में हम को मत भूल जाना

रोजे़ मह़शर हमें बख़्शवाना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

जब गुज़र जाएंगे माह ग्यारह
तेरी आमद का फिर शोर होगा

क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

माहे र-मज़ां की रंगीं फ़ज़ाओ !
अब्रे रह़मत से मम्लू हवाओ

लो सलाम आख़िरी अब हमारा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

कुछ न ह़ुस्ने अ़मल कर सका हूं
नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं

बस येही है मेरा कुल असासा
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

हाए अ़त्तारे बदकार काहिल
रह गया येह इ़बादत से ग़ाफ़िल

इस से ख़ुश हो के होना रवाना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

साले आयिन्दा शाहे ह़रम तुम
करना अ़त्तार पर येह करम तुम

तुम मदीने में र-मज़ां दिखाना
अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 651)

www.dawateislami.net

र-मज़ान शरीफ़ को भारी महीना कहना

सुवाल : **र-मज़ानुल मुबारक** की आमद पर इस त़रह़ कहना कैसा कि बहुत भारी महीना आ गया ?

जवाब : फ़ु-क़हाए किरमा رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते है : जो **र-मज़ानुल मुबारक** की तौहीन की निय्यत से कहे : "बड़ा भारी महीना आ गया।" वोह **काफ़िर** है। (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج ٥ ص ٢٠٦) हां अगर **रोज़ा** रखना उस पर मुश्किल है और इस वज्ह से येह कहता है और **रोज़े** की तौहीन इस का मक़्सद नहीं तो **कुफ़्र** नहीं। लेकीन इस त़रह़ कहना नहीं चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से दिल तंग होना बुरा है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब स. 379)

रोज़ों की ता'दाद से बेज़ारी का इज़्हार

सुवाल : **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़ों की ता'दाद के बारे में येह कहना कैसा कि अब तो **रोज़े** रख रख कर मैं **बोर** हो गया हूं ?

जवाब : इस जुम्ले में कुफ़्रिय्या पहलू मौजूद है। चुनान्चे "फ़तावा आ़लमगीरी" में है : जो **रोज़ए र-मज़ान** के बारे में कहे : "कितने ज़ियादा हैं मेरा तो दिल उक्ता गया है।" येह क़ौल **कुफ़्र** है। (عالمگیری ج٢ ص ٢٧٠)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

अल वदाअ़ माहे र-मज़ान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है।"

(مُسلِم ص٢١٦ حديث٤٠٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" पढ़ना जाइज़ है : "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" के ऐसे अश्आ़र जिन में कोई शर-ई ख़राबी न हो उन का पढ़ना सुनना मुबाह़ व जाइज़ है, अलबत्ता इस में सवाब ह़ासिल करने के लिये **अच्छी निय्यत** ज़रूरी है और जिस क़दर **अच्छी निय्यतें** ज़ियादा होंगी उसी क़दर सवाब भी ज़ियादा मिलेगा।

"र-मज़ानुल मुबारक" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" के मु-तअ़ल्लिक़ 12 निय्यतें

﴾1﴿ **"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान"** पढ़ने सुनने के ज़रीए वा'ज़ो नसीह़त ह़ासिल करूंगा ﴾2﴿ **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत, **माहे र-मज़ानुल मुबारक** की उल्फ़त दिल में बढ़ाऊंगा ﴾3﴿ नेकियों में रग़बत ह़ासिल करूंगा ﴾4﴿ गुनाहों से बचने का ज़ेहन बनाऊंगा। (येह **निय्यतें** उसी सूरत में दुरुस्त होंगी जब कि पढ़ा जाने वाला कलाम शरीअ़त के मुत़ाबिक़

www.dawateislami.net

हो और उस में वा'ज़ो नसीह़त वग़ैरा शामिल भी हो) ﴿5﴾ **र-मज़ानुल मुबारक** की आख़िरी घड़ी तक बारगाहे इलाही में अपनी मग़्फ़िरत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन गिर्या व ज़ारी की कोशिश करता रहूंगा। (आह ! आह ! आह ! एक **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में येह भी है : "मह़रूम है वोह शख़्स जिस ने **र-मज़ान** को पाया और उस की **मग़्फ़िरत** न हुई कि **जब इस की र-मज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी !"** (مُعجَم اَوسَط ج٥ص٣٦٦حدیث٧٦٢٧)

वासित़ा रमज़ान का या रब ! हमें तू बख़्श दे

नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 704)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴿6﴾ इस निय्यत से "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" के इज्तिमाअ़ में शिर्कत करूंगा कि नेकियों का जज़्बा बाक़ी रहे बल्कि मज़ीद बढ़े। (क्यूं कि **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में नेक लोगों के अन्दर नेकियों का जज़्बा बढ़ जाता है) ﴿7﴾ बहुत से लोग ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब गुनाहों से रुक जाते हैं मगर अफ़्सोस ! र-मज़ान शरीफ़ जूं ही रुख़्सत होता है बे अ़-मली एक बार फिर बढ़ जाती है और नमाज़ियों की ता'दाद में भी कमी आ जाती है, आह ! मस्जिदें ख़ाली ख़ाली नज़र आती हैं, इन तसव्वुरात के साथ न सिर्फ़ ख़ुद भी बे अ़-मली से बचने की निय्यत से बल्कि दूसरों के मु-तअ़ल्लिक़ दिल में कुढ़न (या'नी दुख) रख कर सोज़ो रिक़्क़त के साथ **माहे र-मज़ान को अल वदाअ़** कर के अपना ख़ौफ़े ख़ुदा बढ़ाऊंगा ﴿8﴾ आयिन्दा साल माहे र-मज़ान नसीब होने की आरज़ू और उस में ख़ूब ख़ूब नेकियां करने की **निय्यत** शामिल रख कर रो रो कर इस साल के माहे र-मज़ान को **अल वदाअ़** करूंगा ﴿9﴾ तशब्बोह बिस्सालिह़ीन (या'नी नेक लोगों से मुशा-बहत) इख़्तियार करूंगा कि सलफ़ सालिह़ीन (या'नी गुज़श्ता ज़माने के बुज़ुर्गाने दीन) رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين **र-मज़ानुल मुबारक** की जुदाई पर ग़मगीन होते थे ﴿10﴾ ख़ाइफ़ीन (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वालों) के

www.dawateislami.net

इज्तिमाअ़ की ब-रकात ह़ासिल करूंगा (اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस त़रह़ के रूह़ परवर इज्तिमाआ़त **दा'वते इस्लामी** में देखे जा सकते हैं) ﴿11﴾ अश्आ़र की सूरत में मांगी जाने वाली दुआ़ओं में शिर्कत करूंगा कि अल वदाअ़ के बा'ज़ अश्आ़र, इस्लाहे़ आ'माल, ख़ातिमा बिलख़ैर और मग़्फ़िरत की दुआ़ पर मुश्तमिल होते हैं ﴿12﴾ **अल्लाह व रसूल** और नेक आ'माल की मह़ब्बत में रोने की कोशिश करूंगा कि अल वदाअ़ पढ़ने सुनने वालों को **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और **माहे र-मज़ानुल मुबारक** की मह़ब्बत में उ़मूमन रोने की सआ़दत नसीब होती है। जो इल्मे निय्यत रखता है वोह मज़ीद निय्यतें बढ़ा सकता है।

हाए अ़त्तारे बदकार काहिल रह गया येह इबादत से ग़ाफ़िल
इस से ख़ुश हो के होना रवाना अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 653)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आमदे र-मज़ान पर मुबारक बाद देना सुन्नत से साबित है : **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस हि़स्से : اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ या'नी "र-मज़ान का महीना आ गया है जो कि निहायत ही बा ब-र-कत है" के तह़त "मिरआत" जिल्द 3 सफ़ह़ा 137 पर फ़रमाते हैं : **ब-र-कत** के मा'ना हैं बैठ जाना, जम जाना। इसी लिये ऊंट के त़वेले को मुबा-रकुल इबिल कहा जाता है कि वहां ऊंट बैठते बंधते हैं। अब वोह ज़ियादतिये ख़ैर (या'नी भलाई का बढ़ना) जो आ कर न जाए **ब-र-कत** कहलाती है, चूंकि माहे र-मज़ान में हि़स्सी (या'नी मह़सूस की जा सकने वाली) ब-र-कतें भी हैं और ग़ैबी ब-र-कतें भी, इस लिये इस महीने का नाम "माहे मुबारक" भी है। र-मज़ान में कुदरती त़ौर पर मोमिनों के रिज़्क़ में ब-र-कत होती है और हर नेकी का सवाब 70 गुना या इस से भी ज़ियादा है। **इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि माहे र-मज़ानुल मुबारक की आमद** (या'नी आने)

www.dawateislami.net

पर ख़ुश होना, एक दूसरे को मुबारक बाद देना सुन्नत (से साबित) **है** और जिस की आमद (या'नी आने) पर **ख़ुशी** होनी चाहिये उस के जाने पर **ग़म** भी होना चाहिये, देखो ! निकाह़ ख़त्म होने पर औ़रत को शरअ़न ग़म लाज़िम है, इसी लिये अक्सर मुसल्मान **जुमुअ़तुल वदाअ़** को मग़मूम और चश्मे पुरनम (या'नी ग़मगीन होते और रो रहे) होते हैं और ख़ु-त़बा (या'नी ख़त़ीब साहिबान) इस दिन में कुछ वदाइया कलिमात (अल वदाअ़ माहे र-मज़ान से मु-तअ़ल्लिक़ कुछ जुम्ले) कहते हैं ताकि मुसल्मान बाक़ी (बची हुई) घड़ियों को ग़नीमत जान कर नेकियों में और ज़ियादा कोशिश करें। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 137)

कोहे ग़म आ़शिक़ों पर पड़ा है　　हर कोई ख़ून अब रो रहा है

कह रहा है येह हर ग़म का मारा　　अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 652)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दिल ग़मे र-मज़ान में डूबने लगता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे र-मज़ानुल मुबारक की अ़ज़्मतों से कौन वाक़िफ़ नहीं ! इस के तशरीफ़ लाने पर मुसल्मानों की ख़ुशी की इन्तिहा नहीं रहती, ज़िन्दगी का अन्दाज़ ही तब्दील हो जाता है, मस्जिदें आबाद हो जातीं और इबादत व तिलावत की लज़्ज़त बढ़ जाती है, नीज़ सह़र व इफ़्त़ार की भी अपनी अपनी क्या ख़ूब बहारें होती हैं ! येह माहे मुबारक ख़ूब ख़ूब बारिशे रह़मत बरसाता, मग़्फ़िरत की बिशारत सुनाता और गुनहगारों को जहन्नम से आज़ादी दिलाता है। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में दुन्या की ला ता'दाद मसाजिद के अन्दर बे शुमार आ़शिक़ाने रसूल पूरे माहे र-मज़ान शरीफ़ का नीज़ हज़ारों हज़ार आ़शिक़ाने रसूल आख़िरी अ़शरे का **ए'तिकाफ़** करते हैं, ए'तिकाफ़ में इन की सुन्नतों भरी तरबियत की जाती है, इन्हें नेकियों की रग़्बत और गुनाहों से नफ़रत दिलाई जाती है, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ूब जाम पीने को मिलते हैं। बहर ह़ाल

www.dawateislami.net

क्या मो'तकिफ़ और क्या ग़ैर मो'तकिफ़, सभी माहे र-मज़ान की ब-र-कतें लूटते हैं । माहे र-मज़ान से महब्बत के इज़्हार का हर एक का अपना अन्दाज़ होता है, रुख़्सत के अय्याम क़रीब आने पर बिल ख़ुसूस मो'तकिफ़ीन **आ़शिक़ाने र-मज़ान का दिल ग़मे र-मज़ान में डूबने लगता है !**

क़ल्बे आ़शिक़ है अब पारा पारा　　अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां
कुल्फ़ते हिज्रो फ़ुरक़त ने मारा　　अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 651)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : पारा पारा : टुकड़े । **कुल्फ़त :** रन्ज, तक्लीफ़ । **हिज्रो फ़ुरक़त :** जुदाई ।

दिल को येह ग़म खाए जाता है कि आह ! मोह़तरम माह अ़न्क़रीब हम से **वदाअ़** (या'नी रुख़्सत) होने वाला है ! अफ़्सोस ! मस्जिद के इस पुरकैफ़ व रूह़ परवर म-दनी माह़ोल से निकल कर एक बार फिर हम दुन्या की झन्झटों में फंसने वाले हैं, आह ! अब जल्द ही हमें ग़फ़्लत भरे बाज़ारों में दोबारा जाना पड़ जाएगा, हाए हम जल्द बहुत जल्द ए'तिकाफ़ की ब-र-कतों और **र-मज़ानुल मुबारक** की रह़मतों भरी फ़ज़ाओं से जुदा हो जाएंगे ! इस त़रह़ की सोचों के सबब आ़शिक़ाने र-मज़ान के दिल **ग़मे र-मज़ान** से भर जाते हैं !

तेरे आने से दिल ख़ुश हुवा था　　और ज़ौक़े इ़बादत बढ़ा था
आह ! अब दिल पे है ग़म का ग़-लबा　　अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 651)

आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं : ग़फ़्लत में गुज़ारे हुए अय्यामे र-मज़ान का ख़ूब सदमा होता है, अपनी इ़बादतों की सुस्तियां याद आती हैं, दिल पर एक ख़ौफ़ सा छा जाता है कि कहीं ऐसा न हो हमारी कोताहियों के सबब हमारा प्यारा प्यारा रब عَزَّوَجَلَّ हम से नाराज़ हो गया हो !

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला की बे पायां रह़मतों पर टिकटिकी भी लगी होती है, ख़ौफ़ो रजा या'नी डर और उम्मीद की मिली जुली कैफ़िय्यात होती हैं, कभी रह़मतों की उम्मीद पर दिल की मुरझाई हुई कली खिल उठती और रुख़ पर बश्शाशत (या'नी चेहरे पर ताज़गी) के आसार नुमायां हो जाते हैं तो कभी ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़-लबा होता है तो दिल ग़म में डूब जाता, चेहरे पर उदासी छा जाती और **आंखों से आंसू जारी हो जाते हैं।**

कुछ न हुस्ने अ़मल कर सका हूं नज़्र चन्द अश्क मैं कर रहा हूं
बस येही है मेरा कुल असासा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 653)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : हुस्ने अ़मल : नेकियां। **असासा :** सरमाया।

क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा : आ़शिक़ाने र-मज़ान को येह एह़सास बिल ख़ुसूस तड़पा कर रख देता है कि **र-मज़ानुल मुबारक** ने अगर्चे आयिन्दा साल फिर ज़रूर तशरीफ़ लाना है मगर न जाने हम ज़िन्दा रहेंगे या नहीं !

जब गुज़र जाएंगे माह ग्यारह तेरी आमद का फिर शोर होगा
क्या मेरी ज़िन्दगी का भरोसा अल वदाअ़ अल वदाअ़ आह ! र-मज़ां

(वसाइले बख़्शिश, स. 653)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पहले के लोगों की दुआ़ में सारा साल यादे र-मज़ान होती ! : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : पहले के लोग **र-मज़ानुल मुबारक** से क़ब्ल छ6 महीने र-मज़ान शरीफ़ को पाने की और **र-मज़ानुल मुबारक** के बा'द छ6 महीने इबादाते र-मज़ान की क़बूलिय्यत की दुआ़ किया करते थे। (لطائف المعارف لابن رجب ص٣٧٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

ईद की चांदरात आ़शिक़ाने र-मज़ान के जज़्बात : र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी दिनों या लम्हों में माहे र-मज़ान से मह़ब्बत की वज्ह से कोई आ़शिके़ र-मज़ान रन्जीदा हो जाए, **ग़मे र-मज़ान** में रोए, माहे र-मज़ान ग़फ़्लत में गुज़ार देने के सदमे से आंसू बहाए तो येह भी एक निहायत उ़म्दा अ़मल है और अच्छी निय्यत पर यक़ीनन वोह सवाब का ह़क़दार है। बेशक **र-मज़ानुल मुबारक** में बे शुमार गुनहगार बख़्शे जाते हैं मगर हम नहीं जानते कि हमारे बारे में क्या फै़सला हुवा! यक़ीनन जो ग़ाफ़िल मुसल्मान माहे र-मज़ान में मग़्फ़िरत से मह़रूम हुवा वोह बहुत ज़ियादा मह़रूम हुवा जैसा कि एक **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में येह भी है : رَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَيْهِ رَمَضَانُ ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ اَنْ يُّغْفَرَ لَهٗ ـ या'नी "उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस पर र-मज़ान आए फिर उस की बख़्शिश से पहले ही गुज़र जाए।"

(تِرمذی ج٥ص٣٢٠حدیث٣٥٥٦)

मैं हाए ! जी चुराता ही रहा रब की इ़बादत से — गुज़ारा ग़फ़्लतों में सारा र-मज़ां या रसूलल्लाह !
मैं सोता रह गया ग़फ़्लत की चादर तान कर अफ़्सोस ! — ख़ुदारा मेरी बख़्शिश का हो सामां या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश, स. 679)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़मे र-मज़ान की तरग़ीब : **आज** (या'नी ता दमे तह़रीर) से तक़रीबन 625 साल पहले गुज़रे हुए क़ाहिरा (मिस्र) के सूफ़ी बुज़ुर्ग और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के मुक़ीम, मुबल्लिग़े इस्लाम, सय्यिदुना शैख़ शुऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (साले वफ़ात : 810 सि.हि.) फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! तुम **माहे र-मज़ान** की **जुदाई** में ग़मगीन हो जाओ ! क्यूं कि येह ऐसा मौसिम है जिस में तुम बारिशे रह़मत और दुआ़ओं की क़बूलिय्यत की सआ़दत पाते हो। (الروض الفائق ص ٤٠ مُلَخَّصاً)

जां फ़िदा तुझ पे नानाए ह़-सनैन ! — क़ल्ब है ग़मज़दा और बेचैन
दिल पे सदमा बढ़ा जा रहा है — हाए तड़पा के रमज़ां चला है

(वसाइले बख़्शिश, स. 683)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

माहे र-मज़ान की जुदाई में क्यूं न रोया जाए ! : सय्यिदुना शैख़ शुऐब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे भाइयो ! **माहे र-मज़ान** के रोज़ों और रातों के क़ियाम (या'नी रातों की इ़बादत) में क्यूं रग़बत न की जाए ! उस मुबारक महीने पर क्यूं ह़सरत न की जाए जिस में बन्दे के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और उस बा ब-र-कत महीने की जुदाई पर क्यूं न **रोया** जाए, जिस के तशरीफ़ ले जाने से ख़ूब नेकियां कमाने का मौक़अ़ भी जाता रहता है। (اَلرَّوضُ الفائق ص ٤١)

ख़ूब रोता है तड़पता है ग़मे र-मज़ान में

जो मुसल्मानं क़द्रदानो आ़शिक़े र-मज़ान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 702)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जुमुअ़तुल वदाअ़ के बयान में जान दे दी (ह़िकायत) : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"ह़िकायतें और नसीह़तें"** सफ़्ह़ा 96 ता 97 पर दी हुई ह़िकायत क़दरे तसर्रुफ़ के साथ बयान की जाती है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं माहे र-मज़ान के **जुमुअ़तुल वदाअ़** के रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه र-मज़ान शरीफ़ के रोज़ों की फ़ज़ीलत, रातों की इ़बादत और मुख़्लिसीन या'नी ख़ुलूस के साथ इ़बादत करने वालों के लिये जो अज्र तय्यार किया गया है उस के मु-तअ़ल्लिक़ बयान फ़रमा रहे थे और यूं लग रहा था गोया आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बयान के असर से ठोस पथ्थरों से आग ज़ाहिर हो रही है। बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! (ऐसा हो सकता है) क्यूं कि इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْاَنْهٰرُ (پ١، البقرة:٧٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं।

www.dawateislami.net

लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़फ़िल में न किसी ने ह़-र-कत की, न ही किसी ने अपने गुनाहों पर नदामत का इज़्हार किया, जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मह़फ़िल की येह ह़ालत मुला-ह़ज़ा की तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! क्या अपने ड़यूब (या'नी ऐबों) से आगाह हो कर कोई रोने वाला नहीं ? क्या येह तौबा व इस्तिग़फ़ार का महीना नहीं ? क्या येह अ़फ़्वो मग़्फ़िरत (या'नी मुआफ़ी मिलने और बख़्शे जाने) का महीना नहीं ? क्या इस माहे मुबारक में जन्नत के दरवाज़े नहीं खोले जाते ? क्या इस में जहन्नम के दरवाज़े बन्द नहीं किये जाते ? क्या इस में शयात़ीन को क़ैद नहीं किया जाता ? क्या इस माहे सियाम (या'नी रोज़ों के महीने) में इन्आ़मो इक्राम की बारिशें नहीं होतीं ? क्या इस बा ब-र-कत माह में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तजल्ली नहीं फ़रमाता ? क्या इस माहे मुबारक में हर रात ब वक़्ते इफ़्त़ार दस लाख गुनहगार जहन्नम से आज़ाद नहीं किये जाते ? तुम्हें क्या हो गया है कि इस सवाबे अ़ज़ीम से ख़ुद को मह़रूम रखते और लिबासे मुख़ा-लफ़त में इतराते हो (मत़लब येह कि अ़मल नहीं करते और गुनाहों में मसरूफ़ रहते हो) । इर्शादे रब्बानी है :

اَفَسِحْرٌ هٰذَاۤ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۱۵﴾
(پ۲۷،الطور:۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह जादू है या तुम्हें सूझता नहीं ।

(इस के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया :) सब ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िर हो कर तौबा व इस्तिग़फ़ार करो ! तो तमाम ह़ाज़िरीन बुलन्द आवाज़ से गिर्या व ज़ारी करने और रोने धोने लगे, इतने में एक नौ जवान रोता हुवा खड़ा हो गया और अ़र्ज़ करने लगा : "या सय्यिदी ! (या'नी ऐ मेरे आक़ा !) इर्शाद फ़रमाइये क्या मेरे रोज़े मक़्बूल हैं ? क्या मेरा (र-मज़ान की) रातों का क़ियाम (या'नी रातों में इ़बादत करना) क़बूलिय्यत पाने वाले इ़बादत गुज़ारों के साथ लिखा जाएगा ? ह़ालां कि मुझ से बहुत सारे गुनाह सरज़द हुए हैं, मैं ने तो अपनी तमाम उ़म्र ना फ़रमानियों में बरबाद कर दी है, आह ! मैं अ़ज़ाब के दिन से ग़ाफ़िल रहा ।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ लड़के ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करो, क्यूं कि उस ने क़ुरआने

www.dawateislami.net

करीम में इर्शाद फ़रमाया है :

وَ اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ

(پ۱۶،طٰہٰ:۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की।

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने क़ारी को येह आयते मुबा-रका पढ़ने का हुक्म फ़रमाया :

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ یَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ

(پ۲۵،الشّوریٰ:۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है।

उस नौ जवान ने सुन कर एक ज़ोरदार चीख़ मारी और कहा : "मेरी ख़ुश नसीबी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एह़सान मुझ तक पहुंचता रहा लेकिन इस के बा वुजूद मैं ना फ़रमानियों में इज़ाफ़ा करता रहा और ग़लत़ रास्ते से न लौटा। क्या गुज़रे हुए वक़्त की जगह कोई और वक़्त होगा कि जिस में **अल्लाह तआ़ला** दर गुज़र फ़रमाएगा ?" फिर उस ने दोबारा चीख़ मारी और अपनी जान जाने आफ़रीं के सिपुर्द कर दी। (या'नी वफ़ात पा गया) येह ह़िकायत नक़्ल करने के बा'द साह़िबे किताब फ़रमाते हैं :

मेरे भाइयो ! माहे र-मज़ान के फ़िराक़ (या'नी जुदाई) पर क्यूं न रोया जाए और अ़फ़्वो मग़फ़िरत के महीने की रुख़्सत पर क्यूं न अफ़्सोस किया जाए ! इस महीने की जुदाई पर क्यूं न ग़म किया जाए जिस में गुनहगारों को जहन्नम से आज़ादी नसीब होती है ! (اَلرّوضُ الفائق ص ٤٠)

आह ! अब तू चन्द घड़ियों का फ़क़त़ मेहमान है
कर रहे हैं तुझ को रो रो कर मुसल्मां अल वदाअ़
नेकियों का अपने पल्ले कुछ नहीं सामान है
वासित़ा र-मज़ान का या रब ! हमें तू बख़्श दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 704)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

माहे र-मज़ान की आख़िरी रात ख़ौफ़े ख़ुदा से वफ़ात (हिकायत) : माहे र-मज़ान इबादातो रियाज़ात में गुज़ारने के बा'द आख़िरी रात वफ़ात पाने वाली एक नेक बन्दी की **हिकायत** मुला-हज़ा फ़रमाइये और इस में से अपने लिये इब्रत के **म-दनी फूल** तलाश कीजिये चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबू फ़रज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में एक कनीज़ की ज़रूरत पड़ी जो हमें खाना तय्यार कर दे, मैं ने बाज़ार में एक कनीज़ को देखा, उस का चेहरा ज़र्द (या'नी पीला), बदन कमज़ोर और जिल्द (Skin) ख़ुश्क थी। मैं उस पर तर्स खाते हुए उसे ख़रीद कर घर ले आया और कहा : बरतन पकड़ो और **र-मज़ानुल मुबारक** की ज़रूरी अश्या (या'नी चीज़ों) की ख़रीदारी के लिये मेरे साथ बाज़ार चलो। तो वोह कहने लगी : ऐ मेरे आक़ा ! मैं तो ऐसे लोगों के पास थी जिन का पूरा ज़माना ही गोया र-मज़ान हुवा करता था ! (या'नी वोह लोग **र-मज़ानुल मुबारक** के फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा नफ़्ल रोज़े भी कसरत से रखते और दिन रात इबादात में मश्ग़ूल रहा करते थे)। उस की येह बात सुन कर मैं ने अन्दाज़ा लगाया कि येह ज़रूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **नेक बन्दी** होगी। مَاشَاءَالله **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में वोह सारी सारी रात इबादत करती रही और जब आख़िरी रात आई तो मैं ने उस को कहा : ईद की ज़रूरी अश्या ख़रीदने के लिये मेरे साथ बाज़ार चलो। तो वोह पूछने लगी : ऐ मेरे आक़ा ! आ़म लोगों की ज़रूरिय्यात ख़रीदेंगे या ख़ास लोगों की ? मैं ने उस से कहा : अपनी बात की वज़ाहत करो ! तो कहने लगी : "आ़म लोगों की ज़रूरिय्यात तो ईद के मश्हूर खाने हैं, जब कि ख़ास लोगों की ज़रूरिय्यात मख़्लूक़ से कनारा कश होना, इबादत के लिये फ़ारिग़ होना, नवाफ़िल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब हासिल करना और उस की बारगाह में इज्ज़ो इन्किसारी का इज़्हार है।" येह सुन कर मैं ने कहा : मेरी मुराद खाने की ज़रूरी अश्या हैं। उस ने फिर पूछा : कौन सा खाना ? जो जिस्मों की ग़िज़ा है वोह या दिलों की ? तो मैं ने कहा : अपनी बात वाज़ेह

www.dawateislami.net

करो ! तो उस ने मुझे बताया : "जिस्मों की गिज़ा तो खाना पीना है जब कि दिलों की गिज़ा गुनाह छोड़ना और अपने उ़यूब दूर करना, महबूब के दीदार से लुत्फ़ अन्दोज़ होना और मक़्सूद के हुसूल (या'नी मुराद पूरी होने) पर राज़ी होना है लेकिन येह चीज़ें ह़ासिल करने के लिये ख़ुशूअ़, परहेज़ गारी, तर्के तकब्बुर, मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ और ज़ाहिरो बातिन में सिर्फ़ उसी पर भरोसा करना है।" फिर वोह कनीज़ नमाज़ के लिये खड़ी हो गई, उस ने पहली रक्अ़त में पूरी **सू-रतुल ब-क़रह** पढ़ी, फिर **सूरए आले इमरान** शुरूअ़ कर दी, फिर एक सूरत ख़त्म कर के दूसरी सूरत शुरूअ़ करती रही यहां तक कि **सूरए इब्राहीम** की आयत नम्बर 17 पर पहुंच गई :

يَتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآىٕهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ﴿۱۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ब मुश्किल उस का थोड़ा थोड़ा घूंट लेगा और गले से नीचे उतारने की उम्मीद न होगी और उसे हर त़रफ़ से मौत आएगी और मरेगा नहीं और उस के पीछे एक गाढ़ा अ़ज़ाब।

फिर वोह रोती हुई इसी आयत को दोहराती रही यहां तक कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़ी जब मैं ने उसे हिलाया जुलाया तो उस की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। (اَلرَّوضُ الفائق ص ٤١) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उस पर रह़मत हो और उस के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

दस्त बस्ता इल्तिजा है हम से राज़ी हो के जा *बख़्शवाना ह़श्र में हां तू महे ग़ुफ़रान है*
अस्सलाम ऐ माहे रमज़ां तुझ पे हों लाखों सलाम *हिज्र में अब तेरा हर आ़शिक़ हुवा बे जान है*

(वसाइले बख़्शिश, स. 704)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" का शर-ई सुबूत क्या है ? : "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" के अश्आ़र पढ़ना सुनना यक़ीनन बहुत उ़म्दा काम है, येह फ़र्ज़ या वाजिब या सुन्नत नहीं बल्कि सिर्फ़ मुबाह़ व जाइज़ है। और मुबाह़ काम (या'नी ऐसा अ़मल जिस पर सवाब मिले न गुनाह उस) में अगर अच्छी निय्यत शामिल कर ली जाए तो वोह मुस्तह़ब व कारे सवाब बन जाता है। लिहाज़ा "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" भी अच्छे मक़्सद म-सलन गुनाहों और कोताहियों पर नदामत और आयिन्दा नेकियों भरा र-मज़ान गुज़ारने की निय्यत से पढ़ना सुनना कारे सवाब है। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "ख़ुत़्बतुल वदाअ़" के मु-तअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवाल जवाब में फ़रमाते हैं : वोह (या'नी "अल वदाअ़" का ख़ुत़्बा) अपनी ज़ात में मुबाह़ है, हर मुबाह़ निय्यते ह़सन (या'नी अच्छी निय्यत) से मुस्तह़ब हो जाता है। और उ़रूज़ व अ़वारिज़ ख़िलाफ़ (या'नी शर-ई मम्नूआ़त पर मुश्तमिल होने) से मकरूह से ह़राम तक (जैसे मर्दों और औ़रतों का एक साथ होना या इसे या'नी अल वदाअ़ के ख़ुत़्बे को वाजिब व ज़रूरी समझना या औ़रतों का राग से इस त़रह़ पढ़ना कि उन की आवाज़ मर्दों तक पहुंचे या अल वदाअ़ के अश्आ़र का ख़िलाफ़े शर-अ़ होना)। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 452) बहर ह़ाल **अल वदाअ़ माहे र-मज़ान** के कहने का मौजूदा अन्दाज़ नया ही सही मगर शरअ़न इस में ह़रज नहीं। याद रहे ! मुबाह़ के करने या न करने पर मलामत नहीं होती। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ह़लाल वोह जिसे **अल्लाह** ने अपनी किताब में ह़लाल किया और ह़राम वोह जिसे **अल्लाह** ने अपनी किताब में ह़राम किया और जिस से ख़ामोशी फ़रमाई वोह मुआ़फ़ है। (ترمذی ج ۳ ص ۲۸۰ حدیث۱۷۳۲)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से, "जिस से ख़ामोशी फ़रमाई वोह मुआ़फ़ है" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जिन चीज़ों को न कुरआने करीम ने ह़लाल या ह़राम कहा न ह़दीसे पाक ने या'नी उन का ज़िक्र ही कहीं

www.dawateislami.net

नहीं वोह ह़लाल हैं। यहां "मिरक़ात[1]" और "अशि'अ़तुल्लम्आ़त[2]" और "लम्आ़त[3]" ने फ़रमाया कि : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि अस्ल, अश्या में इबाह़त है या'नी जिस से क़ुरआनो ह़दीस में ख़ामोशी हो वोह ह़लाल है। आम, माल्टा यूं ही पुलाव ज़र्दा, फ़िरनी, यूं ही लठ्ठा मलमल। यूं ही मीलाद शरीफ़ व फ़ातिह़ा की शीरीनी सब ह़लाल हैं, क्यूं ? इस लिये कि इन्हें क़ुरआनो ह़दीस ने ह़राम नहीं किया, येह इस्लाम का कुल्ली (या'नी अक्सरी) क़ानून है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 43)

अस्ल अश्या में इबाह़त है : **मेरे** आक़ा आ'ला ह़ज़रत, **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे माजिद रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रत मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : अस्ल अश्या में इबाह़त है या'नी जिस अ़मल के फ़े'ल व तर्क (या'नी करने और छोड़ने) में शरअ़न कुछ ह़रज न पाया जाए वोह शरअ़न मुबाह़ व जाइज़ है। (उसूलुर्रशाद, स. 99 मुलख़्ख़सन) (इस क़ाइदे व ज़ाबिते : "अस्ल अश्या में इबाह़त है" की तफ़्सीलात "उसूलुर्रशाद" सफ़ह़ा 99 ता 116 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

दीन में नए अच्छे त़रीक़े निकालने की ह़दीस में इजाज़त है : "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" के अश्आ़र पढ़ने सुनने से लोगों के दिलों पर चोट लगती, **र-मज़ानुल मुबारक** की अहम्मिय्यत क़ुलूब में उजागर होती, अपनी कोताहियां याद आतीं और गुनाहों से तौबा करने का ज़ेहन मिलता है लिहाज़ा येह एक उ़म्दा अन्दाज़ है। बेशक क़ियामत तक के लिये दीन में अच्छे अच्छे त़रीक़े ईजाद करते रहने की ख़ुद ह़दीसे पाक में इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई गई है चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो कोई इस्लाम में **अच्छा त़रीक़ा** जारी करे इस के बा'द उस त़रीक़े पर अ़मल किया गया तो उस त़रीक़े पर अ़मल करने वालों जैसा सवाब इस (जारी करने वाले) को भी मिलेगा और उन (अ़मल करने वालों) के सवाब से कुछ कम न होगा और जो शख़्स इस्लाम में

مـــدينـــــه

۱: مرقاة المفاتیح ج۸ص۵۰۷تحت الحدیث۴۲۲۸ ۔ ۲: اشعۃ اللمعات ج۳ص۵۴۰ ۔ ۳: لمعات التنقیح ج۷ص۲۷۱تحت الحدیث۴۲۲۸۔

www.dawateislami.net

बुरा त़रीक़ा जारी करे इस के बा'द उस त़रीके़ पर अ़मल किया गया तो उस त़रीके़ पर अ़मल करने वालों जैसा गुनाह इस (जारी करने वाले) को भी मिलेगा और उन (अ़मल करने वालों) के गुनाह में कुछ कमी न होगी। (مُسلم ص۱٤۳۸،حدیث۱۰۱۷)

आ़शिक़ाने माहे रमज़ां रो रहे हैं फूट कर — दिल बड़ा बेचैन है अफ़्सुर्दा रूह़ो जान है
दास्ताने ग़म सुनाएं किस को जा कर आह ! हम — या रसूलल्लाह ! देखो चल दिया रमज़ान है

(वसाइले बख़्शिश, स. 702)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"अल वदाअ़" सुनने से तौबा व नेकी का जज़्बा मिलता है : **ख़लीफ़ए** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान, मुफ़स्सिरे क़ुरआन, साह़िबे तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی से भी "अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" पढ़ने के मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा जिस का जवाब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इतना ख़ूब सूरत दिया कि इस का एक एक लफ़्ज़ उम्मत की ख़ैर ख़्वाही, नेकी की दा'वत के जज़्बे, मुसल्मानों की इस्लाह़ व फ़लाह़ का **दर्द** और अह़कामे इस्लामिय्या की ह़िक्मतों पर मुश्तमिल है उस सुवाल जवाब के बा'ज़ इक्तिबासात मअ़ ख़ुलासा मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

सुवाल : र-मज़ानुल मुबारक के अख़ीर जुमुए़ को **ख़ुत़्बतुल वदाअ़** पढ़ा जाता है जिस में **र-मज़ानुल मुबारक** के फ़ज़ाइलो ब-रकात का बयान होता है और इस माहे मुबारक के रुख़्सत होने और ऐसे बा ब-र-कत महीने में ह़-सनात व ख़ैरात (या'नी नेकियों और भलाइयों) के ज़ख़ीरे जम्अ़ न करने पर ह़सरत व अफ़्सोस और आयिन्दा के लिये लोगों को अ़-मले ख़ैर की तरग़ीब और बाक़ी अय्यामे र-मज़ान में कस्रते इबादत का शौक़ दिलाया जाता है, मुसल्मान उस ख़ुत़्बे को सुन कर ख़ूब रोते और गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार करते और आयिन्दा के लिये नेकी का

www.dawateislami.net

अ़ज़्म करते हैं। मज़्कूरा बाला काम जाइज़ है या नहीं ? क्यूं कि बा'ज़ लोग **अल वदाअ़** पढ़ने से मन्अ़ करते हैं।

जवाब : सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने इस ख़ुत़्बे से मन्अ़ करने वालों के ए'तिराज़ात का जवाब दिया चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की इबारात का ख़ुलासा येह है कि : इन मन्अ़ करने वालों के पास मुमा-न-अ़त की कोई शर-ई दलील मौजूद नहीं है और न वोह कोई एक ह़दीस या एक फ़िक़्ही इबारत इस के अ़-दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) में पेश कर सकते हैं। मगर ऐसे लोगों का त़रीक़ा ही येह है कि वोह अपनी ज़ाती राय और ख़याल को दीन में दाख़िल कर देते हैं और अपने ख़याल से जिस चीज़ को चाहते हैं ना जाइज़ कर डालते हैं ! आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : **ख़ुत्बतुल वदाअ़** आख़िर किस त़रह़ ना जाइज़ हो गया ? ख़ुत़्बे में जो चीज़ें शरअ़न मत़लूब हैं (या'नी शरीअ़त जो चीज़ें चाहती है) उन में से कौन सी इन में नहीं पाई जाती ? या कौन सा अम्रे मम्नूअ़ (या'नी ऐसा काम जिसे इस्लाम ने मन्अ़ फ़रमाया हो वोह) इस में दाख़िल है ? तज़्कीर (या'नी कोई ऐसी बात जिस से मुसल्मानों को नसीह़त हो) ख़ुत़्बे की सुन्नतों में से एक सुन्नत है। **र-मज़ानुल मुबारक** के गुज़रे हुए अय्याम (या'नी दिनों) में अ़-मले ख़ैर (या'नी नेकियां रह जाने) पर ह़स्रतो अफ़्सोस और बा ब-र-कत अय्याम को ग़फ़्लत में गुज़ारने पर क़लक़ व नदामत (या'नी पछतावा) और (इस मुबारक) महीने की रुख़्सती के वक़्त अपनी गुज़श्ता कोताहियों (या'नी गुज़री हुई सुस्तियों) को मद्दे नज़र ला कर आयिन्दा के लिये तयक़्क़ुज़ (या'नी होशियारी) व बेदारी और मुसल्मानों को अ़-मले ख़ैर की तह़रीस व तश्वीक़ का (या'नी नेकियों पर उभारने का) येह बेहतरीन त़रीक़ए तज़्कीर (या'नी नसीह़त का बहुत अच्छा अन्दाज़) है और इस (अन्दाज़े "अल वदाए माहे र-मज़ान") में निहायत नाफ़ेअ़ व सूदमन्द नसीह़त व पन्द (या'नी इन्तिहाई मुफ़ीद वा'ज़ो नसीह़त) है, इस का येह असर होता है कि रोते रोते लोगों की हिचकियां बंध जाती हैं और उन्हें सच्ची तौबा नसीब होती

www.dawateislami.net

है, बारगाहे इलाही में इस्तिग़फ़ार करते हैं, आयिन्दा के लिये अ़-मले नेक का मुसम्मम (या'नी पक्का) इरादा कर लेते हैं। इस तज़्कीर (या'नी वा'ज़ो नसीहत) को फ़ु-क़हा ने **सुन्नत** फ़रमाया है। **फ़तावा आ़लमगीरी** में है : عَاشِرُهَا (اَلْعِظَةُ وَ التَّذْكِيرُ) या'नी "खुत़्बे की दसवीं सुन्नत पन्दो नसीह़त (या'नी नेकी की दा'वत) है।" (फ़तावा सदरुल अफ़ाज़िल, स. 466 ता 482)

सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तवे से ह़ासिल होने वाले 9 म-दनी फूल

: ❁ **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दिनों में **अल वदाअ़ पढ़ने सुनने** से नेकियां रह जाने पर ग़म व अफ़्सोस होता है जो कि निहायत मह़मूद या'नी पसन्दीदा काम है और ❁ "**अल वदाअ़**" र-मज़ान शरीफ़ के मुबारक दिनों को ग़फ़्लत में गुज़ारने पर पछतावे की एक सूरत है ❁ इस से गुज़री हुई सुस्तियों को मद्दे नज़र रखते हुए आयिन्दा के लिये अ़-मले ख़ैर या'नी नेकियां करने का जज़्बा पैदा होता है और ❁ येह **अल वदाअ़** मुसल्मानों के दिल में नेकियों की ह़िर्स और लालच पैदा करने का एक बेहतरीन त़रीक़ा है ❁ इस अन्दाज़ से **अल वदाअ़** में इन्तिहाई मुफ़ीद नसीह़त मिलती है ❁ **अल वदाअ़** से सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ नसीब होती है (**दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में तो इस का बा क़ाइदा मुशा-हदा है बल्कि खुद शिर्कत कर के इन ब-रकात का नज़ारा कर सकते हैं) और बारगाहे ख़ुदावन्दी में रोना नसीब होता है ❁ **अल वदाअ़** से लोग बारगाहे इलाही में इस्तिग़फ़ार करते हैं ❁ **अल वदाअ़** की ब-र-कत से मुसल्मानों की एक बड़ी ता'दाद आयिन्दा नेकियां करने का पक्का इरादा कर लेती है (और اَلْحَمْدُ لِلّٰه बहुत से ख़ुश नसीबों को इस निय्यत पर इस्तिक़ामत भी मिल जाती है) ❁ ख़ुत़्बए जुमुआ़ में तज़्कीर या'नी वा'ज़ो नसीह़त करना **सुन्नत** है और ख़ुत़्बे में **अल वदाअ़** पढ़ना इसी सुन्नत पर अ़मल की एक सूरत है (या'नी मौजूदा हैअत अगर्चे सुन्नत नहीं लेकिन इस की अस्ल साबित है जो कि तज़्कीर है और तज़्कीर (या'नी वा'ज़ो नसीह़त) **सुन्नत** है)।

www.dawateislami.net

याद रहे ! सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى का फ़तवा ख़ुत़्बए जुमुअ़ा में **अल वदाअ़** पढ़ने के मु-तअ़ल्लिक़ है लेकिन **अल वदाअ़** पढ़ने सुनने के जो फ़वाइदो ब-रकात बयान हुए हैं वोह इस ख़ुत़्बे के इ़लावा आख़िरी जुमुए की नमाज़ के बा'द सलातो सलाम के वक़्त और यूंही र-मज़ान शरीफ़ के आख़िरी दिनों में बा'द नमाज़े अ़स्र या किसी दूसरे वक़्त पढ़ने सुनने से भी ह़ासिल होते हैं।

ख़ु-त़बे इ़ल्मी में अल वदाई अश्आ़र : किसी दौर में हिन्द के अन्दर ख़ूब पढ़ी जाने वाली ख़ुत़्बों की किताब "ख़ु-त़बे इ़ल्मी" में निहायत ह़सरत के साथ **माहे र-मज़ानुल मुबारक** को अल वदाअ़ कहा गया है। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने "ख़ु-त़बे इ़ल्मी" के मुसन्निफ़ का तआ़रुफ़ इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है : "मौलाना मुह़म्मद ह़सन इ़ल्मी बरेल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा और वाइ़ज़ व नासेह़ (या'नी वा'ज़ो नसीह़त करने वाले) और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मद्दाह़ (या'नी ता'रीफ़ बयान करने वाले) और मेरे जद्दे अमजद قُدِّسَ سِرُّهُ الْعَزِيْز (या'नी दादाजान ह़ज़रत मौलाना रज़ा अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان) के शागिर्द थे।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 447) ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ह़सन इ़ल्मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपने ख़ुत़्बों के मज्मूए "ख़ु-त़बे इ़ल्मी" में "जुमुअ़तुल वदाअ़" के ख़ुत़्बे में **र-मज़ानुल मुबारक** को "अल वदाअ़" कहते हुए लिखते हैं :

اَلْوَدَاعُ اَلْوَدَاعُ يَا شَهْرَ رَمَضَانَ۔ فَتَحَسَّرُوْا عَلٰی اِتْمَامِهٖ وَتَأَسَّفُوْا عَلٰی اِخْتِتَامِهٖ۔ اَلْوَدَاعُ اَلْوَدَاعُ يَا شَهْرَ رَمَضَانَ۔

(या'नी अल वदाअ़ अल वदाअ़ ऐ माहे र-मज़ान ! (ऐ लोगो !) इस महीने के ख़त्म होने पर ह़सरत व अफ़्सोस करो ! अल वदाअ़ अल वदाअ़ ऐ माहे र-मज़ान !) उन्हों ने अपनी इसी किताब के अन्दर उर्दू में भी **अल वदाई कलाम** शामिल फ़रमाया है, उस कलाम में से 12 अश्आ़र पेश किये जाते हैं, आप भी पढ़िये और हो सके तो **ग़मे र-मज़ान** में आंसू बहाइये :

www.dawateislami.net

अफ़्सोस तू रुख़्सत हुवा माहे मुबारक अल वदाअ़

अफ़्सोस तू रुख़्सत हुवा, माहे मुबारक अल वदाअ़
रो रो के दिल ने यूं कहा : माहे मुबारक अल वदाअ़

मुद्दत से थे हम मुन्तज़िर, शुक्रे ख़ुदा आया तू फिर
पर हैफ़ जल्दी चल दिया, माहे मुबारक अल वदाअ़

दोज़ख़ के अन्दर बिल्यक़ीं, था क़ैद शैत़ाने लई़
मोमिन अ़ज़ाबों से बचा, माहे मुबारक अल वदाअ़

पढ़ता था सुन्नत कोई जब, या कोई पढ़ता मुस्तह़ब
पाता सवाब इक अज्र का, माहे मुबारक अल वदाअ़

जो फ़र्ज़ अदा तुझ में करे, अज्र उस को सत्तर का मिले
था युम्नो रह़मत से भरा, माहे मुबारक अल वदाअ़

आ़सीये रोज़ादार पर, पहुंचेगी जब नारे सक़र
बन कर सिपर लेगा बचा, माहे मुबारक अल वदाअ़

अब कूच है पेशे नज़र, आंखों में अश्क आते हैं भर
करता है दिल आहो बुका, माहे मुबारक अल वदाअ़

तू माह इस्तिग़फ़ार का, और त़ाअ़ते ग़फ़्फ़ार का
कुछ भी न हम से हो सका, माहे मुबारक अल वदाअ़

गर ज़ीस्त है फिर पाएंगे, वरना बहुत पछताएंगे
तू अब है रुख़्सत हो चला, माहे मुबारक अल वदाअ़

रुख़्सत से है दिल पुर अलम, फ़ुरक़त से जां पर सख़्त ग़म
शिद्दत से है रन्जो अ़ना, माहे मुबारक अल वदाअ़

ता'रीफ़ क्या कोई करे, ख़ाली नहीं है फ़ज़्ल से
रोज़ और शब सुब्ह़ो मसा, माहे मुबारक अल वदाअ़

इल्मी न की कुछ बन्दगी, अज़ बस कि है शरमिन्दगी
वा ह़स्रता वा ह़स्रता, माहे मुबारक अल वदाअ़

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : हैफ़ : अफ़्सोस। **युम्न :** ब-र-कत। **नारे सक़र :** दोज़ख़ की आग। **सिपर :** ढाल। **आहो बुका :** रोना धोना। **ज़ीस्त :** ज़िन्दगी। **पुर अलम :** ग़मगीन। **फ़ुरक़त :** जुदाई। **अ़ना :** ग़म। **मसा :** शाम। **अज़ बस :** नतीजा।

www.dawateislami.net

ख़ुत्बे का एक अहम मस्अला : "**बहारे शरीअ़त**" में है : ग़ैर अ़-रबी में ख़ुत्बा पढ़ना या अ़-रबी के साथ दूसरी ज़बान ख़ुत्बे में ख़ल्त़ करना (या'नी मिलाना) ख़िलाफ़े सुन्नते मु-तवारिसा (या'नी हमेशा से चली आने वाली सुन्नत के ख़िलाफ़) है। यूंही ख़ुत्बे में अश्आ़र पढ़ना भी न चाहिये अगर्चे अ़-रबी ही के हों, हां दो एक शे'र पन्दो नसाएह़ के अगर कभी पढ़ ले तो ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 769) लिहाज़ा उर्दू में अल वदाअ़ या कोई सा भी कलाम पढ़ना हो तो ख़ुत्बे से पहले या नमाज़ के बा'द पढ़ा जाए।

"अल वदाअ़ माहे र-मज़ान" की म-दनी बहार : **बाबुल मदीना** कराची के एक इस्लामी भाई **म-दनी माह़ोल** में आने से पहले आ़म लड़कों की त़रह़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, नमाज़ों की पाबन्दी का ज़ेह्न नहीं था, न इस्लामी ह़ुल्ये की कोई तरकीब थी। ग़फ़्लतों में ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात ज़ाएअ़ हो रहे थे। 1999 सि.ई. में उन्हों ने मेट्रिक का इम्तिह़ान दिया, इस के बा'द स्कूल की छुट्टियां हो गईं, उन्ही दिनों "शबे बराअत" की तशरीफ़ आ-वरी हुई और उन के अपने अ़लाक़े "**डालमिया**" के क़रीब "**कन्ज़ुल ईमान मस्जिद**" का इफ़्तिताह़ हुवा, वहां नमाज़े मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत के बा'द शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के छ[6] नवाफ़िल भी पढ़ाए गए, फिर **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में इसी ज़ेरे ता'मीर मस्जिद में उन्हें "**दा'वते इस्लामी**" की त़रफ़ से किये जाने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत भी मिली, इस ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से बहुत सा इल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ मिला और आख़िरी दिन रुख़्सते माहे र-मज़ान के मौक़अ़ पर "**अल वदाअ़**" पढ़ी गई तो आ़शिक़ाने रसूल पर रिक़्क़त त़ारी थी, उन पर भी रिक़्क़त त़ारी हुई और वोह काफ़ी देर तक रोते रहे, यहां तक कि इस्लामी भाइयों ने उन्हें खाने के लिये बिठाया मगर उन की हिचकियां जारी ही थीं। फिर उन्हें इमामा शरीफ़ सजाने का शरफ़ मिला। वोह दिन है और आज का दिन (ता दमे तह़रीर) वोह **दा'वते इस्लामी**

www.dawateislami.net

के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हैं, कई म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ के तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत भी मिली, ता दमे तह़रीर 4 र-जबुल मुरज्जब 1438 सि.हि. चार साल से मस्जिद के अन्दर मन्सबे इमामत पर भी फ़ाइज़ हैं। जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने मुह़म्मदी गुलशन मे'मार (कराची) में अ़स्री उ़लूम या'नी रियाज़ी और इंग्लिश की तदरीस भी फ़रमा रहे हैं। और (येह अल्फ़ाज़ लिखते वक़्त) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें तीन बार आ़लमी म-दनी मर्कज़ **"फ़ैज़ाने मदीना"** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की सआ़दत भी नसीब हो चुकी है। नीज़ ता दमे तह़रीर शो'बए ता'लीम (दा'वते इस्लामी) की डिवीज़न सत़्ह़ की ज़िम्मेदारी भी ह़ासिल है।

www.dawateislami.net

"मिस्वाक सुन्नत है" के दस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के मु-तअ़ल्लिक़ 10 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

﴿1﴾ **मिस्वाक** कर के **दो**[2] रक्अ़तें पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है[1] ﴿2﴾ **मिस्वाक** के साथ नमाज़ पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** के नमाज़ पढ़ने से 70 गुना अफ़्ज़ल है[2] ﴿3﴾ चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : (1) इत्र लगाना (2) निकाह़ करना (3) **मिस्वाक** करना और (4) ह़या करना[3] ﴿4﴾ **मिस्वाक** करो ! **मिस्वाक** करो ! मेरे पास **पीले दांत** ले कर न आया करो[4] ﴿5﴾ **मिस्वाक** में मौत के सिवा हर मरज़ से शिफ़ा है[5] ﴿6﴾ अगर मुझे अपनी उम्मत की मशक़्क़त व दुश्वारी का ख़याल न होता तो मैं इन को हर वुज़ू के साथ **मिस्वाक** करने का हुक्म देता[6] ﴿7﴾ **मिस्वाक** का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई है और येह रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है[7] ﴿8﴾ वुज़ू निस्फ़ (या'नी आधा) ईमान है, और **मिस्वाक** करना निस्फ़ (या'नी आधा) वुज़ू है[8] ﴿9﴾ बन्दा जब **मिस्वाक** कर लेता है फिर नमाज़ को खड़ा होता है तो फ़िरिश्ता उस के पीछे खड़ा हो कर क़िराअत सुनता है, फिर उस से क़रीब होता है यहां तक कि अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है[9] ﴿10﴾ "जिस शख़्स ने जुमुए़ के दिन ग़ुस्ल किया और **मिस्वाक** की, ख़ुश्बू लगाई, उ़म्दा कपड़े पहने, फिर मस्जिद में आया और लोगों की गरदनों को नहीं फलांगा, बल्कि नमाज़ पढ़ी और इमाम के आने के बा'द (या'नी ख़ुत़्बे में और) नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाहों को जो उस पूरे हफ़्ते में हुए थे, मुआ़फ़ फ़रमा देता है।"[10]

مدینہ

۱: اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج۱ ص۱۰۲ حدیث۱۸ ۲: شعب الایمان ج۳ ص۲۶ حدیث۲۷۷۴ ۳: مُسندِ احمد بن حنبل ج۹ ص۱۴۷ حدیث۲۳۶۴۱ ۴: جَمعُ الجَوامِع ج۱ ص۳۸۹ حدیث۲۸۷۵ ۵: جامعِ صغیر ص۲۹۷ حدیث۴۸۴۰ ۶: بُخاری ج۱ ص۶۳۷ ۷: مُسندِ احمد بن حنبل ج۲ ص۴۳۸ حدیث۵۸۶۹ ۸: مُصَنَّف ابنِ اَبی شیبه ج۱ ص۱۹۷ حدیث ۲۲ ۹: البحر الزخار ج۲ ص۲۱۴ حدیث:۶۰۳ ۱۰: مُسندِ احمد بن حنبل ج۴ ص۱۶۲ حدیث۱۱۷۶۸

www.dawateislami.net

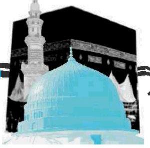

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस मर्तबा **दुरूदे पाक** पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٦٣ حديث١٧٠٢٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ानुल मुबारक की ब-र-कतों के क्या कहने ! यूं तो इस की हर हर घड़ी रह़मत भरी और हर हर साअ़त अपने जिलौ में बे पायां ब-र-कतें लिये हुए है, मगर इस माहे मोह़तरम में **शबे क़द्र** सब से ज़ियादा अहम्मिय्यत की ह़ामिल है। इसे पाने के लिये हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **माहे र-मज़ाने पाक** का पूरा महीना भी **ए'तिकाफ़** फ़रमाया है और आख़िरी दस दिन का बहुत ज़ियादा एहतिमाम था। यहां तक कि एक बार किसी ख़ास उ़ज़्र के तह़त "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **र-मज़ानुल मुबारक** में **ए'तिकाफ़** न कर सके तो शव्वालुल मुकर्रम के आख़िरी अ़शरे में **ए'तिकाफ़** फ़रमाया।" (بُخاری ج١ ص٦٧١ حديث٢٠٤١) "एक मर्तबा सफ़र की वज्ह से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का **ए'तिकाफ़** रह गया तो अगले र-मज़ान शरीफ़ में बीस दिन का **ए'तिकाफ़** फ़रमाया।"

(تِرمذی ج٢ ص٢١٢ حديث٨٠٣ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

ए'तिकाफ़ पुरानी इबादत है : **पिछली** उम्मतों में भी **ए'तिकाफ़** की इबादत मौजूद थी। चुनान्चे पारह अव्वल **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 125 में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآىِٕفِيْنَ وَ الْعٰكِفِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿۱۲۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने ताकीद फ़रमाई इब्राहीम व इस्माईल को कि मेरा घर ख़ूब सुथरा करो तवाफ़ वालों और **ए'तिकाफ़** वालों और रुकूअ़ व सुजूद वालों के लिये।

मस्जिदों को साफ़ रखने का हुक्म है : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** तवाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ के लिये का'बए मुशर्रफ़ा की पाकीज़गी और सफ़ाई का ख़ुद रब्बे का'बा عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से फ़रमान जारी किया गया है। **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा कि मस्जिदों को पाक साफ़ रखा जाए, वहां गन्दगी और बदबूदार चीज़ न लाई जाए येह सुन्नते अम्बिया है। येह भी मा'लूम हुवा कि **ए'तिकाफ़** इबादत है और पिछली उम्मतों की नमाज़ों में रुकूअ़ सुजूद दोनों थे। येह भी मा'लूम हुवा कि मस्जिदों का मु-तवल्ली होना चाहिये और मु-तवल्ली सालेह (परहेज़ गार) इन्सान हो।" मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : "तवाफ़ व नमाज़ व ए'तिकाफ़ बड़ी पुरानी इबादतें हैं जो ज़मानए इब्राहीमी में भी थीं।"

(नूरुल इरफ़ान, स. 29)

दस दिन का ए'तिकाफ़ : **उम्मुल** मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे (या'नी आख़िरी दस दिन) का ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते। यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वफ़ाते (ज़ाहिरी) अ़ता फ़रमाई। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुतह्हरात **ए'तिकाफ़** करती रहीं।

(بُخاری ج۱ص ٦٦٤ حديث۲۰۲٦)

www.dawateislami.net

आ़शिक़ों की धुन : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो ए'तिकाफ़ के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं मगर उ़श्शाक़ के लिये तो इतनी ही बात काफ़ी है कि आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ **सुन्नत** है । येह तसव्वुर ही ज़ौक़ अफ़्ज़ा है कि हम प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक प्यारी प्यारी सुन्नत अदा कर रहे हैं। **आ़शिक़ों की तो धुन** येही होती है कि फ़ुलां फ़ुलां काम हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किया है बस इसी लिये हमें भी करना है, मगर अ़मल करने के लिये येह ज़रूरी है कि हमारे लिये कोई शर–ई मुमा–न–अ़त न हो ।

ऊंटनी के साथ फेरे लगाने की ह़िक्मत : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बहुत ज़ियादा **मुत्तबेए़ सुन्नत** थे और अदाए मुस्त़फ़ा को अदा करने का जज़्बा आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अन्दर कूट कूट कर भरा हुवा था चुनान्चे एक मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अपनी ऊंटनी को घुमाया,** पूछने पर इर्शाद फ़रमाया : ''मुझे इस के बारे में मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना याद है कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस मक़ाम पर ऐसा करते देखा था लिहाज़ा मैं ने भी ऐसा ही किया है ।'' (اَلشِّفاء ج ٢ ص ١٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मो'तकिफ़ का मक़्सूदे अस्ली इन्तिज़ारे नमाज़े बा जमाअ़त : फ़तावा आ़लमगीरी में है : ''**ए'तिकाफ़** की ख़ूबियां बिल्कुल ही ज़ाहिर हैं क्यूं कि इस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये कुल्लिय्यतन (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मुन्हमिक कर देता है और उन तमाम मशाग़िले दुन्या से किनारा कश हो जाता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब की राह में ह़ाइल होते हैं और मो'तकिफ़ के तमाम अवक़ात ह़क़ीक़तन या हुक्मन नमाज़ में गुज़रते हैं। (क्यूं कि नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी नमाज़ की त़रह़ सवाब रखता है) और **ए'तिकाफ़** का मक़्सूदे अस्ली जमाअ़त के साथ नमाज़ का इन्तिज़ार करना है और मो'तकिफ़ उन (फ़िरिश्तों) से मुशा–बहत रखता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की ना फ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उन्हें हुक्म मिलता है उसे बजा लाते हैं और उन के साथ मुशा–बहत रखता है जो शबो रोज़

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ (पाकी) बयान करते रहते हैं और इस से उक्ताते नहीं।"

(عالمگیری ج ۱ ص ۲۱۲)

एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये एक दिन का ए'तिकाफ़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दक़ें ह़ाइल कर देगा हर ख़न्दक़ की मसाफ़त (या'नी दूरी) मशरिक़ व मग़रिब के फ़ासिले से भी ज़ियादा होगी।" (مُعْجَم اَوْسَط ج ۵ ص ۲۷۹ حدیث ۷۳۲۶)

साबिक़ा गुनाहों की बख़्शिश : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुशबूदार है : مَنِ اعْتَكَفَ اِيْمَانًا وَّ احْتِسَابًا غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ۔ **तरजमा :** "जिस शख़्स ने ईमान के साथ और सवाब ह़ासिल करने की निय्यत से **ए'तिकाफ़** किया उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।" (جامع صَغِير ص ۵۱۶ حديث ۸۴۸۰)

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की जाए ए'तिकाफ़ : ह़ज़रते** सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मदीने के सुल्तान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माहे र-मज़ान के **आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़** फ़रमाया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने मुझे मस्जिद में वोह जगह दिखाई जहां सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ फ़रमाते थे। (مسلم ص ۵۹۷ حدیث ۱۱۷۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदे न-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में जिस जगह हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ के लिये सरीर (या'नी तख़्त) बिछाते थे वहां बत़ौरे यादगार एक मुबारक सुतून बनाम "उस्तुवा-नतुस्सरीर" आज भी क़ाइम है। ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल उस की ज़ियारत करते और ह़ुसूले ब-र-कत के लिये यहां नवाफ़िल अदा करते हैं।

www.dawateislami.net

सारे महीने का ए'तिकाफ़ : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : एक मर्तबा सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते आ-लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यकुम र-मज़ान से बीस र-मज़ान तक **ए'तिकाफ़** करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने **शबे क़द्र** की तलाश के लिये र-मज़ान के पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया फिर दरमियानी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया फिर मुझे बताया गया कि **शबे क़द्र** आख़िरी अ़शरे में है लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह कर ले।" (مُسلم ص٥٩٤ حديث١١٦٧)

तुर्की ख़ैमे में ए'तिकाफ़ : हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक **तुर्की ख़ैमे** के अन्दर **र-मज़ानुल मुबारक** के पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़ फ़रमाया, फिर दरमियानी अ़शरे का, फिर सरे अक़्दस बाहर निकाला और फ़रमाया : "मैं ने **पहले अ़शरे का ए'तिकाफ़** शबे क़द्र तलाश करने के लिये किया, फिर इसी मक़्सद के तहत **दूसरे अ़शरे का ए'तिकाफ़** भी किया, फिर मुझे **अल्लाह तआ़ला** की त़रफ़ से येह ख़बर दी गई कि **शबे क़द्र आख़िरी अ़शरे** में है। लिहाज़ा जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ करे। इस लिये कि मुझे पहले शबे क़द्र दिखा दी गई थी फिर भुला दी गई, और अब मैं ने येह देखा है कि **शबे क़द्र** की सुब्ह को गीली मिट्टी में सज्दा कर रहा हूं। लिहाज़ा अब तुम शबे क़द्र को आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में तलाश करो।" हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि उस शब बारिश हुई और मस्जिद शरीफ़ की छत मुबारक टपकने लगी, चुनान्चे इक्कीस **र-मज़ानुल मुबारक** की सुब्ह को मेरी आंखों ने मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस हालत में देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक पेशानी पर गीली मिट्टी का निशाने आ़लीशान था। (مِشکوٰۃ ج ١ ص ٣٩٢ حديث ٢٠٨٦)

ए'तिकाफ़ का मक़्सदे अ़ज़ीम : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें ज़िन्दगी में एक बार तो इस अदाए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अदा करते हुए पूरे माहे **र-मज़ानुल मुबारक** का ए'तिकाफ़ कर ही लेना चाहिये। **र-मज़ानुल मुबारक** में ए'तिकाफ़ करने का सब से बड़ा मक़्सद

www.dawateislami.net

शबे क़द्र की तलाश है । और राजेह़ (या'नी ग़ालिब) येही है कि शबे क़द्र **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दस[10] दिनों की त़ाक़ रातों में होती है । इस ह़दीसे मुबारक से येह भी मा'लूम हुवा कि उस बार शबे क़द्र इक्कीसवीं[21] शब थी मगर येह फ़रमाना कि "आख़िरी अ़शरे की त़ाक़ रातों में इस को तलाश करो ।" इस बात को ज़ाहिर करता है कि शबे क़द्र बदलती रहती है । या'नी कभी इक्कीसवीं[21], कभी तेईसवीं[23], कभी पच्चीसवीं[25], कभी सत्ताईसवीं[27] तो कभी उन्तीसवीं[29] शब । मुसल्मानों को शबे क़द्र की सआ़दत ह़ासिल करने के लिये आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ की तरग़ीब दिलाई गई है, क्यूं कि मो'तकिफ़ दसों[10] दिन मस्जिद ही में गुज़ारता है और इन दस[10] दिनों में कोई सी एक रात शबे क़द्र होती है । और यूं वोह शबे क़द्र मस्जिद में गुज़ारने में काम्याब हो जाता है । एक और नुक्ता इस ह़दीसे पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ाक पर सज्दा अदा फ़रमाया जभी तो ख़ाक के ख़ुश नसीब ज़र्रात सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नूरानी पेशानी से चिमट गए थे ।

ज़मीन पर बिला ह़ाइल सज्दा करना मुस्तह़ब है : फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "ज़मीन पर बिला ह़ाइल (या'नी मुसल्ला, कपड़ा वग़ैरा न हो यूं) सज्दा करना अफ़्ज़ल है ।" (مراقی الفلاح ص۱۹۰) **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हमेशा **ज़मीन ही पर सज्दा** करते या'नी सज्दे की जगह मुसल्ला वग़ैरा न बिछाते ।

(إحياءُ العُلوم ج۱ ص۲۰٤)

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दो ह़ज और दो उ़म्रों का सवाब : ﴿1﴾ "जिस ने **र-मज़ानुल मुबारक** में दस दिन का ए'तिकाफ़ कर लिया वोह ऐसा है जैसे **दो ह़ज** और दो उ़म्रे किये ।" (شُعَبُ الْإيمان ج۳ ص٤٢٥ حديث ٣٩٦٦) ﴿2﴾ "ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उस के लिये तमाम नेकियां लिखी जाती हैं जैसे उन

www.dawateislami.net

के करने वाले के लिये होती हैं।" (ابنِ ماجه ج۲ص۳٦٥حديث١٧٨١)

बिग़ैर किये नेकियों का सवाब : **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان ह़दीस नम्बर 2 के तह़त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 217 पर फ़रमाते हैं : "या'नी ए'तिकाफ़ का फ़ौरी फ़ाएदा तो येह है कि येह मो'तकिफ़ को गुनाहों से बाज़ रखता है। अ़क्फ़ के मा'ना हैं रोकना, बाज़ रखना, क्यूं कि अक्सर गुनाह ग़ीबत, झूट और चुग़ली वग़ैरा लोगों से इख़्तिलात़ के बाइ़स होती है मो'तकिफ़ गोशा नशीन है और जो इस से मिलने आता है वोह भी मस्जिद व ए'तिकाफ़ का लिह़ाज़ रखते हुए बुरी बातें न करता है न कराता है। या'नी मो'तकिफ़ ए'तिकाफ़ की वज्ह से जिन नेकियों से मह़रूम हो गया जैसे ज़ियारते क़ुबूर मुसल्मान से मुलाक़ात बीमार की मिज़ाज पुर्सी, नमाजे़ जनाज़ा में ह़ाज़िरी उसे इन सब नेकियों का सवाब इसी त़रह़ मिलता है जैसे येह काम करने वालों को सवाब मिलता है, اِنْ شَآءَاللّٰه ग़ाज़ी, ह़ाजी, त़ालिबे इ़ल्मे दीन का भी येह ही ह़ाल है।"

रोज़ाना ह़ज का सवाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है : "मो'तकिफ़ को हर रोज़ एक **ह़ज का सवाब** मिलता है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص٤٢٥حديث٣٩٦٨)

ए'तिकाफ़ की ता'रीफ़ : "**मस्जिद में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के लिये ब निय्यते ए'तिकाफ़ ठहरना ए'तिकाफ़ है।**" इस के लिये मुसल्मान का आ़क़िल होना और जनाबत और हैज़ व निफ़ास से पाक होना शर्त़ है। बुलूग़ शर्त़ नहीं, ना बालिग़ भी जो तमीज़ रखता है अगर ब निय्यते **ए'तिकाफ़** मस्जिद में ठहरे तो उस का **ए'तिकाफ़** सह़ीह़ है। (عالمگیری ج۱ ص ۲۱۱)

ए'तिकाफ़ के लफ़्ज़ी मा'ना : **ए'तिकाफ़** के लुग़वी मा'ना हैं : "**एक जगह जमे रहना**" मत़लब येह कि मो'तकिफ़ **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे अ़-ज़मत में उस की इ़बादत पर कमर बस्ता हो कर एक जगह जम कर बैठा रहता है। इस की येही धुन होती है कि किसी त़रह़ इस का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ इस से राज़ी हो जाए।

अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी

www.dawateislami.net

قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मो'तकिफ़ की मिसाल उस शख़्स की सी है जो **अल्लाह तआला** के दर पर आ पड़ा हो और येह कह रहा हो : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब तक तू मेरी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमा देगा मैं यहां से नहीं टलूंगा।" (بَدائعُ الصنائع ج۲ص۲۷۳)

हम से फ़क़ीर भी अब फेरी को उठते होंगे

अब तो ग़नी के दर पर बिस्तर जमा दिये हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 101)

ए'तिकाफ़ की क़िस्में : ए'तिकाफ़ की तीन क़िस्में हैं ﴿1﴾ ए'तिकाफ़े वाजिब ﴿2﴾ ए'तिकाफ़े सुन्नत ﴿3﴾ ए'तिकाफ़े नफ़्ल।

ए'तिकाफ़े वाजिब : ए'तिकाफ़ की नज़्र (या'नी मन्नत) मानी या'नी ज़बान से कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मैं फ़ुलां दिन या इतने दिन का **ए'तिकाफ़** करूंगा।" तो अब जितने दिन का कहा है उतने दिन का **ए'तिकाफ़** करना वाजिब हो गया। **मन्नत** के अल्फ़ाज़ **ज़बान** से अदा करना शर्त़ है, सिर्फ़ दिल ही दिल में **मन्नत** की निय्यत कर लेने से **मन्नत** सह़ीह़ नहीं होती। (और ऐसी मन्नत का पूरा करना वाजिब नहीं होता) (رَدُّالْمُحْتار ج۳ص۴۹۰ مُلَخَّصاً)

मन्नत का ए'तिकाफ़ मर्द मस्जिद में करे और औ़रत **मस्जिदे बैत** में, इस में रोज़ा भी शर्त़ है। (औ़रत घर में जो जगह नमाज़ के लिये मख़्सूस कर ले उसे "मस्जिदे बैत" कहते हैं)[1]

ए'तिकाफ़े सुन्नत : र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ "सुन्नते मुअक्कदा अ़लल किफ़ाया" है। (دُرِّ مُختار ج ۳ ص ۴۹۰) अगर सब तर्क करें तो सब से मुत़ा-लबा होगा और शहर में एक ने कर लिया तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1021)

इस ए'तिकाफ़ में येह ज़रूरी है कि **र-मज़ानुल मुबारक** की **बीसवीं** तारीख़ को ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मस्जिद के अन्दर **ब निय्यते ए'तिकाफ़** मौजूद हो और **उन्तीस** के चांद

1 : मन्नत के बारे में तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 1015 ता 1019 और बहारे शरीअ़त जिल्द 2 सफ़ह़ा 311 ता 318 का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

www.dawateislami.net

के बा'द या **तीस** के गुरूबे आफ़्ताब के बा'द मस्जिद से बाहर निकले। अगर 20 **र-मज़ानुल मुबारक** को गुरूबे आफ़्ताब के बा'द मस्जिद में दाख़िल हुए तो **ए'तिकाफ़** की सुन्नते मुअक्कदा अदा न हुई।

ए'तिकाफ़ की निय्यत इस त़रह़ कीजिये : "**मैं अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे के सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत करता हूं।" (दिल में निय्यत होना शर्त़ है, दिल में निय्यत ह़ाज़िर होते हुए ज़बान से भी कह लेना बेहतर है)

ए'तिकाफ़े नफ़्ल : नज़्र और सुन्नते मुअक्कदा के इलावा जो ए'तिकाफ़ किया जाए वोह मुस्तह़ब व सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1021) इस के लिये न रोज़ा शर्त़ है न कोई वक़्त की क़ैद, जब भी मस्जिद में दाख़िल हों **ए'तिकाफ़** की निय्यत कर लीजिये, जब मस्जिद से बाहर निकलेंगे **ए'तिकाफ़** ख़त्म हो जाएगा। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब मस्जिद में जाए ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, जब तक मस्जिद ही में रहेगा ए'तिकाफ़ का भी सवाब पाएगा। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 98) निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, अगर दिल ही में आप ने इरादा कर लिया कि "मैं **सुन्नते ए'तिकाफ़** की निय्यत करता हूं।" आप मो'तकिफ़ हो गए, दिल में निय्यत ह़ाज़िर होते हुए ज़बान से भी येही अल्फ़ाज़ कह लेना बेहतर है। **मा-दरी ज़बान** में भी निय्यत हो सकती है मगर अ़-रबी में ज़ियादा बेहतर जब कि मा'ना ज़ेह्न में मौजूद हों। "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 317 पर है :

نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف

तरजमा : मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की।

मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़दीम और मश्हूर दरवाज़े "बाबुर्रह़मह" से दाख़िल हों तो सामने ही सुतूने मुबारक है उस पर याद दिहानी के लिये क़दीम ज़माने से नुमायां त़ौर पर نَوَيْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِكَاف लिखा हुवा है।

मस्जिद में खाना पीना : याद रखिये ! मस्जिद के अन्दर खाने पीने, सह़र व इफ़्त़ार करने,

www.dawateislami.net

आबे ज़मज़म या दम किया हुवा पानी पीने और सोने की शरअ़न इजाज़त नहीं, अगर **ए'तिकाफ़** की निय्यत थी तो ज़िम्नन इन सब कामों की इजाज़त हो जाएगी। यहां येह बात भी समझ लेना ज़रूरी है कि ए'तिकाफ़ की निय्यत सिर्फ़ खाने, पीने और सोने वग़ैरा के लिये न की जाए, सवाब के लिये की जाए। **रद्दुल मुह़तार** (शामी) में है : "अगर कोई मस्जिद में खाना, पीना या सोना चाहे तो **ए'तिकाफ़ की निय्यत** कर ले, कुछ देर **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे फिर जो चाहे करे (या'नी अब चाहे तो खा पी या सो सकता है)।" (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۵۰۶)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक के जुदा जुदा शहरों में पूरे माहे र-मज़ान और आख़िरी अ़शरे के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की तरकीब की जाती है, **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा की जानिब से मो'तकिफ़ीन के लिये बा क़ाइदा तरबियती जद्वल भी पेश किया जाता है।

इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की 41 निय्यतें : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ـ "**मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।**" (مُعجَم کبیرج۶ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

अपने ए'तिकाफ़ की अ़ज़ीमुश्शान नेकी के साथ मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें शामिल कर के सवाब में ख़ूब इज़ाफ़ा कीजिये मक-त-बतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा कार्ड में से सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बयान कर्दा मस्जिद में जाने की 40 निय्यतों में से ह़स्बे ह़ाल निय्यतें करने के साथ साथ मौक़अ़ की मुना-सबत से मज़ीद येह निय्यतें भी कर के घर से निकलिये, (मस्जिद में आ कर भी ह़स्बे ह़ाल निय्यतें की जा सकती हैं, जब भी अच्छी अच्छी निय्यतें करें सवाब की निय्यत पेशे नज़र रखा करें)

﴾1﴿ यक्सूई के साथ इबादत बजा लाने, ज़ाती मुत़ा-लआ़ या अहले इल्म के मुयस्सर होने पर उस से इल्मे दीन सीखने के मवाक़ेअ़ से फ़ाएदा उठाने, लय-लतुल क़द्र की ब-र-कतें पाने और **माहे र-मज़ानुल मुबारक** के क़ीमती लम्ह़ात से मुकम्मल फ़ाएदा उठाने के लिये पूरे **माहे र-मज़ानुल**

www.dawateislami.net

मुबारक (या आख़िरी दस दिन) के सुन्नते ए'तिकाफ़ के लिये जा रहा हूं ﴾2﴿ तसव्वुफ़ के इन उसूलों (اَلِف) तक़्लीले तृआम (या'नी कम खाना) (ب) तक़्लीले कलाम (या'नी कम बोलना) (ج) तक़्लीले मनाम (या'नी कम सोना) पर कारबन्द रहूंगा ﴾3﴿ रोज़ाना पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में ﴾4﴿ तक्बीरे ऊला के साथ ﴾5﴿ बा जमाअ़त अदा करूंगा ﴾6﴿ हर अज़ान और ﴾7﴿ हर इक़ामत का जवाब दूंगा ﴾8﴿ हर बार मअ़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ अज़ान के बा'द की दुआ़ पढ़ूंगा ﴾9﴿ रोज़ाना तहज्जुद ﴾10﴿ इश्राक़ ﴾11﴿ चाश्त व ﴾12﴿ अव्वाबीन के नवाफ़िल अदा करूंगा ﴾13﴿ तिलावत और ﴾14﴿ दुरूद शरीफ़ की कसरत करूंगा ﴾15﴿ रोज़ाना रात **सू-रतुल मुल्क** पढ़ूं या सुनूंगा ﴾16﴿ कम अज़ कम ताक़ (ODD) रातों में सलातुत्तस्बीह़ अदा करूंगा ﴾17﴿ तमाम सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों और ﴾18﴿ बयानात में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूंगा ﴾19﴿ रिश्तेदारों और मुलाक़ातियों को भी **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों में बिठाऊंगा ﴾20﴿ ज़बान पर **क़ुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई से बचूंगा और मुम्किन हुवा तो इस निय्यते ख़ैर के साथ ज़रूरत की बात भी ह़त्तल इम्कान लिख कर या इशारे से करूंगा ताकि फ़ुज़ूल, या बुरी बातों में न जा पड़ूं या शोरो गुल का सबब न बन जाऊं ﴾21﴿ मस्जिद को हर त़रह़ की बदबू से बचाऊंगा ﴾22﴿ मस्जिद में नज़र आने वाले तिन्के और बालों के गुच्छे वग़ैरा उठा कर डालने के लिये अपनी जेब में शॉपर रखूंगा। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा" (ابن ماجه ج١ ص٤١٩ حديث٧٥٧) ﴾23﴿ अपने पसीने और मुंह की राल वग़ैरा की आलू-दगी से मस्जिद के फ़र्श या दरी या कारपेट को बचाने के लिये सिर्फ़ अपनी ज़ाती चादर या चटाई पर ही सोऊंगा ﴾24﴿ ब निय्यते ह़या, सोने में **पर्दे में पर्दा** रहे इस का हर त़रह़ से ख़याल रखूंगा (सोते वक़्त पाजामे पर तहबन्द बांध कर मज़ीद ऊपर से चादर ओढ़ लेना मुफ़ीद है। जामिअ़तुल मदीना, म-दनी क़ाफ़िले और घर वग़ैरा में हर जगह सोते वक़्त इस का ख़याल रखना चाहिये) ﴾25﴿ मस्जिद में गन्दगी न हो इस लिये वुज़ूख़ाना फ़िनाए मस्जिद में होने की सूरत में तेल कंघी वहीं करूंगा और जो बाल झड़ेंगे उठा लूंगा (अगर कोई वुज़ू के लिये

www.dawateislami.net

मुन्तज़िर हो तो निशस्त से हट कर तेल कंघी कीजिये) ﴾26﴿ बिग़ैर इजाज़त किसी की कोई चीज़ इस्ति'माल न कर के ख़ुद को गुनाह से बचाऊंगा म-सलन इस्तिन्जा ख़ाने जाने के लिये दूसरों के चप्पल वग़ैरा इस्ति'माल नहीं करूंगा बल्कि ﴾27﴿ जिन से पहले से लैन दैन और दोस्ती नहीं थी उन से हलकी फुलकी चीज़ें भी आ़रियतन न मांग कर ख़ुद को ख़िलाफ़े मुरव्वत काम से बचाऊंगा और अगर वोह चीज़ उस के इस्ति'माल में है तो उसे परेशानी न पहुंचाने की निय्यत भी मद्दे नज़र रखूंगा लिहाज़ा चप्पल, चादर, तक्या वग़ैरा किसी चीज़ के लिये दूसरों से सुवाल नहीं करूंगा ﴾28﴿ वक़्फ़ इम्लाक को नुक़्सान से महफ़ूज़ रखने, नमाज़ियों को अज़िय्यत से बचाने और मस्जिद इन्तिज़ामिया को परेशानी से दूर रखने के लिये खाना फ़िनाए मस्जिद में वोह भी खाने की मख़्सूस दरी या दस्तर ख़्वान वग़ैरा बिछा कर उस पर खाऊंगा, नमाज़ की दरी पर हरगिज़ नहीं खाऊंगा ﴾29﴿ खाना कम होने की सूरत में भूक के बा वुजूद ईसार की निय्यत से आहिस्ता आहिस्ता खाऊंगा ताकि दूसरे इस्लामी भाई ज़ियादा खा सकें। ईसार का सवाब बे शुमार है चुनान्चे ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह़ दे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है" (ابنِ عساکر ج۳۱ ص۱۴۲) ﴾30﴿ पेट का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाऊंगा या'नी ख़्वाहिश से कम खाऊंगा ताकि इबादत में सुस्ती वाक़ेअ़ न हो और ज़ियादा खाने की वज्ह से सिह्ह़त में कोई ऐसी ख़राबी न हो जाए जो इबादात को मु-तअस्सिर करे ﴾31﴿ अगर किसी ने ज़ियादती की तो **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा के लिये सब्र करूंगा और ﴾32﴿ उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ करूंगा ﴾33﴿ ख़ुसूसन पड़ोसी मो'तकिफ़ के साथ और उ़मूमन हर एक के साथ हुस्ने सुलूक करूंगा ﴾34﴿ ए'तिकाफ़ के ह़ल्क़ा निगरान की इन्तिज़ामी मुआ़-मलात और जदवल के तअ़ल्लुक़ से इता़अ़त करूंगा ताकि मस्जिद के इज्तिमाई नज़्मो नसक़ में कोई ख़लल न पड़े और बद इन्तिज़ामी पैदा न हो ﴾35﴿ **फ़िक्रे मदीना** करते हुए रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करूंगा ﴾36﴿ इस्लामी भाइयों के सामने मौक़अ़ की मुना-सबत

www.dawateislami.net

से मुस्कुरा मुस्कुरा कर स-दक़े का सवाब कमाऊंगा ﴿37﴾ कोई मेरी त़रफ़ देख कर मुस्कुराएगा तो येह दुआ़ पढूंगा : اَضْحَكَ اللّٰهُ سِنَّكَ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हंसता रखे) ﴿38﴾ अपने लिये, घर वालों, अह़बाब और सारी उम्मत के लिये दुआ़एं करूंगा ﴿39﴾ अगर कोई मो'तकिफ़ बीमार हो गया तो जितना हो सका उस की दिलजूई और ख़िदमत करूंगा ﴿40﴾ बुज़ुर्ग (या'नी उ़म्र रसीदा) मो'तकिफ़ीन के साथ बहुत ज़ियादा हुस्ने सुलूक करूंगा ﴿41﴾ दौराने ए'तिकाफ़ ह़स्बे तौफ़ीक़ रसाइल तक़्सीम करूंगा (हर मो'तकिफ़ इस्लामी भाई की ख़िदमत में दर्द भरी म-दनी इल्तिजा है कि ह़स्बे तौफ़ीक़ या दौराने ए'तिकाफ़ कम अज़ कम 112 रुपै के मक-त-बतुल मदीना के रसाइल या सुन्नतों भरे बयान की C.D. या म-दनी फूलों के म-दनी पेम्फ़लेट आने वाले मुलाक़ातियों वग़ैरा में ज़रूर तक़्सीम फ़रमाएं। **र-मज़ानुल मुबारक** में तक़्सीमे रसाइल का सवाब भी ज़ियादा मिलेगा)

ए'तिकाफ़ किस मस्जिद में करे ? : मस्जिद जामेअ़ होना ए'तिकाफ़ के लिये शर्त़ नहीं बल्कि मस्जिदे जमाअ़त में भी हो सकता है। मस्जिदे जमाअ़त वोह है जिस में इमाम व मुअज़्ज़िन मुक़र्रर हों, अगर्चे उस में पन्जगाना जमाअ़त न होती हो और आसानी इस में है कि मुत़्लक़न हर मस्जिद में ए'तिकाफ़ सह़ीह़ है अगर्चे वोह मस्जिदे जमाअ़त न हो, ख़ुसूसन इस ज़माने में कि बहुतेरी मस्जिदें ऐसी हैं जिन में न इमाम हैं न मुअज़्ज़िन। (رَدُّالْمُحتَارج٣ص٤٩٣) सब से अफ़्ज़ल मस्जिद ह़रम शरीफ़ में ए'तिकाफ़ है फिर मस्जिदुन्न-बवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में फिर मस्जिदे अक़्सा (या'नी बैतुल मक़्दिस) में फिर उस में जहां बड़ी जमाअ़त होती हो।

(جَوْهَره ص١٨٨, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1020, 1021)

मो'तकिफ़ और एह़तिरामे मस्जिद : प्यारे मो'तकिफ़ इस्लामी भाइयो ! आप को दस रोज़ मस्जिद ही में गुज़ारने हैं इस लिये चन्द बातें एह़तिरामे मस्जिद से मु-तअ़ल्लिक़ सीख लीजिये। दौराने ए'तिकाफ़ मस्जिद के अन्दर ज़रूरतन दुन्यवी बात करने की इजाज़त है लेकिन इस त़रह़ कि किसी नमाज़ी या इ़बादत करने वाले या सोने वाले को तश्वीश न हो। याद रखिये ! मस्जिद में बिला ज़रूरत दुन्यवी बातचीत की मो'तकिफ़ को भी इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

अल्लाह उन पर करम न करेगा : **हज़रते** सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ मत बैठो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ऐसे लोगों की कोई हाजत नहीं। (شُعَبُ الایمان ج٣ ص ٨٦ حديث ٢٩٦٢)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी **अल्लाह** उन पर करम न करेगा, वरना रब को किसी बन्दे की ज़रूरत नहीं, वोह ज़रूरतों से पाक है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 457)

अल्लाह तेरी गुमशुदा चीज़ न मिलाए : **हज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो किसी को मस्जिद में गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुने (या देखे) तो कहे : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे तुझे वोह चीज़ न मिले।" क्यूं कि मस्जिदें इस लिये नहीं बनी हैं। (مسلم ص ٢٨٤ حديث ٥٦٨)

तो तुम्हें सज़ा देता : **हज़रते** सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं मस्जिद में खड़ा था कि मुझे किसी ने कंकरी मारी मैं ने देखा तो वोह अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه थे, उन्हों ने मुझ से (इशारा कर के) फ़रमाया : "उन दो शख़्सों को मेरे पास लाओ !" मैं उन दोनों को ले आया। हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम कहां से तअ़ल्लुक़ रखते हो ?" अ़र्ज़ की : "ताइफ़ से।" फ़रमाया : "अगर तुम मदीनए मुनव्वरह के रहने वाले होते (क्यूं कि वोह मस्जिद के आदाब बख़ूबी जानते हैं) तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता (क्यूं कि) तुम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हो !" (بُخاری ج١ ص١٧٨ حديث ٤٧٠)

मुबाह कलाम नेकियों को खा जाता है : **हज़रते** सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی मुहक़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ शैख़ इब्ने हुमाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام के हवाले से नक़्ल

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "मस्जिद में मुबाह़ (या'नी जिस में न सवाब हो न गुनाह ऐसी जाइज़) बात करना मक्रूह है और नेकियों को खा जाता है।" (مرقاۃ المفاتیح ج ۲ ص ۴۴۹)

40 साल के आ'माल बरबाद फ़रमा दे : ۞ **इमाम** अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : जो मस्जिद में दुन्या की बात करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **चालीस बरस** के नेक आ'माल अकारत (या'नी बरबाद) फ़रमा दे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 311, غمز العیون ج۳ ص ۱۹۰)

मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है : सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार दो जहां के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلضَّحِكُ فِی الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِی الْقَبْرِ۔ **तरजमा :** "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।" (الفردوس بماثور الخطاب ج ۲ ص ۴۳۱ حدیث ۳۸۹۱)

क़ब्र में अंधेरा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला रिवायात बार बार पढ़िये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़िये ! कहीं ऐसा न हो कि मस्जिद में दाख़िल तो हुए सवाब कमाने मगर ख़ूब हंस बोल कर नेकियां बरबाद कर के बाहर निकले कि मस्जिद में बिला इजाज़ते शर-ई दुन्या की जाइज़ बात भी नेकियों को खा जाती है, लिहाज़ा मस्जिद में पुर सुकून और ख़ामोश रहिये। बयान भी करें या सुनें तो सन्जी-दगी के साथ कि कोई ऐसी बात न हो जिस से लोगों को हंसी आए। न ख़ुद हंसिये न लोगों को हंसने दीजिये कि मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा लाता है। हां ज़रूरतन मुस्कुराना मन्अ़ नहीं। मस्जिद के एह़तिराम का ज़ेहन बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये। आप की तरग़ीब के लिये एक म-दनी बहार गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी का ए'तिकाफ़ : ह़वेलियां केन्ट (ख़ैबर पख़्तून ख़्वाह, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई गुनाहों में डूबे हुए थे, बच्चे जवान हो चुके थे फिर भी फ़ेशन का आसेब नहीं उतरता था। **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में बाबुल मदीना कराची से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** का एक माह का म-दनी

www.dawateislami.net

क़ाफ़िला **हवेलियां** तशरीफ़ फ़रमा हुवा। उस **म-दनी क़ाफ़िले** की ख़ुसूसिय्यत येह थी कि उस में दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा के रुक्न **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी अलहाज अल हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِی भी शरीक थे। उस इस्लामी भाई के बड़े साहिब ज़ादे उन्हें **म-दनी क़ाफ़िले** वाले **आशिक़ाने रसूल** से मिलवाने ले गए। **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की **इन्फ़िरादी कोशिश** से वोह भी म-दनी क़ाफ़िले के साथ आख़िरी अ़शरे में मो'तकिफ़ हो गए। **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی के हुस्ने अख़्लाक़ ने उन का दिल जीत लिया, दीगर **आशिक़ाने रसूल** ने भी उन पर ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश की, हत्ता कि उन का दिल मोम हो गया और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन के क़ल्ब में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया। उन्हों ने फ़ेशन से मुंह मोड़ा, सुन्नतों से रिश्ता जोड़ा, दाढ़ी मुंडाना छोड़ा, बुराइयों से नाता तोड़ा और भरपूर त़रीक़े पर म-दनी माहोल से तअ़ल्लुक़ जोड़ा। अल ग़रज़ उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली, दाढ़ी रख ली और **इमामा शरीफ़** का ताज सर पर सजा लिया। म-दनी माहोल से वाबस्ता होने के बा'द उन की कोशिश येह होती कि जो भी सुन्नत मा'लूम हो जाए उस पर अ़मल करें। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचाने के लिये तन्ज़ीमी त़ौर पर **हल्क़ा सत्ह़ के ज़िम्मेदार** भी बने।

आएंगी सुन्नतें जाएंगी शामतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

तुम सुधर जाओगे, पाओगे बरकतें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ने बा'दे वफ़ात भी म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत दी :

मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی की भी क्या बात है ! म-दनी माहोल में रह कर उन्हों ने म-दनी क़ाफ़िलों में ख़ूब सफ़र किया और बे शुमार इस्लामी भाइयों की इस्लाह़ कर के अपने लिये सवाबे जारिया का ज़ख़ीरा जम्अ़ कर के 18 मुहर्रमुल ह़राम (1427 सि.हि., 17.2.2006)

www.dawateislami.net

को बा'दे नमाज़े जुमुआ़ रिह़लत फ़रमाई और दुन्या से जाने के बा'द भी ख़्वाब में इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ एक इस्लामी भाई को **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बना दिया और फिर म-दनी क़ाफ़िले में पहुंच कर भी उस को **जल्वा** दिखाया और **बि इज़्निल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मसाने के मरज़ से छुटकारा दिलाया चुनान्चे एक इस्लामी भाई को **मसाने** में कुछ अ़र्से से तक्लीफ़ थी, उन्हों ने ख़्वाब में **ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी म-दनी** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الغَنِی की ज़ियारत की, उन्हों ने उन्हें म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र का हुक्म फ़रमाया। उन्हों ने सफ़र की निय्यत कर ली मगर जुमादल ऊला (1427 सि.हि.) में सफ़र न कर सके। 24 जुमादल आख़िरा (1427 सि.हि.) को उन्हों ने तीन रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार किया। क़ाफ़िले वाली मस्जिद में पहुंच कर जब लैटे तो ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गए, क्या देखते हैं कि **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی **पर्दे में पर्दा** किये (या'नी गोद में चादर फैला कर रानें वग़ैरा छुपाए) तशरीफ़ फ़रमा हैं और अपने मल्फ़ूज़ात से नवाज़ रहे हैं, मगर वोह उन के इर्शादात समझ न पाए। म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **उन्हें मसाने की तक्लीफ़ से नजात मिल चुकी है।**

दर्द गर्चे तुम्हारे मसाने में है   दर्स फ़ारूक़ दें क़ाफ़िले में चलो
फ़ाएदा आख़िरत के बनाने में है   सब मुबल्लिग़ कहें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद के मु-तअ़ल्लिक़ 19 म-दनी फूल

﴾1﴿ **मरवी** हुवा कि एक मस्जिद अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ह़ुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या की बातें करते हैं। मलाएका उसे आते हुए मिले और बोले : हम उन (मस्जिद में दुन्या

www.dawateislami.net

की बातें करने वालों) के हलाक करने को भेजे गए हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 312)

2 **रिवायत** किया गया है कि "जो लोग **ग़ीबत** करते और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुंह से गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर उन की शिकायत करते हैं।" سُبْحٰنَ الله ! जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्या करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो (मस्जिद में) ह़राम व ना जाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा ! (ऐज़न)

3 **दरज़ी** को इजाज़त नहीं कि मस्जिद में बैठ कर कपड़े सिये, हां बच्चों को रोकने और मस्जिद की ह़िफ़ाज़त के लिये बैठा तो ह़रज नहीं। इसी त़रह़ कातिब (या'नी लिखने वाले) को (मस्जिद में) उजरत पर किताबत करने (या'नी लिखने) की इजाज़त नहीं। (عالمگیری ج۱ص۱۱۰)

4 **मस्जिद** के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा (या'नी कचरा) हरगिज़ न फेंकें। सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی "जज़्बुल क़ुलूब" में नक़्ल करते हैं कि मस्जिद में अगर ख़स (या'नी मा'मूली सा तिन्का या ज़र्रा) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में ख़स (मा'मूली ज़र्रा) पड़ जाने से होती है। (جذبُ القُلوب ص۲۲۲)

5 **मस्जिद** की दीवार, इस के फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या इस के नीचे थूकना, नाक सिनक्ना, नाक या कान में से मैल निकाल कर लगाना, मस्जिद की दरी या चटाई से धागा या तिन्का वग़ैरा नोचना सब शरअ़न मम्नूअ़ है।

6 **ज़रूरतन** (मस्जिद के अन्दर) अपने रुमाल वग़ैरा से नाक पोंछने में मुज़ा-यक़ा नहीं।

7 **मस्जिद** का कूड़ा (कचरा) झाड़ कर किसी ऐसी जगह न डालें जहां बे अ-दबी हो।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 647)

8 **जूते** उतार कर मस्जिद में साथ ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा बाहर झाड़ लीजिये। अगर पाउं के तल्वों में गर्द के ज़र्रात लगे हों तो रुमाल वग़ैरा से पोंछ कर मस्जिद में दाख़िल हों। मस्जिद

www.dawateislami.net

में गर्द का कोई ज़र्रा न गिरने पाए इस का ख़याल रखिये।

﴾9﴿ **वुज़ू** के बा'द पाउं वुज़ूख़ाने ही पर ख़ुश्क कर लीजिये, गीले पाउं से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली हो जाती हैं।

अब मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن के मल्फ़ूज़ाते शरीफ़ा से बा'ज़ आदाबे मस्जिद पेश किये जा रहे हैं :

﴾10﴿ **मस्जिद** में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है।

﴾11﴿ **वुज़ू** करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (याद रखिये ! आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़तरे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, ना जाइज़ व गुनाह है)

﴾12﴿ **मस्जिद** के एक द-रजे से दूसरे द-रजे के दाख़िले के वक़्त (म-सलन सहन में दाख़िल हों तब भी और सहन से अन्दरूनी हिस्से में जाएं जब भी) सीधा क़दम बढ़ाया जाए हत्ता कि अगर सफ़ बिछी हो उस पर भी पहले सीधा क़दम रखें और जब वहां से हटें तब भी सीधा क़दम फ़र्शे मस्जिद पर रखें (या'नी आते जाते हर बिछी हुई सफ़ पर पहले सीधा क़दम रखें) या ख़तीब जब मिम्बर पर जाने का इरादा करे, पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो (भी) सीधा क़दम उतारे।

﴾13﴿ **मस्जिद** में अगर छींक आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले इसी तरह खांसी। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। इसी तरह डकार को ज़ब्त करना चाहिये और न हो तो हत्तल इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगर्चे ग़ैरे मस्जिद में हो। ख़ुसूसन मजलिस में या किसी मुअ़ज़्ज़म (या'नी बुज़ुर्ग) के सामने बे तहज़ीबी है। हदीस में है : एक शख़्स ने दरबारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में डकार ली आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम से अपनी डकार दूर रख कि दुन्या में जो ज़ियादा मुद्दत तक पेट भरते थे वोह क़ियामत के दिन ज़ियादा मुद्दत तक भूके रहेंगे।"

www.dawateislami.net

(ترمذی ج٤ ص٢١٧ حدیث٢٤٨٦) और जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये। अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूं कि येह शैतान का क़हक़हा है। जमाही जब आए ह़त्तल इम्कान मुंह बन्द रखें मुंह खोलने से शैतान मुंह में थूक देता है। अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें और इस त़रह़ भी न रुके तो ह़त्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उलटा हाथ उलटी त़रफ़ से मुंह पर रख लें। चूंकि जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से मह़फ़ूज़ हैं। लिहाज़ा जमाही आए तो येह तसव्वुर करें कि "अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही नहीं आती।" اِنْ شَآءَاللہ عزوجل फ़ौरन रुक जाएगी। (رَدُّالْمُحتار ج٢ ص ٤٩٨، ٤٩٩)

14 **तमस्ख़ुर** (मस्ख़रा पन) वैसे ही मम्नूअ़ है और मस्जिद में सख़्त ना जाइज़।

15 **मस्जिद** में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है। मौक़अ़ के लिह़ाज़ से तबस्सुम (या'नी मुस्कुराने) में ह़रज नहीं।

16 **मस्जिद** के फ़र्श पर कोई चीज़ फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। मौसिमे गर्मा में लोग पंखा झलते झलते फेंक देते हैं (मस्जिद में टोपी, चादर वग़ैरा भी न फेंकें इसी त़रह़ चादर या रुमाल से फ़र्श इस त़रह़ न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो) या लकड़ी, छत्री वग़ैरा रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं। इस की मुमा-न-अ़त है। ग़रज़ मस्जिद का एह़तिराम हर मुस्लमान पर फ़र्ज़ है।

17 **मस्जिद** में ह़दस (या'नी रीह़ ख़ारिज करना) मन्अ़ है ज़रूरत हो तो (जो ए'तिकाफ़ में नहीं हैं वोह) बाहर चले जाएं। लिहाज़ा मो'तकिफ़ को चाहिये कि अय्यामे ए'तिकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हलका रखे कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़्राजे रीह़ की ह़ाजत न हो। वोह इस के लिये बाहर न जा सकेगा। (अलबत्ता फ़िनाए मस्जिद में मौजूद बैतुल ख़ला में रीह़ ख़ारिज करने के लिये जा सकता है)

18 **क़िब्ले** की त़रफ़ पाउं फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है, मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाए कि

www.dawateislami.net

येह ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है। ह़ज़रते इब्राहीमे अदहम (या'नी इब्राहीम बिन अदहम) رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद में तन्हा बैठे थे, पाउं फैला लिया, गोशए मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी : "इब्राहीम ! बादशाहों के हु़ज़ूर में यूं ही बैठते हैं ?" मअ़न (या'नी फ़ौरन) पाउं समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्ते इन्तिक़ाल ही फैले। (انوار القدسية لِلشّعرانی ج٢ص٦٧) (छोटे बच्चों को भी प्यार करते, उठाते, लिटाते वक़्त एह़तियात़ कीजिये कि इन के पाउं क़िब्ले की त़रफ़ न हों और मुताते (पोटी करवाते) वक़्त भी ज़रूरी है कि उस का रुख़ या पीठ क़िब्ले की त़रफ़ न हो)

﴾19﴿ **इस्ति'माल** शुदा जूता मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बे अ-दबी है।

(मुलख़्ख़स अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 317 ता 323)

करम अज़ पए मुस्त़फ़ा मेरे रब हो
मुझे मस्जिदों का मुयस्सर अदब हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये !

मस्जिद में बल्ग़म देख कर सरकार की ना गवारी : एक मर्तबा हु़ज़ूरे अकरम, रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में क़िब्ले की त़रफ़ बल्ग़म पड़ा देखा तो नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया। येह देख कर एक अन्सारी सह़ाबिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने उठ कर उसे खुरच कर साफ़ कर के वहां ख़ुश्बू लगा दी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मसर्रत आमेज़ लहजे में) इर्शाद फ़रमाया : "येह कितना उ़म्दा काम है।" (نسائی ص١٢٦ حدیث٧٢٥)

फ़ारूक़े आ'ज़म और मस्जिद में ख़ुश्बू : सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हर जुमुअ़तुल मुबारक को मस्जिदुन्-बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में ख़ुश्बू की धूनी दिया करते थे। (اَبُو يَعْلٰى ج١ص١٠٣ حديث١٨٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये ! : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों में मस्जिदें बनाने का हुक्म दिया और येह कि वोह साफ़ और ख़ुश्बूदार रखी जाएं।

(ابو داوٗد ج ۱ ص ۱۹۷ حدیث ۴۵۵)

एर फ़्रेश्नर से केन्सर हो सकता है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मस्जिदें ऊ़द, लोबान और अगरबत्ती वग़ैरा से ख़ुश्बूदार रखना कारे सवाब है, मस्जिद को बदबू से बचाना वाजिब है लिहाज़ा दिया सलाई (या'नी माचिस की तीली) न जलाइये कि इस से बारूद की **बदबू** निकलती है। बारूद का **बदबूदार** धूआं अन्दर न आने पाए इतनी दूर बाहर से लोबान या अगरबत्ती वग़ैरा सुलगा कर मस्जिद में लाइये। अगरबत्तियों को किसी बड़े त़श्त वग़ैरा में रखिये ताकि इस की राख मस्जिद में न गिरे। अगरबत्ती के पेकिट पर अगर जानदार की तस्वीर बनी हुई हो तो उस को खुरच डालिये। मस्जिद (नीज़ घरों और कारों वग़ैरा) में "एर फ़्रेश्नर" (Air Freshner) से ख़ुश्बू का छिड़काव मत कीजिये कि उस के कीमियावी मादे फ़ज़ा में फैल जाते और सांस के ज़रीए फेफड़ों में पहुंच कर नुक़्सान पहुंचाते हैं। एक त़िब्बी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ एर फ़्रेश्नर के इस्ति'माल से जिल्द का सरत़ान (Skin Cancer) हो सकता है। जहां उ़र्फ़ हो वहां मस्जिद के चन्दे से ख़ुश्बू सुल्गाने की इजाज़त है और जहां उ़र्फ़ न हो वहां ख़ुश्बू की सराह़त कर के अलग से चन्दा ह़ासिल कीजिये।

मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना ह़राम है : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! भूक से कम खाने की आ़दत बनाइये, अभी ख़्वाहिश बाक़ी हो कि हाथ रोक लीजिये। अगर ख़ूब डट कर खाते रहे और वक़्त बे वक़्त सीख़ कबाब, बर्गर, आलू छोले, पिज़्ज़े, आइसक्रीम, ठन्डी बोतलें वग़ैरा पेट में पहुंचाते रहे, पेट ख़राब हो गया और ख़ुदा न ख़्वास्ता "गन्दा द-हनी" या'नी **मुंह से बदबू** आने की बीमारी लग गई तो सख़्त इम्तिह़ान हो जाएगा, क्यूं कि मुंह से **बदबू** आती हो तो मस्जिद का दाख़िला **ह़राम** है, यहां तक कि जिस वक़्त मुंह से **बदबू** आ रही हो उस वक़्त बा

www.dawateislami.net

जमाअ़त नमाज़ पढ़ने के लिये भी मस्जिद में आना गुनाह है। चूंकि फ़िक्रे आख़िरत की कमी के बाइस लोगों की भारी अक्सरिय्यत में खाने की ह़िर्स ज़ियादा और आज कल हर त़रफ़ "फ़ूड कल्चर" का दौर दौरा है, शायद इस वज्ह से या मुंह की सफ़ाई में कोताही करने के सबब एक ता'दाद है जिन के मुंह से **बदबू** आती है। मुझे बारहा का तजरिबा है कि जब कोई मुंह क़रीब कर के बात करता है तो उस के **मुंह की बदबू** के सबब सांस रोकना पड़ता है। अफ़्सोस ! बदबूदार मुंह वाले कई अफ़राद مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद के अन्दर मो'तकिफ़ भी देखे जाते हैं। याद रखिये ! शर-ई हुक्म येह है कि अगर दौराने ए'तिकाफ़ भी मुंह में बदबू का मरज़ हो जाए तो ए'तिकाफ़ तोड़ कर मस्जिद से चले जाना होगा। बा'द में एक दिन के ए'तिकाफ़ की क़ज़ा कर ले। **र-मज़ानुल मुबारक** में कबाब समोसे और दीगर तली हुई चीज़ें और त़रह़ त़रह़ की मुरग़्ग़न ग़िज़ाएं ठूंस ठांस कर खाने के सबब मुंह की बदबू वाले मरीज़ों में इज़ाफ़ा हो जाता हो तो क्या अ़जब ! इस का बेहतरीन इलाज येह है कि सादा ग़िज़ा और वोह भी ख़्वाहिश से कम खाए और हाज़िमा दुरुस्त रखे नीज़ जब भी खा चुके ख़िलाल करने और ख़ूब अच्छी त़रह़ कुल्लियां वग़ैरा कर के मुंह साफ़ रखने की आ़दत बनाए, वरना ग़िज़ा के अज्ज़ा दांतों के ख़ला (Gaps) में रह जाते, सड़ते और बदबू लाते हैं। सिर्फ़ मुंह ही की **बदबू** नहीं हर त़रह़ की बदबू से मस्जिद को बचाना **वाजिब** है।

मुंह में बदबू हो तो नमाज़ मक्रूह होती है : फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 7 सफ़ह़ा 384 पर है : मुंह में **बदबू** होने की ह़ालत में (घर में पढ़ी जाने वाली) नमाज़ भी **मक्रूह** है और ऐसी ह़ालत में मस्जिद जाना **ह़राम** है जब तक मुंह साफ़ न कर ले। और दूसरे नमाज़ी को ईज़ा पहुंचानी **ह़राम** है और दूसरा नमाज़ी न भी हो तो भी **बदबू** से मलाएका को ईज़ा पहुंचती है। **ह़दीस** में है : "जिस चीज़ से इन्सान तक्लीफ़ मह़सूस करते हैं फ़िरिश्ते भी उस से तक्लीफ़ मह़सूस करते हैं।"

(مُسلِم ص ۲۸۲ حديث ٥٦٤)

बदबूदार मरहम लगा कर मस्जिद में आने की मुमा-न-अ़त : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जिस के बदन में **बदबू** हो कि उस से नमाज़ियों को ईज़ा हो म–सलन مَعَاذَ الله गन्दा दहन (या'नी जिस को मुंह से बदबू आने की बीमारी हो), **गन्दा बग़ल** (या'नी जिस के बग़ल से बदबू आने का मरज़ हो) या जिस ने **ख़ारिश** वग़ैरा के बाइस **गन्धक मली** (या कोई सा बदबूदार मरहम या लोशन लगाया) हो उसे भी मस्जिद में न आने दिया जाए।"

(फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 72)

कच्ची पियाज़ खाने से भी मुंह बदबूदार हो जाता है : कच्ची मूली, कच्ची पियाज़, कच्चा लहसन और हर वोह चीज़ कि जिस की **बू** ना पसन्द हो उसे खा कर मस्जिद में उस वक़्त तक जाना जाइज़ नहीं जब तक कि हाथ मुंह वग़ैरा में **बू** बाक़ी हो कि फ़िरिश्तों को इस से तक्लीफ़ होती है। **ह़दीस** शरीफ़ में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, फ़ातिहुल क़ुलूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने पियाज़, लहसन या गिंदना (लहसन से मिलती जुलती एक तरकारी) खाई वोह हमारी मस्जिद के क़रीब हरगिज़ न आए।" (مُسلِم ص۲۸۲ حدیث ٥٦٤) और फ़रमाया : "अगर खाना ही चाहते हो तो पका कर उस की **बू** दूर कर लो।"

(ابوداؤد ج ۳ ص ٥٠٦ حديث ۳۸۲۷)

मस्जिद में कच्चा गोश्त न ले जाएं : सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मस्जिद में कच्चा लहसन और कच्ची पियाज़ खाना या खा कर जाना जाइज़ नहीं जब तक कि **बू** बाक़ी हो और येही हुक्म हर उस चीज़ का है जिस में **बू** हो जैसे गिंदना (येह लहसन से मिलती जुलती तरकारी है), मूली, कच्चा गोश्त और मिट्टी का तेल, वोह दिया सलाई (माचिस की तीली) जिस के रगड़ने में **बू** उड़ती हो, रियाह़ ख़ारिज करना वग़ैरा वग़ैरा। जिस को **गन्दा द–हनी** का आ़रिज़ा (या'नी मुंह से बदबू आने की बीमारी) या कोई बदबूदार ज़ख़्म हो या कोई बदबूदार दवा लगाई हो तो जब तक बू मुन्क़ते़अ़ (या'नी ख़त्म) न हो उस को मस्जिद में आने की मुमा–न–अ़त है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 648) कच्चा गोश्त वग़ैरा पाक चीज़ की अगर इस त़रह़ पेकिंग कर ली जाए कि मा'मूली सी

www.dawateislami.net

भी बदबू न आए तो अब मस्जिद में ले जाने में ह़रज नहीं।

कच्ची पियाज़ वाले कचूमर और राइते से मोह़तात़ रहिये : कच्ची पियाज़ वाले आलू चने, राइते और कचूमर नीज़ कच्चे लह्सन वाले अचार चटनी वग़ैरा खाने से नमाज़ के अवक़ात में परहेज़ कीजिये। इफ़्त़ार के लिये मस्जिद में लाए जाने वाले बाज़ारी छोले और समोसों में अक्सर कच्ची पियाज़ की टुकड़ियां होती हैं, इन को मस्जिद में न लाइये, बल्कि घर में भी नमाज़ से पहले मत खाइये।

मज्मअ़ में अगरबत्ती सुलगाना : मुसल्मानों के इज्तिमाअ़ में ख़ुश्बू पहुंचाने की निय्यत से अगरबत्ती वग़ैरा जलाना कारे सवाब है। अगर लोबान या अगरबत्ती के धूएं से किसी को तक्लीफ़ होती हो तो ऐसे मौक़अ़ पर ख़ुश्बू न जलाई जाए, इसी त़रह़ मज्मअ़ पर "ख़ुश्बूदार पानी" छिड़क्ने से भी बचें कि आ़म तौ़र पर इस से लोगों को कोफ़्त और परेशानी होती है।

बदबूदार मुंह ले कर मुसल्मानों के मज्मअ़ में जाने की मुमा-न-अ़त : मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुसल्मानों के मज्मओं, दर्से क़ुरआन की मजलिसों, उ़-लमाए दीन व औलियाए कामिलीन की बारगाहों में बदबूदार मुंह ले कर न जाओ। मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक मुंह में **बदबू** रहे घर में ही रहो, मुसल्मानों के जल्सों, मज्मओं में न जाओ। हुक़्क़ा पीने वाले, तम्बाकू वाले, पान खा कर कुल्ली न करने वालों को इस से इ़ब्रत पकड़नी चाहिये। फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : जिसे **गन्दा द-हनी** की बीमारी हो उसे मस्जिदों की ह़ाज़िरी मुआ़फ़ है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 25, 26)

नमाज़ के अवक़ात में कच्ची पियाज़ खाना कैसा ? : सुवाल : "गन्दा दहन" को मस्जिद की ह़ाज़िरी मुआ़फ़ है, तो क्या कच्ची पियाज़ वाला राइता या कचूमर या ऐसे कबाब समोसे जिन में लह्सन पियाज़ बराबर पके हुए न हों और उन की बू आती हो या मसली हुई बाजरे की रोटी जिस में कच्चा लह्सन शामिल होता है ऐसी ग़िज़ा वग़ैरा जमाअ़त से कुछ देर पहले इस निय्यत से खा सकते हैं कि मुंह में बू हो जाए और जमाअ़त वाजिब न रहे !

www.dawateislami.net

जवाब : ऐसा करना जाइज़ नहीं। म-सलन जहां इशा की जमाअ़त अव्वल वक़्त में होती है वहां नमाज़े मग़रिब के बा'द ऐसा कचूमर या सलाद वग़ैरा न खाए जिस में कच्ची मूली या कच्ची पियाज़ या कच्चा लह्सन हो क्यूं कि इतनी जल्दी मुंह साफ़ कर के मस्जिद में पहुंचना दुश्वार होता है। हां अगर जल्द मुंह साफ़ करना मुम्किन है या किसी और वज्ह से मस्जिद की ह़ाज़िरी से मा'ज़ूर है म-सलन औ़रत। या नमाज़ पढ़ने में अभी काफ़ी देर है उस वक़्त तक **बू** ख़त्म हो जाएगी तो खाने में मुज़ा-यक़ा नहीं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "कच्चा लह्सन पियाज़ खाना कि बिला शुबा ह़लाल है और उसे खा कर जब तक **बू** ज़ाइल न हो मस्जिद में जाना मम्नूअ़ मगर जो हुक़्क़ा ऐसा कसीफ़ (या'नी गाढ़ा) व बे एहतिमाम हो कि مَعَاذَ اللّٰه तग़य्युरे बाक़ी (या'नी देर पा बदबू) पैदा करे कि वक़्ते जमाअ़त तक कुल्ली से भी **ब-कुल्ली** (या'नी मुकम्मल तौर पर) ज़ाइल (या'नी दूर) न हो तो क़ुर्बे जमाअ़त में इस का पीना शरअ़न **ना जाइज़** कि अब वोह तर्के जमाअ़त व तर्के सज्दा या **बदबू** के साथ दुख़ूले मस्जिद का मूजिब (सबब) होगा और येह दोनों मम्नूअ़ व ना जाइज़ हैं और (येह शर-ई उसूल है कि) हर मुबाह़ फ़ी नफ़्सिही (या'नी हर वोह काम जो ह़क़ीक़त में जाइज़ हो मगर) अम्रे मम्नूअ़ की त़रफ़ मुअद्दी (या'नी मम्नूअ़ काम की त़रफ़ ले जाने वाला) हो मम्नूअ़ व ना रवा है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 25, स. 94)

कच्ची पियाज़ खाते वक़्त بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मकरूह है : "**फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल**" जिल्द 2 सफ़्ह़ा 506 पर है : हुक़्क़ा, बीड़ी, सिगरेट पीने और (कच्चे) लह्सन, पियाज़ जैसी (बदबूदार) चीज़ खाने के वक़्त और नजासत की जगहों में بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मकरूहे (तन्ज़ीही) है।

नजासत की जगहों में بِسْمِ اللّٰه पढ़ना तो मकरूहे तन्ज़ीही है अलबत्ता अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی ने लफ़्ज़े قِيْل से एक क़ौल येह भी नक़्ल फ़रमाया है कि दुख़ान पीने के वक़्त भी بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मकरूह है और फिर इस की वज़ाह़त में अ़ल्लामा शामी ने हर बदबूदार चीज़ म-सलन पियाज़ व लह्सन का भी ज़िक्र किया है, इस ए'तिबार से इस एक क़ौल पर बदबूदार चीज़

www.dawateislami.net

खाने के वक़्त بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ना भी मक्रूह है । (مُلَخَّص اَز رَدُّالْمُحْتَار ج ا ص٣٨) और अगर्चे "शामी" में तह़रीमी व तन्ज़ीही की सराह़त नहीं लेकिन यहां मुराद मक्रूहे तन्ज़ीही ही है ।

मुंह की बदबू मा'लूम करने का त़रीक़ा : अगर मुंह में कोई तग़य्युरे राइह़ा (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से उस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां वग़ैरा करना) लाज़िम है, इस के लिये कोई ह़द मुक़र्रर नहीं । बदबूदार कसीफ़ (या'नी गाढ़ा) बे एह़तियात़ी का **हुक़्क़ा** पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा **सिगरेट** वाले को कि इस की बदबू मुरक्कब तम्बाकू (या'नी जिस में कुछ चीज़ें मिलाई जाती हैं) से (भी) सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से ज़ाइद अशद ज़रूरत **तम्बाकू** खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का जिर्म (या'नी धूएं के बजाए ख़ुद तम्बाकू ही) दबा रहता और मुंह अपनी **बदबू** से बसा देता है । येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करें कि मुंह बिल्कुल साफ़ हो जाए और **बू** का अस्लन (बिल्कुल नाम व) निशान न रहे और इस का इम्तिह़ान यूं है कि हाथ अपने मुंह के क़रीब ले जा कर मुंह खोल कर ज़ोर से तीन बार ह़ल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअ़न (या'नी फ़ौरन) सूंघें । बिग़ैर इस के अन्दर की **बदबू** ख़ुद कम महसूस होती है और जब मुंह में **बदबू** हो तो मस्जिद में जाना **ह़राम,** नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ़ । وَاللّٰہُ الْھَادِی (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 623) **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने सिगरेट की बदबू को हुक़्क़े और मुरक्कब तम्बाकू से ज़ाइद क़रार दिया है । येह सिगरेट की क़िस्म पर मुन्ह़सिर है । कुछ सिगरेट हुक़्क़े से ज़ियादा और कुछ कम बदबूदार भी हो सकते हैं ।

मुंह की बदबू का इलाज : अगर किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में **बदबू** आती हो तो "हरा धनिया" चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे फूलों से दांत मांझिये اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा । हां अगर पेट की ख़राबी की वज्ह से **बदबू** आती हो तो "कमख़ोरी" (या'नी खाने में कमी करने) की सआ़दत ह़ासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ टांगों और

www.dawateislami.net

बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले (या'नी दाइमी) नज़्ले खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में ख़ून आना वग़ैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी। भूक बाक़ी रहे इस त़रह़ से कम खाने में **80 फ़ीसद अमराज़** से बचत हो सकती है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब "पेट का क़ुफ़्ले मदीना" का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की ह़िर्स का इलाज हो जाए तो कई जिस्मानी और रूह़ानी अमराज़ ख़ुद ही दम तोड़ जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़, स. 159)

मुंह की बदबू का म-दनी इलाज :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِر

मुन्द-र-जए बाला दुरूद शरीफ़ मौक़अ़ ब मौक़अ़ एक ही सांस में 11 मर्तबा पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मुंह की **बदबू** ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाएगी। एक ही सांस में पढ़ने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि मुंह बन्द कर के आहिस्ता आहिस्ता नाक से सांस लेना शुरूअ़ कीजिये और मुम्किना ह़द तक हवा फेफड़ों में भर लीजिये। अब **दुरूद शरीफ़** पढ़ना शुरूअ़ कीजिये, चन्द बार इस त़रह़ मश्क़ करेंगे तो सांस टूटने से क़ब्ल اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ मुकम्मल ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तरकीब बन जाएगी। मज़्कूरा त़रीक़े पर नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन ह़द तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिह़ह़त के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब जब मौक़अ़ मिले बिल ख़ुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये। मुझे (या'नी सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को) एक सिन रसीदा (या'नी बूढ़े) ह़कीम साह़िब ने बताया था कि मैं सांस लेने के बा'द आधे घन्टे तक (या कहा) दो घन्टे तक हवा को अन्दर रोक लेता हूं और इस दौरान अपने

www.dawateislami.net

विर्दो वज़ाइफ़ भी पढ़ सकता हूं। बक़ौल उन ह़कीम साह़िब के सांस रोकने के ऐसे ऐसे मश्शाक़ (या'नी मश्क़ कर के माहिर हो जाने वाले लोग) भी दुन्या में पाए जाते हैं कि सुब्ह़ सांस लेते हैं तो शाम को निकालते हैं !

इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर होने चाहिएं ? : बारगाहे र-ज़विय्यत में सुवाल हुवा कि नमाज़ियों के लिये इस्तिन्जा ख़ाने मस्जिद से कितनी दूर बनाने चाहिएं ? इस पर **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : मस्जिद को **बू** से बचाना वाजिब है व लिहाज़ा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना **ह़राम**, मस्जिद में दिया सलाई (या'नी बदबूदार बारूद वाली माचिस की तीली) सुलगाना **ह़राम**, ह़त्ता कि ह़दीस में इर्शाद हुवा : मस्जिद में कच्चा गोश्त ले जाना **जाइज़** नहीं। (ابن ماجه ج ١ ص ٤١٣ حديث ٧٤٨) ह़ालां कि कच्चे गोश्त की **बू** बहुत ख़फ़ीफ़ (या'नी हलकी) है। तो जहां से मस्जिद में **बू** पहुंचे वहां तक (इस्तिन्जा ख़ाने बनाने की) मुमा-न-अ़त की जाएगी। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 232) कच्चे गोश्त की बदबू हलकी होती है जब येह भी मस्जिद में ले जाना जाइज़ नहीं तो कच्ची मछली ले जाना ब द-र-जए औला ना जाइज़ होगा क्यूं कि इस की बू गोश्त से ज़ियादा तेज़ होती है बल्कि बा'ज़ अवक़ात पकाने वालों की बे एह़तियाती के सबब इस का सालन खाने से हाथ और मुंह में ना गवार बू हो जाती है। ऐसी सूरत में बू दूर किये बिग़ैर मस्जिद में न जाए। इस्तिन्जा ख़ानों की जब सफ़ाई की जाती है उस वक़्त बदबू काफ़ी फैलती है लिहाज़ा (इस्तिन्जा ख़ाने और मस्जिद के दरमियान) इतना फ़ासिला रखना ज़रूरी है कि सफ़ाई के मौक़अ़ पर भी **बदबू** मस्जिद में दाख़िल न हो सके। इस्तिन्जा ख़ाने इह़ात़ए मस्जिद में खुलते हों तो ज़रूरतन दीवार पाट कर बाहर की जानिब दरवाज़े निकाल कर भी बदबू से मस्जिद को बचाया जा सकता है।

अपने लिबास वग़ैरा पर ग़ौर करने की आ़दत बनाइये : मस्जिद में **बदबू** ले जाना ह़राम है, नीज़ हर त़रह़ के **बदबू** वाले शख़्स का दाख़िल होना भी ह़राम है। मस्जिद में किसी तिन्के

www.dawateislami.net

से ख़िलाल भी न करें कि जो पाबन्दी से हर खाने के बा'द इस के आ़दी नहीं होते ख़िलाल करने से उन के दांतों से बदबू निकलती है। मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में भी इतनी दूर दांतों का ख़िलाल करे कि बदबू अस्ले मस्जिद में दाख़िल न हो। बदबूदार ज़ख़्म वाला या वोह मरीज़ जिस ने पेशाब या पाख़ाने की थेली (Urine bag ۞ Stool bag) लगाई हुई है वोह मस्जिद में दाख़िल न हों। इसी त़रह़ लेबॉरेटरी टेस्ट करवाने के लिये ली हुई ख़ून या पेशाब की शीशी, ज़बीह़ा के ब वक़्ते ज़ब्ह़ निकले हुए ख़ून से आलूद कपड़े वग़ैरा किसी चीज़ में छुपा कर भी मस्जिद के अन्दर नहीं ले जा सकते चुनान्चे फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "मस्जिद में नजासत ले कर जाना अगर्चे उस से मस्जिद आलूदा न हो या जिस के बदन पर नजासत लगी हो उस को मस्जिद में जाना मन्अ़ है।" (رَدُّ الْمُحتار ج ٢ ص ٥١٧) मस्जिद में किसी बरतन के अन्दर पेशाब करना या फ़स्द का ख़ून लेना (या'नी रग खोल कर फ़ासिद ख़ून निकालना, टेस्ट के लिये सिरिन्ज के ज़रीए ख़ून निकालना) भी जाइज़ नहीं। (دُرِّمُختار ج ٢ ص ٥١٧) पाक बदबू छुपी हुई हो जैसा कि अक्सर लोगों के बदन में पसीने की बदबू होती है मगर लिबास के नीचे छुपी हुई होती है और मह़सूस नहीं होती तो इस सूरत में मस्जिद के अन्दर जाने में कोई ह़रज नहीं। इसी त़रह़ अगर रुमाल में पसीने वग़ैरा की बदबू है जैसा कि गरमी में मुंह का पसीना पोंछने से अक्सर हो जाती है तो ऐसा रुमाल मस्जिद के अन्दर न निकाले, जेब ही में रहने दे, अगर इमामा या टोपी उतारने से पसीने या मैल कुचैल वग़ैरा की बदबू आती है तो मस्जिद में न उतारे। चुनान्चे इस की मिसाल देते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "हां अगर किसी सूरत से मिट्टी के तेल की बदबू उड़ा दी जाए या इस त़रह़ लेम्प वग़ैरा में बन्द किया जाए कि उस की बदबू ज़ाहिर न हो तो (मस्जिद में) जाइज़ है।" (फ़तावा नईमिया, स. 49) हर मुसल्मान को अपने मुंह, बदन, रुमाल, लिबास और जूती चप्पल वग़ैरा पर ग़ौर करते रहना चाहिये कि इस में कहीं से बदबू तो नहीं आ रही और ऐसा मैला कुचैला लिबास पहन कर भी मस्जिद में न आएं जिस से लोगों को घिन आए। अफ़्सोस ! दुन्यवी अफ़्सरों वग़ैरा के पास तो उ़म्दा लिबास पहन कर जाएं और अपने प्यारे प्यारे

www.dawateislami.net

परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाज़िरी के वक़्त या'नी नमाज़ में नफ़ासत (सफ़ाई और पाकीज़गी वग़ैरा) का कोई एहतिमाम न करें, मस्जिद में आते वक़्त इन्सान कम अज़ कम वोह लिबास तो पहने जो दा'वतों में पहन कर जाता है, मगर इस बात का ख़याल रखिये कि लिबास शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ हो।

मस्जिद में बच्चे को लाने की मुमा-न-अ़त : सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "मस्जिदों को **बच्चों** और **पागलों** और ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े और **आवाज़ बुलन्द करने** और हुदूद क़ाइम करने और तलवार खींचने से बचाओ।" (اِبن ماجه ج ۱ ص ٤١٥ حديث ٧٥٠)

बच्चे और पागल को जिन से नजासत का गुमान हो मस्जिद में ले जाना ह़राम है वरना मकरूह, जो लोग जूतियां मस्जिद के अन्दर ले जाते हैं उन को इस का ख़याल रखना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो साफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना सूए अदब (या'नी बे अ-दबी) है। (رَدُّ الْمُحْتار ج ۲ ص ٥١٨) **बच्चे या पागल** (या बेहोश या जिस पर जिन्न आया हुवा हो उस) को दम करवाने के लिये चाहे "पेम्पर" लगा हो तब भी मस्जिद में हरगिज़ न ले जाया जाए। अगर आप ऐसों को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं जिन का लाना जाइज़ न था तो फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा न लाने का अ़हद कीजिये। हां फ़िनाए मस्जिद म-सलन इमाम साहिब के हुजरे में ले जा सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से ले कर न गुज़रना पड़े।

गोश्त मछली बेचने वाले : गोश्त या मछली बेचने वाले के लिबास में सख़्त **बदबू** होती है लिहाज़ा इन को चाहिये कि फ़ारिग़ हो कर अच्छी त़रह़ नहाएं, साफ़ लिबास ज़ैबे तन फ़रमाएं, ख़ुश्बू लगाएं और फिर मस्जिद में आएं। नहाना और ख़ुश्बू लगाना शर्त़ नहीं सिर्फ़ मश्वरतन अ़र्ज़ किया है, कोई भी ऐसी तरकीब करें कि बदबू मुकम्मल त़ौर पर ज़ाइल (या'नी दूर) हो जाए।

सोने से मुंह में बदबू हो जाती है : सोते में पेट की गन्दी हवाएं ऊपर की त़रफ़ उठती हैं, लिहाज़ा बेदार होने पर मुंह में अक्सर बदबू होती है। इस ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

जिल्द 23 सफ़्हा 375 ता 376 से "सुवाल जवाब" मुला-हज़ा हों। **सुवाल :** सोने से उठ कर **आ-यतुल कुर्सी** पढ़ना कैसा है ? बा'ज़ उस्ताद हुक़्क़ा पीते हैं और शागिर्द को (कुरआने करीम) पढ़ाते जाते हैं। **जवाब :** सोने से उठ कर हाथ धो कर कुल्ली कर ले इस के बा'द **आ-यतुल कुर्सी** पढ़े। अगर मुंह में हुक़्क़े वग़ैरा की बदबू हो या कोई खाने पीने की चीज़ हो तो बिग़ैर कुल्ली किये तिलावत न करे। जो उस्ताद ऐसा करते हैं बुरा करते हैं। وَاللهُ تَعَالٰى اَعْلَم (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 375, 376) हमारे मुअ़त्तर मुअ़त्तर आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वुजूदे मस्ऊ़द हर वक़्त महक्ता रहता था, मिज़ाजे मुबारक में निहायत नफ़ासत (या'नी सफ़ाई, पाकीज़गी) थी, सो कर उठने के बा'द **मिस्वाक** करना सुन्नत है। चुनान्चे उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत है कि सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास रात को वुज़ू का पानी और **मिस्वाक** रखी जाती थी, जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात में उठते तो पहले क़ज़ाए हाजत करते फिर **मिस्वाक** फ़रमाते। (ابوداؤد ج۲ حدیث۵٦)

पसीने की बदबू वाले कपड़े : **ख़ुसूसन** गरमी में बा'ज़ लोगों के कपड़ों से नुमायां तौर पर पसीने की बदबू आ रही होती है, ऐसों को ऐसी हालत में मस्जिद का दाख़िला हराम है। बा'ज़ गिज़ाएं ऐसी होती हैं जिन के खाने से **बदबूदार पसीना** आता है ऐसे अफ़राद गिज़ाएं तब्दील फ़रमाएं।

मुंह की सफ़ाई का त़रीक़ा : **जो** मिस्वाक और खाने के बा'द ख़िलाल नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्सर उन के मुंह **बदबूदार** होते हैं। सिर्फ़ रस्मी तौर पर मिस्वाक और ख़िलाल का तिन्का दांतों से मस (Touch) कर देना काफ़ी नहीं होता। मसूढ़े ज़ख़्मी न हों इस एह़तियात़ के साथ मुम्किना सूरत में गिज़ा का एक एक ज़र्रा दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान गिज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद (या'नी बदबू) का बाइस बनते रहेंगे। दांतों की सफ़ाई का एक त़रीक़ा येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वग़ैरा पीने के बा'द और इस के इलावा भी जब जब मौक़अ़ मिले म-सलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त

www.dawateislami.net

पानी का घूंट मुंह में भर लें और जुम्बिशें देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस त़रह़ मुंह का कचरा और मैल कुचैल साफ़ होता रहेगा। सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला क़ाबिले बरदाश्त गर्म पानी हो तो येह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक अच्छा "माउथ वॉश" साबित होगा।

दाढ़ी को बदबू से बचाइये : दाढ़ी में बसा अवक़ात गिज़ाई अज्ज़ा अटक जाते हैं, कभी सोने में मुंह की **बदबूदार** राल भी दाख़िल हो जाती है और इस त़रह़ **बदूब** आती है लिहाज़ा वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से दाढ़ी धो लेना मुनासिब है और इसी त़रह़ सर के बाल भी धोते रहिये। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों उन का इक्राम करे।" (ابو داؤد ج٤ ص١٠٣ حديث٤١٦٣) या'नी इन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे। (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج٣ ص ٦١٧)

ख़ुश्बूदार तेल बनाने का आसान त़रीक़ा : सर में सरसों का तेल डालने वाला सर से टोपी या इमामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात **बदबू** का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह सर में उ़म्दा ख़ुश्बूदार तेल डाले। ख़ुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इत्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये। **ख़ुश्बूदार तेल** तय्यार है। (ख़ुश्बूदार तेल बनाने के मख़्सूस एसेन्स भी ख़ुश्बूयात की दुकानों से ह़ासिल किये जा सकते हैं)

हो सके तो रोज़ नहाइये : जिस से बन पड़े वोह रोज़ाना नहाए कि काफ़ी ह़द तक बदन की बाहरी **बदबू** ज़ाइल होगी और येह **सिह़्ह़त** के लिये भी मुफ़ीद है। (मगर मो'तकिफ़ीन मस्जिद के ग़ुस्ल ख़ानों में बिला सख़्त ज़रूरत के न नहाएं कि नमाज़ियों के लिये वुज़ू के पानी की तंगी हो सकती है और मोटर भी बार बार चलने की वज्ह से ख़राब हो सकती है नीज़ तब नहाएं जब ग़ुस्ल ख़ाने फ़िनाए मस्जिद में हों अगर ख़ारिजे मस्जिद में हों तो ग़ुस्ले जुमुआ़ की भी इजाज़त नहीं सिर्फ़ फ़र्ज़ ग़ुस्ल की इजाज़त है)

इमामा वग़ैरा को बदबू से बचाने का त़रीक़ा : बा'ज़ इस्लामी भाई काफ़ी बड़े साइज़ का इमामा शरीफ़ बांधने का जज़्बा तो रखते हैं मगर सफ़ाई रखने में कोताही कर जाते हैं और यूं

www.dawateislami.net

बसा अवक़ात ला शुऊरी में मस्जिद के अन्दर "बदबू" फैलाने के जुर्म में फंस जाते हैं। लिहाज़ा **म-दनी इल्तिजा** है कि इमामा, सरबन्द शरीफ़ और चादर इस्ति'माल करने वाले इस्लामी भाई मौसिम के ए'तिबार से या ज़रूरतन मज़ीद जल्दी जल्दी इन्हें धोने की तरकीब बनाते रहें, वरना मैल कुचैल, पसीना और तेल वग़ैरा के सबब इन चीज़ों में **बदबू** हो जाती है, अगर्चे ख़ुद को महसूस नहीं होती मगर दूसरों को बदबू के सबब काफ़ी घिन आती है, ख़ुद को इस लिये पता नहीं चलता कि जिस के पास ज़ियादा देर तक कोई मख़्सूस ख़ुश्बू या **बदबू** हो इस से उस की नाक अट जाती है।

इमामा कैसा होना चाहिये : सख़्त टोपी पर बंधे बंधाए इमामे का इस्ति'माल बेशक जाइज़ है मगर ज़ियादा दिन बंधे रहने से उस के अन्दर **बदबू** पैदा हो सकती है। अगर हो सके तो मलमल के हलके फुलके कपड़े का इमामा शरीफ़ इस्ति'माल कीजिये और इस के लिये सफ़ेद कपड़े की ऐसी टोपी पहनिये जो सर से चिपड़ी हुई हो कि सुन्नत है। बंधा बंधाया इमामा शरीफ़ सर पर रख लेने और उतार कर रख देने के बजाए बांधते वक़्त एक एक पेच कर के बांधिये और इसी तरह खोलने की तरकीब कीजिये, हो सकता है यूं बार बार हवा लगने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **बदबू** से बचत की सूरत हो। इमामा, सरबन्द, चादर और लिबास वग़ैरा उतार कर धूप में डालने से भी पसीने वग़ैरा की **बदबू** दूर हो सकती है। नीज़ इन पर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उ़म्दा इ़त्र लगाते रहना भी बदबू दूर कर सकता है। ज़िम्नन इ़त्र लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ़ भी मुला-हज़ा फ़रमा लीजिये।

ख़ुश्बू लगाने की निय्यतें और मवाक़ेअ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (مُعْجَم كبير ج٦ ص١٨٥ حديث٥٩٤٢)

इर्शादे ग़ज़ाली : ख़ुश्बू इस्ति'माल करना जाइज़ है अलबत्ता इस पर सवाब पाने के लिये अच्छी निय्यत ज़रूरी है। (إحياءُ العلوم ج٥ ص٩٧ مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

﴾1﴿ सुन्नते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है इस लिये ख़ुश्बू लगाऊंगा ﴾2﴿ लगाने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰه ﴾3﴿ ख़ुश्बू लेते या सूंघते वक़्त इस निय्यत से दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसे पसन्द करते और ब कसरत इस्ति'माल फ़रमाते थे और ﴾4﴿ अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहूंगा ﴾5﴿ मलाएका और ﴾6﴿ मुसल्मानों को फ़रहत (ख़ुशी) पहुंचाऊंगा ﴾7﴿ अ़क़्ल बढ़ेगी तो अह़कामे शर–ई याद करने, सुन्नतें सीखने और अहम दीनी काम ब आसानी अन्जाम पाने पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (ह़ज़रते अ़ल्लामा ज़बीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : अतिब्बा (या'नी त़बीब लोग) इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि ख़ुश्बू से दिमाग़ को त़ाक़त व दुरुस्ती मिलती है। (إتحاف السّادة ج ١٣ ص ٥٠) इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : "उ़म्दा ख़ुश्बू लगाने से अ़क़्ल बढ़ती है।" (إحياءُ العلوم ج ١ ص ٢٤٤)) ﴾8﴿ अपने बदन की बदबू से लोगों को बचाऊंगा (ख़ुसूसन गर्मियों में पसीने की बदबू से बचाने की निय्यत की जा सकती है) ﴾9﴿ लिबास वग़ैरा से बदबू दूर कर के मुसल्मानों को ग़ीबत के गुनाह से बचाऊंगा (क्यूं कि किसी मुसल्मान का लिबास वग़ैरा बदबूदार हो तो उस के पीछे से म–सलन इस त़रह़ कहना कि : "उस के लिबास या हाथों या मुंह से बदबू आ रही थी" ग़ीबत है। इमामे ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : जो बच सकने के बा वुजूद ख़ुद को ग़ीबत पर पेश करे वोह भी इस ग़ीबत के गुनाह में शरीक होगा (ایضاً ج ٥ ص ٩٨)) मौक़अ़ की मुना–सबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं, म–सलन : ﴾10﴿ नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा ﴾11﴿ मस्जिद **अल्लाह** का घर है इस की ता'ज़ीम की निय्यत ﴾12﴿ नमाज़ की सफ़ में साथ बैठे हुवों को राह़त पहुंचाने के लिये ﴾13﴿ नमाज़े तहज्जुद ﴾14﴿ जुमुआ़ ﴾15﴿ पीर शरीफ़ ﴾16﴿ **र–मज़ानुल मुबारक** ﴾17﴿ ईदुल फ़ित्र ﴾18﴿ ईदुल अज़्हा ﴾19﴿ शबे मीलाद ﴾20﴿ ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾21﴿ जुलूसे मीलाद ﴾22﴿ शबे मे'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴾23﴿ शबे बराअत ﴾24﴿ ग्यारहवीं शरीफ़ ﴾25﴿ यौमे रज़ा ﴾26﴿ दर्से क़ुरआन व ﴾27﴿ ह़दीस ﴾28﴿ तिलावत ﴾29﴿ अवरादो वज़ाइफ़ ﴾30﴿ दुरूद शरीफ़ ﴾30﴿ दीनी किताब का मुता–लआ़ ﴾32﴿ तदरीसे इल्मे दीन ﴾33﴿ ता'लीमे इल्मे दीन ﴾34﴿ फ़तावा नवीसी ﴾35﴿ दीनी कुतुब की

www.dawateislami.net

तस्नीफ़ो तालीफ़ ﴾36﴿ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ ﴾37﴿ इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त ﴾38﴿ दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत ﴾39﴿ म-दनी दौरा बराए नेकी की दा'वत ﴾40﴿ सुन्नतों भरा बयान करते वक़्त ﴾41﴿ आ़लिम ﴾42﴿ मां ﴾43﴿ बाप ﴾44﴿ मोमिने सालेह़ ﴾45﴿ पीर साहि़ब ﴾46﴿ मूए मुबारक व तबर्रुकाते शरीफ़ा की ज़ियारत और ﴾47﴿ मज़ार शरीफ़ की ह़ाज़िरी के मवाक़ेअ़ पर भी ता'ज़ीम की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई जा सकती है। उ़-लमाए किराम से दर्जे ज़ैल (या'नी नीचे दिये हुए) मवाक़ेअ़ पर भी ख़ुश्बू लगाने का इस्तिह़बाब (या'नी मुस्तह़ब होना) साबित है[1] ﴾48﴿ वुज़ू करने के बा'द ﴾49﴿ एह़राम की निय्यत करने से पहले लिबास और बदन दोनों पर ﴾50﴿ ह़ज का एह़राम खुल जाने पर त़वाफ़े ज़ियारत से पहले ﴾51﴿ मर्द व औ़रत दोनों के लिये "मिलाप" से पहले ﴾52﴿ मय्यित (या'नी जो मरने के क़रीब हो उस) को नज़्अ़ के वक़्त ﴾53﴿ मय्यित को नहलाते वक़्त ख़ुश्बू सुलगाना बल्कि जिस तख़्त या चारपाई पर नहलाना हो उसे तीन या पांच या सात बार धूनी देना ﴾54﴿ मय्यित को ग़ुस्ल देने के बा'द उस के बदन पर काफ़ूर (जो कि एक ख़ुश्बूदार माद्दा है उस) का पानी बहाना ﴾55﴿ मय्यित को कफ़न पहनाने के बा'द दाढ़ी और तमाम बदन पर ख़ुश्बू मलना और मवाज़ेए़ सुजूद (या'नी बदन के वोह हि़स्से जो सज्दे में ज़मीन पर लगते हैं उन) पर काफ़ूर लगाना। जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे उतना ही ज़ियादा सवाब मिलेगा। जब कि निय्यत का मौक़अ़ मह़ल भी हो और वोह निय्यत शरअ़न दुरुस्त भी हो, ज़ियादा याद न भी रहें तो कम अज़ कम दो तीन निय्यतें तो कर ही लेनी चाहिएं।

ऐ हमारे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! आज तक हम से जितनी बार भी मस्जिद में बदबू ले जाने का गुनाह हुवा हो उस से तौबा करते हैं और येह अ़ज़्म करते हैं कि आयिन्दा कभी भी मस्जिद में किसी त़रह़ की बदबू नहीं ले जाएंगे। **या रब्बे मुस्त़फ़ा** عَزَّوَجَلَّ ! हमें मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखने की सआ़दत दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर त़रह़ की ज़ाहिरी बात़िनी बदबूओं से पाक हो कर मस्जिद में ह़ाज़िरी की सआ़दत इनायत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे ख़ुश्बूदार सरकारे

1 : इस की तफ़्सील दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के फ़तवा नम्बर : 7982 ग़ैर मत़्बूआ़ में मौजूद है।

www.dawateislami.net

वाला तबार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ हमें गुनाहों की बदबूओं से नजात दे और ख़ुश्बूओं से महक्ती हुई जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मुअ़त्तर मुअ़त्तर ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

वल्लाह जो मल जाए मेरे गुल का पसीना

मांगे न कभी इ़त्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िनाए मस्जिद और मो'तकिफ़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मो'तकिफ़ बिला ज़रूरत भी फ़िनाए मस्जिद में जाए तो ए'तिकाफ़ नहीं टूटता। फ़िनाए मस्जिद से मुराद वोह जगहें हैं जो मस्जिद की मसालेह़ या'नी ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये इह़ात़ए मस्जिद के अन्दर हों, जैसे मनारा, वुज़ूख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना, ग़ुस्ल ख़ाना, मस्जिद से मुत्तसिल मद्रसा, मस्जिद से मुल्ह़क़ इमाम व मुअज़्ज़िन वग़ैरा के हुजरे, जूते उतारने की जगह वग़ैरा येह मक़ामात बा'ज़ मुआ-मलात में हुक्मे मस्जिद में हैं और बा'ज़ मुआ-मलात में ख़ारिजे मस्जिद। म-सलन यहां पर जुनुबी (या'नी जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो) जा सकता है। इसी त़रह़ इक़्तिदा और ए'तिकाफ़ के मुआ-मले में येह मक़ामात हुक्मे मस्जिद में हैं। मो'तकिफ़ बिला ज़रूरत भी यहां जा सकता है गोया वोह मस्जिद ही के किसी एक ह़िस्से में गया।

मो'तकिफ़ फ़िनाए मस्जिद में जा सकता है : ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह, साह़िबे बहारे शरीअ़त ह़ज़रत मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''फ़िनाए मस्जिद जो जगह मस्जिद से बाहर इस से मुल्ह़क़ ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये है, म-सलन जूता उतारने की जगह और ग़ुस्ल ख़ाना वग़ैरा इन में जाने से ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा।'' मज़ीद आगे फ़रमाते हैं : ''फ़िनाए मस्जिद इस मुआ-मले में हुक्मे मस्जिद में है।'' (फ़तावा अम्जदिय्या, जि. 1, स. 399)

इसी त़रह़ मनारा भी फ़िनाए मस्जिद है, अगर इस का रास्ता मस्जिद की चार दीवारी

www.dawateislami.net

(बाउन्ड्री वॉल) के अन्दर हो तो मो'तकिफ़ बिला तकल्लुफ़ इस पर जा सकता है और अगर मस्जिद के बाहर से रास्ता हो तो सिर्फ़ अज़ान देने के लिये जा सकता है कि अज़ान देना ह़ाजते शर–ई है।

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़तवा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "बल्कि जब वोह मदारिसे मु–तअ़ल्लिक़े मस्जिद ह़ुदूदे मस्जिद के अन्दर हैं, उन में रास्ता फ़ासिल नहीं सिर्फ़ एक फ़सील (या'नी दीवार) से सह़नों का इम्तियाज़ कर दिया है तो उन में जाना मस्जिद से बाहर जाना ही नहीं, यहां तक कि ऐसी जगह मो'तकिफ़ का जाना जाइज़ कि वोह गोया मस्जिद ही का एक क़ित्अ़ा (या'नी हिस्सा) है।"

वज़ाह़त : इस इ़बारत का साफ़ मफ़्हूम येह है कि मदारिस मु–तअ़ल्लिक़े मस्जिद थे या'नी जिस त़रह़ मसाजिद में ज़िम्नी मदारिस लगाए जाते हैं जब कि वोह जगह जहां मद्रसा लगता है ज़रूरिय्यात व मसालेह़े मस्जिद के लिये वक़्फ़ होती है तो दर ह़क़ीक़त उन मदारिस में जाना फ़िनाए मस्जिद ही में जाना हुवा, इस लिये इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया कि वहां मो'तकिफ़ जा सकता है। यहां येह ग़लत़ फ़हमी नहीं होनी चाहिये कि मसाजिद के साथ मुत्तसिल जुदागाना मदारिस में जाना भी मो'तकिफ़ का जाइज़ है इस लिये कि जुदागाना मुस्तक़िल मदारिस पर फ़िनाए मस्जिद का हरगिज़ इत़्लाक़ नहीं होता उन की मुस्तक़िल वक़्फ़ की ह़ैसिय्यत होती है इस लिये ऐसे मदारिस अगर्चे मस्जिद के साथ मुत्तसिल इह़ाते़ में बने हुए हों वहां जाने से ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

रद्दुल मुह़तार (जिल्द 3 सफ़ह़ा 436) में **"बदा–इ़उ़स्सनाएअ़"** के ह़वाले से है : अगर मो'तकिफ़ मनारे पर चढ़ा तो बिल इत्तिफ़ाक़ उस का ए'तिकाफ़ फ़ासिद न होगा क्यूं कि मनारे मस्जिद ही (के हुक्म) में है। (फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 453)

मस्जिद की छत पर चढ़ना : सह़्न, मस्जिद का हिस्सा है लिहाज़ा मो'तकिफ़ को सह़्ने मस्जिद में आना जाना बैठे रहना मुत़्लक़न जाइज़ है। मस्जिद की छत पर भी आ जा सकता है लेकिन येह उस वक़्त है कि छत पर जाने का रास्ता मस्जिद के अन्दर से हो। अगर ऊपर जाने के

www.dawateislami.net

लिये सीढ़ियां इह़ात़ए मस्जिद से बाहर हों तो मो'तकिफ़ नहीं जा सकता, अगर जाएगा तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा। येह भी याद रहे कि मो'तकिफ़ व ग़ैर मो'तकिफ़ दोनों को मस्जिद की छत पर बिला ज़रूरत चढ़ना मकरूह है कि येह बे अ-दबी है।

मो'तकिफ़ के मस्जिद से बाहर निकलने की सूरतें : **ए'तिकाफ़** के दौरान दो वुजूहात की बिना पर (इह़ात़ए) मस्जिद से बाहर निकलने की इजाज़त है : ﴿1﴾ ह़ाजते शर-ई ﴿2﴾ ह़ाजते त़ब्ई।

(1) ह़ाजते शर-ई : **ह़ाजते** शर-ई म-सलन नमाज़े जुमुआ अदा करने के लिये जाना या अज़ान कहने के लिये जाना वग़ैरा।

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से ह़ाजते शर-ई के मु-तअ़ल्लिक़ 3 म-दनी फूल

﴿1﴾ **अगर** मनारे का रास्ता ख़ारिजे मस्जिद (या'नी इह़ात़ए मस्जिद से बाहर) हो तो भी अज़ान के लिये मो'तकिफ़ जा सकता है क्यूं कि अब येह मस्जिद से निकलना ह़ाजते शर-ई की वज्ह से है। (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۵۰۲ مُلَخَّصاً)

﴿2﴾ **अगर** वहां जुमुआ न होता हो तो मो'तकिफ़ जुमुआ की नमाज़ के लिये दूसरी मस्जिद में जा सकता है। और अपनी ए'तिकाफ़ गाह से अन्दाज़न ऐसे वक़्त में निकले कि ख़ुत़्बा शुरूअ़ होने से पहले वहां पहुंच कर चार रक्अ़त सुन्नत पढ़ सके और नमाज़े जुमुआ के बा'द इतनी देर मज़ीद ठहर सकता है कि चार या छ[6] रक्अ़त पढ़ ले। और अगर इस से ज़ियादा ठहरा रहा बल्कि बाक़ी ए'तिकाफ़ अगर वहीं पूरा कर लिया तब भी ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा। लेकिन नमाज़े जुमुआ के बा'द छ[6] रक्अ़त से ज़ियादा ठहरना मकरूह है। (دُرِّ مُختَار، رَدُّالْمُحتار ج۳ص۵۰۲)

﴿3﴾ **अगर** अपने मह़ल्ले की ऐसी मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया जिस में जमाअ़त न होती हो तो अब जमाअ़त के लिये निकलने की इजाज़त नहीं क्यूं कि अब अफ़्ज़ल येही है कि बिग़ैर जमाअ़त ही इस मस्जिद में नमाज़ अदा की जाए। (جَدُّ المُمتار ج٤ص٢٨٨)

www.dawateislami.net

(2) हाजते तब्ई

हाजते तब्ई के मु-तअ़ल्लिक़ 4 पैरे : ﴾1﴿ **हाजते** तब्ई, कि मस्जिद में पूरी न हो सके जैसे पाख़ाना, पेशाब, वुज़ू और ग़ुस्ल की ज़रूरत हो तो ग़ुस्ल, मगर ग़ुस्ल व वुज़ू में येह शर्त है कि मस्जिद में न हो सकें या'नी कोई ऐसी चीज़ न हो जिस में वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी ले सके इस तरह कि मस्जिद में पानी की कोई बूंद न गिरे कि वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी मस्जिद में गिराना ना जाइज़ है और लगन वग़ैरा मौजूद हो कि उस में वुज़ू इस तरह कर सकता है कि कोई छींट मस्जिद में न गिरे तो वुज़ू के लिये मस्जिद से निकलना जाइज़ नहीं, निकलेगा तो ए'तिकाफ़ जाता रहेगा। यूंही अगर मस्जिद में वुज़ू व ग़ुस्ल के लिये जगह बनी हो या हौज़ हो तो बाहर जाने की अब इजाज़त नहीं। (دُرِّمُختار،رَدُّالمُحتار ج٣ ص٥٠١, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1023, 1024)

﴾2﴿ **क़ज़ाए** हाजत को गया तो तहारत कर के फ़ौरन चला आए ठहरने की इजाज़त नहीं और अगर मो'तकिफ़ का मकान मस्जिद से दूर है और इस के दोस्त का मकान क़रीब तो येह ज़रूर नहीं कि दोस्त के यहां क़ज़ाए हाजत को जाए बल्कि अपने मकान पर भी जा सकता है और अगर इस के ख़ुद दो मकान हैं एक नज़्दीक दूसरा दूर तो नज़्दीक वाले मकान में जाए कि बा'ज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं दूर वाले में जाएगा तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा। (رَدُّالمُحتار ج٣ ص٥٠١، عالمگیری ج١ ص٢١٢)

﴾3﴿ **आ़म** तौर पर नमाज़ियों की सहूलत के लिये मस्जिद के इहाते में बैतुल ख़ला, ग़ुस्ल ख़ाना, इस्तिन्जा ख़ाना और वुज़ूख़ाना होता है। लिहाज़ा मो'तकिफ़ उन ही को इस्ति'माल करे।

﴾4﴿ **बा'ज़** मसाजिद में इस्तिन्जा ख़ानों, ग़ुस्ल ख़ानों वग़ैरा के लिये रास्ता इहातए मस्जिद (या'नी फ़िनाए मस्जिद) के भी बाहर से होता है लिहाज़ा इन इस्तिन्जा ख़ानों और ग़ुस्ल ख़ानों वग़ैरा में हाजते तब्ई के इलावा नहीं जा सकते।

ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों का बयान : अब उन चीज़ों का बयान किया जाता है जिन से ए'तिकाफ़ टूट जाता है। जहां जहां मस्जिद से निकलने पर ए'तिकाफ़ टूटने का हुक्म है वहां इहातए मस्जिद (या'नी इमारते मस्जिद की बाउन्ड्री वॉल) से निकलना मुराद है।

www.dawateislami.net

"सग़्यिदी कुत़्बे मदीना" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ तोड़ने वाली चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 12 म-दनी फूल

(1) **ए'तिकाफ़े** वाजिब में मो'तकिफ़ को मस्जिद से बिग़ैर उ़ज़्र निकलना ह़राम है, अगर निकला तो ए'तिकाफ़ जाता रहा अगर्चे भूल कर निकला हो। यूं ही (र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का) ए'तिकाफ़े सुन्नत भी बिग़ैर उ़ज़्र निकलने से जाता रहता है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1023)

(2) **मस्जिद** से निकलना उस वक़्त कहा जाएगा जब कि पाउं मस्जिद से इस त़रह़ बाहर हो जाएं कि उसे उ़र्फ़न मस्जिद से निकलना कहा जा सके। अगर सिर्फ़ सर मस्जिद से निकाला तो इस से ए'तिकाफ़ फ़ासिद नहीं होगा। (اَلْبَحرُالرَّائِق ج٢ص٥٣٠)

(3) **शर-ई** इजाज़त से बाहर निकले, लेकिन फ़राग़त के बा'द एक लम्ह़े के लिये भी बाहर ठहर गए तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

(4) **चूंकि** इस में रोज़ा शर्त़ है, इस लिये रोज़ा तोड़ देने से भी ए'तिकाफ़ टूट जाता है। ख़्वाह येह रोज़ा किसी उ़ज़्र से तोड़ा हो या बिला उ़ज़्र, जान बूझ कर तोड़ा हो या ग़-लत़ी से टूटा हो, हर सूरत में ए'तिकाफ़ टूट जाता है। **अगर** भूल कर कुछ खा पी लिया, तो न रोज़ा टूटा न ए'तिकाफ़।

(5) **येह** ज़ाबित़ा याद रखिये कि वोह तमाम उमूर जिन से रोज़ा टूट जाता है, ए'तिकाफ़ भी टूट जाता है।

(6) **पाख़ाना** पेशाब के लिये (इह़ात़ए मस्जिद से बाहर) गया था। क़र्ज़ ख़्वाह ने रोक लिया, **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया। (عالمگیری ج١ص٢١٢)

(7) **बेहोशी** और जुनून अगर त़वील हों कि रोज़ा न हो सके तो **ए'तिकाफ़** जाता रहा और क़ज़ा वाजिब है, अगर्चे कई साल के बा'द सिह़ह़त हो। (اَیضاًص٢١٣)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

﴾8﴿ मो'तकिफ़ मस्जिद ही में खाए पिये सोए, इन उमूर के लिये मस्जिद से बाहर हो जाएगा तो **ए'तिकाफ़** टूट जाएगा। (اَلْبَحْرُالرَّائِق ج٢ ص٥٣٠) मगर येह ख़याल रहे कि मस्जिद आलूदा न हो।

﴾9﴿ **खाना** लाने वाला कोई नहीं तो फिर अपना खाना लाने के लिये आप बाहर जा सकते हैं, लेकिन मस्जिद में ला कर खाइये।

﴾10﴿ **मरज़** के इलाज के लिये मस्जिद से निकले तो **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया। नींद की हालत में चलने की बीमारी हो और नींद में चलते चलते मस्जिद से निकल जाए तो ए'तिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा।

﴾11﴿ **अगर** डूबने या जलने वाले के बचाने के लिये मस्जिद से बाहर गया या गवाही देने के लिये गया या जिहाद में सब लोगों का बुलावा हुवा और येह भी निकला या मरीज़ की इयादत या नमाज़े जनाज़ा के लिये गया, अगर्चे कोई दूसरा पढ़ने वाला न हो तो इन सब सूरतों में **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1025)

﴾12﴿ **कोई** बद नसीब दौराने ए'तिकाफ़ **मुरतद** हो गया (نَعُوْذُ بِاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) तो **ए'तिकाफ़** फ़ासिद हो गया और फिर अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुरतद को ईमान की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए तो फ़ासिद शुदा ए'तिकाफ़ की क़ज़ा नहीं। (ماخوذاز دُرِّمُختَار ج٣ ص٥٠٤)

मेरी कमर का दर्द चला गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ए'तिकाफ़ की अ़ज़मत के क्या कहने और अगर ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत भी मुयस्सर आ जाए तो क्या ही बात है ! चुनान्चे **अ़त्तारआबाद** (जेकबआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले आवारा गर्द और गन्दी ज़ेहनिय्यत के मालिक थे, दोस्तों की मंडलियों में फ़ोह्श बातें करना फिर ऊपर से ज़ोरदार क़हक़हे मारना उन का ख़ास मश्ग़ला था। एक ना शाइस्ता गुनाह की वज्ह से उन की **कमर में दर्द** रहने लगा था, जो किसी त़रह के इलाज से न जाता था। उन की क़िस्मत का सितारा यूं चमका कि बा'ज़ शनासा इस्लामी भाइयों के इसरार पर आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि.) में **आ़शिक़ाने**

www.dawateislami.net

रसूल के साथ **मेमन मस्जिद** (अत़्त़ारआबाद) में मो'तकिफ़ हो गए, वोह गोया किसी नई दुन्या में आ गए थे, पांचों नमाज़ों की बहारें, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआएं, सुन्नतों भरे ह़ल्क़े फिर ऊपर से **आ़शिक़ाने रसूल** की शफ़्क़तें और उन की ब–र–कतें, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दौराने ए 'तिकाफ़ उन की कमर का दर्द बिग़ैर किसी दवा के ख़ुद बख़ुद ठीक हो गया** और उन के क़ल्ब में म–दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया। उन्हों ने गुनाहों से तौबा की, चेहरे को म–दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की मुबारक निशानी दाढ़ी से आरास्ता किया और सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर भी सर सब्ज़ हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **41 दिन का म–दनी क़ाफ़िला कोर्स** करने की सआ़दत ह़ासिल की और दा'वते इस्लामी के म–दनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हो गए।

اِنْ شَآءَ اللّٰہ भाई ! सुधर जाओगे, म–दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, म–दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चुप का रोज़ा : **हु़ज़ूरे** पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "सौमे विसाल" (या'नी बिग़ैर स–ह़री व इफ़्त़ार के मुसल्सल रोज़ा रखने) और "सौमे सुकूत" (या'नी "चुप का रोज़ा" रखने) से मन्अ़ फ़रमाया। (مُسندِ امام اَعظم ص۱۹۲)

बा'ज़ लोगों में येह ग़लत़ फ़हमी पाई जाती है कि मो'तकिफ़ को मस्जिद में पर्दे लगा कर उस के अन्दर बिल्कुल चुपचाप पड़े रहना चाहिये, बल्कि बा'ज़ तो इसे ज़रूरी समझते हैं जब कि ऐसा नहीं। अगर ज़रूरत हो और कोई रुकावट न हो तो पर्दा लगा लेना बहुत उ़म्दा है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से **ए 'तिकाफ़** के लिये ख़ैमा लगाना साबित है, अलबत्ता बिग़ैर पर्दा लगाए भी **ए 'तिकाफ़** दुरुस्त है। ख़ामोशी को बज़ाते ख़ुद इबादत समझना ग़लत़ है चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 1026 ता 1027 पर मस्अला 32 है : मो'तकिफ़ अगर ब निय्यते इबादत सुकूत करे या'नी चुप रहने को सवाब की बात समझे तो **मक्रूहे तह़रीमी** है और अगर

www.dawateislami.net

चुप रहना सवाब की बात समझ कर न हो तो ह़रज नहीं। और बुरी बात से चुप रहा तो येह मक्रूह नहीं, बल्कि येह तो आ'ला द–रजे की चीज़ है क्यूं कि बुरी बात ज़बान से न निकालना वाजिब है और जिस बात में न सवाब हो न गुनाह या'नी मुबाह़ बात भी मो'तकिफ़ को मक्रूह है, मगर ब वक़्ते ज़रूरत और बे ज़रूरत मस्जिद में मुबाह़ कलाम नेकियों को ऐसे खाता है जैसे आग लकड़ी को। (دُرِّمُختَار ج۳ص۵۰۷)

ह़ाजत रवाई और एक दिन के ए'तिकाफ़ की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا मस्जिदे न–बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में मो'तकिफ़ थे। एक ग़मगीन शख़्स आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते बा ब–र–कत में ह़ाज़िर हुवा। वज्हे ग़म दरयाफ़्त करने पर उस ने अ़र्ज़ किया : "ऐ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचाजान के लख़्ते जिगर ! फ़ुलां का मेरे ज़िम्मे कुछ ह़क़ है। मैं उस का ह़क़ अदा करने की इस्तित़ाअ़त (या'नी त़ाक़त) नहीं रखता।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हारी सिफ़ारिश करूं ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बेहतर समझें।" येह सुन कर ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़ौरन मस्जिदे न–बविय्यिश्शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बाहर निकल आए। येह देख कर वोह शख़्स अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "आ़लीजाह ! क्या आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **ए'तिकाफ़** भूल गए ?" फ़रमाया : "ना, **ए'तिकाफ़** नहीं भूला।" फिर म–दनी ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे नूरबार की त़रफ़ इशारा करते हुए अश्कबार हो गए। और फ़रमाया : "ज़ियादा अ़र्सा नहीं गुज़रा कि मैं ने इस मज़ार शरीफ़ में आराम फ़रमाने वाले मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ुद अपने कानों से सुना है कि फ़रमा रहे थे : "जो अपने किसी भाई की **ह़ाजत रवाई** के लिये चले और उस को पूरा कर दे तो येह **दस साल के ए'तिकाफ़** से अफ़्ज़ल है और जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये **एक दिन का ए'तिकाफ़** करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दक़ें ह़ाइल फ़रमा देगा हर ख़न्दक़ का फ़ासिला मशरिक़ो मग़रिब के दरमियानी फ़ासिले से भी ज़ियादा होगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۴۲۴ حدیث ۳۹۶۵ مُلَخَّصًا) **अल्लाहु रब्बुल**

www.dawateislami.net

इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلّم अ़-रबी लुग़त की मश्हूर किताब "**अल क़ामूसुल मुह़ीत़**" में है : ख़न्दक़ उस गढ़े को कहते हैं जो किसी शह्‌र के इर्द गिर्द खोदा जाता है ।[1] मुराद येह है कि वोह जहन्नम से बहुत दूर कर दिया जाता है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللهُ تَعالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुसलमान को ख़ुश करने की फ़ज़ीलत : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! जब एक दिन के **ए'तिकाफ़** की इतनी फ़ज़ीलत है तो फिर "**दस** साल के **ए'तिकाफ़** से भी अफ़्ज़ल" अ़मल की ब-र-कतों का कौन अन्दाज़ा कर सकता है ! इस **ह़िकायत** से अपने इस्लामी भाइयों की **ह़ाजत रवाई** की फ़ज़ीलत भी मा'लूम हुई । याद रहे ! ह़ाजत रवाई के लिये भी मस्जिद से बाहर निकलने से ए'तिकाफ़ टूट जाता है । हम अगर किसी की ज़रूरत पूरी कर देंगे तो उस का दिल ख़ुश हो जाएगा और दिले मुस्लिम में ख़ुशी दाख़िल करने के भी क्या कहने ! चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "फ़राइज़ के बा'द सब आ'माल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा प्यारा, मुसलमान का दिल ख़ुश करना है ।" (مُعْجَم کبیر ج۱۱ ص۵۹ حدیث ۱۱۰۷۹) वाक़ेई अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं तो दुन्या का नक़्शा ही बदल जाए । लेकिन आह ! आज तो मुसलमान की इ़ज़्ज़तो आबरू और इस के जानो माल मुसलमान ही के हाथों पामाल होते नज़र आ रहे हैं ! **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हमें आपस की नफ़्रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की सआ़दत इनायत फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلّم

"मस्जिदे न-बवी" के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ में जाइज़ कामों की इजाज़त पर मुश्तमिल 8 म-दनी फूल

(1) **खाना**, पीना, सोना (मगर मस्जिद की दरी पर खाने और सोने के बजाए अपनी चादर या चटाई

[1] : القاموس المحیط ج۲ ص۱۱۷۰

www.dawateislami.net

पर खाएं और सोएं, मगर अपनी चादर और चटाई को गिज़ा वग़ैरा की आलू-दगी से बचाना ज़रूरी है ताकि बदबू न हो)

﴾2﴿ **ज़रूरतन** दुन्यवी बातचीत करना। (मगर आहिस्तगी के साथ और फ़ालतू बातें हरगिज़ मत कीजिये)

﴾3﴿ **मस्जिद** में कपड़े तब्दील करना, इत्र लगाना, सर या दाढ़ी में तेल डालना।

﴾4﴿ **दाढ़ी** का ख़त बनवाना, ज़ुल्फ़ें तराशना, कंघी करना, मगर इन सब कामों में येह एहतियात ज़रूरी है कि कोई बाल मस्जिद में न गिरे, तेल या खाने वग़ैरा से मस्जिद की सफ़ें और दीवारें वग़ैरा आलूदा न हों। इस की आसान सूरत येह है कि येह काम वुज़ूख़ाने या फ़िनाए मस्जिद में अपनी चादर बिछा कर करें।

﴾5﴿ **मस्जिद** में बिला उजरत किसी मरीज़ का मुआ-यना करना, दवा बताना या नुस्ख़ा लिख कर देना।

﴾6﴿ **मस्जिद** में बिला उजरत क़ुरआने करीम या इल्मे दीन पढ़ना, पढ़ाना या सुन्नतें और दुआएं सीखना, सिखाना।

﴾7﴿ **अपनी** या अह्लो इयाल की ज़रूरत के लिये मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त मो'तकिफ़ के लिये जाइज़ है। मगर तिजारत की कोई चीज़ मस्जिद में नहीं ला सकते। हां अगर थोड़ी सी चीज़ है कि मस्जिद में जगह न घिरे तो ला सकते हैं। ख़रीदो फ़रोख़्त सिर्फ़ ज़रूरत के लिये हो और माल कमाना मक़्सूद हो तो जाइज़ नहीं, चाहे वोह माल मस्जिद के बाहर ही क्यूं न हो।

(دُرِّمُختَار ج٣ص٥٠٦, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1026)

﴾8﴿ **कपड़े**, बरतन वग़ैरा मस्जिद के अन्दर धोना जाइज़ है बशर्ते कि मस्जिद की दरी या फ़र्श पर उस का कोई छींटा न पड़े इस की सूरत येह है कि किसी बड़े बरतन वग़ैरा में धोएं।

इन बातों के इलावा भी तमाम वोह काम जो ए'तिकाफ़ के लिये मुफ़्सिद व मम्नूअ़ नहीं और फ़ी

www.dawateislami.net

नफ़्सिही जाइज़ भी हैं और उन से मस्जिद की बे हुरमती भी नहीं होती और किसी इबादत करने या सोने वाले के लिये बाइसे तश्वीश भी नहीं, मो'तकिफ़ के लिये जाइज़ हैं ।

ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का सुन्नत ए'तिकाफ़ टूट गया तो आप के ज़िम्मे सिर्फ़ उस एक दिन की क़ज़ा है जिस दिन **ए'तिकाफ़** टूटा है, अगर माहे र-मज़ान शरीफ़ के दिन बाक़ी हैं तो उन में भी क़ज़ा हो सकती है, वरना बा'द में किसी दिन कर लीजिये । मगर ईदुल फ़ित्र और ज़ुल हिज्जतिल ह़राम की दसवीं ता तेरहवीं के इलावा कि इन पांच दिनों के रोज़े मक्रूहे तह़रीमी हैं । **क़ज़ा का त़रीक़ा** येह है कि किसी दिन ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त (बल्कि एह़तियात़ इस में है कि चन्द मिनट क़ब्ल) ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ मस्जिद में दाख़िल हो जाइये और अब जो दिन आएगा उस के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मो'तकिफ़ रहिये । इस में रोज़ा शर्त़ है ।

ए'तिकाफ़ का फ़िदया : अगर क़ज़ा करने की मोहलत मिलने के बा वुजूद क़ज़ा न की और मौत का वक़्त आ पहुंचा तो वारिसों को वसिय्यत करना वाजिब है कि वोह इस ए'तिकाफ़ के बदले फ़िदया अदा कर दें, अगर वसिय्यत न की और वु-रसा फ़िदये की अदाएगी की इजाज़त दे दें तो भी फ़िदया अदा करना जाइज़ है । (عالمگیری ج ۱ ص ۲۱٤) **फ़िदया** अदा करना ज़ियादा मुश्किल नहीं । ए'तिकाफ़ के फ़िदये की निय्यत से किसी मुस्तह़िक़्क़े ज़कात को **स-द-क़ए फ़ित्र** की मिक़्दार में (या'नी 2 किलो में 80 ग्राम कम) गेहूं या इस की रक़म अदा कर दीजिये ।

ए'तिकाफ़ तोड़ने की तौबा : अगर ए'तिकाफ़ किसी सह़ीह़ मजबूरी के तह़त तोड़ा था या भूले से टूटा तो गुनाह नहीं और अगर जान बूझ कर बिग़ैर किसी सह़ीह़ मजबूरी के तोड़ा था तो येह गुनाह है लिहाज़ा क़ज़ा के साथ साथ **तौबा** भी कीजिये ।

मश्हूर बेन्ड पार्टी के मालिक की तौबा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल में आ कर बे शुमार बिगड़े हुए अफ़राद नमाज़ों और सुन्नतों के पाबन्द हो गए, इस ज़िम्न में एक मुश्कबार

www.dawateislami.net

म-दनी बहार मुला-हज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **मन्दसोर** शहर (M.P. अल हिन्द) की मश्हूर **बेन्ड पार्टी** का मालिक एक मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** 1426 सि.हि. में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गया। **तरबियती ह़ल्क़ों** में गुनाहों की तबाह कारियां सुन कर उस का दिल चोट खा गया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, **दाढ़ी** सजाने और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ एक माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र करने की निय्यत की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **बेन्ड बाजे बजाने का गुनाहों भरा ह़राम रोज़गार उस ने तर्क कर दिया।**

चोट खा जाएगा इक न इक रोज़ दिल, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

फ़ज़्ले रब से हिदायत भी जाएगी मिल, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मो'तकिफ़ीन के लिये ज़रूरत की अश्या : ﴿1﴾ यक्सूई ह़ासिल करने और ह़िफ़ाज़ते सामान के लिये अगर पर्दा लगाना हो तो ह़स्बे ज़रूरत कपड़ा (सब्ज़ हो तो मदीना मदीना) डोरी और बक्सूए (सेफ़्टी पिनें) ﴿2﴾ **कन्ज़ुल ईमान** शरीफ़ ﴿3﴾ अपने पीर साहिब का श-जरा ﴿4﴾ तस्बीह़ ﴿5﴾ मिस्वाक ﴿6﴾ म-दनी इन्आ़मात का रिसाला ﴿7﴾ क़लम ﴿8﴾ इ़त्र ﴿9﴾ क़ुफ़्ले मदीना पेड ﴿10﴾ क़ुफ़्ले मदीना की ऐनक ﴿11﴾ डायरी ﴿12﴾ ह़स्बे ज़रूरत इस्लामी किताबें ﴿13﴾ सूई धागा ﴿14﴾ नाख़ुन तराश ﴿15﴾ क़ैंची ﴿16﴾ सुरमा, सलाई ﴿17﴾ तेल की शीशी ﴿18﴾ कंघा ﴿19﴾ आईना ﴿20﴾ ह़स्बे ज़रूरत सुन्नतों भरे मल्बूसात (मौसिम के मुताबिक़) ﴿21﴾ इमामा शरीफ़ मअ़ सरबन्द और टोपी ﴿22﴾ सर पर ओढ़ने के लिये सफ़ेद चादर ﴿23﴾ तहबन्द ﴿24﴾ सोने के लिये ऐसी चटाई जिस से मस्जिद में तिन्के न झड़ें ﴿25﴾ ज़रूरत हो तो तक्या ﴿26﴾ सोने में ओढ़ने के लिये चादर या कम्बल ﴿27﴾ सोते वक़्त सिरहाने रखने के लिये सुन्नत बक्स ﴿28﴾ पर्दे में पर्दा करने के लिये कथ्थई (Brown) चादर ﴿29﴾ मिट्टी की रिकाबी ﴿30﴾ मिट्टी का प्याला ﴿31﴾

www.dawateislami.net

थरमोस ﴾32﴿ दस्तर ख़्वान ﴾33﴿ दांतों के ख़िलाल के लिये तिन्के ﴾34﴿ तोलिया ﴾35﴿ टिशू पेपर्ज़ ﴾36﴿ ज़रूरत हो तो टॉयलेट पेपर्ज़ ﴾37﴿ दर्दे सर, नज़्ला, बुख़ार वग़ैरा के लिये गोलियां ﴾38﴿ हस्बे ज़रूरत रक़म ﴾39﴿ मस्जिद के गिरे पड़े तिन्के वग़ैरा जम्अ़ करने के लिये शोंपर (कुछ ज़ियादा ले लीजिये ताकि दूसरों को दे सकें)

म-दनी मश्वरा : अपनी चीज़ों पर कोई निशानी (म-सलन ☪ ☆ वग़ैरा) बना लीजिये ताकि ख़ल्त़ मल्त़ (Mix) हो जाने की सूरत में तलाश्ना आसान हो, चादर वग़ैरा पर अपना नाम बल्कि कोई अंग्रेज़ी हर्फ़ भी न लिखिये वरना हो सकता है बे अ-दबी होती रहे (निशानियों के नमूने इसी बाब "फ़ैज़ाने ए'तिकाफ़" के आख़िरी सफ़्हे पर मुला-हज़ा फ़रमाइये)

"र-मज़ान शरीफ़ के ए'तिकाफ़ की भी क्या बात है !" के तीस हुरूफ़ की निस्बत से ए'तिकाफ़ के 30 म-दनी फूल

﴾1﴿ **मस्जिद** की दीवारों या दरियों वग़ैरा पर नाक या कान का मैल और चिकने हाथ मत लगाइये, फ़िनाए मस्जिद के कोने खदरों में भी पान की पीक वग़ैरा न डालिये। मस्जिद की सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखिये, फ़र्शे मस्जिद पर गिरे पड़े बालों के गुच्छे और तिन्के वग़ैरा डालने के लिये हो सके तो एक शोंपर जेब में रख लें। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मस्जिद से अज़िय्यत की चीज़ निकाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।

(ابنِ ماجه ج١ ص٤١٩ حديث٧٥٧)

﴾2﴿ **मस्जिद** की दरियों के धागे और चटाइयों के तिन्के नोचने से परहेज़ कीजिये। (हर जगह इस बात का ख़याल रखिये)

﴾3﴿ **मस्जिद** में अपने लिये मांगना जाइज़ नहीं और उसे देने से भी उ़-लमा ने मन्अ़ फ़रमाया है यहां तक कि इमाम इस्माईल ज़ाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जो मस्जिद के साइल को एक पैसा दे उसे चाहिये कि सत्तर[70] पैसे **अल्लाह तआ़ला** के नाम पर और दे कि उस पैसे का कफ़्फ़ारा हों, और किसी दूसरे के लिये मांगा या मस्जिद ख़्वाह किसी और ज़रूरते दीनी

www.dawateislami.net

के लिये चन्दा करना जाइज़ और सुन्नत से साबित है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 418)

《4》 **मो'तकिफ़** ने सिर्फ़ एक पाउं मस्जिद से बाहर निकाला तो कोई ह़रज नहीं ।

《5》 **दोनों** हाथ मअ़ सर भी अगर मस्जिद से बाहर निकाल दिये तो मुज़ा-यक़ा नहीं ।

《6》 **बे ख़याली** में मस्जिद से बाहर निकल गए और याद आने पर फ़ौरन मस्जिद के अन्दर आ भी गए फिर भी **ए'तिकाफ़** टूट चुका ।

《7》 **रात** के वक़्त जितनी देर तक मस्जिद में बत्ती जलाने का उ़र्फ़ (रवाज) है उतनी देर तक उस की रोशनी में दीनी मुता-लआ़ किया जा सकता है ।

《8》 **अख़्बारात** जानदारों की तसावीर बल्कि फ़िल्मी इश्तिहारात से उ़मूमन पुर होते हैं लिहाज़ा मस्जिद में इन के मुता-लए से बचिये ।

《9》 **चोर** अपने या किसी इस्लामी भाई के जूते वग़ैरा चुरा कर भागा तो उस को पकड़ने के लिये मस्जिद से बाहर निकल गए तो **ए'तिकाफ़** टूट गया ।

《10》 **मस्जिद** में बयान करने या ना'त शरीफ़ वग़ैरा पढ़ने में एह़तियात़ लाज़िमी है, किसी की इबादत या आराम में ख़लल नहीं पड़ना चाहिये ।

《11》 **मस्जिद** की छत वग़ैरा अगर गिर पड़ी या किसी ने ज़बर दस्ती निकाल दिया तो फ़ौरन दूसरी मस्जिद में मो'तकिफ़ हो जाएं, **ए'तिकाफ़** सह़ीह़ हो जाएगा ।

《12》 **दौराने** ए'तिकाफ़ ह़त्तल इम्कान अपना वक़्त, नवाफ़िल, तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो दुरूद, मुता-ल-अ़ए कुतुबे इस्लामिय्या और सुन्नतें और दुआ़एं वग़ैरा सीखने सिखाने में गुज़ारिये ।

《13》 **ए'तिकाफ़** के लिये अगर मस्जिद में पर्दा लगाएं तो कम से कम जगह घेरें । मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर (मस्जिद में) चीज़ें रखे जिन से नमाज़ की जगह रुके तो सख़्त ना जाइज़ है । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 97)

《14》 **मस्जिद** में शोरो गुल, हंसी मज़ाक़ वग़ैरा करना गुनाह है ।

《15》 **आप** घर से आए तो नेकियां कमाने मगर कहीं ऐसा न हो कि मस्जिद की बे अ-दबियां

www.dawateislami.net

कर के गुनाहों का ढेर ले कर पलटें। लिहाज़ा ख़बरदार ! मस्जिद में बिला ज़रूरत कोई लफ़्ज़ मुंह से न निकले, ज़बान पर मज़बूत **कुफ़्ले मदीना** लगाइये।

﴾16﴿ **अपनी** ज़रूरत की अश्या पहले ही से मुहय्या कर लीजिये ताकि किसी से सुवाल की ह़ाजत न रहे, दूसरों से चीज़ें मांगते रहना भी अच्छी आ़दत नहीं। चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 695 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**अल्लाह वालों की बातें**" जिल्द 1 सफ़ह़ा 340 ता 341 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मुझे एक चीज़ की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ज़मानत देता हूं।" इर्शाद फ़रमाया : "कभी किसी से सुवाल न करना।" रावी फ़रमाते हैं : "बा'ज़ अवक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ऊंट पर सुवार होते और कोड़ा गिर जाता तो उस के लिये भी किसी से सुवाल न करते बल्कि ख़ुद उतर कर उठा लेते।"

﴾17﴿ **ख़ूब** ख़ूब तिलावते क़ुरआन कीजिये मगर येह मस्अला ज़ेह्न में रखिये जैसा कि **बहारे शरीअ़त** जिल्द 1 सफ़ह़ा 552 पर मस्अला 53 है : "मज्मअ़ में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह ह़राम है, अक्सर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं येह ह़राम है, अगर चन्द शख़्स पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें।"

﴾18﴿ **दीगर** मो'तकिफ़ीन के हुक़ूक़े सोह़बत का लिह़ाज़ रखिये उन की ख़िदमत अपने लिये बाइ़से सआ़दत समझिये, उन की ज़रूरिय्यात पूरी करने की सअ़्य कीजिये और ईसार का मुज़ा-हरा करते रहिये। ईसार का सवाब बे शुमार है, ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है।**" (ابنِ عساکر ج۳۱ ص۱۴۲)

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

19 **म–दनी** इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और इस की हमेशा के लिये आ़दत बना लीजिये।

20 **मस्जिद** के फ़र्श, दरी या चटाई पर सोने से परहेज़ कीजिये कि पसीने की बदबू और सर के तेल का धब्बा होने नीज़ गन्दे ख़्वाब की सूरत में नापाक हो जाने का भी ख़त़रा है। लिहाज़ा अपनी चटाई या मोटी चादर बिछा लीजिये।

21 **घर** हो या मस्जिद, जहां भी सोएं "पर्दे में पर्दा" कर लीजिये, पाजामे पर तहबन्द बांध लीजिये या एक चादर तहबन्द की त़रह़ लपेट लीजिये और लैट कर ऊपर भी एक चादर या लिह़ाफ़ ओढ़ लीजिये क्यूं कि नींद में बा'ज़ अवक़ात कपड़े पहने हुए भी مَعَاذَاللّٰه सख़्त बे पर्दगी हो रही होती है।

22 **हरगिज़** हरगिज़ दो इस्लामी भाई एक तक्ये पर या एक चादर में न सोएं।

23 **इसी** त़रह़ मह़ल्ले फ़ितना में किसी की रान या गोद में सर रख कर लैटने से भी परहेज़ कीजिये।

24 **जब** 29 **र–मज़ानुल मुबारक** को **ईदुल फ़ित्र** के चांद की ख़बर सुनें या 30 र–मज़ान शरीफ़ का सूरज डूब जाए तो ए'तिकाफ़ पूरा हो जाने के सबब मस्जिद से ऐसे मत दौड़ पड़िये जैसे क़ैद से रिहा हुए, बल्कि होना येह चाहिये कि **र–मज़ानुल मुबारक** के रुख़्सत होने की ख़बर सुनते ही सदमे से दिल डूबने लगे कि आह! मोह़तरम माह हम से जुदा हो गया, ख़ूब रो रो कर और न हो सके तो रोनी सूरत बना कर माहे र–मज़ान को **अल वदाअ़** कीजिये। काश! कैफ़िय्यत यूं हो कि

तुम घर को न खींचो नहीं जाता नहीं जाता
मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

25 **इख़्तितामे** ए'तिकाफ़ पर ख़ूब रो रो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी कोताहियों और मस्जिद की बे अ–दबियों से मुआ़फ़ी त़लब कीजिये। ख़ूब गिड़गिड़ा कर अपने और दुन्या भर के

www.dawateislami.net

मो'तकिफ़ीन के ए'तिकाफ़ की क़बूलिय्यत और कुल उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ मांगिये ।

26 **आपस** में एक दूसरे से हक़ त-लफ़ियां मुआफ़ करवाइये ।

27 **इमाम** साहिब, मुअज़्ज़िन साहिब और ख़ुद्दामे मस्जिद को भी हो सके तो कुछ न कुछ नज़राना पेश कर के उन का दिल ख़ुश कीजिये । इन्तिज़ामियए मस्जिद का भी शुक्रिय्या अदा कीजिये ।

28 **ए'तिकाफ़** में रोज़मर्रा के मुक़ाबले में इज़ाफ़ी बिजली का इस्ति'माल होता है लिहाज़ा मश्वरा है कि हर मो'तकिफ़ बतौरे चन्दा कम अज़ कम 100 रुपै मस्जिद की इन्तिज़ामिया को पेश करे । (ज़ियादा मो'तकिफ़ीन हों तो रक़म इकठ्ठी कर के भी दे सकते हैं)

29 **शबे** ईदुल फ़ित्र हो सके तो इबादत में गुज़ारिये । वरना कम अज़ कम इशा और फ़ज्र की नमाज़ें बा जमाअत अदा कीजिये कि ब हुक्मे हदीस पूरी रात की इबादत का सवाब मिलेगा ।

30 **कोशिश** कर के नफ़्ल ए'तिकाफ़ की निय्यत से चांदरात उसी मस्जिद में गुज़ारिये जहां सुन्नते ए'तिकाफ़ किया है । हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن मो'तकिफ़ के लिये इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि ईदुल फ़ित्र की रात मस्जिद ही में गुज़ारे ताकि वहीं से उस के दिन (या'नी ईद के मुबारक रोज़) की इब्तिदा हो ।"[1] हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِق ने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن का येह मा'मूल बयान फ़रमाया है कि वोह हज़रात **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ करते और चांदरात अपने घरों पर नहीं लौटते थे जब तक कि लोगों के साथ ईद की नमाज़ अदा न कर लेते । (تفسیرِدُرِّمنثور ج١ ص٤٨٨)

आशिक़ाने रसूल की सोहबत ने मुझे क्या से क्या बना दिया ! : तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की तरफ़ से जहां इज्तिमाई ए'तिकाफ़

[1] : مصنّف ابن ابی شیبة ج٢ ص٥٠٤

www.dawateislami.net

किया जाता है, वहां चांदरात को या रात मस्जिद में गुज़ार कर ईद के रोज़ सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ुद ही देख लेंगे। अगर मॉडर्न दोस्तों वग़ैरा के साथ गुनाहों भरे माह़ोल में ईद गुज़ारी तो हो सकता है कि ए'तिकाफ़ की कमाई ज़ाएअ़ हो जाए। आप की तरग़ीब के लिये ईद के म-दनी क़ाफ़िले की एक मुश्कबार व ख़ुश गवार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे लाइन्ज़ एरिया, बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई पहले एक आ़म से मॉडर्न और बे नमाज़ नौ जवान थे, ज़िन्दगी के शबो रोज़ ग़फ़्लतों और गुनाहों में बसर हो रहे थे। **माहे र-मज़ानुल मुबारक** 1423 सि.हि. में एक इस्लामी भाई ने उन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्ही के अ़लाक़े की **फ़ैज़ाने रज़ा मस्जिद** (लाइन्ज़ एरिया) में होने वाले **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में बैठने की रग़बत दिलाई, उन्हों ने हामी भर ली और घर वालों से इजाज़त ले कर **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में मो'तकिफ़ हो गए। **ए'तिकाफ़** में दस दिन तक **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों की ब-र-कतों से ख़ूब मालामाल हुए और उ़म्र भर के लिये पन्ज वक़्ता **नमाज़ी** बने रहने का अ़ज़्म बिल जज़्म कर लिया, दीगर गुनाहों के साथ साथ दाढ़ी मुंडाने से भी तौबा कर ली, हाथों हाथ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया और सुन्नतों भरे म-दनी लिबास की भी निय्यत कर ली। ईद के दूसरे दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन रोज़ा **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र किया और इस मुबारक सफ़र की ब-र-कत से वोह तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के हो कर रह गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करे कि मरते दम तक **दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल** उन से न छूटे। अब वोह फ़ेशन एबल मॉडर्न नौ जवान न रहे थे। ए'तिकाफ़ और हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िले** के सफ़र के दौरान **आ़शिक़ाने रसूल** के क़ुर्ब ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें क्या से क्या बना दिया! वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से अपने अ़लाक़े में म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत करने लगे।

www.dawateislami.net

फ़ज़्ले रब से गुनाहों की कालक धुले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

नेकियों का तुम्हें ख़ूब जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अपनी चीज़ें संभालने का त़रीक़ा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" से वाबस्ता हज़ारों इस्लामी भाई दुन्या की मुख़्तलिफ़ मसाजिद में पूरे **माहे र-मज़ानुल मुबारक** का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** करते हैं और आख़िरी अ़शरे में मो'तकिफ़ीन का मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। इन सब की ख़िदमत में अ़र्ज़ है : शर-ई मस्अला येह है कि अगर दूसरे की कोई चीज़ ग़-लत़ी से तब्दील हो कर आ जाए, चाहे अपनी चीज़ से मिलती जुलती हो तब भी उस का इस्ति'माल ना जाइज़ व गुनाह है। लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन (और मद्रसों के मुक़ीम त़-लबा बल्कि हर एक) को चाहिये कि अपनी अपनी उन चीज़ों पर कोई अ़लामत लगा लें जिन का दूसरों की चीज़ों के साथ ख़ल्त़ मल्त़ (Mix) हो जाने का अन्देशा हो। रहनुमाई के लिये कुछ निशान आगे आ रहे हैं।

(चप्पल, चादर वग़ैरा पर नाम या किसी भी ज़बान का कोई ह़र्फ़ म-सलन A,B वग़ैरा न लिखिये बल्कि हो सके तो चप्पल चादर पर से कम्पनी का नाम भी मिटा दीजिये, चिट लगी हो तो वोह भी जुदा कर लीजिये। ताकि पाउं तले आने पर बे अ-दबी न हो। हर ज़बान के हुरूफ़े तहज्जी (Alphabets) का अदब कीजिये। इस मस्अले की तफ़्सील **फ़ैज़ाने सुन्नत** के बाब "**फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह**" सफ़ह़ा 89 ता 123 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

ए'तिकाफ़ में बीमार पड़ जाने के अस्बाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ बरसहा बरस से **मो'तकिफ़ीन** की ख़िदमतों में ह़ाज़िरियों से मुशर्रफ़ है। **ए'तिकाफ़** के दौरान कई इस्लामी भाइयों को **बीमार** पड़ते देखा है। इस का एक बहुत बड़ा सबब "गि़ज़ाई बे एह़तियात़ियां" है। घर वाले और अह़बाब वग़ैरा उ़म्दा व लज़ीज़ खाने, ख़ुश्बूदार मीठी मीठी डिशें, **कबाब समोसे**,

www.dawateislami.net

पिज़्ज़े पकोड़े, खट्टी चटनियां, खिचड़ा और चटपटे आलू छोले और स-ह़री में मलाई पराठे, खजला फेनी वग़ैरा इनायत फ़रमाते हैं और बा'ज़ मो'तकिफ़ीन मग़्लूबुल ह़िर्स हो कर, अन्जाम से बे ख़बर जो कुछ सामने आया उस का ख़ैर मक़्दम कर के अच्छी त़रह़ चबाए बिग़ैर ही झटपट पेट में पहुंचाते चले जाते हैं। नतीजतन क़ब्ज़, गेस, पेट में दर्द, बद हज़्मी, दस्त, क़ै, जिस्म में सुस्ती, नज़्ला, बुख़ार, सर और बदन में दर्द वग़ैरा अमराज़ लिपट जाते हैं। बा'ज़ बेचारे बड़े जज़्बे के साथ ख़ूब इबादत का ज़ेहन ले कर **ए'तिकाफ़** के लिये घर से चले होते हैं मगर खा खा कर बीमार पड़ जाते हैं और बा'ज़ अवक़ात तो नौबत यहां तक पहुंचती है कि नमाज़ की जमाअ़त खड़ी हो जाती है मगर येह ग़रीब सर दर्द व बुख़ार के मारे मस्जिद में लैटे कराह रहे होते हैं।

ना समझ बीमार को अमृत भी ज़हर आमेज़ है
सच येही है सो दवा की इक दवा परहेज़ है

खाने की एह़तियात़ का फ़ाएदा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **आ़लमी** म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना कराची में **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में मो'तकिफ़ होते हैं। आख़िरी अ़शरे में मज़ीद इज़ाफ़ा हो जाता है। उन को पेश किये जाने वाले खाने में बनासपती घी का इस्ति'माल बन्द करवाने, तेल और मसा-लह़ा जात में भी आधों आध कमी लाने और कबाब समोसों और पकोड़ों पर पाबन्दी डलवाने की दर-ख़्वास्तें करते रहने से कुछ न कुछ अ़मल हुवा और इस त़रह़ दौराने **ए'तिकाफ़** मरीज़ों की शर्ह़ में अच्छी ख़ासी कमी देखी गई। काश ! हर ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद बल्कि मुसल्मानों के हर घर में मज़्कूरा एह़तियातें अपना ली जाएं।

मुझे मुसल्मानों की सिह़्ह़त अ़ज़ीज़ है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं मुसल्मानों की रूह़ानी इस्लाह़ के साथ साथ जिस्मानी सिह़्ह़तो फ़लाह़ का भी आरज़ू मन्द हूं। काश ! काश ! काश ! मेरी दर-ख़्वास्तों के मुत़ाबिक़ ख़्वाहिश से कम खा कर और बे वक़्त मुख़्तलिफ़ चीज़ें खाने से ख़ुद को बचा कर

www.dawateislami.net

मो'तकिफ़ीन सिह्हतो आ़फ़िय्यत के साथ इबादतो तरबियत में हिस्सा ले कर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के इख़्तिताम पर चांदरात को हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र करने के क़ाबिल रहें। अगर मेरी अ़र्ज़ कर्दा गिज़ाई एह्तियातों पर उ़म्र भर अ़मल पैरा रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप की ज़िन्दगी ख़ुश गवार रहेगी। और डोक्टरों और दवाओं के अख़्राजात से भी नजात मिलेगी। (बराहे करम! फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब **आदाबे त़आ़म** सफ़्हा 440 ता 451 पर खाने का जद्वल और त़िब्बी मश्वरों से भरपूर मक्तूबे अ़त्तार पढ़ लीजिये) आप की तन्दुरुस्ती में मुझे यूं भी दिलचस्पी है कि इस त़रह اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **इबादतों** का ज़ौक़ भी बढ़ेगा और सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का शौक़ भी बढ़ेगा। आप सिह्हत मन्द होंगे तो नमाज़ों की अदाएगी, सुन्नतों पर अ़मल नीज़ वालिदैन और बाल बच्चों की ख़िदमत के लिये भागदौड़ कर सकेंगे।

ज़ालिमों के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करना कैसा ? : अपने मुसल्मान भाइयों पर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाने वालों और गुनाहों का बाज़ार गर्म करने वालों को **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ हिदायत इ़नायत फ़रमाए। ऐसों की सिह्हत भी अक्सर अवक़ात गुनाहों में ज़ियादत का सबब बनती है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : **"जो किसी ज़ालिम के लिये दराज़िये उ़म्र की दुआ़ करता है, गोया इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह तआ़ला की** (मजीद) **ना फ़रमानी हो।"** (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٧ ص ٤٨رقم ٩٥٤٨) हां ज़ालिमों के लिये ज़ुल्म से ताइब हो कर सिह्हतो आ़फ़िय्यत के साथ सुन्नतों भरी त़वील उ़म्र पाने की दुआ़ की जा सकती है। खाने की एह्तियातों की निराली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब **पेट का क़ुफ़्ले मदीना** ज़रूर पढ़ लीजिये।

मुसल्मानों की भलाई चाहना कारे सवाब है : ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "मैं ने हु़ज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नमाज़ पढ़ने, ज़कात देने और हर मुसल्मान की ख़ैर ख़्वाही करने पर बैअ़त की।" (بُخاری ج١ ص٣٥ حديث٥٧) आ'ला

www.dawateislami.net

हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "हर फ़र्दे इस्लाम की ख़ैर ख़्वाही (या'नी भलाई चाहना) हर मुसल्मान पर **फ़र्ज़** है।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 14, स. 415) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ुद को मुसल्मानों के ख़ैर ख़्वाहों में खपाने और सवाब कमाने के मुक़द्दस जज़्बे के तहत दुआ के साथ साथ सिह्हत मन्द रहने के लिये चन्द **म-दनी फूल** नज़्रे हाज़िर किये हैं। अगर महज़ दुन्या की रंगीनियों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये तन्दुरुस्त रहने की आरज़ू है तो बेशक पढ़ना यहीं मौक़ूफ़ कर दीजिये और अगर उम्दा सिह्हत के ज़रीए इबादत और सुन्नतों की ख़िदमत पर कुव्वत हासिल करने का ज़ेहन है तो सवाब कमाने की ग़रज़ से अच्छी अच्छी निय्यतें करते हुए दुरूद शरीफ़ पढ़ कर आगे बढ़िये और शौक़ से पढ़िये :

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मेरी, आप की, जुम्ला अहले ख़ानदान और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमाए। हमें सिह्हतो आफ़िय्यत के साथ और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** में रहते हुए इस्लाम की ख़िदमत पर इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी जिस्मानी बीमारियां दूर कर के हमें **बीमारे मदीना** बनाए। اٰمِین بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कबाब समोसे खाने वाले मु-तवज्जेह हों : **बाज़ारों** और दा'वतों के चटपटे कबाब समोसे खाने वाले तवज्जोह फ़रमाएं! **कबाब समोसे** बेचने वाले उमूमन **क़ीमा** धोते नहीं हैं। उन के बक़ौल क़ीमा धो कर डालें तो कबाब समोसे का ज़ाएक़ा मु-तअस्सिर होता है! बाज़ारी क़ीमे में बा'ज़ अवक़ात क्या क्या होता है येह भी सुन लीजिये! गाय की **ओझड़ी** का छिलका उतार कर उस की "बट" में तिल्ली बल्कि कहा जाता है कभी तो مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **जमा हुवा ख़ून** डाल कर मशीन में पीसते हैं, इस तरह सफ़ेद बट के क़ीमे का रंग गोश्त की मानिन्द **गुलाबी** हो जाता और वोह धोके से गोश्त के क़ीमे में खपा दिया जाता है। बसा अवक़ात **कबाब समोसे** बेचने वाले हस्बे ज़रूरत अदरक लहसन वग़ैरा भी उसी क़ीमे के साथ पिसवा लेते हैं। अब इस क़ीमे के धोने का सुवाल ही पैदा नहीं होता, उसी क़ीमे में मिर्च मसाला डाल कर भून कर उस के **कबाब समोसे**

www.dawateislami.net

बना कर फ़रोख़्त करते हैं। होटलों में भी इसी त़रह़ के क़ीमे के सालन का अन्देशा रहता है। गन्दे **कबाब समोसे** वालों से **पकोड़े** वग़ैरा भी न लिये जाएं कि कड़ाही एक और तेल भी वोही गन्दे क़ीमे वाला। ख़ैर मैं येह नहीं कहता कि مَعَاذَاللّٰه हर गोश्त बेचने वाला इस त़रह़ करता है या ख़ुदा न ख़्वास्ता हर होटल वाला और हर **कबाब समोसे** वाला नापाक क़ीमा ही इस्ति'माल करता है। यक़ीनन ख़ालिस गोश्त का क़ीमा भी मिलता है और अगर धोका दिये बिग़ैर "बट" का क़ीमा कह कर ही फ़रोख़्त किया तब भी गुनाह नहीं। अ़र्ज़ करने का मन्शा येह है कि क़ीमा या **कबाब समोसे** क़ाबिले इत़्मीनान मुसल्मान से लेने चाहिएं और जो मुसल्मान गुनाहों भरी ह़-र-कतें करते हैं उन को तौबा करनी चाहिये।

"या रब ! लज़्ज़ाते नफ़्सानी से बचा" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से तली हुई चीज़ों से होने वाली 19 बीमारियों की निशान देही

﴾1﴿ **बदन** का वज़्न बढ़ता है ﴾2﴿ आंतों की दीवारों को नुक़्सान पहुंचता है ﴾3﴿ इजाबत (पेट की सफ़ाई) में गड़बड़ पैदा होती है ﴾4﴿ पेट का दर्द ﴾5﴿ मतली ﴾6﴿ क़ै या ﴾7﴿ इस्हाल (या'नी पानी जैसे दस्त) हो सकते हैं ﴾8﴿ तली हुई चीज़ों का इस्ति'माल ख़ून में नुक़्सान देह कोलेस्ट्रोल या'नी LDL बनाता है ﴾9﴿ मुफ़ीद कोलेस्ट्रोल या'नी HDL में कमी आती है ﴾10﴿ ख़ून में लोथड़े या'नी जमी हुई टुकड़ियां बनती हैं ﴾11﴿ हाज़िमा ख़राब होता है ﴾12﴿ गेस होती है ﴾13﴿ ज़ियादा गर्म कर्दा तेल में एक ज़हरीला माद्दा "एक्रोलीन" (Acrolein) पैदा हो जाता है जो कि आंतों में ख़राश पैदा करता है बल्कि مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ﴾14﴿ केन्सर का सबब भी बन सकता है ﴾15﴿ तेल को ज़ियादा देर तक गर्म करने और इस में चीज़ें तलने के अ़मल से उस में एक और ख़त़रनाक ज़हरीला माद्दा "फ़्री रेडीकल्ज़" पैदा हो जाता है जो कि दिल के अमराज़ ﴾16﴿ केन्सर ﴾17﴿ जोड़ों में शोज़िश ﴾18﴿ दिमाग़ के अमराज़ और ﴾19﴿ जल्द बुढ़ापा लाने का सबब बनता है।

"फ़्री रेडीकल्ज़" नामी ख़त़रनाक ज़हरीला माद्दा पैदा करने वाले मज़ीद और भी अ़वामिल हैं म-सलन ۞ तम्बाकू नोशी ۞ हवा की आलू-दगी (जैसा कि आज कल घरों में हर

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

वक़्त कमरा बन्द रखा जाता है न धूप आने दी जाती है न ताज़ा हवा) ۞ कार का धूआं ۞ एक्सरे (X-ray) ۞ माईक्रो वेव ओवन ۞ T.V. और ۞ कम्प्यूटर की स्क्रीन की शुआ़एं ۞ फ़ज़ाई सफ़र की ताबकारी (या'नी हवाई जहाज़ का शुआ़एं फेंकने का अ़मल)

ख़त़रनाक ज़हर का तोड़ : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस ख़त़रनाक ज़हर या'नी "फ्री रेडीकल्ज़" का तोड़ भी पैदा फ़रमाया है चुनान्चे जिन सब्ज़ियों और फलों का रंग सब्ज़, ज़र्द या नारन्जी या'नी सुर्ख़ी माइल ज़र्द होता है येह इस ख़त़रनाक ज़हर को तबाह कर देते हैं इस त़रह़ के फलों और सब्ज़ियों का रंग जिस क़दर गहरा होगा उन में विटामिन्ज़ और मा'दनी अज्ज़ा की मिक्दार भी ज़ियादा होती है वोह इस ज़हर का ज़ियादा क़ुव्वत के साथ तोड़ करते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तली हुई चीज़ों का नुक़्सान कम करने का त़रीक़ा : दो बातों पर अ़मल करने से तली हुई चीज़ों के नुक़्सानात में कमी आ सकती है : (1) कबाब, समोसे, पकोड़े, अन्डा आमलेट, मछली वग़ैरा तलने के लिये जो कड़ाही या फ्राई पेन इस्ति'माल किया जाए वोह नॉन स्टिक (Non-stick) हो (2) तलने के बा'द एक एक चीज़ को बे ख़ुश्बू टिशू पेपर में अच्छी त़रह़ लपेट लिया जाए ताकि कुछ न कुछ तेल जज़्ब हो जाए।

बचा हुवा तेल दोबारा इस्ति'माल करने का त़रीक़ा : माहिरीन का कहना है कि : एक बार तलने के लिये इस्ति'माल करने के बा'द तेल को दोबारा गर्म न किया जाए। अगर दोबारा इस्ति'माल करना हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि इस को छान कर रेफ्रीजरेटर में रख दिया जाए, बिग़ैर छाने फ्रिज में न रखा जाए।

फ़न्ने त़िब यक़ीनी नहीं : तली हुई चीज़ों के नुक़्सानात के तअ़ल्लुक़ से मैं ने जो कुछ अ़र्ज़ किया वोह मेरी अपनी नहीं त़बीबों की तह़क़ीक़ है। येह उसूल याद रखने के क़ाबिल है कि फ़न्ने त़िब सारे का सारा ज़न्नी है यक़ीनी नहीं।

www.dawateislami.net

फ़ेशन परस्त "मुबल्लिग़े सुन्नत" बन गए : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नुक़्सान देह चीज़ें खाने पीने की ह़िर्स मिटाने, फ़रंगी फ़ेशन से जान छुड़ाने, सुन्नतें अपनाने और अपना सीना इश्क़े रसूल का मदीना बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सदा बहार म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। आइये ! आप की तरग़ीब के लिये एक खुश गवार व मुश्कबार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे **इन्दोर** शह्‌र (M.P. अल हिन्द) के एक मॉडर्न नौ जवान ने आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** 1426 सि.हि. में आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से क़ल्ब में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हो गया, चेहरे पर **दाढ़ी** की बहारें मुस्कुराने लगीं और सब्ज़ इमामा शरीफ़ से **सर सब्ज़** हो गया, हाथों हाथ 12 दिन के लिये सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए, ख़ूब म-दनी रंग चढ़ा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बन गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर अपने शह्‌र के अन्दर **दा'वते इस्लामी** की एक ह़ल्क़ा मुशा-वरत के **निगरान** की ह़ैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

गर्चे दिल में है फ़ेशन की उल्फ़त भरी, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
उ़म्र आयिन्दा गुज़रेगी सुन्नत भरी, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनों का ए'तिकाफ़ : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "नबियों के सुल्तान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी दस दिनों का **ए'तिकाफ़** फ़रमाया करते थे, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वफ़ाते (ज़ाहिरी) अ़ता फ़रमाई। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ ए'तिकाफ़ करती थीं।" (بُخاری ج ۱ ص ٦٦٤ حديث ٢٠٢٦)

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनें भी ए'तिकाफ़ करें : **इस्लामी बहनों** को भी ए'तिकाफ़ की सआदत हासिल करनी चाहिये। इस्लामी बहनों को चूंकि मस्जिदे बैत (तफ़्सील आगे आती है) जो कि निहायत मुख़्तसर जगह होती है में **ए'तिकाफ़** करना होता है इस में एक तरह से क़ब्र की भी याद है, कि बहू बेटियों और मुन्ने मुन्नियों की रौनक़ों में दस दिन कोने में बैठना गिरां गुज़र रहा है तो नाराज़िये ख़ुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत में तन्हा क़ब्र में **हज़ारों साल** किस तरह गुज़ारा होगा ! क्या अ़जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस ए'तिकाफ़ की ब-र-कत और अपनी रह़मत से आप की क़ब्र ता ह़द्दे नज़र वसीअ़ कर के नूरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जगमग जगमग फ़रमा दे। हर इस्लामी बहन को ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो येह सआदत ह़ासिल करना ही चाहिये।

"फ़ैज़ाने ख़ातूने जन्नत" के तेरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों के लिये 13 म-दनी फूल

﴾1﴿ **इस्लामी** बहनें **मस्जिदे बैत** में ए'तिकाफ़ करें। मस्जिदे बैत उस जगह को कहते हैं जो औ़रत घर में अपनी नमाज़ के लिये मख़्सूस कर लेती है। इस्लामी बहनों के लिये येह मुस्तह़ब भी है कि घर में नमाज़ के लिये जगह मुक़र्रर करें और उस जगह को पाको साफ़ रखें और बेहतर येह है कि उस जगह को चबूतरे वग़ैरा की तरह़ बुलन्द कर लें। बल्कि इस्लामी भाइयों को भी चाहिये कि नवाफ़िल के लिये घर में कोई जगह मुक़र्रर कर लें कि नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है। (دُرِّمُختَار،رَدُّالْمُحتَار ج۳ص٤٩٤, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1021 मुलख़्ख़सन)

﴾2﴿ **अगर** इस्लामी बहन ने नमाज़ के लिये कोई जगह मुक़र्रर नहीं कर रखी तो घर में **ए'तिकाफ़** नहीं कर सकती अलबत्ता अगर उस वक़्त या'नी जब कि **ए'तिकाफ़** का इरादा किया किसी जगह को नमाज़ के लिये ख़ास कर लिया तो उस जगह **ए'तिकाफ़** कर सकती है।

(دُرِّمُختَار، رَدُّالْمُحتَار ج۳ص٤٩٤)

﴾3﴿ **किसी** और के घर जा कर इस्लामी बहन ए'तिकाफ़ नहीं कर सकती।

www.dawateislami.net

4 **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी के लिये ए'तिकाफ़ करना जाइज़ नहीं। (رَدُّ الْمُحْتَار ج٣ ص٤٩٤)

5 **अगर** बीवी ने शोहर की इजाज़त से ए'तिकाफ़ शुरूअ़ कर दिया, बा'द में शोहर मन्अ़ करना चाहता है तो अब मन्अ़ नहीं कर सकता और अगर मन्अ़ करेगा तो बीवी के ज़िम्मे उस की ता'मील वाजिब नहीं। (عالمگیری ج١ ص٢١١)

6 **इस्लामी** बहनों के ए'तिकाफ़ के लिये येह भी ज़रूरी है कि वोह **हैज़ व निफ़ास** से पाक हों कि इन दिनों में नमाज़, रोज़ा और तिलावते क़ुरआन ह़राम है। (आम्मए कुतुब) (औ़रत को बच्चे की पैदाइश के बा'द जो ख़ून आता रहता है उस को **निफ़ास** कहते हैं, इस की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत चालीस दिन और चालीस रात है, चालीस दिन रात के बा'द अगर ख़ून बन्द न हो तो बीमारी है, ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें। इस्लामी बहनों में येह आ़म ग़लत़ फ़हमी है कि निफ़ास की मुद्दत मुकम्मल चालीस दिन है ह़ालां कि ऐसा नहीं। हुक्मे शरीअ़त येह है कि अगर ख़ून एक दिन में बन्द हो गया, बल्कि बच्चा होने के बा'द फ़ौरन ही बन्द हो गया तो निफ़ास ख़त्म हुवा, ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें। **हैज़** की मुद्दत कम अज़ कम तीन दिन रात और ज़ियादा से ज़ियादा दस दिन रात है। तीन दिन और तीन रात के बा'द जब भी ख़ून बन्द हुवा फ़ौरन ग़ुस्ल कर लें और नमाज़ वग़ैरा शुरूअ़ कर दें। (यहां शोहर वालियों के लिये कुछ तफ़्सील है इसे बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल के हिस्सा 2 में लाज़िमी मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं) और अगर दस दिन रात के बा'द ख़ून जारी रहा तो **इस्तिह़ाज़ा** या'नी बीमारी है, दस दिन रात पूरे होते ही ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा शुरूअ़ कर दें)

7 **अगर** माहवारी की तारीख़ें र-मज़ान शरीफ़ के आख़िरी अ़शरे में आने वाली हों तो ए'तिकाफ़ शुरूअ़ ही न करें।

8 **अगर** औ़रत को हैज़ आ जाए तो उस का ए'तिकाफ़ टूट जाएगा। (بدائع الصنائع ج٢ ص٢٨٧) इस सूरत में जिस दिन उस का ए'तिकाफ़ टूटा है सिर्फ़ उस एक दिन की क़ज़ा उस के ज़िम्मे

www.dawateislami.net

वाजिब होगी। (رَدُّ الْمُحْتَار ج۳ ص۵۰۰) माहवारी से पाक होने के बा'द किसी दिन ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ कर ले। अगर र-मज़ान शरीफ़ के दिन बाक़ी हों तो उन में भी क़ज़ा कर सकती है, इस सूरत में **र-मज़ानुल मुबारक** का रोज़ा ही काफ़ी हो जाएगा। अगर उन दिनों क़ज़ा करना नहीं चाहती या पाक होने तक **र-मज़ानुल मुबारक** ख़त्म हो जाए तो किसी और दिन क़ज़ा कर ले। मगर ईदुल फ़ित्र और ज़ुल हिज्जतिल ह़राम की दसवीं ता तेरहवीं के इलावा, कि इन पांच दिनों के रोज़े मक्रूहे तह़रीमी हैं। (دُرِّمُخْتَار ج۳ ص۳۹۱)

इस्लामी बहन के लिये ए'तिकाफ़ क़ज़ा करने का त़रीक़ा

9 **इस** का त़रीक़ा येह है कि ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त (बल्कि एह़तियात़ इस में है कि चन्द मिनट क़ब्ल) ब निय्यते क़ज़ा ए'तिकाफ़ मस्जिदे बैत में आ जाए और अब जो दिन आएगा उस के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मो'तकिफ़ रहे। इस में रोज़ा शर्त़ है।

10 **शर-ई** ज़रूरिय्यात के बिग़ैर जाए ए'तिकाफ़ से निकलना जाइज़ नहीं, वहां से उठ कर घर के किसी और हिस्से में भी नहीं जा सकती, अगर जाएगी तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा।

11 **इस्लामी** बहनों के लिये भी ए'तिकाफ़ की जगह से हटने के वोही अह़काम हैं जो इस्लामी भाइयों के हैं। या'नी जिन ज़रूरिय्यात की वज्ह से इस्लामी भाइयों को मस्जिद से निकलना जाइज़ है, उन्हीं के लिये इस्लामी बहनों को भी **ए'तिकाफ़** की जगह से हटना जाइज़ और जिन कामों के लिये मर्दों को मस्जिद से निकलना जाइज़ नहीं, उन के लिये **इस्लामी बहनों** को भी अपनी जगह से हटना जाइज़ नहीं।

12 **इस्लामी** बहनें ए'तिकाफ़ के दौरान अपनी जगह बैठे बैठे सीने पिरोने का काम कर सकती हैं, घर के कामों के लिये दूसरों को हिदायात भी दे सकती हैं मगर ख़ुद उठ कर न जाएं।

13 **बेहतर** येह है कि ए'तिकाफ़ के दौरान सारी तवज्जोह तिलावत, ज़िक्रो दुरूद, तस्बीह़ात, दीनी मुत़ा-लआ़ सुन्नतों भरे बयानात की C.Ds केसिटें सुनने वग़ैरा इबादात की त़रफ़ रहे।

www.dawateislami.net

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हर इस्लामी भाई और हर इस्लामी बहन का **ए'तिकाफ़** क़बूल फ़रमा और इस की ब-र-कतों से मालामाल कर। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें भी **ए'तिकाफ़** करने की सआदत नसीब फ़रमा। اٰمِین بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

"जन्नते नईम" के सात हुरूफ़ की निस्बत से मु-तफ़र्रिक़ 7 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "जो मस्जिद से महृब्बत रखता है, **अल्लाह तआला** उस से महृब्बत फ़रमाता है।"[1] **हज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस की शर्ह़ में लिखते हैं : मस्जिद से महृब्बत इस त़रह़ है कि रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, **ज़िक्रुल्लाह** और शर-ई मसाइल सीखने सिखाने के लिये बैठे रहने की आ़दत बनाना है[2] ﴾2﴿ "बेशक मस्जिदें ज़मीन में **अल्लाह तआला** के घर हैं और **अल्लाह तआला** पर ह़क़ है कि वोह (अपने घर की) ज़ियारत करने वाले का इक्राम (इ़ज़्ज़त) करे।"[3] **हज़रते** अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिदें वोह जगहें हैं, जिन्हें **अल्लाह तआला** ने अपनी रह़मतें उतारने के लिये चुना है[4] ﴾3﴿ "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है"[5] ﴾4﴿ जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी तर्क कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा[6] ﴾5﴿ मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है[7] ﴾6﴿ चुग़ुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा[8] ﴾7﴿ गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।[9]

١: مُعْجَمُ اَوْسَط ج٤ص٤٠٠حديث٦٣٨٣۔ ٢: فيض القدير ج٦ص١١٢تحت الحديث٨٥٠٢٤۔ ٣: مُعْجَم كبير ج١٠ص١٦١ حديث١٠٣٢٤۔ ٤: فيض القدير ج٢ص٥٦٤۔ ٥: الفردوس بما ثور الخطاب ج٢ص٤٣١ حديث ٣٨٩١۔ ٦: حلية الاولياء ج٧ص٢٩٩حديث١٠٥٩٠۔ ٧: ابن ماجه ج١ص١٨٦حديث٢٨٩۔ ٨: بخارى ج٤ ص١١٥ حديث ٦٠٥٦۔ ٩: ابن ماجه ج٤ ص٤٩١ حديث ٤٢٥٠۔

www.dawateislami.net

निशानियों के नमूने

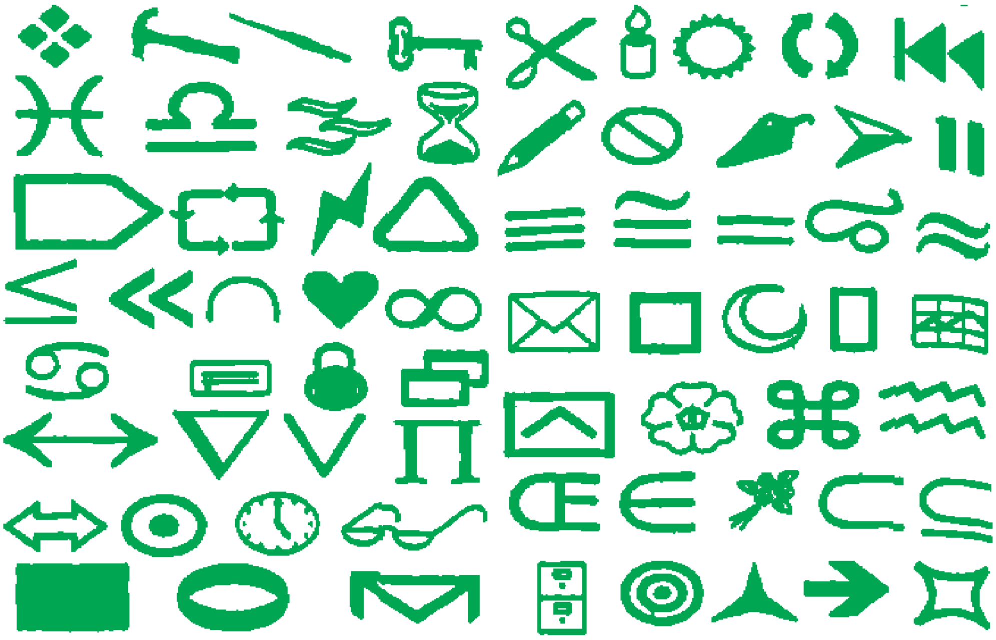

www.dawateislami.net

ईद मुबारक

बा'दे र-मज़ान ईद होती है
रब की रह़मत मज़ीद होती है
जिस को आक़ा की दीद होती है
उस पे क़ुरबान "ईद" होती है
ईद तुझ को मुबारक ऐ साइम[1] !
रोज़ादारों की ईद होती है
रोज़ाख़ोरो ! ख़ुदा की नाराज़ी
सुन लो ! तुम पर शदीद होती है
तेरी शैत़ान ! माहे र-मज़ां में
कैसी मिट्टी पलीद होती है !
रोज़ादारों के वासित़े वल्लाह
मग़्फ़िरत की नवीद[2] होती है
ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर
बोले : "नेकों की ईद होती है"
जो कोई रब को करते हैं नाराज़
उन से रह़मत बईद[3] होती है
फ़िल्म बीनों[4] के ह़क़ में सुन लो येह
ईद, यौमे वईद[5] होती है
बे नमाज़ों की रोज़ाख़ोरों की
कौन कहता है ईद होती है !
जिस को आक़ा मदीने बुलवाएं
उस मुसल्मां की ईद होती है
मुझ को "ईदी" में दो बक़ीअ़ आक़ा
जाने कब मेरी ईद होती है !
जो बिछड़ जाए उन की गलियों से
क्या भला उस की ईद होती है !

ईद अ़त्तार उस की है जिस को
ख़्वाब में उन की दीद होती है

1 : रोज़ादार 2 : ख़ुश ख़बरी 3 : दूर 4 : फ़िल्म देखने वाले
5 : सज़ा देने की धमकी, सज़ा देने का वा'दा

www.dawateislami.net

चार झूटे दा'वेदार

इर्शादे हातिमे असम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه : «1» **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत का दा'वेदार मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हराम कर्दा कामों से न बचने वाला «2» महब्बते रसूल का दा'वेदार मगर ग़रीबों को अहम्मिय्यत न देने वाला «3» तालिबे जन्नत होने का दा'वेदार मगर राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने से कतराने वाला «4» जहन्नम से ख़ौफ़ रखने का दा'वेदार मगर गुनाहों से परहेज़ न करने वाला। (ماخوذ از المنبهات ص ٤٠)

छ6 तरह के अफ़राद पर भलाई का दरवाज़ा बन्द

इर्शादे यह्या बिन मुआज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه : «1» अपने इल्म पर अमल न करने वाला «2» ने'मतों पर शुक्र न करने वाले «3» नेक बन्दों की सोहबत में बैठने के बा वुजूद उन के नक़्शे क़दम पर न चलने वाला «4» मरने वालों की तज्हीज़ो तक्फ़ीन में हिस्सा लेने के बा वुजूद इब्रत न पकड़ने वाला «5» दौलत होने के बा वुजूद (रिज़ाए इलाही के कामों में ख़र्च कर के) आख़िरत के लिये तोशा जम्अ़ न करने वाला «6» गुनाहों की कसरत के बा वुजूद तौबा न करने वाला।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۭ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۭ

फ़ैज़ाने ईदुल फ़ित्र

मौला अ़ली ने ख़ाली हथेली पर दम किया और...... : एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने **10 बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : "मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो।" (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है!) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में **एक दीनार** था! येह **करामत** देख कर कई काफ़िर मुसल्मान हो गए। (راحۃ القلوب ص ٥٠)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ — और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की — है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने र-मज़ान शरीफ़ के मुबारक महीने के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया है कि इस महीने का पहला अ़शरा **रह़मत**, दूसरा **मग़्फ़िरत** और तीसरा अ़शरा **जहन्नम से आज़ादी** का है। (ابن خُزَیمہ ج۳ص۱۹۲ حدیث۱۸۸۷)

www.dawateislami.net

मा'लूम हुवा कि **र-मज़ानुल मुबारक** रह़मत व मग़्फ़िरत और जहन्नम से आज़ादी का महीना है, लिहाज़ा इस रह़मतों और ब-र-कतों भरे महीने के फ़ौरन बा'द हमें **ईदे सईद** की ख़ुशी मनाने का मौक़अ़ फ़राहम किया गया है और ईदुल फ़ित्र के रोज़ ख़ुशी का इज़्हार मुस्तह़ब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत पर ख़ुशी करने की तरग़ीब तो क़ुरआने करीम में भी मौजूद है। चुनान्चे पारह 11 **सूरए यूनुस** की आयत नम्बर 58 में इर्शाद होता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत, और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें।

दिल ज़िन्दा रहेगा : **नबियों** के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़्ह़ा) त-लबे सवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे।" (ابنِ ماجه ج۲ص۳۶۵حدیث۱۷۸۲)

जन्नत वाजिब हो जाती है : **एक** और मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : जो पांच रातों में शब बेदारी करे उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। ज़ुल ह़िज्जा शरीफ़ की आठवीं, नवीं और दसवीं रात (इस त़रह़ तीन रातें तो येह हुईं) और चौथी **ईदुल फ़ित्र** की रात, पांचवीं शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत)। (اَلتَّرْغِيب وَ التَّرْهِيب ج۲ ص۹۸ حدیث ۲)

मुआ़फ़ी का ए'लाने आ़म : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की एक रिवायत में येह भी है : जब **ईदुल फ़ित्र** की मुबारक रात तशरीफ़ लाती है तो इसे "**लय-लतुल जाइज़ा**" या'नी "इन्आ़म की रात" के नाम से पुकारा जाता है। जब **ईद** की सुब्ह़ होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मा'सूम फ़िरिश्तों को तमाम शहरों में भेजता है, चुनान्चे वोह फ़िरिश्ते ज़मीन पर तशरीफ़ ला कर सब गलियों और राहों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और इस त़रह़ निदा देते

www.dawateislami.net

हैं : "ऐ उम्मते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की बारगाह की त़रफ़ चलो ! जो बहुत ज़ियादा अ़त़ा करने वाला और बड़े से बड़ा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाने वाला है।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों से यूं मुख़ात़िब होता है : "ऐ मेरे बन्दो ! मांगो ! क्या मांगते हो ? मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! आज के रोज़ इस (नमाज़े ईद के) इज्तिमाअ़ में अपनी आख़िरत के बारे में जो कुछ सुवाल करोगे वोह पूरा करूंगा और जो कुछ दुन्या के बारे में मांगोगे उस में तुम्हारी भलाई की त़रफ़ नज़र फ़रमाऊंगा (या'नी इस मुआ़-मले में वोह करूंगा जिस में तुम्हारी बेहतरी हो) मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! जब तक तुम मेरा लिह़ाज़ रखोगे मैं भी तुम्हारी ख़त़ाओं की पर्दा पोशी फ़रमाता रहूंगा। मेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं तुम्हें ह़द से बढ़ने वालों (या'नी मुजरिमों) के साथ रुस्वा न करूंगा। बस अपने घरों की त़रफ़ **मग़्फ़िरत याफ़्ता** लौट जाओ। तुम ने मुझे राज़ी कर दिया और मैं भी तुम से राज़ी हो गया।" (اَلتَّرْغِيب وَالتَّرهِيب ج۲ ص۶۰ حديث۲۳)

कोई साइल मायूस नहीं जाता : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर तो फ़रमाइये ! **ईदुल फ़ित्र** का दिन किस क़दर अहम तरीन दिन है, इस दिन **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत निहायत जोश पर होती है, दरबारे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ से कोई साइल मायूस नहीं लौटाया जाता। एक त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां रह़मतों और बख़्शिशों पर ख़ुशियां मना रहे होते हैं तो दूसरी त़रफ़ मोमिनों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इतनी करम नवाज़ियां देख कर इन्सान का बद तरीन दुश्मन शैत़ान आग बगूला हो जाता है। चुनान्चे

शैत़ान की बद ह़वासी : ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब भी ईद आती है, शैत़ान चिल्ला चिल्ला कर रोता है। इस की बद ह़वासी देख कर तमाम शयात़ीन उस के गिर्द जम्अ़ हो कर पूछते हैं : ऐ आक़ा ! आप क्यूं ग़ज़ब नाक और उदास हैं ? वोह कहता है : हाए अफ़्सोस ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आज के दिन **उम्मते मुह़म्मद** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बख़्श दिया है, लिहाज़ा तुम इन्हें लज़्ज़ात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात में मश्ग़ूल कर दो।

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوب ص۳۰۸)

www.dawateislami.net

क्या शैत़ान काम्याब है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! शैत़ान पर **ईद** का दिन निहायत गिरां गुज़रता है लिहाज़ा वोह शयात़ीन को हुक्म सादिर कर देता है कि तुम मुसल्मानों को लज़्ज़ाते नफ़्सानी में मश्ग़ूल कर दो ! ऐसा लगता है, फ़ी ज़माना शैत़ान अपने इस वार में काम्याब नज़र आ रहा है । **ईद** की आमद पर होना तो येह चाहिये कि इबादात व ह़-सनात की कस्रतो बोहतात कर के रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा से ज़ियादा शुक्र अदा किया जाए, मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस अब अक्सर मुसल्मान **ईदे सईद** का ह़क़ीक़ी मक़्सद ही भुला बैठे हैं ! **वा ह़स्रता !** अब तो **ईद** मनाने का येह अन्दाज़ हो गया है कि बेहूदा नक़्शो निगार बल्कि مَعَاذَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ जानदार की तस्वीर वाले भड़कीले कपड़े पहने जाते हैं (बहारे शरीअ़त में है कि जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना मकरूहे तह़रीमी है, नमाज़ के इलावा भी ऐसा कपड़ा पहनना ना जाइज़ है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 627)) रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलें गर्म की जाती हैं, गुनाहों भरे मेलों, गन्दे खेलों, नाच गानों और फ़िल्मों डिरामों का एहतिमाम किया जाता है और जी खोल कर वक़्त व दौलत दोनों को ख़िलाफ़े सुन्नत व शरीअ़त अफ़्आ़ल में बरबाद किया जाता है । अफ़्सोस सद हज़ार अफ़्सोस ! अब इस मुबारक दिन को किस क़दर ग़लत़ कामों में गुज़ारा जाने लगा है । **मेरे इस्लामी भाइयो !** इन ख़िलाफ़े शर-अ़ बातों के सबब हो सकता है कि येह **ईदे सईद** ना शुक्रों के लिये "यौमे वईद" बन जाए । **लिल्लाह !** अपने ह़ाल पर रह़्म कीजिये ! फ़ेशन परस्ती और फ़ुज़ूल ख़र्ची से बाज़ आ जाइये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़ुज़ूल ख़र्चों को क़ुरआने पाक में शैत़ानों का भाई क़रार दिया है । चुनान्चे पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** की आयत नम्बर 26 और 27 में इर्शाद होता है :

وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ﴿٢٦﴾ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ﴿٢٧﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़ुज़ूल न उड़ा बेशक उड़ाने वाले शैत़ानों के भाई हैं और शैत़ान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है ।

मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ "तफ़्सीरे सिरातुल जिनान" जिल्द 5 सफ़ह़ा 447

www.dawateislami.net

ता 448 पर इन आयाते मुबारक के तह़्त है : ﴿وَلَا تُبَذِّرۡ تَبۡذِيۡرًا ۝۲۶ और फ़ुज़ूल ख़र्ची न करो ।﴾ या'नी अपना माल ना जाइज़ काम में खर्च न करो । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से "तब्ज़ीर" के मु–तअ़ल्लिक़ सुवाल किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि जहां माल ख़र्च करने का ह़क़ है उस की बजाए कहीं और ख़र्च करना **तब्ज़ीर** है । लिहाज़ा अगर कोई शख़्स अपना पूरा माल ह़क़ या'नी उस के मसरफ़ में ख़र्च कर दे तो वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाला नहीं और अगर कोई एक दिरहम भी बात़िल या'नी ना जाइज़ काम में ख़र्च कर दे तो वोह फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाला है । (خازن ج ۳ ص ۱۷۲)

इसराफ़ की ग्यारह ता'रीफ़ात : इसराफ़ बिला शुबा मम्नूअ़ और ना जाइज़ है और उ़–लमाए किराम ने इस की मुख़्तलिफ़ ता'रीफ़ात बयान की हैं, उन में से **11 ता'रीफ़ात** दर्जे ज़ैल हैं : ﴿1﴾ ग़ैरे ह़क़ में सर्फ़ करना ﴿2﴾ **अल्लाह तआ़ला** के हुक्म की ह़द से बढ़ना ﴿3﴾ ऐसी बात में ख़र्च करना जो शर–ए़ मुत़ह्हर या मुरव्वत के ख़िलाफ़ हो, अव्वल (या'नी ख़िलाफ़े शरीअ़त ख़र्च करना) ह़राम है और सानी (या'नी ख़िलाफ़े मुरव्वत ख़र्च करना) मकरूहे तन्ज़ीही । ﴿4﴾ त़ाअ़ते इलाही के ग़ैर में सर्फ़ करना ﴿5﴾ शर–ई़ ह़ाजत से ज़ियादा इस्ति'माल करना ﴿6﴾ ग़ैरे त़ाअ़त में या बिला ह़ाजत ख़र्च करना ﴿7﴾ देने में ह़क़ की ह़द से कमी या ज़ियादती करना ﴿8﴾ ज़लील ग़रज़ में कसीर माल ख़र्च कर देना ﴿9﴾ ह़राम में से कुछ या ह़लाल को ए'तिदाल से ज़ियादा खाना ﴿10﴾ लाइक़ व पसन्दीदा बात में लाइक़ मिक़्दार से ज़ियादा सर्फ़ कर देना ﴿11﴾ बे फ़ाएदा ख़र्च करना ।

इसराफ़ की वाज़ेह़ तर ता'रीफ़ ग़ैरे ह़क़ में माल ख़र्च करना : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन ता'रीफ़ात को ज़िक्र करने और इन की तह़क़ीक़ व तफ़्सील बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : हमारे कलाम का नाज़िर (या'नी नज़र करने वाला) ख़याल कर सकता है कि इन तमाम ता'रीफ़ात में सब से जामेअ़ व मानेअ़ व वाज़ेह़ तर ता'रीफ़ अव्वल है और क्यूं न हो कि येह उस **अ़ब्दुल्लाह** की ता'रीफ़ है जिसे **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इल्म की गठड़ी फ़रमाते और जो ख़ु–लफ़ाए अर्बआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बा'द तमाम जहान से इल्म में

www.dawateislami.net

ज़ाइद है और अबू ह़नीफ़ा जैसे इमामुल अइम्मा का मूरिसे इल्म है رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ وَعَنْهُ وَعَنْهُمْ اَجْمَعِیْن ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1 (ب), स. 937)

तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "तब्ज़ीर" और "इसराफ़" में फ़र्क़ से मु-तअ़ल्लिक़ जो कलाम ज़िक्र फ़रमाया उस का ख़ुलासा येह है कि **तब्ज़ीर** के बारे में उ़-लमाए किराम के दो क़ौल हैं : **(1)......** तब्ज़ीर और इसराफ़ दोनों के मा'ना "नाह़क़ सर्फ़ करना" हैं। येही सह़ीह़ है कि येही क़ौल ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द और ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास और आ़म सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم का है। **(2)......** तब्ज़ीर और इसराफ़ में फ़र्क़ है, तब्ज़ीर ख़ास गुनाहों में माल बरबाद करने का नाम है। इस सूरत में इसराफ़ तब्ज़ीर से आ़म होगा कि नाह़क़ सर्फ़ करना अ़बस में सर्फ़ करने को भी शामिल है और अ़बस मुत्लक़न गुनाह नहीं तो चूंकि इसराफ़ ना जाइज़ है इस लिये येह ख़र्च करना मा'सियत होगा मगर जिस में ख़र्च किया वोह ख़ुद मा'सियत न था। और इ़बारत "لَا تُعْطِ فِی الْمَعَاصِی" (उस की ना फ़रमानी में मत दे) का ज़ाहिर येही है कि वोह काम ख़ुद ही मा'सियत हो। ख़ुलासा येह है कि तब्ज़ीर के मक़्सूद और हुक्म दोनों मा'सियत हैं और इसराफ़ को सिर्फ़ हुक्म में मा'सियत लाज़िम है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1 (ب), स. 937 ता 939 मुलख़्ख़सन)

इन्सान व ह़ैवान का फ़र्क़ : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान और ह़ैवान में जो मा बिहिल इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़ करने वाली चीज़) है वोह अ़क़्ल व तदबीर, दूरबीनी और दूर अन्देशी है, उ़मूमन ह़ैवान को "कल" की फ़िक्र नहीं होती और आ़म तौर पर उस की कोई ह़-र-कत किसी ह़िक्मत के मा तह़त नहीं होती, बर ख़िलाफ़ इन्सान के और मुसल्मान को तो न सिर्फ़ "दुन्यवी कल" की बल्कि इस दुन्यवी कल के बा'द आने वाली "उख़्रवी कल" की भी फ़िक्र होती है। यक़ीनन समझदार इन्सान वोही है बल्कि ह़क़ीक़तन इन्सान ही वोह है जो "उख़्रवी कल" या'नी आख़िरत की भी फ़िक्र करे, ह़िक्मते अ़-मली से काम ले और इस फ़ानी ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए बाक़ी आख़िरत के लिये कोई इन्तिज़ाम कर ले। आह ! अब तो अक्सर लोग अपनी

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी का मक़्सद माल कमाना, ख़ूब डट कर खाना और फिर ख़ूब ग़फ़्लत की नींद सो जाना ही समझते हैं।

क्या कहूं अह़बाब क्या कारे नुमायां कर गए !
मेट्रिक किया, नोकर हुए, पेन्शन मिली फिर मर गए !!

ज़िन्दगी का मक़्सद क्या है ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का मक़्सद सिर्फ़ बड़ी बड़ी डिग्रियां ह़ासिल करना, खाना पीना, और मजे़ उड़ाना नहीं है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आख़िर हमें ज़िन्दगी क्यूं मर्ह़मत फ़रमाई ? आइये ! क़ुरआने पाक की ख़िदमत में अ़र्ज़ करें कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सच्ची किताब ! तू ही हमारी रहनुमाई फ़रमा कि हमारे जीने और मरने का मक़्सद क्या है ? क़ुरआने अ़ज़ीम से जवाब मिल रहा है :

خَلَقَ الْمَوْتَ وَ الْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًاؕ (پ۲۹، الملك:۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो (दुन्यावी ज़िन्दगी में) तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।

(या'नी इस मौत व ज़िन्दगी को इस लिये पैदा किया गया ताकि आज़्माया जाए कि) इस दुन्या की ज़िन्दगी में कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ (फ़रमां बरदार) व मुख़्लिस है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1040)

घर ही पर विलादत हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान के वार से बचने की कोशिश के ज़िम्न में ईद की ह़सीन साअ़तें आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िले में गुज़ारिये। आप की तरग़ीब के लिये एक **म-दनी बहार** अ़र्ज़ करता हूं : जेहलम (सूबए पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि शादी के कमो बेश 6 माह बा'द घर में "उम्मीद" के आसार ज़ाहिर हुए। डॉक्टर ने बताया कि आप का केस पेचीदा है, ख़ून की भी काफ़ी कमी है, हो सकता है ऑपरेशन करना पड़े ! मैं ने उसी वक़्त **एक माह के म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बनने की निय्यत कर ली, और चन्द रोज़ के बा'द **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत से ऐसा करम हो गया कि न अस्पताल जाने

www.dawateislami.net

की नौबत आई और न ही किसी डॉक्टर को दिखाना पड़ा, घर ही में **म-दनी मुन्ने** की विलादत हो गई।

घर में "उम्मीद" हो, इस की तम्हीद हो — जल्द ही चल पड़ें, क़ाफ़िले में चलो
ज़च्चा की ख़ैर हो, बच्चा बिलख़ैर हो — उठिये हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 675)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिफ़ाज़ते ह़म्ल के 2 रूह़ानी इलाज : ﴿1﴾ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ 11 बार किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल की हिफ़ाज़त** होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है, चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है ﴿2﴾ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ 111 बार किसी काग़ज़ पर लिख कर **ह़ामिला** के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये। (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़रज नहीं) اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** भी मह़फ़ूज़ रहेगा और बच्चा भी सिह़ह़त मन्द पैदा होगा।

ईद या वईद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लाइक़े अ़ज़ाब कामों का इरतिकाब कर के "यौमे ईद" को अपने लिये "यौमे वईद" न बनाइये। और याद रखिये !

لَيْسَ الْعِيْدُ لِمَنْ لَّبِسَ الْجَدِيْد — اِنَّمَا الْعِيْدُ لِمَنْ خَافَ الْوَعِيْد

(या'नी ईद उस की नहीं, जिस ने नए कपड़े पहन लिये,
ईद तो उस की है जो अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ से डर गया)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى भी तो ईद मनाते रहे हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल गोया लोग सिर्फ़ नए नए कपड़े पहनने और उ़म्दा खाने तनावुल करने को ही مَعَاذَ الله **ईद** समझ बैठे हैं। ज़रा ग़ौर तो कीजिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن भी तो आख़िर **ईद** मनाते रहे हैं, मगर इन के **ईद** मनाने का अन्दाज़ ही निराला रहा है, वोह दुन्या की लज़्ज़तों से कोसों दूर

www.dawateislami.net

भागते रहे हैं और हर हाल में अपने नफ़्स की मुख़ा-लफ़त करते रहे हैं। चुनान्चे

ईद का अनोखा खाना : **हज़रते** सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने **दस बरस** तक कोई लज़ीज़ खाना तनावुल न फ़रमाया, नफ़्स चाहता रहा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नफ़्स की मुख़ा-लफ़त फ़रमाते रहे, एक बार **ईद मुबारक** की मुक़द्दस रात को दिल ने मश्वरा दिया कि कल अगर **ईदे सईद** के रोज़ कोई लज़ीज़ खाना खा लिया जाए तो क्या हरज है ? इस मश्वरे पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी दिल को आज़्माइश में मुब्तला करने की ग़रज़ से फ़रमाया, "मैं अव्वलन **दो रक्अ़त** नफ़्ल में पूरा क़ुरआने पाक ख़त्म करूंगा, ऐ मेरे दिल ! तू अगर इस बात में मेरा साथ दे तो कल लज़ीज़ खाना मिल जाएगा।" लिहाज़ा आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दो रक्अ़त अदा की और इन में पूरा क़ुरआने करीम ख़त्म किया। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दिल ने इस अम्र में आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का साथ दिया। (या'नी दोनों रक्अ़तें दिल जम्ई के साथ अदा कर ली गईं) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **ईद** के दिन लज़ीज़ खाना मंगवाया, निवाला उठा कर मुंह में डालना ही चाहते थे कि बे क़रार हो कर फिर रख दिया और न खाया। लोगों ने इस की वज्ह पूछी तो फ़रमाया : जिस वक़्त मैं निवाला मुंह के क़रीब लाया तो मेरे नफ़्स ने कहा : देखा ! मैं आख़िर अपनी दस साल पुरानी ख़्वाहिश पूरी करने में काम्याब हो गया ना ! मैं ने उसी वक़्त कहा कि अगर येह बात है तो मैं तुझे काम्याब न होने दूंगा और हरगिज़ हरगिज़ लज़ीज़ खाना न खाऊंगा। चुनान्चे आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने लज़ीज़ खाना खाने का इरादा तर्क कर दिया। इतने में एक शख़्स लज़ीज़ खाने का तबाक़ उठाए हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : येह खाना मैं ने रात अपने लिये तय्यार किया था, रात जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ख़्वाब में ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत हासिल हुई, मेरे प्यारे प्यारे और मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : अगर तू कल क़ियामत के रोज़ भी मुझे देखना चाहता है तो येह खाना ज़ुन्नून (رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) के पास ले जा और उन से जा कर कह कि "**हज़रते मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **फ़रमाते हैं कि दम भर के लिये**

www.dawateislami.net

नफ़्स के साथ सुल्ह कर लो और चन्द निवाले इस लज़ीज़ खाने से खा लो ।" हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی येह सुन कर झूम उठे और कहने लगे : "मैं फ़रमां बरदार हूं, मैं फ़रमां बरदार हूं ।" और लज़ीज़ खाना खाने लगे । (تذكرةُ الاولياء ج ١ ص ١١٧) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

रब है मो'ती येह हैं क़ासिम *रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं*
ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा *पीते हम हैं पिलाते येह हैं*

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 482, 483)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रूह को भी सजाइये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि **ईद** के दिन गुस्ल करना, नए या धुले हुए उ़म्दा कपड़े पहनना और इ़त्र लगाना मुस्तहब है, येह मुस्तह़ब्बात हमारे ज़ाहिरी बदन की सफ़ाई और ज़ीनत से मु-तअ़ल्लिक़ हैं । लेकिन हमारे इन साफ़, उजले और नए कपड़ों और नहाए हुए और ख़ुश्बू मले हुए जिस्म के साथ साथ हमारी **रूह़** भी हम पर हमारे मां बाप से भी ज़ियादा मेहरबान ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत व इत़ाअ़त और उम्मत के ग़म ख़्वार, दो जहां के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उल्फ़त व सुन्नत से ख़ूब सजी हुई होनी चाहिये ।

नजासत पर चांदी का वरक़ : ज़रा सोचिये तो सही ! रोज़ा एक भी न रखा हो, सारा माहे र-मज़ान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों में गुज़रा हो, बजाए इ़बादात के सारी सारी रातें फ़िल्म बीनियों, गाने बाजों और आवारा गर्दियों में गुज़री हों, अपने जिस्म व रूह़ को दिन रात गुनाहों में मुलव्वस रखा हो और आज **ईद** के दिन इंग्लिश फ़ेशन वाले बे ढंगे कपड़े पहन भी लिये तो इसे यूं समझिये कि गोया एक नजासत थी जिस पर चांदी का वरक़ चस्पां कर के उस की नुमाइश कर दी गई ।

ईद किस के लिये है ? : सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से सरशार दीवानो !

www.dawateislami.net

सच्ची बात तो येही है कि ईद उन ख़ुश बख़्त मुसल्मानों का हिस्सा है जिन्हों ने माहे मोह़तरम, **र-मज़ानुल मुबारक** को रोज़ों, नमाज़ों और दीगर इबादतों में गुज़ारा। तो येह **ईद** उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मज़्दूरी मिलने का दिन है। **हमें तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से डरते रहना चाहिये कि आह ! माहे मोह़तरम का हम ह़क़ अदा ही न कर सके।**

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ईद : **ह़ज़रते** अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **ईद** के दिन चन्द ह़ज़रात मकाने आ़लीशान पर ह़ाज़िर हुए तो क्या देखा कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरवाज़ा बन्द कर के ज़ारो क़ित़ार रो रहे हैं। लोगों ने ह़ैरान हो कर अ़र्ज़ की : **या अमीरल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! आज तो **ईद** है जो कि ख़ुशी मनाने का दिन है, ख़ुशी की जगह येह रोना कैसा ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आंसू पोंछते हुए फ़रमाया : "هٰذَا يَوْمُ الْعِيْدِ وَهٰذَا يَوْمُ الْوَعِيْد या'नी येह ईद का दिन भी है और वईद का दिन भी।" जिस के नमाज़ व रोज़े मक़्बूल हो गए बिला शुबा उस के लिये आज ईद का दिन है, लेकिन जिस के नमाज़ रोज़े रद कर के उस के मुंह पर मार दिये गए उस के लिये तो आज **वईद** का दिन है (मज़ीद इन्किसारन फ़रमाया :) और मैं तो इस ख़ौफ़ से रो रहा हूं कि आह ! "اَنَا لَا اَدْرِىْ اَمِنَ الْمَقْبُوْلِيْنَ اَمْ مِنَ الْمَطْرُوْدِيْنَ या'नी मुझे येह मा'लूम नहीं कि मैं मक़्बूल हुवा हूं या रद कर दिया गया हूं।" (नूरानी तक़रीरें, स. 184)

ईद के दिन उ़मर येह रो रो कर
बोले नेकों की ईद होती है

(वसाइले बख़्शिश, स. 707)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

हमारी ख़ुश फ़हमी : अल्लाहु अक्बर ! (عَزَّوَجَلَّ) मह़ब्बत वालो ! ज़रा सोचिये ! ख़ूब ग़ौर फ़रमाइये ! वोह फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन को मालिके जन्नत, ताजदारे रिसालत

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी ही में जन्नत की बिशारत इनायत फ़रमा दी थी । उन के ख़ौफ़ो ख़शिय्यत का तो येह आ़लम हो और हम जैसे निकम्मे और बातूनी लोगों की येह ह़ालत है कि नेकी के "नून" के नुक़्ते तक तो पहुंच नहीं पाते मगर ख़ुश फ़हमी का ह़ाल येह है कि हम जैसा नेक और पारसा तो शायद अब कोई रहा ही नहीं ! इस रिक़्क़त अंगेज़ ह़िकायत से उन लोगों को ख़ुसूसन दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो अपनी इ़बादात पर नाज़ करते हुए फूले नहीं समाते और बिला मस्लहते शर-ई अपने नेक आ'माल म-सलन नमाज़, रोज़ा, ह़ज, मसाजिद की ख़िदमत, ख़ल्क़े ख़ुदा की मदद और समाजी फ़लाहो बहबूद वग़ैरा वग़ैरा कामों का हर जगह ए'लान करते फिरते, ढंडोरा पीटते नहीं थकते, बल्कि अपने नेक कामों की مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ अख़बारात व रसाइल में तसावीर तक छपवाने से गुरेज़ नहीं करते । **आह !** इन का ज़ेह्न किस त़रह़ बनाया जाए ! इन को इख़्लासे निय्यत की सोच किस त़रह़ फ़राहम की जाए ! इन्हें किस त़रह़ बावर कराया जाए कि अपनी नेकियों का ए'लान करने में रियाकारी की आफ़त में पड़ने का शदीद ख़दशा है । और अपना फ़ोटो छपवाना ? तौबा ! तौबा ! अपने आ'माल की नुमाइश का इतना शौक़ कि फ़ोटो जैसे ह़राम ज़रीए़ को भी न छोड़ा गया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रियाकारी की तबाहकारी, "मैं मैं" की मुसीबत और अनानिय्यत की आफ़त से हम सब मुसल्मानों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाए ।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

शहज़ादे की ईद : **अमीरुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक मर्तबा **ईद** के दिन अपने **शहज़ादे** को पुरानी क़मीस पहने देखा तो रो पड़े, बेटे ने अ़र्ज़ की : **प्यारे अब्बाजान !** क्यूं रो रहे हैं ? फ़रमाया : **मेरे लाल !** मुझे अन्देशा है कि आज **ईद** के दिन जब लड़के तुम्हें इस पुरानी क़मीस में देखें तो कहीं तुम्हारा दिल न टूट जाए ! बेटे ने जवाबन अ़र्ज़ किया : दिल तो उस का टूटे जो रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के काम में नाकाम रहा हो या जिस ने मां या बाप की ना फ़रमानी की हो, मुझे उम्मीद है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिज़ा मन्दी के तुफ़ैल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मुझ से राज़ी हो जाएगा । येह सुन कर ह़ज़रते **उ़मर फ़ारूक़** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने

www.dawateislami.net

शहज़ादे को गले लगाया और उस के लिये दुआ फ़रमाई। (مُکاشَفَةُ الْقُلُوب ص ۳۰۸ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تَعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

शहज़ादियों की ईद : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की **शहज़ादियां** ह़ाज़िर हुईं और बोलीं : "**अब्बूजान** ! ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?" फ़रमाया : "येही कपड़े जो तुम ने पहन रखे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !" "नहीं ! **अब्बूजान** ! हमें नए कपड़े बनवा दीजिये," बच्चियों ने ज़िद करते हुए कहा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मेरी बच्चियो ! ईद का दिन **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !" "**अब्बूजान** ! आप का फ़रमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें ता'ने देंगी कि तुम अमीरुल मुअमिनीन की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही पुराने कपड़े पहन रखे हैं !" येह कहते हुए बच्चियों की आंखों में **आंसू** भर आए। बच्चियों की बातें सुन कर **अमीरुल मुअमिनीन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का दिल भी पसीज गया। **ख़ाज़िन** (वज़ीरे मालियात) को बुला कर फ़रमाया : "मुझे मेरी एक माह की तन-ख़्वाह पेशगी ला दो।" **ख़ाज़िन** ने अ़र्ज़ की : "**ह़ुज़ूर** ! क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ?" फ़रमाया : "جَزَاكَ اللّٰه ! बेशक ! तुम ने सह़ीह़ और उ़म्दा बात कही।" **ख़ाज़िन** चला गया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बच्चियों से फ़रमाया : "प्यारी बेटियो ! **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात क़ुरबान कर दो।" (मा'दने अख़्लाक़, हिस्सए अव्वल, स. 257 ता 258 बि तग़य्युरिन क़लील) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تَعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

वालिदे मर्ह़ूम पर करम : एह़तियातों भरा म-दनी ज़ेह्न बनाने के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये, म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतों के क्या कहने ! **निश्तर**

www.dawateislami.net

बस्ती (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने अपने वालिदे मर्हूम को ख़्वाब में इन्तिहाई कमज़ोरी की ह़ालत में बरह्ना किसी के सहारे पर चलता हुवा देखा। उन्हें तश्वीश हुई। उन्हों ने **ईसाले सवाब** की निय्यत से हर माह तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत कर ली और सफ़र शुरूअ़ भी कर दिया। तीसरे माह म-दनी क़ाफ़िले से वापसी के बा'द जब घर पर सोए तो उन्हों ने ख़्वाब में येह दिलकश मन्ज़र देखा कि वालिदे मर्हूम सब्ज़ सब्ज़ लिबास ज़ैबे तन किये बैठे मुस्कुरा रहे हैं और उन पर बारिश की हलकी फुलकी फुवार बरस रही है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की अहम्मिय्यत उन पर ख़ूब उजागर हुई और उन्हों ने पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हर माह तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र जारी रखूंगा।**

क़ाफ़िले में ज़रा मांगो आ कर दुआ़ — पाओगे ने'मतें, क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब होगा सवाब, और टलेगा अ़ज़ाब — पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो
जो कि मफ़्क़ूद हो, वोह भी मौजूद हो — اِنْ شَآءَ اللّٰه चलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 677, 672, 673)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ईद : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की एक एक अदा हमारे लिये मूजिबे सद दर्से इ़ब्रत होती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारे हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की शान बेहद अर्फ़अ़ो आ'ला है, इस के बा वुजूद आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हमारे लिये क्या चीज़ पेश फ़रमाते हैं! सुनिये और इ़ब्रत ह़ासिल कीजिये :

خلق گوید کہ فردا روزِ عید است — خوشی در روحِ ہر مؤمن پدید است
دراں روزے کہ با ایماں بمیرم — مرا در مُلک خود آں روزِ عید است

या'नी "लोग कह रहे हैं, "कल ईद है! कल ईद है!" और सब ख़ुश हैं। लेकिन मैं तो जिस दिन इस दुन्या से अपना ईमान सलामत ले कर गया, मेरे लिये तो वोही दिन **ईद** होगा।"

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ الله (عَزَّوَجَلَّ) ! سُبْحٰنَ الله (عَزَّوَجَلَّ) ! क्या शाने तक़्वा है ! इतनी बड़ी शान कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के सरदार ! और इस क़दर तवाज़ोअ़ व इन्किसार !! इस में हमारे लिये भी दर्से इब्रत है और हमें समझाया जा रहा है कि ख़बरदार ! ईमान के मुआ़-मले में ग़फ़्लत न करना, हर वक़्त ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र में लगे रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी ग़फ़्लत और मा'सियत के सबब ईमान की दौलत तुम्हारे हाथ से निकल जाए।

रज़ा का ख़ातिमा बिलख़ैर होगा
अगर रहमत तेरी शामिल है या ग़ौस

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 263)

एक वली की ईद : **हज़रते** सय्यिदुना शैख़ नजीबुद्दीन मु-तवक्किल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه, हज़रते सय्यिदुना शैख़ बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के भाई और ख़लीफ़ा हैं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का लक़ब **मु-तवक्किल** है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 70 बरस शहर में रहे और कोई ज़ाहिरी ज़रीअ़ए मआ़श न होने के बा वुजूद अहलो इयाल निहायत इत्मीनान से ज़िन्दगी बसर करते रहे। एक बार **ईद** के दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के घर में बहुत से मेहमान जम्अ़ हो गए, घर में ख़ुर्दो नोश (या'नी खाने पीने) का कोई सामान नहीं था। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बालाख़ाने पर जा कर **यादे इलाही** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल हो गए और दिल ही दिल में येह कह रहे थे : "आज ईद का दिन है और मेरे घर **मेहमान** आए हुए हैं।" अचानक एक शख़्स छत पर ज़ाहिर हुवा, उस ने खानों से भरा हुवा एक ख़्वान पेश किया और कहा : **ऐ नजीबुद्दीन !** तुम्हारे **तवक्कुल** की धूम मलाए आ'ला (या'नी फ़िरिश्तों) में मची हुई है और तुम्हारा ह़ाल येह है कि तुम ऐसे ख़याल (या'नी खाना त़-लबी) में मश्ग़ूल हो ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "ह़क़ तआ़ला عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि मैं अपनी ज़ात के लिये नहीं सिर्फ़ अपने मेहमानों के बाइस इस त़रफ़ मु-तवज्जेह हो गया था।" हज़रते सय्यिदुना नजीबुद्दीन **मु-तवक्किल** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه साहिबे करामत होने के बा वुजूद इन्तिहाई मुन्कसिरुल मिज़ाज थे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इन्किसारी का येह आ़लम था कि एक रोज़ एक

www.dawateislami.net

फ़क़ीर बहुत दूर से मुलाक़ात के लिये आया और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा कि क्या नजीबुद्दीन **मु-तवक्किल** (या'नी **तवक्कुल** करने वाला) आप ही हैं ? तो इन्किसारन फ़रमाया कि भाई ! मैं तो नजीबुद्दीन **मु-तअक्किल** (या'नी बहुत ज़ियादा खाने वाला) हूं। (اَخبارُ الاخیار ص ٦٠ مُلَخَّصاً)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالیٰ علیه واٰله وسلّم

करामत का एक शो'बा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस **ह़िकायत** से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब चाहता है अपने दोस्तों की ज़रूरिय्यात का ग़ैब से इन्तिज़ाम फ़रमा देता है। ब वक़्ते ज़रूरत खाना, पानी वग़ैरा ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी का अचानक ह़ाज़िर हो जाना बुज़ुर्गों से **करामत** के त़ौर पर वुक़ूअ़ में आता है। चुनान्चे "शर्ह़े अ़क़ाइदे नस्फ़िय्यह" में जहां करामत की चन्द अक़्साम का बयान है वहां येह भी मज़्कूर है कि ज़रूरत के वक़्त खाने पानी का ह़ाज़िर हो जाना भी करामत ही का एक शो'बा है। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن के ख़ुदादाद तसर्रुफ़ात व करामात का क्या कहना ? येह ऐसे मक़्बूलाने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ होते हैं कि उन की ज़बाने पाक से निकली हुई बात और दिल में पैदा होने वाली ख़्वाहिशात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से पूरी फ़रमा देता है।

एक सख़ी की ईद : सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि **ईदुल फ़ित्र** की शब दरवाज़े पर दस्तक हुई, देखा तो मेरा हमसाया खड़ा था। मैं ने पूछा : कहो भाई ! कैसे आना हुवा ? उस ने कहा : "कल **ईद** है लेकिन ख़र्च के लिये कुछ नहीं, अगर आप कुछ इनायत फ़रमा दें तो इ़ज़्ज़त के साथ हम **ईद** का दिन गुज़ार लेंगे।" मैं ने अपनी बीवी से कहा : हमारा फ़ुलां पड़ोसी आया है उस के पास **ईद** के लिये एक पैसा तक नहीं, अगर तुम्हारी राय हो तो जो **पच्चीस दिरहम** हम ने **ईद** के लिये रख छोड़े हैं उस को पेश कर दें हमें **अल्लाह तआला** और दे देगा। नेक बीवी ने कहा : बहुत अच्छा। चुनान्चे मैं ने वोह सब दिरहम अपने हमसाए के ह़वाले कर दिये, वोह दुआएं देता हुवा चला गया। थोड़ी देर के बा'द फिर किसी

www.dawateislami.net

ने दरवाज़ा खट-खटाया। मैं ने जूंही दरवाज़ा खोला, एक आदमी आगे बढ़ कर मेरे क़दमों पर गिर पड़ा और रो रो कर कहने लगा : मैं आप के वालिद का भागा हुवा ग़ुलाम हूं, मुझे अपनी ह़-र-कत पर बहुत नदामत लाहिक़ हुई तो ह़ाज़िर हो गया हूं, येह **पच्चीस दीनार** मेरी कमाई के हैं आप की ख़िदमत में पेश करता हूं क़बूल फ़रमा लीजिये, आप मेरे आक़ा हैं और मैं आप का ग़ुलाम। मैं ने वोह दीनार ले लिये और ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। फिर मैं ने अपनी बीवी से कहा : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान देखो! उस ने हमें **दिरहम** के बदले **दीनार** अ़त़ा फ़रमाए (पहले दिरहम चांदी के और दीनार सोने के होते थे!) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हि़साब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सलाम उस पर कि जिस ने बे कसों की दस्त-गीरी की : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान भी कितनी निराली है कि उस ने पच्चीस दिरहम (चांदी के सिक्के) देने वाले को आन की आन में पच्चीस दीनार (सोने के सिक्के) अ़त़ा फ़रमा दिये। और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين का ईसार भी ख़ूब था कि वोह अपनी तमाम तर आसाइशें दूसरे मुसल्मानों की ख़ातिर क़ुरबान कर देते थे।

क़ुव्वते समाअ़त बह़ाल हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल में अ़-ज़्-मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बढ़ाने, सीने में शम्ए उल्फ़ते मुस्त़फ़ा जलाने और ईदे सईद की ह़क़ीक़ी ख़ुशियां पाने के लिये हो सके तो चांदरात को **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कतें तो देखिये! बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है, कोएटा में होने वाले तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक एक बहरे इस्लामी भाई ने हाथों हाथ तीन दिन के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दौराने सफ़र ही उन की **क़ुव्वते समाअ़त** बह़ाल हो गई और वोह आ़म लोगों की त़रह सुनने लगे।

www.dawateislami.net

कान बहरे हैं गर, रख्खो रब पर नज़र   होगा लुत़्फ़े ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो
दुन्यवी आफ़तें, उख़्रवी शामतें   दूर होंगी ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

स-द-क़ए फ़ित्र : **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह 30 **सू-रतुल आ'ला** की आयत नम्बर 14 ता 15 में इर्शाद फ़रमाता है :

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में इस आयते करीमा के तह़्त लिखते हैं : इस आयत की तफ़्सीर में येह कहा गया है कि "تَزَكّٰى" से स-द-क़ए फ़ित्र देना और रब का नाम लेने से ईदगाह के रास्ते में तक्बीरें कहना और नमाज़ से नमाज़े ईद मुराद है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1099)

स-द-क़ए फ़ित्र वाजिब है : **सरकारे** मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को हुक्म दिया कि जा कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के गली कूचों में ए'लान कर दो, "**स-द-क़ए फ़ित्र** वाजिब है।" (ترمذی ج۲ص۱۵۱حدیث۶۷۴)

स-द-क़ए फ़ित्र लग़्व बातों का कफ़्फ़ारा है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : म-दनी सरकार, ग़रीबों के ग़म ख़्वार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **स-द-क़ए फ़ित्र** मुक़र्रर फ़रमाया ताकि फ़ुज़ूल और बेहूदा कलाम से रोज़ों की त़हारत (या'नी सफ़ाई) हो जाए। नीज़ मसाकीन की ख़ूरिश (या'नी ख़ूराक) भी हो जाए। (ابوداوٗد ج۲ص۱۵۸حدیث۱۶۰۹)

रोज़ा मुअ़ल्लक़ रहता है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तक **स-द-क़ए फ़ित्र** अदा नहीं किया जाता, बन्दे का **रोज़ा** ज़मीन व आस्मान के दरमियान मुअ़ल्लक़ (या'नी लटका हुवा) रहता है। (اَلْفِردَوس بماْثور الْخِطاب ج۲ص۳۹۵حدیث۳۷۵۴)

www.dawateislami.net

"ईद की ख़ुशियां मुबारक" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से फ़ित्रे के 16 म-दनी फूल

﴾1﴿ **स-द-क़ए फ़ित्र** उन तमाम मुसल्मान मर्द व औ़रत पर वाजिब है जो "साहि़बे निसाब" हों और उन का निसाब "ह़ाजाते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी म-सलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान वग़ैरा)" से फ़ारिग़ हो। (ماخوذ از عالمگیری ج۱ص۱۹۱)

﴾2﴿ **जिस** के पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े बावन तोला चांदी की रक़म या इतनी मालिय्यत का माले तिजारत हो (और येह सब ह़ाजाते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हों) या इतनी मालिय्यत का ह़ाजते अस्लिय्या के इलावा सामान हो उस को **साहि़बे निसाब** कहा जाता है।[1]

﴾3﴿ **स-द-क़ए फ़ित्र** वाजिब होने के लिये, "आ़क़िल व बालिग़" होना शर्त़ नहीं। बल्कि बच्चा या मजनून (या'नी पागल) भी अगर **साहि़बे निसाब** हो तो उस के माल में से उन का वली (या'नी सर परस्त) अदा करे। (ردُّالمُحتار ج۳ص۳۶۰) "**स-द-क़ए फ़ित्र**" के लिये मिक़्दारे निसाब तो वोही है जो ज़कात का है जैसा कि मज़्कूर हुवा लेकिन फ़र्क़ येह है कि **स-द-क़ए फ़ित्र** के लिये माल के नामी (या'नी उस में बढ़ने की सलाहि़य्यत) होने और साल गुज़रने की शर्त़ नहीं। इसी त़रह़ जो चीज़ें ज़रूरत से ज़ियादा हैं (म-सलन उ़मूमी ज़रूरत से ज़ियादा कपड़े, बे सिले जोड़े, घरेलू ज़ीनत की अश्या वग़ैरहा) और उन की क़ीमत निसाब को पहुंचती हो तो उन अश्या की वज्ह से **स-द-क़ए फ़ित्र** वाजिब है।

(वक़ारुल फ़तावा, जि. 2, स. 386 मुलख़्ख़सन)

﴾4﴿ **मालिके** निसाब मर्द पर अपनी त़रफ़ से, अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से और अगर कोई

1 : "साहि़बे निसाब", "ग़नी", "फ़क़ीर", "ह़ाजाते अस्लिय्या" वग़ैरा इस्त़िलाह़ात की तफ़्सीली मा'लूमात फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूर किताब "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल ह़िस्सए पन्जुम में मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

मजनून (या'नी पागल) औलाद है (चाहे फिर वोह पागल औलाद बालिग़ ही क्यूं न हो) तो उस की त़रफ़ से भी **स-द-क़ए फ़ित्र** वाजिब है, हां अगर वोह बच्चा या मजनून खु़द साहि़बे निसाब है तो फिर उस के माल में से फ़ित्रा अदा कर दे।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۹۲ مُلَخَّصاً)

5 **मर्द** साहि़बे निसाब पर अपनी बीवी या मां बाप या छोटे भाई बहन और दीगर रिश्तेदारों का **फ़ित्रा** वाजिब नहीं। (ایضاً ص ۱۹۳ ملَخَّصاً)

6 **वालिद** न हो तो दादाजान वालिद साहि़ब की जगह हैं। या'नी अपने फ़क़ीर व यतीम पोते पोतियों की त़रफ़ से उन पे **स-द-क़ए फ़ित्र** देना वाजिब है। (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۳۶۸)

7 **मां** पर अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से **स-द-क़ए फ़ित्र** देना वाजिब नहीं।

(رَدُّ الْمُحتار ج ۳ ص ۳۶۸)

8 **बाप** पर अपनी आ़क़िल बालिग़ औलाद का **फ़ित्रा** वाजिब नहीं।

(دُرِّمُختار مع رَدِّالْمُحتار ج ۳ ص ۳۷۰)

9 **किसी** सही़ह़ शर-ई मजबूरी के तह़त रोजे़ न रख सका या مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर मजबूरी के **र-मज़ानुल मुबारक** के रोजे़ न रखे उस पर भी **साहि़बे निसाब** होने की सूरत में **स-द-क़ए फ़ित्र** वाजिब है। (رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۳۶۷)

10 **बीवी** या बालिग़ औलाद जिन का नफ़क़ा वग़ैरा (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा का ख़र्च) जिस शख़्स के ज़िम्मे है, वोह अगर इन की इजाज़त के बिग़ैर ही इन का **फ़ित्रा** अदा कर दे तो अदा हो जाएगा। हां अगर नफ़क़ा उस के ज़िम्मे नहीं है म-सलन बालिग़ बेटे ने शादी कर के घर अलग बसा लिया और अपना गुज़ारा खु़द ही कर लेता है तो अब अपने नान नफ़क़े (या'नी रोटी कपड़े वग़ैरा) का खु़द ही ज़िम्मेदार हो गया है। लिहाज़ा ऐसी औलाद की त़रफ़ से बिग़ैर इजाज़त **फ़ित्रा** दे दिया तो अदा न होगा।

11 **बीवी** ने बिग़ैर हुक्मे शोहर अगर शोहर का **फ़ित्रा** अदा कर दिया तो अदा न होगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 398 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

12 **ईदुल फ़ित्र** की सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ होते वक़्त जो **साहिबे निसाब** था उसी पर **स-द-क़ए फ़ित्र** वाजिब है, अगर सुब्हे सादिक़ के बा'द **साहिबे निसाब** हुवा तो अब वाजिब नहीं। (ماخوذ از عالمگیری ج۱ص۱۹۲)

13 **स-द-क़ए फ़ित्र** अदा करने का अफ़्ज़ल वक़्त तो येही है कि ईद को सुब्हे सादिक़ के बा'द **ईद** की नमाज़ अदा करने से पहले पहले अदा कर दिया जाए, अगर चांदरात या **र-मज़ानुल मुबारक** के किसी भी दिन बल्कि र-मज़ान शरीफ़ से पहले भी अगर किसी ने अदा कर दिया तब भी **फ़ित्रा** अदा हो गया और ऐसा करना बिल्कुल जाइज़ है। (اَیضاً)

14 **अगर** ईद का दिन गुज़र गया और **फ़ित्रा** अदा न किया था तब भी **फ़ित्रा** साक़ित़ न हुवा, बल्कि उम्र भर में जब भी अदा करें अदा ही है। (اَیضاً)

15 **स-द-क़ए फ़ित्र** के मसारिफ़ वोही हैं जो ज़कात के हैं। या'नी जिन को ज़कात दे सकते हैं उन्हें **फ़ित्रा** भी दे सकते हैं और जिन को ज़कात नहीं दे सकते उन को **फ़ित्रा** भी नहीं दे सकते। (اَیضاًص١٩٤ مُلَخّصاً)

16 **सादाते** किराम को **स-द-क़ए फ़ित्र** नहीं दे सकते। क्यूं कि येह बनी हाशिम से हैं। **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्हा 931 पर है : बनी हाशिम को ज़कात (फ़ित्रा) नहीं दे सकते। न ग़ैर इन्हें दे सके, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को। बनी हाशिम से मुराद ह़ज़रते अ़ली व जा'फ़र व अ़क़ील और ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की औलादें हैं।

स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार : गेहूं या इस का आटा या सत्तू आधा साअ़ (या'नी दो किलो में 80 ग्राम कम) (या इन की क़ीमत), खजूर या मुनक़्क़ा या जव या इस का आटा या सत्तू एक साअ़ (या'नी चार किलो में 160 ग्राम कम) (या इन की क़ीमत) येह एक **स-द-क़ए फ़ित्र** की मिक़्दार है। (عالمگیری ج۱ص۱۹۱، دُرِّمُختارج۳ص۳۷۲) "बहारे शरीअ़त" में है : आ'ला द-रजे की तह़क़ीक़ और

www.dawateislami.net

एह़तियात् येह है कि : साअ़ का वज़्न तीन सो इकावन[351] रुपै भर है और निस्फ़ साअ़ एक सो पछत्तर[175] रुपै अठन्नी भर ऊपर। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 939)

इन चार चीज़ों के इलावा अगर किसी दूसरी चीज़ से फ़ित्रा अदा करना चाहे, म-सलन चावल, जुवार, बाजरा या और कोई ग़ल्ला या और कोई चीज़ देना चाहे तो क़ीमत का लिहाज़ करना होगा या'नी वोह चीज़ आधे साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव की क़ीमत की हो, यहां तक कि रोटी दें तो उस में भी क़ीमत का लिहाज़ किया जाएगा अगर्चे गेहूं या जव की हो। (ऐज़न)

क़ब्र में एक हज़ार अन्वार दाख़िल हों : **मन्क़ूल** है कि जो शख़्स **ईद** के दिन तीन सो मर्तबा "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" पढ़े और फ़ौत शुदा मुसल्मानों की अरवाह़ को इस का ईसाले सवाब करे तो हर मुसल्मान की क़ब्र में **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल होते हैं और जब वोह पढ़ने वाला ख़ुद मरेगा, **अल्लाह तआ़ला** उस की क़ब्र में भी **एक हज़ार अन्वार** दाख़िल फ़रमाएगा।
(مُکَاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٣٠٨)

नमाज़े ईद से क़ब्ल की एक सुन्नत : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अब उन बातों का बयान किया जाता है जो ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और बक़र ईद दोनों) में सुन्नत हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ईदुल फ़ित्र** के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और **ईदुल अज़्ह़ा** के रोज़ उस वक़्त तक नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते। (ترمذی ج ٢ ص ٧٠ حديث ٥٤٢) और "बुख़ारी" की रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से है कि ईदुल फ़ित्र के दिन (नमाज़े ईद के लिये) तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द **खजूरें** न तनावुल फ़रमा लेते और वोह ताक़ होतीं। (بُخاری ج ١ ص ٣٢٨ حديث ٩٥٣) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ईद को (नमाज़े ईद के लिये) एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते। (ترمذی ج ٢ ص ٦٩ حديث ٥٤١)

www.dawateislami.net

नमाज़े ईद का तरीक़ा (ह़-नफ़ी)

पहले इस त़रह़ निय्यत कीजिये : "मैं निय्यत करता हूं दो रक्अ़त नमाज़ **ईदुल फ़ित्र** (या **ईदुल अज़्ह़ा**) की, साथ छ[6] ज़ाइद तक्बीरों के, वासिते़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, पीछे इस इमाम के" फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए लटका दीजिये, फिर हाथ कानों तक उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर लटका दीजिये, फिर कानों तक हाथ उठाइये और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर बांध लीजिये या'नी **पहली तक्बीर** के बा'द हाथ बांधिये इस के बा'द **दूसरी** और **तीसरी तक्बीर** में लटकाइये और **चौथी** में हाथ बांध लीजिये, इस को यूं याद रखिये कि **जहां क़ियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं।** फिर इमाम **तअ़व्वुज़** और **तस्मिया** आहिस्ता पढ़ कर **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्‌र (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े, फिर रुकूअ़ करे। दूसरी रक्अ़त में पहले **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरह जह्‌र के साथ पढ़े, फिर तीन बार कान तक हाथ उठा कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी बार बिग़ैर हाथ उठाए اَللّٰهُ اَكْبَر कहते हुए रुकूअ़ में जाइये और क़ाइदे के मुत़ाबिक़ नमाज़ मुकम्मल कर लीजिये। हर दो तक्बीरों के दरमियान तीन बार "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने की मिक़्दार चुप खड़ा रहना है। (माख़ूज़न बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 781, دُرِّمختار ج٣ ص٦١ वग़ैरा)

ईद की अधूरी जमाअ़त मिली तो....? : पहली रक्अ़त में इमाम के तक्बीरें कहने के बा'द मुक़्तदी शामिल हुवा तो उसी वक़्त (तक्बीरे तह़रीमा के इलावा मज़ीद) **तीन तक्बीरें** कह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ़ कर दी हो और **तीन** ही कहे अगर्चे इमाम ने तीन से ज़ियादा कही हों और अगर उस ने तक्बीरें न कहीं कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम के साथ रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कह ले और अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे फिर अगर

www.dawateislami.net

उस ने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाक़ी साक़ित् हो गईं (या'नी बक़िय्या तक्बीरें अब न कहे) और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बा'द शामिल हुवा तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि (इमाम के सलाम फैरने के बा'द) जब अपनी (बक़िय्या) पढ़े उस वक़्त कहे। और रुकूअ़ में जहां तक्बीर कहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौत शुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे। दूसरी रक्अ़त की तक्बीरें अगर इमाम के साथ पा जाए फ़बिहा (या'नी तो बेहतर)। वरना इस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक्अ़त के बारे में मज़्कूर हुई।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 782, دُرِّمُختار ج۳ص٦٤، عالمگیری ج۱ص۱۵۱)

ईद की जमाअ़त न मिली तो क्या करे ? : इमाम ने नमाज़े ईद पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना (बिग़ैर जमाअ़त के) नहीं पढ़ सकता। हां बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े।

ईद के ख़ुत्बे के अह़काम : नमाज़ के बा'द इमाम दो ख़ुत्बे पढ़े और **ख़ुत्बए जुमुआ़** में जो चीज़ें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मक्रूह यहां भी मक्रूह। सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क़ है एक येह कि **जुमुआ़** के पहले ख़ुत्बे से पेशतर ख़त़ीब का बैठना सुन्नत था और इस में न बैठना सुन्नत है। दूसरे येह कि इस में पहले ख़ुत्बे से पेशतर 9 बार और दूसरे के पहले 7 बार और मिम्बर से उतरने के पहले 14 बार اَللّٰهُ اَكْبَر कहना सुन्नत है और जुमुआ़ में नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 783, دُرِّمُختار ج۳ص٦٧، عالمگیری ج۱ص۱۵۰)

"दे दो ईदी में ग़म मदीने का" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से ईद के 20 म-दनी फूल

ईद के दिन येह उमूर मुस्तह़ब हैं :

❁ ह़जामत बनवाना (मगर ज़ुल्फ़ें बनवाइये न कि अंग्रेज़ी बाल) ❁ नाख़ुन तरश्वाना ❁

www.dawateislami.net

गु़स्ल करना ❁ मिस्वाक करना (येह उस के इलावा है जो वुज़ू में की जाती है) ❁ अच्छे कपड़े पहनना, नए हों तो नए वरना धुले हुए ❁ ख़ुश्बू लगाना ❁ अंगूठी पहनना (जब कभी अंगूठी पहनिये तो इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सिर्फ़ साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनिये, एक से ज़ियादा न पहनिये और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो, एक से ज़ियादा नगीने न हों, बिग़ैर नगीने की भी मत पहनिये, नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं, चांदी का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इलावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता) ❁ नमाज़े फ़ज्र मस्जिदे मह़ल्ला में पढ़ना ❁ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना, तीन, पांच, सात या कमो बेश मगर ताक़ हों। खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा ले। अगर नमाज़ से पहले कुछ भी न खाया तो गुनाह न हुवा मगर इशा तक न खाया तो इताब (या'नी मलामत) किया जाएगा ❁ नमाज़े ईद, ईदगाह में अदा करना ❁ ईदगाह पैदल चलना ❁ सुवारी पर भी जाने में ह़रज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर क़ुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़्ज़ल है और वापसी पर सुवारी पर आने में ह़रज नहीं ❁ नमाज़े ईद के लिये ईदगाह जल्द चले जाना और एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना ❁ ईद की नमाज़ से पहले **स-द-क़ए फ़ित्र** अदा करना ❁ ख़ुशी ज़ाहिर करना ❁ कसरत से स-दक़ा देना ❁ ईदगाह को इत़्मीनान व वक़ार और नीची निगाह किये जाना ❁ आपस में मुबारक बाद देना ❁ बा'दे नमाज़े ईद मुसा-फ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाना) और मुआ़-नक़ा (या'नी गले मिलना) जैसा कि उ़मूमन मुसल्मानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है, मगर **अम्रद** (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से गले मिलना मह़ल्ले फ़ितना है ❁ **ईदुल फ़ित्र** की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में आहिस्ता से तक्बीर कहिये और नमाज़े ईदे अज़्हा के लिये जाते हुए रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहिये। तक्बीर येह है :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ وَلِلّٰهِ الْحَمْد

www.dawateislami.net

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 779 ता 781, عالمگیری ج ۱ ص ۱۴۹،۱۵۰ वग़ैरा)

बक़र ईद का एक मुस्तह़ब : ईदे अज़्हा (या'नी बक़र ईद) तमाम अह़काम में **ईदुल फ़ित्र** (या'नी मीठी ईद) की त़रह़ है। सिर्फ़ बा'ज़ बातों में फ़र्क़ है, म-सलन इस में (या'नी बक़र ईद में) मुस्तह़ब येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए चाहे क़ुरबानी करे या न करे और अगर खा लिया तो कराहत भी नहीं। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۵۲)

मैं ईद की नमाज़ भी नहीं पढ़ता था : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर साल **र-मज़ानुल मुबारक** में ए'तिकाफ़ की सआदत और माहे **र-मज़ानुल मुबारक** की ख़ूब ब-र-कतें लूटिये फिर ईद में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार कीजिये। तरग़ीब व तह़रीस की ख़ात़िर एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के मेन कोरंगी रोड के क़रीब मुक़ीम एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 25 बरस) एक गेरेज (Garage) पर काम करते थे। (अगर्चे फ़ी नफ़्सिही गेरेज या'नी गाड़ियों की मरम्मत का काम ग़लत़ नहीं, मगर आज कल गुनाहों भरे ह़ालात हैं। जिन को वासित़ा पड़ा होगा वोह जानते होंगे कि अक्सर गेरेज का माह़ोल किस क़दर गन्दा होता है, फ़ी ज़माना गेरेज में काम करने वालों के लिये ह़लाल रोज़ी का ह़ुसूल जूए शीर लाने के मु-तरादिफ़ है।) गेरेज के गन्दे माह़ोल की नह़ूसत के सबब उन को पन्ज वक़्ता नमाज़ क़ुज़ा जुमुआ़ बल्कि **ईदैन** की नमाज़ों की भी तौफ़ीक़ नहीं थी, रात गए तक T.V. पर मुख़्तलिफ़ फ़िल्में डिरामे देखने में मश्ग़ूल रहते बल्कि हर क़िस्म की छोटी बड़ी बुराइयां उन के अन्दर मौजूद थीं। उन की इस्लाह़ के अस्बाब यूं हुए कि **मक-त-बतुल मदीना** से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयान "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की ख़ुफ़्या तदबीर**" की केसिट सुनी जिस ने उन्हें सर ता पा हिला कर रख दिया। इस के बा'द **र-मज़ानुल मुबारक** में **ए'तिकाफ़** की सआदत ह़ासिल हुई और आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र का शरफ़

www.dawateislami.net

मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गए, पांचों वक़्त नमाज़ों की पाबन्दी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि वोह इन्सान जो **ईद** के बहाने भी मस्जिद का रुख़ नहीं करता था येह बयान देते वक़्त तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ एक मस्जिद की ज़ैली मुशा-वरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से बे नमाज़ियों को नमाज़ी बनाने की जुस्त-जू में रहता है।

भाई गर चाहते हो नमाज़ें पढ़ूं, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
नेकियों में तमन्ना है आगे बढ़ूं, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें **ईदे सईद** की ख़ुशियां सुन्नत के मुत़ाबिक़ मनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। और हमें ह़ज शरीफ़ और दियारे मदीना व ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **दीद की म-दनी ईद** बार बार नसीब फ़रमा। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلّم

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी
मेरे ख़्वाब में तू आना म-दनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 424)

मुझ गुनहगार पर भी करम के छींटे पड़े : कोरंगी बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई (उ़म्र 22 साल) बे नमाज़ी, फ़िल्मों डिरामों के शौक़ीन और बिगड़े हुए नौ जवान थे, बुरे हम-नशीनों के साथ फ़ेशन की अंधेरियों में भटक रहे थे, बुरी सोह़बत की वज्ह से ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुनाहों में बसर हो रहे थे। हिलाले **माहे र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि.) आस्माने दुन्या पर ज़ाहिर हुवा, रह़मते ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ की बारिशें बरसने लगीं, **उन पर भी करम के छींटे पड़े** और वोह करीमिया क़ादिरिय्या मस्जिद कोरंगी नम्बर ढाई, बाबुल मदीना कराची में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में **मो'तकिफ़** हो

www.dawateislami.net

गए। उन की ख़ज़ां रसीदा ज़िन्दगी की शाम में सुब्हे बहारां के म-दनी फूल खिलने लगे, उन को तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हुई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह नमाज़ी बन गए, दाढ़ी और इमामा शरीफ़ सजाने की सआदत मिल गई, तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के एक माह के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र नसीब हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर एक मस्जिद के ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों में हिस्सा लेने की सआदत हासिल कर रहे हैं।

मरज़े इस्यां से छुटकारा चाहो अगर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ आओ इधर आ भी जाओ इधर, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 639)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिज़्क़ में ब-र-कत का बे मिसाल वज़ीफ़ा

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया : "क्या वोह **तस्बीह़** तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है फ़िरिश्तों और मख़्लूक़ की जिस की ब-र-कत से **रोज़ी** दी जाती है, जब सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ हो तो येह तस्बीह़ एक सो बार पढ़ा करो, "سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰه" दुन्या तेरे पास ज़लील हो कर आएगी।" वोह शख़्स चला गया कुछ मुद्दत ठहर कर दोबारा हाज़िर हुवा, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुन्या मेरे पास इस कसरत से आई, मैं हैरान हूं, कहां उठाऊं कहां रखूं ! (الخصائص الکبرٰی لِلسُّیوطی ج۲ ص۲۹۹ مُلَخَّصاً)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस तस्बीह़ का **विर्द** ह़त्तल इम्कान तुलूए सुब्हे सादिक़ के साथ हो, वरना सुब्ह़ से पहले, जमाअ़त क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बा'द को अ़दद पूरा कीजिये और जिस दिन क़ब्ले नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूए शम्स (या'नी सूरज निकलने) से पहले।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 128 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

“या ग़फ़्फ़ार” के छ[6] हुरूफ़ की निस्बत से

इमामे के मु-तअ़ल्लिक़ 6 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

۞ इमामे के साथ दो रक्अ़त नमाज़ बिग़ैर इमामे की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल हैं[1] ۞ टोपी पर इमामा हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसल्मान अपने सर पर देगा उस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़ता किया जाएगा[2] ۞ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए़ के रोज़ इमामे वालों पर[3] ۞ इमामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकी के बराबर है[4] ۞ इमामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इमामे के 70 जुमुओं के बराबर है[5] ۞ इमामे अ़रब के ताज हैं तो इमामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इमामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है[6] ।

مدینہ

۱: اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج۲ ص۲۶۵ حدیث ۳۲۳۳۔ ۲: اَلْجامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوْطِی ص ۳۵۳ حدیث ۵۷۲۵۔ ۳: اَلْفِرْدَوْس بمأثور الْخَطّاب ج۱ ص۱۴۷ حدیث ۵۲۹۔ ۴: ایضاً ج۲ ص ۴۰۶ حدیث ۳۸۰۵، فتاوٰی رضویہ مُخَرَّجہ ج۶ ص ۲۱۳۔ ۵: ابن عساکِر ج۳۷ ص۳۵۵۔ ۶: کَنْزُ الْعُمّال ج۱۵ ص۱۳۳ رقم ۴۱۱۳۸۔

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नफ़्ल रोज़ों के फ़ज़ाइल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स अ़र्शे इलाही के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला। (اَلْبُدُوْرُ السَّافِرَة ص١٣١ حديث ٣٦٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा **नफ़्ल रोज़ों** की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि मत पूछो बात ! आदमी का जी चाहे कि बस रोज़े रखते ही चले जाएं। **दीनी फ़वाइद** में ईमान की हि़फ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से हि़फ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि रोज़ेदार से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है।

रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत : अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 22 **सू-रतुल अह़ज़ाब** की आयत नम्बर 35 में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَالصّٰٓئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ﴿۳۵﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

وَالصّٰٓئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ (**तरजमा :** और रोज़े वाले और रोज़े वालियां) की तफ़्सीर में ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल बरकात **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद न-सफ़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : इस में फ़र्ज़ और नफ़्ल दोनों क़िस्म के रोज़े दाख़िल हैं। मन्क़ूल है : जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े रखे वोह रोज़े रखने वालों में शुमार किया जाता है। (تفسیرِ مَدارك ج۲ص۳٤٥)

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 29 सू-रतुल ह़ाक़्क़ह की आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِیْٓــٴًـۢا بِمَاۤ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ ﴿۲۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی आयते करीमा के इस हिस्से : (गुज़रे हुए दिनों में) के तह़्त लिखते हैं : या'नी दुन्या के दिनों में से गुज़श्ता दिनों में या उन दिनों में जो कि खाने और पीने से ख़ाली थे और वोह **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़ों के दिन हैं और दूसरे मस्नून रोज़ों के अय्याम जैसे अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़), अ़-रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम) का दिन, रोज़े आ़शूरा, पीर का दिन, जुम्अ़रात का दिन और शबे बराअत का दिन वग़ैरा। (تفسیرِ عزیزی ج۲ص۱۰۳) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ ﴿۲۴﴾ (गुज़रे हुए दिनों में) से मुराद रोज़ों के दिन हैं अब मत़लब येह हुवा

www.dawateislami.net

कि तुम खाओ और पियो उस के बदले में जो तुम ने रोज़े के दिनों में **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा में ख़ुद को खाने पीने से रोका । (लिहाज़ा जन्नत में खाना पीना दुन्या में खाने पीने से रुकने का बदल हो जाएगा) (تفسیر رُوحُ البَیان ج۷ص۱۴۳)

"माहे रमज़ान मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर 13 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) जन्नत का अनोखा दरख़्त : जिस ने **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा उस के लिये **जन्नत** में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा जिस का फल **अनार** से छोटा और **सेब** से बड़ा होगा, वोह शह्द जैसा मीठा और ख़ुश ज़ाएक़ा होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा । (مُعْجَم کَبِیر ج۱۸ص۳۶۶حدیث۹۳۵)

(2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी : जिस ने सवाब की उम्मीद रखते हुए **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से **चालीस साल** (की मसाफ़त के बराबर) दूर फ़रमा देगा । (جَمعُ الجَوامع ج۷ص۱۹۰حدیث۲۲۲۵۱)

(3) दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त तक दूरी : जिस ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दिन का **नफ़्ल रोज़ा** रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास सालह मसाफ़त (या'नी फ़ासिले) तक दूर फ़रमा देगा । (كَنزُ العُمّال ج۸ ص ۲۵۵ حدیث ۲۴۱۴۹)

(4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब : अगर किसी ने **एक दिन नफ़्ल रोज़ा** रखा और **ज़मीन भर सोना** उसे दिया जाए जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा । (أبو يَعلٰی ج۵ص۳۵۳حدیث۶۱۰۴)

(5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी : जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के माबैन (या'नी दरमियान) फ़ासिला है । और जिस ने एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीन व आस्मान का दरमियानी फ़ासिला है । (مَجْمَعُ الزَّوائِد ج۳ص۴۴۵حدیث۵۱۷۷)

www.dawateislami.net

6 कव्वा बचपन ता बुढ़ापा उड़ता रहे यहां तक कि...... : जिस ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक **कव्वा** जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए।

(آبو یَعْلٰی ج ۱ ص ۳۸۳ حدیث ۹۱۷)

7 रोजे़ जैसा कोई अ़मल नहीं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" फ़रमाया : "रोजे़ को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस की मिस्ल कोई अ़मल नहीं।" रावी कहते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के घर दिन के वक़्त मेहमान की आमद के इलावा कभी धूआं न देखा गया (या'नी आप दिन को खाना खाते ही न थे रोज़ा रखते थे)।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ج ۵ ص ۱۷۹ حدیث ۳٤۱٦)

8 रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे : صُوْمُوْا تَصِحُّوا ـ या'नी रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे।

(مُعْجَم اَوْسَط ج ٦ ص ١٤٦ حديث ٨٣١٢)

9 मह़शर में रोज़ादारों के मजे़ : क़ियामत के दिन जब रोजे़दार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोजे़ की बू से पहचाने जाएंगे, उन के लिये दस्तर ख़्वान लगाया जाएगा और उन्हें कहा जाएगा : "खाओ ! कल तुम भूके थे, पियो ! कल तुम प्यासे थे, आराम करो ! कल तुम थके हुए थे।" पस वोह खाएंगे पियेंगे और आराम करेंगे ह़ालां कि लोग ह़िसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे।

(جَمْعُ الْجَوامِع ج ١ ص ٣٣٤ حديث ٢٤٦٢)

10 ......तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा : जो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहते हुए इन्तिक़ाल कर गया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा। और जिस ने किसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **रोज़ा** रखा, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **स-दक़ा** किया, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।

(مُسند امام احمد ج ۹ ص ۹۰ حدیث ۲۳۳۸٤)

www.dawateislami.net

11 जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है : हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे उ़मारा बिन्ते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे यहां तशरीफ़ लाए, मैं ने खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया : "तुम भी खाओ !" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं रोज़े से हूं।" तो फ़रमाया : "जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है फ़िरिश्ते उस रोज़ादार के लिये दुआ़एं मग़्फ़िरत करते रहते हैं।"

(ترمذی ج۲ص۲۰۵حدیث۷۸۵)

12 हड्डियां तस्बीह़ करती हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) आओ नाश्ता करें।" तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं रोज़े से हूं।" तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है।" फिर फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने कुछ खाया जाए तब तक उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं, उसे फ़िरिश्ते दुआ़एं देते हैं।"

(ابنِ ماجه ج۲ ص ۳۴۸ حدیث ۱۷۴۹)

13 रोज़े में मरने की फ़ज़ीलत : "**जो** रोज़े की ह़ालत में मरा, **अल्लाह तआ़ला** क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा।" (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۳ ص۵۰۴حدیث۵۵۵۷)

नेक काम के दौरान मरने की सआ़दत : ख़ुश नसीब है वोह मुसल्मान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना अच्छी बात है। म-सलन बा वुज़ू या दौराने **नमाज़** मरना, **सफ़रे मदीना** के दौरान रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا, मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़-रफ़ात शरीफ़ में इन्तिक़ाल, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब अ़ज़ीम सआ़दतें हैं जो कि सिर्फ़ ख़ुश नसीबों को ह़ासिल होती हैं। इस सिल्सिले में सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ख़ै-समा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि किसी अच्छे काम म-सलन हज, उ़म्रह, ग़ज़्वा (जिहाद), र-मज़ान के रोज़े वग़ैरा के दौरान मौत आए ।" (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٤ص١٢٣)

कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात : **नेक** काम के दौरान मौत से हम-आग़ोश होने की सआ़दत सिर्फ़ मुक़द्दर वालों का हिस्सा है । इस ज़िम्न में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई सुन्नते ए'तिकाफ़ की एक **म-दनी बहार** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये । मदीनतुल औलिया **अह़मदआबाद** शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के **कालू चाचा** (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई) के आख़िरी अ़शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में **मो'तकिफ़** हो गए। यूं तो येह पहले ही से म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ पहली ही बार किया था। **ए'तिकाफ़** में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ **दा'वते इस्लामी** के **72 म-दनी इन्आ़मात** में से **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल का ख़ूब जज़्बा मिला। 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़, सुन्नतों की तरबियत के तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया। **म-दनी क़ाफ़िले** से वापसी के पांच या छ[6] दिन बा'द या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम 1425 सि.हि. 24 नवम्बर 2004 सि.ई. को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, गो मसरूफ़िय्यत थी मगर ताख़ीर की सूरत में **पहली सफ़** फ़ौत होने का ख़दशा था, लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही **मस्जिद** में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए फ़ौरन गिर पड़े, **कलिमा शरीफ़** और **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए उन की रूह क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن।

سُبْحٰنَ الله ! जिस को मरते वक़्त **कलिमा शरीफ़** पढ़ने की सआ़दत नसीब हो जाए اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

उस का **क़ब्रो हश्र** में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **"जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा।"** (ابو داؤد ج۳ ص ۲۵۵ حدیث۳۱۱۶) मज़ीद दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत सुनिये : इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने ख़्वाब में देखा कि **वालिदे मर्ह़ूम** सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कुराते हुए फ़रमा रहे हैं : **बेटा ! दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में लगे रहो कि इसी म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से मुझ पर करम हुवा है।**

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से जन्नत में पाओगे घर, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़्त गरमी में रोज़े की फ़ज़ीलत (ह़िकायत) : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक समुन्दरी जिहाद में भेजा। एक अंधेरी रात में जब कश्ती के बादबान उठा दिये गए तो हातिफ़े ग़ैब ने पुकारा : "ऐ सफ़ीने वालो ! ठहरो ! क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर क्या लिया है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर तुम बता सकते हो तो ज़रूर बताओ।" उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है कि जो शदीद गरमी के दिन अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये प्यासा रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सख़्त प्यास वाले दिन (या'नी क़ियामत में) सैराब करेगा।" रावी फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दत थी कि सख़्त गरमी के दिन रोज़ा रखते थे। (اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْھِیْب ج۲ ص۵۱ حدیث۱۸)

www.dawateislami.net

क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे : **ताबेई** बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रबाह़ अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं, मैं ने एक राहिब से सुना : "क़ियामत के दिन दस्तर ख़्वान बिछाए जाएंगे, सब से पहले रोज़ेदार उन पर से खाएंगे।" (ابنِ عساکر ج٥ص٥٣٤)

आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल

"शहीदे करबला" के नव हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआत

﴾1﴿ **आ़शूरा** (या'नी **10** मुहर्रमुल ह़राम) के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **नूह़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी ﴾2﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लग़्ज़िश की तौबा क़बूल हुई ﴾3﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम की तौबा क़बूल हुई ﴾4﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए ﴾5﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा किये गए[1] ﴾6﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को नजात मिली और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम समेत ग़रक़ हुवा[2] ﴾7﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़ैदख़ाने से रिहाई मिली ﴾8﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूनुस** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए[3] ﴾9﴿ सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मअ़ शहज़ादगान व रु-फ़क़ा तीन दिन भूका प्यासा रखने के बा'द इसी **आ़शूरा** के रोज़ दश्ते करबला में निहायत बे रह़मी के साथ शहीद किया गया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مــــــدینــــہ

١: الفردوس ج١ ص٢٢٣ حديث ٨٥٦۔ ٢: بُخاری ج٢ ص٤٣٨ حديث ٣٣٩٧،٣٣٩٨۔

٣: فيض القدير ج٥ ص٢٨٨ تحت الحديث ٧٠٧٥۔

www.dawateislami.net

"या हुसैन" के छ^{6} हुरूफ़ की निस्बत से मुहर्रमुल हराम और आशूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "र-मज़ान के बा'द मुहर्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल (या'नी रात के नवाफ़िल) है ।" (مسلم ص ۵۹۱ حديث۱۱۶۳)

﴾2﴿ **तबीबों** के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **मुहर्रम** के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है । (مُعجَم صغير ج ٢ ص ٧١)

यौमे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : ﴾3﴿ **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का इर्शादे गिरामी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को **आशूरे** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़ज़मत वाला दिन है कि इस में **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह तआ़ला** ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डुबो दिया, लिहाज़ा मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बत़ौरे शुक्राना इस दिन का **रोज़ा** रखा, तो हम भी **रोज़ा** रखते हैं । इर्शाद फ़रमाया : **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुवा-फ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं । तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया । (مسلم ص ۵۷۲ حديث ۱۱۳۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई ख़ास ने'मत अ़त़ा फ़रमाए उस की यादगार क़ाइम करना दुरुस्त व महबूब है कि इस त़रह़ उस ने'मते उ़ज़्मा की याद ताज़ा होगी और उस का शुक्र अदा करने का सबब भी होगा ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इर्शाद फ़रमाया :

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ (پ۱۳،ابرٰهيم:۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें **अल्लाह** के दिन याद दिला ।

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तहत फ़रमाते हैं कि "بِاَيّٰمِ اللهِ" से वोह दिन मुराद हैं जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सल्वा उतारने का दिन, **हज़रते सय्यिदुना मूसा** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन। इन अय्याम में सब से बड़ी ने'मत के दिन **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **विलादत व मे'राज** के दिन हैं इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 479 मुलख़्ख़सन)

ईदे मीलादुन्नबी और दा'वते इस्लामी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुल्ताने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **यौमे विलादत** से बढ़ कर कौन सा दिन "यौमे इन्आ़म" होगा ? बेशक तमाम ने'मतें आप ही के तुफ़ैल हैं और आप का यौमे विलादत तो ईदों की भी **ईद** है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की तरफ़ से दुन्या में ला ता'दाद मक़ामात पर हर साल **ईदे मीलादुन्नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शानदार तरीक़े पर मनाई जाती है। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की 12वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान **इज्तिमाए मीलाद** का इन्इ़क़ाद होता है और बिल ख़ुसूस मेरे हुस्ने ज़न के मुताबिक़ उस रात दुन्या का सब से बड़ा "इज्तिमाए मीलाद" बाबुल मदीना कराची में मुन्अ़क़िद होता और **म-दनी चेनल** पर बराहे रास्त (Live) टेलेकास्ट किया जाता है। ईद के रोज़ मरह़बा या मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की धूमें मचाते हुए बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिल-यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 380)

www.dawateislami.net

आ़शूरा का रोज़ा : ﴾4﴿ **सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी दिन के **रोज़े** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्त-जू (रग़बत) फ़रमाते न देखा मगर येह कि **आ़शूरे** का दिन और येह कि **र-मज़ान** का महीना।" (بُخاری ج۱ ص۶۵۷ حدیث۲۰۰۶)

यहूदियों की मुख़ा-लफ़त करो : ﴾5﴿ नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ा-लफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो। (مُسنَد اِمام اَحمَد ج۱ ص۵۱۸ حدیث۲۱۵۴) **आ़शूरे** का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं या ग्यारहवीं मुह़र्रमुल ह़राम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : मुझे **अल्लाह** पर गुमान है कि आ़शूरे का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है। (مُسلِم ص۵۹۰ حدیث۱۱۶۲)

सारा साल घर में ब-र-कत : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 166 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**इस्लामी ज़िन्दगी**" सफ़्ह़ा 131 पर **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुह़र्रम की **नवीं** और **दसवीं** को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा, बाल बच्चों के लिये **दसवीं** मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में ब-र-कत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना **इमामे हु़सैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी फ़ाएदा मन्द, मुअस्सिर व आज़्मूदा) है। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 131)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

र-जबुल मुरज्जब के रोज़े : पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** आयत 36 में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا
فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَاۤ
اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۬ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا
فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا
يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۶﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक महीनों की गिनती **अल्लाह** के नज़्दीक बारह महीने हैं **अल्लाह** की किताब में, जब से उस ने आस्मान व ज़मीन बनाए उन में से चार हुरमत वाले हैं, येह सीधा दीन है तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो और मुश्रिकों से हर वक़्त लड़ो जैसा वोह तुम से हर वक़्त लड़ते हैं और जान लो कि **अल्लाह** परहेज़ गारों के साथ है।

हुरमत वाले चार महीनों के नाम : बयान कर्दा आयते मुबा-रका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** में फ़रमाते हैं : (चार हुरमत वाले महीनों से मुराद) तीन मुत्तसिल (या'नी यके बा'द दीगरे) **ज़ुल क़ा'दा, ज़ुल ह़िज्जा, मुह़र्रम** और एक जुदा **रजब**। अ़रब लोग ज़मानए जाहिलिय्यत में भी इन में क़िताल (या'नी जंग) ह़राम जानते थे। इस्लाम में इन महीनों की हुरमतो अ़-ज़मत और ज़ियादा की गई। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 309)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबा-रका में क़-मरी (या'नी हिजरी सिन के 12) महीनों का ज़िक्र है जिन का ह़िसाब चांद से होता है, बहुत से अह़कामे शर-अ़ की बिना (या'नी बुन्याद) भी क़-मरी महीनों पर है, म-सलन **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े, ज़कात, मनासिके ह़ज शरीफ़ वग़ैरा। नीज़ इस्लामी तहवार म-सलन ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा, शबे मे'राज, शबे बराअत, ग्यारहवीं शरीफ़, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن वग़ैरा भी क़-मरी महीनों के ह़िसाब से मनाए जाते हैं। अफ़्सोस ! आज कल मुसल्मान जहां बे शुमार सुन्नतों से दूर जा पड़ा है वहां इस्लामी तारीख़ों से भी ना आशना होता जा रहा है। ग़ालिबन एक लाख मुसल्मानों के इज्तिमाअ़ में अगर येह सुवाल किया जाए कि "बताओ आज किस हिजरी

www.dawateislami.net

सिन के कौन से महीने की कितनी तारीख़ है ?" तो शायद ब मुश्किल सो मुसल्मान ऐसे होंगे जो सही़ह़ जवाब दे सकें ! याद रहे कि बहुत से मुआ़–मलात जैसे ज़कात की फ़र्ज़िय्यत वग़ैरा में क़–मरी महीनों का लिह़ाज़ रखना फ़र्ज़ है ।

रजब के एह़तिराम की ब–र–कत की ह़िकायत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दौर का वाक़िआ़ है कि एक शख़्स किसी औ़रत पर आ़शिक़ था । एक बार उस ने अपनी मा'शूक़ा पर क़ाबू पा लिया, लोगों का मज्मअ़ देख कर उस ने अन्दाज़ा लगाया कि वोह चांद देख रहे हैं, उस ने उस औ़रत से पूछा : लोग किस माह का चांद देख रहे हैं ? जवाब दिया : "**रजब** का ।" येह शख़्स ह़ालां कि ग़ैर मुस्लिम था मगर **रजब** शरीफ़ का नाम सुनते ही ता'ज़ीमन फ़ौरन अलग हो गया और "गन्दे काम" से बाज़ रहा । ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को हुक्म हुवा : "हमारे फ़ुलां बन्दे से मुलाक़ात करो ।" आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तशरीफ़ ले गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म और अपनी तशरीफ़ आ–वरी का सबब इर्शाद फ़रमाया : येह सुनते ही उस का दिल नूरे ईमान से जगमगा उठा और उस ने फ़ौरन इस्लाम क़बूल कर लिया । (انیسُ الواعِظین ص ۱۷۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखी आप ने **रजब की बहारें ! र–जबुल मुरज्जब** की ता'ज़ीम करने से जब एक ग़ैर मुस्लिम को ईमान की दौलत नसीब हो सकती है तो जो मुसल्मान **र–जबुल मुरज्जब** का एह़तिराम करे उस को न जाने क्या क्या इन्आ़मात मिलेंगे ! क़ुरआने पाक में ह़ुरमत (या'नी इ़ज़्ज़त) वाले महीनों में अपनी जानों पर ज़ुल्म करने से रोका गया है चुनान्चे "नूरुल इरफ़ान" में فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ (**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** तो इन महीनों में अपनी जान पर ज़ुल्म न करो) के तह़्त है : "या'नी ख़ुसूसिय्यत से इन चार महीनों में गुनाह न करो ।"

(नूरुल इरफ़ान, स. 306)

अल्लाह का महीना : **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : رَجَبٌ شَهْرُ اللّٰهِ تَعَالٰی وَشَعْبَانُ شَهْرِیْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ اُمَّتِیْ- या'नी रजब **अल्लाह तआ़ला** का महीना और शा'बान मेरा

www.dawateislami.net

महीना और र-मज़ान मेरी उम्मत का महीना है । (اَلْفِرْدَوس بمأثور الْخِطاب ج۲ص۲۷۵ حدیث ۳۲۷۶)

रजब में परेशानी दूर करने की फ़ज़ीलत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : जो माहे रजब में किसी मुसल्मान की परेशानी दूर करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को जन्नत में एक ऐसा मह़ल अ़त़ा फ़रमाएगा जो ह़द्दे नज़र तक वसीअ़ होगा । तुम **रजब** का इक्राम (व एह़तिराम) करो **अल्लाह तआ़ला** तुम्हारा हज़ार करामतों के साथ इक्राम फ़रमाएगा । (غُنیةُ الطّالِبین ج ۱ ص ۳۲٤،معجمُ السّفر لِلسّلفی ص ٤١٩رقم١٤٢١)

दो साल की इ़बादत का सवाब : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बि इज़्ने परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : **"जिस ने माहे ह़राम में तीन दिन जुम्अ़ारात, जुमुआ़ और हफ़्ता (या'नी सनीचर) के रोज़े रखे, उस के लिये दो साल की इ़बादत का सवाब लिखा जाएगा ।"**

(مُعْجَم اَوْسَط ج۱ص٤٨٥حدیث١٧٨٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां "माहे ह़राम" से येही चार माह या'नी **ज़ुल क़ा'दा, ज़ुल हि़ज्जा, मुह़र्रमुल ह़राम** और **र-जबुल मुरज्जब** मुराद हैं, इन चारों महीनों में से जिस माह में भी बयान कर्दा तीन दिनों का रोज़ा रखेंगे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दो साल की इ़बादत का सवाब पाएंगे ।

तेरे करम से ऐ करीम ! मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहां कमी नहीं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रजब के मुख़्तलिफ़ नाम और मआ़नी : "रजब" दर अस्ल "तरजीब" से मुश्तक़ (या'नी निकला) है इस के मा'ना हैं : "ता'ज़ीम करना ।" इस को अल असब (या'नी तेज़ बहाव) भी कहते हैं इस लिये कि इस माहे मुबारक में तौबा करने वालों पर रह़मत का बहाव तेज़ हो जाता और इ़बादत करने वालों पर क़बूलिय्यत के अन्वार का फ़ैज़ान होता है । इसे अल असम (या'नी बहरा) भी कहते हैं क्यूं कि इस में जंगो जदल की आवाज़ बिल्कुल सुनाई नहीं देती । (مُکاشَفَۃُ الْقُلوب ص ۳۰۱)

www.dawateislami.net

रजब के तीन हुरूफ़ की भी क्या बात है ! : سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **माहे र-जबुल मुरज्जब** की बहारों की तो क्या ही बात है ! "मुका-श-फ़तुल कुलूब" में है, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "**रजब**" में तीन हुरूफ़ हैं : ر، ج، ب, "ر" से मुराद रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ, "ج" से मुराद बन्दे का जुर्म, "ب" से मुराद बिर या'नी एह़सान। गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरे बन्दे के जुर्म को मेरी रह़मत और एह़सान के दरमियान कर दो। (مُکاشَفَةُ الْقُلوب ص ۳۰۱)

इस्यां से कभी हम ने कनारा न किया पर तू ने दिल आज़ुर्दा हमारा न किया
हम ने तो जहन्नम की बहुत की तज्वीज़ लेकिन तेरी रह़मत ने गवारा न किया

इबादत का बीज बोने का महीना : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सफ़्फ़ूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **र-जबुल मुरज्जब** बीज बोने का, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** आबपाशी (या'नी पानी देने) का और **र-मज़ानुल मुबारक** फ़स्ल काटने का महीना है, लिहाज़ा जो **र-जबुल मुरज्जब** में इबादत का बीज न बोए और **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** में उसे आंसूओं से सैराब न करे वोह **र-मज़ानुल मुबारक** में फ़स्ले रह़मत क्यूंकर काट सकेगा ? मज़ीद फ़रमाते हैं : **र-जबुल मुरज्जब** जिस्म को, **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** दिल को और **र-मज़ानुल मुबारक** रूह़ को पाक करता है। (نُزْهَةُ الْمَجالِس ج۱ ص۲۰۹)

जो सारी ज़िन्दगी न सीख सका वोह दस दिन में सीख लिया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-जबुल मुरज्जब में इबादत और रोज़ों का ज़ेह्न बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये। सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये और इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में हिस्सा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के दोनों जहां संवर जाएंगे। तरग़ीबन एक ख़ुश गवार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं : सईदआबाद, बलदिया टाउन, बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई उन दिनों मेट्रिक के त़ालिबे इल्म थे, वोह अपने मकान मालिक जो कि दा'वते इस्लामी वाले थे उन की इन्फ़िरादी कोशिश से उन के साथ तब्लीग़े

www.dawateislami.net

कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तह़त ग़ौसिया मस्जिद, न्यू सईदआबाद, मेमन कोलोनी में होने वाले **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे के "ए'तिकाफ़" में बैठ गए। **अल मुख़्तसर उन्हों ने उन दस दिनों में वोह कुछ सीखा जो पिछली तमाम ज़िन्दगी में न सीख पाए थे।** ए'तिकाफ़ ही में दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल को मज़बूत़ी से अपना लिया, वहीं से मुस्तक़िल इमामा शरीफ़ सजा लिया, **ईद** के दूसरे दिन आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन पर म-दनी रंग चढ़ता चला गया और उन्हें तन्ज़ीमी त़ौर पर "म-दनी इन्आ़मात" की ज़िम्मादारी भी दी गई।

रह़मतें लूटने के लिये आओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सुन्नतें सीखने के लिये आओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच बा ब-र-कत रातें : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "पांच रातें ऐसी हैं जिस में दुआ़ रद नहीं की जाती ﴾1﴿ रजब की पहली (या'नी चांद) रात ﴾2﴿ शा'बान की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) ﴾3﴿ शबे जुमुआ़ (या'नी जुम्अ़रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात) ﴾4﴿ ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात ﴾5﴿ ईदुल अज़्ह़ा की (या'नी जुल ह़िज्जा की दसवीं) रात।" (ابنِ عساکر ج ۱۰ ص ۴۰۸)

जन्नत में ले जाने वाली पांच रातें : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : साल में पांच रातें ऐसी हैं जो इन की तस्दीक़ करते हुए ब निय्यते सवाब इन को इ़बादत में गुज़ारेगा, **अल्लाह तआ़ला** उसे **दाख़िले जन्नत** फ़रमाएगा ﴾1﴿ रजब की पहली रात, कि इस रात में इ़बादत करे और इस के दिन में रोज़ा रखे ﴾2﴿ शा'बान की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत) कि इस रात में इ़बादत करे और दिन में रोज़ा रखे ﴾3,4﴿ ईदैन की रातें (या'नी ईदुल फ़ित्र

www.dawateislami.net

की (चांद) रात और शबे ईदुल अज़्हा या'नी 9 और 10 ज़ुल हिज्जा की दरमियानी रात) कि इन रातों में इबादत करे और दिन में रोज़ा न रखे (ईदैन में रोज़ा रखना, ना जाइज़ है) और ﴿5﴾ शबे आ़शूरा (या'नी मुहर्रमुल ह़राम की दसवीं शब) कि इस रात में इबादत करे और दिन में रोज़ा रखे।

(فَضائِلُ شَھْرِ رَجَب لِلْخَلّال ص۱۰، غُنْیَةُ الطّالِبِیْن ج۱ ص۳۲۷)

पहला रोज़ा तीन साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "**रजब** के **पहले** दिन का रोज़ा तीन साल का कफ़्फ़ारा है, और **दूसरे** दिन का रोज़ा दो साल का और **तीसरे** दिन का एक साल का कफ़्फ़ारा है, फिर हर दिन का रोज़ा एक माह का कफ़्फ़ारा है।" (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص ۳۱۱ حدیث۵۰۵۱، فَضائِلُ شَھْرِ رَجَب لِلْخَلّال ص۷) **यहां "गुनाह का कफ़्फ़ारा" से मुराद येह है कि** येह रोज़े, गुनाहे सग़ीरा की मुआफ़ी का ज़रीआ़ बन जाते हैं।

जन्नती मह़ल : ताबेई बुज़ुर्ग **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "**रजब** के **रोज़ादारों** के लिये जन्नत में एक **मह़ल** है।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۳۶۸ حدیث۳۸۰۲)

एक जन्नती नह्र का नाम रजब है : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जन्नत में एक नह्र है जिसे "रजब" कहा जाता है, वोह दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठी है, तो जो कोई रजब का एक रोज़ा रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस नह्र से पिलाएगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۳۶۷ حدیث۳۸۰۰)

एक रोज़े की फ़ज़ीलत : ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं कि सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : **माहे रजब** ह़ुरमत वाले महीनों में से है, और छटे आस्मान के दरवाज़े पर इस महीने के दिन लिखे हुए हैं। अगर कोई शख़्स रजब में **एक रोज़ा** रखे और उसे परहेज़ गारी से पूरा करे तो वोह दरवाज़ा और वोह (रोज़े वाला) दिन उस बन्दे के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब करेंगे और अ़र्ज़ करेंगे : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस बन्दे को बख़्श दे।" और अगर वोह शख़्स बिग़ैर परहेज़ गारी के रोज़ा गुज़ारता है तो फिर वोह दरवाज़ा और दिन उस की बख़्शिश की दर–ख़्वास्त नहीं करते और उस शख़्स से कहते हैं :

www.dawateislami.net

"ऐ बन्दे ! तेरे नफ़्स ने तुझे धोका दिया।" (مَاثَبَتَ بِالسُّنَّة ص٢٣٤،فضائلُ شَهرِ رَجَب لِلْخَلّال ص ٥٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि रोज़े का मक़्सूदे अस्ली तक़्वा और परहेज़ गारी और अपने आ'ज़ाए बदन को गुनाहों से बचाना है, अगर रोज़ा रखने के बा वुजूद भी ना फ़रमानियों का सिल्सिला जारी रहा तो फिर बड़ी महरूमी की बात है।

कश्तिये नूह में रजब के रोज़े की बहार : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने **रजब का एक रोज़ा** रखा तो वोह **एक साल** के रोज़े रखने वालों की तरह होगा, जिस ने **सात रोज़े** रखे उस पर **जहन्नम** के सातों दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे, जिस ने **आठ रोज़े** रखे उस के लिये **जन्नत** के आठों दरवाज़े खोल दिये जाएंगे, जिस ने **दस रोज़े** रखे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ता फ़रमाएगा और जो कोई **पन्दरह रोज़े** रखता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा (या'नी ए'लान करने वाला ए'लान) करता है कि तेरे पिछले गुनाह बख़्श दिये गए पस तू अज़् सरे नौ अ़मल शुरूअ़ कर कि तेरी बुराइयां नेकियों से बदल दी गईं। और जो ज़ाइद करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़ियादा दे। और "रजब" में **नूह** (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) कश्ती में सुवार हुए तो ख़ुद भी **रोज़ा** रखा और हमराहियों को भी **रोज़े** का हुक्म दिया। उन की कश्ती **दस मुहर्रम** तक छ[6] माह बर-सरे सफ़र रही। (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٣٦٨حديث٣٨٠١)

सो साल के रोज़ों का सवाब : सत्ताईसवीं र-जबुल मुरज्जब की अ़ज़मतों के क्या कहने ! इसी तारीख़ में हमारे प्यारे प्यारे, मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मे'राज शरीफ़ का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा अ़ता हुवा। (شرحُ الزّرقانی عَلَى المَواهِبِ اللّدُنِّيَة ج٨ص١٨)

27वीं रजब शरीफ़ के रोज़े की बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि **हज़रते** सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**रजब** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात क़ियाम (इबादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे, सो बरस की शब बेदारी की और येह **रजब** की सत्ताईस तारीख़ है।" (شُعَبُ الْاِيمان ج٣ص٣٧٤حديث ٣٨١١)

www.dawateislami.net

27वीं शब के 12 नवाफ़िल की फ़ज़ीलत : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **रजब** में एक रात है कि उस में नेक अ़मल करने वाले को सो बरस की नेकियों का सवाब है और वोह रजब की **सत्ताईसवीं शब** है। जो इस में **बारह रक्अ़त** इस त़रह़ पढ़े कि हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** और कोई सी एक सूरत और हर दो रक्अ़त पर अत्तहिय्यात (दुरूदे इब्राहीम और दुआ़) पढ़े और बारह पूरी होने पर सलाम फैरे, इस के बा'द 100 बार येह पढ़े : سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر, इस्तिग़्फ़ार 100 बार, दुरूद शरीफ़ 100 बार पढ़े और अपनी दुन्या व आख़िरत से जिस चीज़ की चाहे दुआ़ मांगे और सुब्ह़ को **रोज़ा** रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की सब दुआ़एं क़बूल फ़रमाए सिवाए उस दुआ़ के जो गुनाह के लिये हो। (شُعَبُ الْإيمان ج٣ص٣٧٤حديث٣٨١٢, फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 648)

60 महीनों के रोज़ों का सवाब : हज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "जो कोई **सत्ताईसवीं रजब** का रोज़ा रखे, **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **साठ महीनों** के रोज़ों का सवाब लिखे।" (فَضائِلُ شَهْرِ رَجَب ص١٠)

......तो गोया सो साल के रोज़े रखे : हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "**रजब** में एक दिन और रात है जो उस दिन रोज़ा रखे और रात को क़ियाम (इबादत) करे तो गोया उस ने सो साल के रोज़े रखे और येह **रजब** की **सत्ताईस तारीख़** है।

(شُعَبُ الايمان ج٣ص٣٧٤حديث ٣٨١١)

दा 'वते इस्लामी और जश्ने मे 'राजुन्नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-जबुल मुरज्जब** को एक ख़ुसूसिय्यत येह भी ह़ासिल है कि इस की सत्ताईसवीं शब को हमारे मीठे मीठे मक्की म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रब्बुल उ़ला की त़रफ़ से मे'राज का मो'जिज़ा अ़त़ा हुवा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सत्ताईसवीं रात मस्जिदुल ह़राम से

www.dawateislami.net

मस्जिदे अक़्सा (बैतुल मक़्दिस) और फिर वहां से आस्मानों की सैर फ़रमाई। जन्नत व दोज़ख़ के अ़जाइबात मुला-ह़ज़ा फ़रमाए। अ़र्श को अपनी क़दम बोसी का शरफ़ बख़्शा और ऐन बेदारी के आ़लम में खुली आंखों से अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया। येह सारा सफ़र आन की आन में तै फ़रमा कर वापस तशरीफ़ ले आए। **र-जबुल मुरज्जब** की सत्ताईसवीं शब बेह़द अ़-ज़मत वाली है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से हर साल सत्ताईसवीं शब को **जश्ने मे'राजुन्नबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिल्सिले में दुन्या में बे शुमार मक़ामात पर **इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त** का इन्इ़क़ाद किया जाता है। मेरे ह़ुस्ने ज़न के मुत़ाबिक़ जश्ने मे'राज का दुन्या का सब से बड़ा इज्तिमाअ़ सालहा साल से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची में होता है जो कि तक़रीबन सारी रात जारी रहता और बराहे रास्त म-दनी चेनल पर टेलेकास्ट किया जाता है।

ख़ुदा की क़ुदरत कि चांद ह़क़ के करोरों मन्ज़िल में जल्वा कर के
अभी न तारों की छाउं बदली कि नूर के तड़के आ लिये थे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 237)

कफ़न की वापसी : **बसरा** की एक नेक ख़ातून ने ब वक़्ते वफ़ात अपने बेटे को **वसिय्यत** की, कि मुझे उस कपड़े का **कफ़न** देना जिसे पहन कर मैं **र-जबुल मुरज्जब** में इ़बादत किया करती थी। बा'द अज़् वफ़ात बेटे ने किसी और कपड़े में कफ़ना कर दफ़्ना दिया। जब वोह क़ब्रिस्तान से घर आया तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि जो कफ़न उस ने पहनाया था वोह घर में मौजूद है! जब उस ने मां की **वसिय्यत वाले कपड़े** तलाश किये तो वोह अपनी जगह से ग़ाइब थे। इतने में एक ग़ैबी आवाज़ गूंज उठी : "अपना कफ़न वापस ले लो हम ने उस को उसी कपड़े में कफ़नाया है (जिस की उस ने वसिय्यत की थी) जो **रजब के रोज़े** रखता है हम उस को **क़ब्र में रन्जीदा** नहीं रहने देते।" (نُزهَةُ المجالِس ج ١ ص ٢٠٨) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत**

www.dawateislami.net

हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

लाड प्यार ने ढीट बना दिया था : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! र-जबुल मुरज्जब के रोज़ों की म-दनी सोच बनाने, गुनाहों की आ़दत छुड़ाने और इ़बादत की लज़्ज़त पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र का मा'मूल बना लीजिये। तरग़ीब के लिये म-दनी क़ाफ़िले की एक **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार की जाती है, शाहदरा (मर्कज़ुल औलिया, लाहोर) के एक इस्लामी भाई अपने वालिदैन के इक्लोते बेटे थे, ज़ियादा लाड प्यार ने उन को ह़द द-रजे **ढीट** और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी करते और सुब्ह़ देर तक सोए रहते। मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देते, जिस पर वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते। ख़ुश क़िस्मती से उन्हें **दा'वते इस्लामी** वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली उन्हों ने मह़ब्बत और प्यार से **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह इस्लामी भाई **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। न जाने उन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि उन का **पथ्थर नुमा दिल** भी मोम बन गया, म-दनी क़ाफ़िले से **नमाज़ी** बन कर लौटे। घर आ कर उन्हों ने सलाम किया, वालिद साह़िब की दस्त बोसी की और **अम्मीजान** के क़दम चूमे। घर वाले ह़ैरान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन्हें यक्सर बदल कर रख दिया और उन्हें मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने या'नी **सदाए मदीना** लगाने की तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़िम्मेदारी की सआ़दत मिली। (**दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में मुसल्मानों को

नमाज़े फ़ज्र के लिये उठाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं)

बेशक आ'माले बद, और अफ़्आले बद — की छुटें आदतें, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आएंगे, तो सुधर जाएंगे — अब न सुस्ती करें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 672)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सोह़बत के मु-तअ़ल्लिक़ तीन रिवायात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आशिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने किस त़रह़ एक बे नमाज़ी नौ जवान को दूसरों को नमाज़ की दा'वत देने वाला बना दिया ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है। लिहाज़ा सोह़बत के मु-तअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : ﴾1﴿ अच्छा साथी वोह है कि जब तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को याद करे तो तेरी मदद करे और जब तू भूले तो याद दिलाए (موسوعه ابن ابی الدنیا ج۸ ص۱۶۱ حدیث۴۲ مُلَخَّصاً) ﴾2﴿ अच्छा हम-नशीन (या'नी अच्छा साथी) वोह है कि उस को देखने से तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याद आ जाए और उस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की याद दिलाए। (اَلْجامِعُ الصَّغِیر ص ۲۴۷ حدیث ۴۰۶۳) ﴾3﴿ अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐसी चीज़ में न पड़ो जो तुम्हारे लिये मुफ़ीद न हो और दुश्मन से अलग रहो और दोस्त से मोह़तात़ रहो मगर जब कि वोह अमीन (या'नी अमानत दार) हो कि अमीन की बराबरी का कोई नहीं और अमीन वोही है जो **अल्लाह** से डरे। और फ़ाजिर (या'नी **अल्लाह** व रसूल के ना फ़रमान) के साथ न रहो कि वोह तुम्हें फ़ुजूर (या'नी ना फ़रमानी) सिखाएगा और उस के सामने भेद की बात न कहो और अपने काम में उन से मश्वरा लो जो **अल्लाह** से डरते हैं। (شُعَبُ الْاِیمان ج ۴ ص ۲۰۷ حدیث ۴۹۹۵)

बुरी सोह़बत की मुमा-न-अ़त : बे नमाज़ियों, गालियां बकने वालों, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने वालों, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी करने वालों, चोरों, रिश्वत

www.dawateislami.net

ख़ोरों, शराबियों, फ़ासिक़ों और फ़ाजिरों नीज़ बद मज़्हबों और काफ़िरों की सोह़बत में बैठने से बचना चाहिये। **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 22 सफ़ह़ा 237 पर है : मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में इस्तिफ़्सार किया (या'नी पूछा) गया : ज़ानी और दय्यूस (या'नी जो बा वुजूदे क़ुदरत अपनी बीवी या किसी भी मह़रमा की बे ह़याई के कामों को बर क़रार रहने दे) से कहां तक एह़तिराज़ (या'नी परहेज़) करना चाहिये ? जवाबन इर्शाद फ़रमाया : "ज़ानी व दय्यूस फ़ासिक़ हैं, उन के पास उठने बैठने मेलजोल से एह़तिराज़ (बचना) चाहिये।" येह जवाब देने के बा'द आप ने पारह 7 **सू-रतुल अन्आ़म** की आयत नम्बर 68 तह़रीर फ़रमाई जिस में इर्शादे ख़ुदावन्दी होता है :

وَ اِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۶۸﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं, इस से मा'लूम हुवा कि बुरी सोह़बत से बचना निहायत ज़रूरी है। बुरा यार बुरे सांप से बदतर है कि बुरा सांप जान लेता है और बुरा यार ईमान बरबाद करता है। (नूरुल इरफ़ान, स. 215)

इबादत में, रियाज़त में, तिलावत में लगा दे दिल
रजब का वासित़ा देता हूं फ़रमा दे करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 98)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के रोज़े

आक़ा का महीना : **रसूले** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के बारे में फ़रमाने मुकर्रम है : شَعْبَانُ شَهْرِىْ وَرَمَضَانُ شَهْرُ الله । या'नी शा'बान मेरा महीना है और र-मज़ान **अल्लाह** का महीना है। (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص ٣٠١ حديث ٤٨٨٩)

शा'बान के पांच हुरूफ़ की बहारें : سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! **माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की अ़ज़मतों पर कुरबान ! इस की फ़ज़ीलत के लिये इतना ही काफ़ी है कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे "**मेरा महीना**" फ़रमाया। सरकारे ग़ौसे आ'ज़म, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى लफ़्ज़ "**शा'बान**" के पांच हुरूफ़ : "ش،ع،ب،ا،ن" के मु-तअ़ल्लिक़ नक़्ल फ़रमाते हैं : ش से मुराद "शरफ़" या'नी बुज़ुर्गी, ع से मुराद "उ़लुव्व" या'नी बुलन्दी, ب से मुराद "बिर" या'नी एह़सान, "ا" से मुराद "उल्फ़त" और ن से मुराद "नूर" है, तो येह तमाम चीज़ें **अल्लाह तआ़ला** अपने बन्दों को इस महीने में अ़ता फ़रमाता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : "येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, ब-र-कतों का नुज़ूल होता है, ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया जाता है, और ख़ैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाबे मुह़म्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजने का महीना है।" (غُنْيَةُ الطّالِبين ج ١ ص ٣٤١، ٣٤٢)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان **का जज़्बा :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : "**शा'बान** का चांद नज़र आते ही **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तिलावते कुरआने पाक की त़रफ़ ख़ूब म-तवज्जेह हो जाते, अपने अम्वाल की ज़कात निकालते ताकि गु-रबा व मसाकीन मुसल्मान माहे **र-मज़ान** के रोज़ों के लिये तय्यारी कर सकें, हुक्काम क़ैदियों को त़लब

www.dawateislami.net

कर के जिस पर "ह़द" (या'नी शर-ई सज़ा) जारी करना होती उस पर ह़द क़ाइम करते, बक़िय्या में से जिन को मुनासिब होता उन्हें आज़ाद कर देते, ताजिर अपने क़र्ज़े अदा कर देते, दूसरों से अपने क़र्ज़े वुसूल कर लेते। (यूं माहे **र-मज़ानुल मुबारक** से क़ब्ल ही अपने आप को फ़ारिग़ कर लेते) और र-मज़ान शरीफ़ का चांद नज़र आते ही ग़ुस्ल कर के (बा'ज़ ह़ज़रात) ए'तिकाफ़ में बैठ जाते।"

(آیضاًص ۳٤۱)

मौजूदा मुसल्मानों का जज़्बा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! पहले के मुसल्मानों को इबादत का किस क़दर ज़ौक़ होता था! मगर अफ़्सोस! आज कल के मुसल्मानों को ज़ियादा तर हुसूले माल ही का शौक़ है। पहले के म-दनी सोच रखने वाले मुसल्मान मु-तबर्रिक अय्याम (या'नी ब-र-कत वाले दिनों) में रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा से ज़ियादा इबादत कर के उस का क़ुर्ब ह़ासिल करने की कोशिशें करते थे और आज कल के बा'ज़ मुसल्मान मुबारक दिनों, ख़ुसूसन माहे **र-मज़ानुल मुबारक** में दुन्या की ज़लील दौलत कमाने की नई नई तरकीबें सोचते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर मेहरबान हो कर नेकियों का अज्रो सवाब ख़ूब बढ़ा देता है, लेकिन दुन्या की दौलत से मह़ब्बत करने वाले लोग **र-मज़ानुल मुबारक** में अपनी चीज़ों का भाव बढ़ा कर ग़रीब मुसल्मानों की परेशानियों में इज़ाफ़ा कर देते हैं। सद करोड़ अफ़्सोस! ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिमीन का जज़्बा अब दम तोड़ता नज़र आ रहा है!

ऐ ख़ासए ख़ासाने रुसुल वक़्ते दुआ है — उम्मत पे तेरी आ के अ़जब वक़्त पड़ा है
जो दीन बड़ी शान से निकला था वत़न से — परदेस में वोह आज ग़रीबुल ग़ु-रबा है
फ़रियाद है ऐ कश्तिये उम्मत के निगहबां
बेड़ा येह तबाही के क़रीब आन लगा है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ता'ज़ीमे र-मज़ान के लिये शा'बान के रोज़े : **सरकारे** मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "र-मज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल **शा'बान** के रोज़े हैं, ता'ज़ीमे र-मज़ान के लिये।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۷۷حدیث۳۸۱۹)

आक़ा शा'बान के अक्सर रोज़े रखते थे : **बुख़ारी** शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **शा'बान** से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े न रखते बल्कि पूरे **शा'बान** ही के रोज़े रख लेते और फ़रमाया करते : अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ। (بُخاری ج١ ص ٦٤٨ حدیث ١٩٧٠)

ह़दीसे पाक की शर्ह़ : **शारेहे** बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़** अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : मुराद येह है कि शा'बान में अक्सर दिनों में रोज़ा रखते थे इसे तग़्लीबन (या'नी ग़-लबे और ज़ियादत के लिह़ाज़ से) कुल (या'नी सारे महीने के रोज़े रखने) से ता'बीर कर दिया। जैसे कहते हैं : "फ़ुलां ने पूरी रात इ़बादत की" जब कि उस ने रात में खाना भी खाया हो और ज़रूरिय्यात से फ़राग़त भी की हो, यहां तग़्लीबन अक्सर को "कुल" कह दिया। मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि शा'बान में जिसे क़ुव्वत हो वोह ज़ियादा से ज़ियादा रोज़े रखे। अलबत्ता जो कमज़ोर हो वोह रोज़ा न रखे क्यूं कि इस से **र-मज़ान** के रोज़ों पर असर पड़ेगा, येही मह़्मल (या'नी मुराद व मक़्सद) है उन अह़ादीस (म-सलन तिरमिज़ी, ह़दीस 738 वग़ैरा) का जिन में फ़रमाया गया : "निस्फ़ (या'नी आधे) शा'बान के बा'द रोज़ा न रखो।" [ترمذی حدیث۷۳۸] (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 377, 380)

मरने वालों की फ़ेहरिस बनाने का महीना : **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पूरे **शा'बान** के रोज़े रखा करते थे। फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या सब महीनों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक ज़ियादा पसन्दीदा **शा'बान** के रोज़े रखना है ? तो मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस साल मरने वाली हर जान

www.dawateislami.net

को लिख देता है और मुझे येह पसन्द है कि मेरा वक़्ते रुख़्सत आए और मैं रोज़ादार होउं । (اَبو یَعلٰی ج٤ ص٢٧٧ حدیث٤٨٩٠)

नफ़्ल रोज़ों का पसन्दीदा महीना : **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबी क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि उन्हों ने उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को फ़रमाते सुना : अम्बिया के सरताज صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसन्दीदा महीना शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म था कि इस में रोज़े रखा करते फिर इसे **र-मज़ानुल मुबारक** से मिला देते । (ابوداوٗد ج٢ ص٤٧٦ حدیث ٢٤٣١)

लोग इस से ग़ाफ़िल हैं : **हज़रते** सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं देखता हूं कि जिस त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **शा'बान** में (नफ़्ल) रोज़े रखते हैं इस त़रह़ किसी भी महीने में नहीं रखते !" फ़रमाया : **रजब** और **र-मज़ान** के बीच में येह महीना है, लोग इस से ग़ाफ़िल हैं, इस में लोगों के आ'माल **अल्लाहु रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उठाए जाते हैं और मुझे येह मह़बूब है कि मेरा अ़मल इस ह़ाल में उठाया जाए कि मैं रोज़ादार होउं । (نَسائی ص ٣٨٧ حدیث ٢٣٥٤)

त़ाक़त के मुत़ाबिक़ अ़मल कीजिये : **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत फ़रमाती हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **शा'बान** से ज़ियादा किसी महीने में रोज़े न रखा करते थे कि पूरे **शा'बान** के ही रोज़े रखा करते थे और फ़रमाया करते : "अपनी इस्तित़ाअ़त के मुत़ाबिक़ अ़मल करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक अपना फ़ज़्ल नहीं रोकता जब तक तुम उक्ता न जाओ, बेशक उस के नज़्दीक पसन्दीदा (नफ़्ल) नमाज़ वोह है कि जिस पर हमेशगी इख़्तियार की जाए अगर्चे कम हो ।" तो जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कोई नमाज़ (नफ़्ल) पढ़ते तो उस पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते । (بُخاری ج١ ص٦٤٨ حدیث١٩٧٠)

दा'वते इस्लामी में रोज़ों की बहार : **मुका-श-फ़तुल क़ुलूब** में है : मज़्कूरा ह़दीसे पाक में पूरे **माहे शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़ों से मुराद अक्सर **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े हैं । (مُکاشَفَۃُ الْقُلُوب ص ٣٠٣) अगर कोई पूरे **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** के रोज़े रखना चाहे तो उस को

www.dawateislami.net

मुमा–न–अ़त भी नहीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के कई इस्लामी भाई और इस्लामी बहनों में **र–जबुल मुरज्जब** और **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** दोनों महीनों में रोज़े रखने की तरकीब होती है और मुसल्सल रोज़े रखते हुए येह ह़ज़रात **र–मज़ानुल मुबारक** से मिल जाते हैं।

पतंग बाज़ी का शौक़ीन : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी रोज़ों और सुन्नतों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के म–दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। तरग़ीब के लिये एक मुश्कबार **म–दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई की पिछली ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़री, **वोह पतंग बाज़ी के शौक़ीन थे** नीज़ विडियो गेम्ज़ और गोलियां खेलना वग़ैरा उन के मशाग़िल में शामिल था। हर एक के मुआ़–मले में टांग अड़ाना, ख़्वाह म ख़्वाह लोगों से लड़ाई मोल लेना, बात बात पर मारधाड़ पर उतर आना वग़ैरा मा'मूलात में शामिल था। ख़ुश क़िस्मती से एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** पर **र–मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में अ़लाक़े की मस्जिद में **मो'तकिफ़** हो गए। उन्हें बहुत अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आए और ख़ूब सुकून मिला। उन्हों ने यके बा'द दीगरे मज़ीद दो साल **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की। एक बार मस्जिद के मुअज़्ज़िन साह़िब इन्फ़िरादी कोशिश कर के उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म–दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में हफ़्तावार सुन्नतों भरे **इज्तिमाअ़** में ले आए। एक मुबल्लिग़ बयान कर रहे थे, सफ़ेद लिबास और कथ्थई चादर में मल्बूस, चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी और सर पर इमामे शरीफ़ का ताज वाला ऐसा बा रौनक़ चेहरा उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार ही देखा था। मुबल्लिग़ के चेहरे की कशिश और नूरानिय्यत ने उन का दिल मोह लिया और वोह दा'वते इस्लामी के **म–दनी माह़ोल** में आ गए और अब दो साल से आ़लमी म–दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना) ही में ए'तिकाफ़ करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

र-मज़ान के बा'द कौन सा महीना अफ़्ज़ल है ? : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर बार में अ़र्ज़ की गई कि र-मज़ान के बा'द कौन सा रोज़ा अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया : "ता'ज़ीमे **र-मज़ान** के लिये **शा'बान** का ।" फिर अ़र्ज़ की गई : कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : **र-मज़ान** के माह में **स-दक़ा** करना । (ترمذی ج۲ص۱٤٥ حدیث ٦٦٣)

पन्दरहवीं शब में तजल्ली : **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **शा'बान की पन्दरहवीं शब** में तजल्ली फ़रमाता है । इस्तिग़्फ़ार (या'नी तौबा) करने वालों को बख़्श देता और त़ालिबे रह़मत पर रह़्म फ़रमाता और अ़दावत वालों को जिस ह़ाल पर हैं उसी पर छोड़ देता है ।" (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۸۲حدیث۳۸۳٥)

अ़दावत वाले की शामत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "**शा'बान की पन्दरहवीं शब में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ तजल्ली फ़रमाता है और सब को बख़्श देता है मगर काफ़िर और अ़दावत वाले को (नहीं बख़्शता) ।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبّان ج ۷ ص ٤٧٠ حدیث ٥٦٣٦)

ढेरों गुनाहगारों की मग़्फ़िरत होती है मगर...... : **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, हुज़ूर सरापा नूर, फ़ैज़ गन्जूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) आए और कहा : येह **शा'बान** की पन्दरहवीं रात है, इस में **अल्लाह तआ़ला** जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने बनी कल्ब की बकरियों के बाल हैं मगर **काफ़िर** और अ़दावत वाले और **रिश्ता काटने वाले** और **कपड़ा लटकाने वाले** और **वालिदैन की ना फ़रमानी** करने वाले और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता ।

www.dawateislami.net

(شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۳۸٤ حدیث ۳۸۳۷) (ह़दीसे पाक में "कपड़ा लटकाने वाले" का जो बयान है, इस से मुराद वोह लोग हैं जो तकब्बुर के साथ टख़्नों के नीचे तहबन्द या पाजामा या पतलून या सौब या'नी लम्बा अ़-रबी कुरता वग़ैरा लटकाते हैं) करोड़ों ह़म्बलियों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से जो रिवायत नक़्ल की उस में **क़ातिल** का भी ज़िक्र है। (مُسندِ اِمام احمد ج۲ ص۵۸۹ حدیث ٦٦٥٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, सरापा रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शा'बान की पन्दरहवीं शब में तमाम ज़मीन वालों को बख़्श देता है सिवाए **मुश्रिक** और **अ़दावत वाले** के।" (شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۳۸۱ حدیث ۳۸۳۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام **और शबे बराअत :** **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत में अक्सर बाहर तशरीफ़ लाते। एक बार इसी त़रह़ **शबे बराअत** में बाहर तशरीफ़ लाए और आस्मान की त़रफ़ नज़र उठा कर फ़रमाया : एक मर्तबा **अल्लाह** तआ़ला के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने शा'बान की पन्दरहवीं रात आस्मान की त़रफ निगाह उठाई और फ़रमाया : येह वोह वक़्त है कि इस वक़्त में जिस शख़्स ने जो भी दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांगी उस की दुआ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़बूल फ़रमाई और जिस ने मग़िफ़रत त़लब की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़िफ़रत फ़रमा दी बशर्ते कि दुआ़ करने वाला **उ़श्शार** (या'नी ज़ुल्मन टेक्स लेने वाला), **जादूगर**, **काहिन** और **बाजा बजाने वाला** न हो। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना **दावूद** (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने येह दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ رَبَّ دَاوٗدَ اغْفِرْ لِمَنْ دَعَاکَ فِیْ ھٰذِہِ اللَّیْلَۃِ اَوِ اسْتَغْفَرَکَ فِیْھَا या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ दावूद के परवर दगार ! जो इस रात में तुझ से दुआ़ करे या मग़िफ़रत त़लब करे तू उस को बख़्श दे। (لَطَائِفُ الْمَعارِف ج ۱ ص ۱۳۷ مختصراً)

www.dawateislami.net

हर ख़ता तू दर गुज़र कर बे कसो मजबूर की

हो इलाही ! मग़्फ़िरत हर बे कसो मजबूर की

(वसाइले बख़्शिश, स. 96)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मह़रूम लोग : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शबे बराअत बेह़द अहम रात है, किसी सूरत से भी इसे ग़फ़्लत में न गुज़ारा जाए, इस रात रह़मतों की ख़ूब बरसात होती है। इस मुबारक शब में **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** "बनी कल्ब" की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है। किताबों में लिखा है : "क़बीलए बनी कल्ब" क़बाइले अ़रब में सब से ज़ियादा बकरियां पालता था।[1]" आह ! कुछ बद नसीब ऐसे भी हैं जिन पर **शबे बराअत** या'नी छुटकारा पाने की रात भी न बख़्शे जाने की वईद है। **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम बैहक़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى "फ़ज़ाइलुल अवक़ात" में नक़्ल करते हैं : **रसूले अकरम,** नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : छ[6] आदमियों की इस रात (या'नी शबे बराअत में) भी बख़्शिश नहीं होगी : ﴿1﴾ शराब का आ़दी ﴿2﴾ मां बाप का ना फ़रमान ﴿3﴾ ज़िना का आ़दी ﴿4﴾ क़त़ए तअ़ल्लुक़ करने वाला ﴿5﴾ तस्वीर बनाने वाला और ﴿6﴾ चुग़ुल ख़ोर। (فضائل الاوقات ج۱ ص۱۳۰ حديث۲۷) इसी त़रह़ काहिन, जादूगर, तकब्बुर के साथ पाजामा या तहबन्द टख़्नों के नीचे लटकाने वाले और किसी मुसल्मान से बिला इजाज़ते शर-ई़ बुग़्ज़ो कीना रखने वाले पर भी इस रात मग़्फ़िरत की सआ़दत से मह़रूमी की वईद है, चुनान्चे तमाम मुसल्मानों को चाहिये कि मु-तज़क्करा (या'नी बयान कर्दा) गुनाहों में से अगर مَعَاذَ اللّٰه किसी गुनाह में मुलव्वस हों तो वोह बिल ख़ुसूस उस गुनाह से और बिल उ़मूम हर गुनाह से **शबे बराअत** के आने से पहले बल्कि आज और अभी सच्ची तौबा कर लें, और अगर बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियां की हैं तो तौबा के साथ साथ उन की मुआ़फ़ी तलाफ़ी की तरकीब भी फ़रमा लें।

---

[1]: مرقاة المفاتيح ج۳ ص۳۷۵

www.dawateislami.net

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का पयाम तमाम मुसल्मानों के नाम : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब–र–कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब–र–कत, ह़–नफ़ी मज़्हब के अ़ज़ीम आ़लिम व मुफ़्ती ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने एक इरादत मन्द (या'नी मो'तक़िद) को **शबे बराअत** से क़ब्ल तौबा और मुआ़फ़ी तलाफ़ी के तअ़ल्लुक़ से एक मक्तूब शरीफ़ इरसाल फ़रमाया जो कि उस की इफ़ादियत के पेशे नज़र ह़ाज़िरे ख़िदमत है चुनान्चे "कुल्लियाते मकातीबे रज़ा" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 356 ता 357 पर है : **शबे बराअत** क़रीब है, इस रात तमाम बन्दों के आ'माल ह़ज़रते इ़ज़्ज़त में पेश होते हैं। मौला عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم मुसल्मानों के ज़ुनूब (या'नी गुनाह) मुआ़फ़ फ़रमाता है मगर चन्द, उन में वोह दो मुसल्मान जो बाहम दुन्यवी वज्ह से रन्जिश रखते हैं, फ़रमाता है : "इन को रहने दो, जब तक आपस में सुल्ह़ न कर लें।" लिहाज़ा अहले सुन्नत को चाहिये कि ह़त्तल वस्अ़ क़ब्ले ग़ुरूबे आफ़्ताब **14 शा'बान** बाहम एक दूसरे से सफ़ाई कर लें, एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर दें या मुआ़फ़ करा लें कि बि इज़्निही तआ़ला हुक़ूक़ुल इ़बाद से सहाइफ़े आ'माल (या'नी आ'माल नामे) ख़ाली हो कर बारगाहे इ़ज़्ज़त में पेश हों। हुक़ूक़े मौला तआ़ला के लिये तौबए सादिक़ा (या'नी सच्ची तौबा) काफ़ी है। (ह़दीसे पाक में है :) اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ (या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं (ابن ماجه حديث ٤٢٥٠)) ऐसी ह़ालत में बि इज़्निही तआ़ला ज़रूर इस शब में उम्मीदे मग़्फ़िरते ताम्मा (या'नी मुकम्मल मग़्फ़िरत की उम्मीद) है बशर्ते़ सिह़्ह़ते अ़क़ीदा। (या'नी अ़क़ीदा दुरुस्त होना शर्त़ है) وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْم। (और वोह गुनाह मिटाने वाला रह़मत फ़रमाने वाला है) येह सब मुसा–ल–ह़ते इख़्वान (या'नी भाइयों में सुल्ह़ करवाना) व मुआ़फ़िये हुक़ूक़ بِحَمْدِهٖ تَعَالٰی यहां सालहाए दराज़ (या'नी काफ़ी बरसों) से जारी है, उम्मीद है कि आप भी वहां के मुसल्मानों में इस

www.dawateislami.net

का इज्रा कर के مَنْ سَنَّ فِی الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا يَنْقُصُ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَیْءٌ[1] (या'नी जो इस्लाम में अच्छी राह निकाले उस के लिये इस का सवाब है और क़ियामत तक जो उस पर अ़मल करें उन सब का सवाब हमेशा उस के नामए आ'माल में लिखा जाए बिग़ैर इस के कि उन के सवाबों में कुछ कमी आए) के मिस्दाक़ हों और इस फ़क़ीर के लिये अ़फ़्वो आ़फ़िय्यते दारैन की दुआ़ फ़रमाएं। फ़क़ीर आप के लिये दुआ़ करता है और करेगा। सब मुसल्मानों को समझा दिया जाए कि वहां (या'नी बारगाहे इलाही में) न ख़ाली ज़बान देखी जाती है न निफ़ाक़ पसन्द है, सुल्ह़ व मुआ़फ़ी सब सच्चे दिल से हो। वस्सलाम।

फ़क़ीर अह़मद रज़ा क़ादिरी عُفِیَ عَنْہُ अज़ : बरेली

शबे बराअत की ता'ज़ीम : शामी ताबिईन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن शबे बराअत की बहुत ता'ज़ीम करते थे और इस में ख़ूब इबादत बजा लाते, इन्ही से दीगर मुसल्मानों ने इस रात की ता'ज़ीम सीखी। बा'ज़ उ़-लमाए शाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : शबे बराअत में मस्जिद के अन्दर इज्तिमाई इबादत करना मुस्तह़ब है, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद व लुक़्मान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا और दीगर ताबिईने किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इस रात (की ता'ज़ीम के लिये) बेहतरीन कपड़े ज़ैबे तन फ़रमाते, सुरमा और ख़ुश्बू लगाते, मस्जिद में (नफ़्ल) नमाज़ें अदा फ़रमाते।

(لطائف المعارف ص ٢٦٣)

भलाइयों वाली चार रातें : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم को फ़रमाते सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (ख़ास तौर पर) चार रातों में भलाइयों के दरवाज़े खोल देता है : ﴾1﴿ बक़र ईद की रात ﴾2﴿ ईदुल फ़ित्र की (चांद) रात ﴾3﴿ **शा'बान की पन्दरहवीं रात** कि इस रात में **मरने वालों** के नाम और लोगों का **रिज़्क़** और (इस साल) **ह़ज** करने वालों के नाम लिखे जाते हैं ﴾4﴿ अ़-रफ़े की (या'नी 8 और 9 ज़ुल ह़िज्जा की दरमियानी) रात **अज़ाने** (फ़ज्र) तक। (تفسیر دُرِّ مَنثور ج۷ ص۴۰۲)

[1]: مُعجَم اَوسط حدیث٨٩٤٦، مُعجَم کبیر ج٢ ص ٣٢٨ حدیث٢٣٧٢

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

दूल्हा का नाम मुर्दों की फ़ेहरिस में ! : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान : "(लोगों की) ज़िन्दगियां एक शा'बान से दूसरे शा'बान में मुन्क़तेअ़ होती हैं ह़त्ता कि एक आदमी निकाह़ करता है और उस की औलाद होती है ह़ालां कि उस का नाम मुर्दों में लिखा होता है।"

(كَنْزُ الْعُمَّال ج١٥ ص٢٩٢ حديث٤٢٧٧٣)

तू ख़ुशी के फूल लेगा कब तलक !

तू यहां ज़िन्दा रहेगा कब तलक !

(वसाइले बख़्शिश, स. 709)

मकान बनाने वाला मुर्दों की फ़ेहरिस में : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से रिवायत करते हैं कि जब निस्फ़े शा'बान की रात (या'नी शबे बराअत) आती है तो म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को एक सह़ीफ़ा (या'नी रिसाला) दिया जाता और कहा जाता है : येह सह़ीफ़ा पकड़ लो, एक बन्दा बिस्तर पर लैटा होगा और औ़रतों से निकाह़ करेगा और घर बनाएगा जब कि उस का नाम मुर्दों में लिखा जा चुका होगा। (تفسيرِ دُرِّمنثور ج٧ ص٤٠٢)

साल भर के मुआ़-मलात की तक़्सीम : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "एक आदमी लोगों के दरमियान चल रहा होता है ह़ालां कि वोह मुर्दों में उठाया हुवा होता है।" फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने पारह 25 **सू-रतुद्दुख़ान** की आयत नम्बर 3 और 4 तिलावत की :

إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ﴿٣﴾ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴿٤﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने इसे ब-र-कत वाली रात में उतारा, बेशक हम डर सुनाने वाले हैं। इस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम।

www.dawateislami.net

फिर फ़रमाया : इस रात में एक साल से दूसरे साल तक दुन्या के मुआ-मलात की तक़्सीम की जाती है। (تفسیرِطَبَری ج۱۱ص۲۲۳)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मज़्कूरा आयाते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "इस रात से मुराद या शबे क़द्र है सत्ताईसवीं रात या **शबे बराअत पन्दरहवीं शा'बान,** इस रात में पूरा क़ुरआन लौहे़ मह़फ़ूज़ से आस्माने दुन्या की त़रफ़ उतारा गया फिर वहां से तेईस[23] साल के अ़र्से में थोड़ा थोड़ा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उतरा। इस आयत से मा'लूम हुवा कि जिस रात में क़ुरआन उतरा वोह मुबारक है, तो जिस रात में साहि़बे क़ुरआन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ लाए वोह भी मुबारक है। इस रात में साल भर के रिज़्क़, मौत, ज़िन्दगी, इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत, ग़रज़ तमाम इन्तिज़ामी उमूर लौहे़ मह़फ़ूज़ से फ़िरिश्तों के सह़ीफ़ों में नक़्ल कर के हर सह़ीफ़ा (या'नी रिसाला) उस मह़कमे के फ़िरिश्तों को दे दिया जाता है जैसे म-लकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम मरने वालों की फ़ेहरिस्त वग़ैरा।" (नूरुल इरफ़ान, स. 790)

नाज़ुक फ़ैसले : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! पन्दरह **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** की रात कितनी नाज़ुक है ! न जाने किस की क़िस्मत में क्या लिख दिया जाए ! बा'ज़ अवक़ात बन्दा ग़फ़्लत में पड़ा रह जाता है और उस के बारे में कुछ का कुछ तै हो चुका होता है। "ग़ुन्यतुत़्त़ालिबीन" में है : "बहुत से **कफ़न** धुल कर तय्यार रखे होते हैं मगर कफ़न पहनने वाले बाज़ारों में घूम फिर रहे होते हैं, काफ़ी लोग ऐसे होते हैं कि उन की **क़ब्रें** खोदी जा चुकी होती हैं मगर उन में दफ़्न होने वाले ख़ुशियों में मस्त होते हैं, बा'ज़ लोग **हंस रहे** होते हैं ह़ालां कि उन की मौत का वक़्त क़रीब आ चुका होता है। कई **मकानात** की ता'मीरात का काम पूरा हो गया होता है मगर साथ ही उन के मालिकान की ज़िन्दगी का वक़्त भी पूरा हो चुका होता है।" (غُنیَةُ الطّالِبین ج۱ص۳۴۸)

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं

सामान सो बरस का है पल की ख़बर नहीं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़ाएदे की बात : **शबे बराअत** में नामए आ'माल तब्दील होते हैं लिहाज़ा मुम्किन हो तो 14 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** को भी रोज़ा रख लिया जाए ताकि आ'माल नामे के आख़िरी दिन में भी रोज़ा हो । **14 शा'बान को अ़स्र की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ कर वहीं नफ़्ल ए'तिकाफ़ कर लिया जाए और नमाज़े मग़रिब के इन्तिज़ार की निय्यत से मस्जिद ही में ठहरा जाए ताकि आ'माल नामा तब्दील होने के आख़िरी लम्हात में मस्जिद की हाज़िरी, ए'तिकाफ़ और इन्तिज़ारे नमाज़ वग़ैरा का सवाब लिखा जाए ।** बल्कि ज़हे नसीब ! सारी ही रात इबादत में गुज़ारी जाए ।

मग़रिब के बा'द छ[6] नवाफ़िल : **मा'मूलाते** औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से है कि मग़रिब के फ़र्ज़ व सुन्नत वग़ैरा के बा'द **छ[6] रक्अ़त नफ़्ल** दो दो रक्अ़त कर के अदा किये जाएं । **पहली** दो रक्अ़तों से पहले येह निय्यत कीजिये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे दराज़िये उ़म्र बिलख़ैर अ़ता फ़रमा ।" **दूसरी** दो रक्अ़तों में येह निय्यत फ़रमाइये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से बलाओं से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा ।" **तीसरी** दो रक्अ़तों के लिये येह निय्यत कीजिये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन दो रक्अ़तों की ब-र-कत से मुझे अपने सिवा किसी का मोहताज न कर ।" इन 6 रक्अ़तों में **सू-रतुल फ़ातिहा** के बा'द जो चाहें वोह सूरतें पढ़ सकते हैं, चाहें तो हर रक्अ़त में **सू-रतुल फ़ातिहा** के बा'द तीन तीन बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ लीजिये । हर दो रक्अ़त के बा'द इक्कीस बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) या एक बार **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़िये बल्कि हो सके तो दोनों ही पढ़ लीजिये । येह भी हो सकता है कि कोई एक इस्लामी भाई बुलन्द आवाज़ से **यासीन** शरीफ़ पढ़ें और दूसरे ख़ामोशी से ख़ूब कान लगा कर सुनें । इस में येह ख़याल रहे कि सुनने वाला इस दौरान ज़बान से **यासीन** शरीफ़ बल्कि कुछ भी न पढ़े और येह मस्अला ख़ूब याद रखिये कि जब क़ुरआने करीम बुलन्द आवाज़ से पढ़ा जाए तो जो लोग सुनने के लिये हाज़िर हैं उन पर फ़र्ज़े ऐन है कि चुपचाप ख़ूब कान लगा कर सुनें । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ रात शुरूअ़ होते ही सवाब का अम्बार लग जाएगा । हर बार **यासीन** शरीफ़ के बा'द "**दुआए निस्फ़े शा'बान**" भी पढ़िये ।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

दुआए निस्फ़े शा'बानुल मुअज़्ज़म

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَللّٰهُمَّ يَا ذَا الْمَنِّ وَلَا يُمَنُّ عَلَيْهِ ط يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط يَا ذَا الطَّوْلِ وَالْاِنْعَامِ ط
لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ ط ظَهْرُ اللَّاجِيْنَ ط وَجَارُ الْمُسْتَجِيْرِيْنَ ط وَاَمَانُ الْخَائِفِيْنَ ط
اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ شَقِيًّا اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا
اَوْ مُقَتَّرًا عَلَيَّ فِي الرِّزْقِ فَامْحُ اللّٰهُمَّ بِفَضْلِكَ شَقَاوَتِيْ وَحِرْمَانِيْ وَطَرْدِيْ
وَاقْتِتَارَ رِزْقِيْ ط وَاَثْبِتْنِيْ عِنْدَكَ فِيْ اُمِّ الْكِتٰبِ سَعِيْدًا مَّرْزُوْقًا مُّوَفَّقًا
لِّلْخَيْرَاتِ ط فَاِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِيْ كِتَابِكَ الْمُنَزَّلِ ط عَلٰى لِسَانِ
نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ ط ﴿يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ﴾[1]
اِلٰهِيْ بِالتَّجَلِّي الْاَعْظَمِ ط فِيْ لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ شَعْبَانَ الْمُكَرَّمِ ط
الَّتِيْ يُفْرَقُ فِيْهَا كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ وَّيُبْرَمُ ط اَنْ تَكْشِفَ عَنَّا
مِنَ الْبَلَآءِ وَالْبَلْوَآءِ مَا نَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ ط وَاَنْتَ بِهٖ اَعْلَمُ ط اِنَّكَ اَنْتَ
الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ ط وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ
وَسَلَّمَ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

مدینہ

۱: پ۱۳، الرعد ۳۹

www.dawateislami.net

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ एह्सान करने वाले कि जिस पर एह्सान नहीं किया जाता ! ऐ बड़ी शानो शौकत वाले ! ऐ फ़ज़्लो इन्आ़म वाले ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तू परेशान हालों का मददगार, पनाह मांगने वालों को पनाह और ख़ौफ़ज़दों को अमान देने वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू अपने यहां उम्मुल किताब (या'नी लौहे मह़फ़ूज़) में मुझे शक़ी (या'नी बद बख़्त), मह़रूम, धुत्कारा हुवा और रिज़्क़ में तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने फ़ज़्ल से मेरी बद बख़्ती, मह़रूमी, ज़िल्लत और रिज़्क़ की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे ख़ुश बख़्त, (कुशादा) रिज़्क़ दिया हुवा और भलाइयों की तौफ़ीक़ दिया हुवा सब्त (तह़रीर) फ़रमा दे, कि तू ने ही तेरी नाज़िल की हुई किताब में तेरे ही भेजे हुए नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने फ़ैज़ तरजुमान पर फ़रमाया और तेरा (येह) फ़रमाना ह़क़ है : "**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह** जो चाहे मिटाता है और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।" (پ١٣، الرعد ٣٩) ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ ! तजल्लिये आ'ज़म के वसीले से जो निस्फ़े शा'बानुल मुकर्रम की रात (या'नी शबे बराअत) में है कि जिस में बांट दिया जाता है हर ह़िक्मत वाला काम और अटल कर दिया जाता है। (**या अल्लाह** !) आफ़तों को हम से दूर फ़रमा कि जिन्हें हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तू उन्हें सब से ज़ियादा जानने वाला है। बेशक तू सब से बढ़ कर अ़ज़ीज़ और इ़ज़्ज़त वाला है। **अल्लाह तआ़ला** हमारे सरदार **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم पर दुरूदो सलाम भेजे। सब ख़ूबियां सब जहानों के पालने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं।

सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ **की म-दनी इल्तिजाएं :** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عُفِىَ عَنْهُ का सालहा साल से **शबे बराअत** में बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ छ6 नवाफ़िल वग़ैरा का मा'मूल है। मग़रिब के बा'द की जाने वाली येह इबादत **नफ़्ल** है, फ़र्ज़ व वाजिब नहीं और नमाज़े मग़रिब के बा'द नवाफ़िल व तिलावत की शरीअ़त में कहीं मुमा-न-अ़त भी नहीं। **ह़ज़रते** अ़ल्लामा इब्ने रजब ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى कहते हैं : अहले शाम में से जलीलुल क़द्र ताबिईन म-सलन **ह़ज़रते** सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान, **ह़ज़रते** सय्यिदुना मक्ह़ूल, **ह़ज़रते** सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर رَحِمَهُمُ اللهُ الْقَادِر वग़ैरा शबे बराअत की बहुत ता'ज़ीम करते और इस में ख़ूब इबादत बजा लाते

www.dawateislami.net

थे, इन्ही से दीगर मुसल्मानों ने इस मुबारक रात की ता'ज़ीम सीखी। (لَطائِفُ المَعارِف ج١ص١٤٠) फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मो'तबर किताब, "दुर्रे मुख़्तार" में है : "शबे बराअत में शब बेदारी (कर के इ़बादत) करना मुस्तह़ब है, (पूरी रात जागना ही शब बेदारी नहीं) अक्सर ह़िस्से में जागना भी शब बेदारी है।" (دُرِّ مُختار ج٢ص٥٦٨, बहारे शरीअ़त जि. 1, स. 679) **म-दनी इल्तिजा :** मुम्किन हो तो तमाम इस्लामी भाई अपनी अपनी मसाजिद में बा'दे मग़रिब छ[6] नवाफ़िल वग़ैरा का एहतिमाम फ़रमाएं और ढेरों सवाब कमाएं। इस्लामी बहनें अपने अपने घर में येह आ'माल बजा लाएं।

साल भर जादू से ह़िफ़ाज़त : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 170 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**इस्लामी ज़िन्दगी**" सफ़ह़ा 134 पर है : अगर इस रात (या'नी शबे बराअत) **सात पत्ते बेरी** (या'नी बेर के दरख़्त) के पानी में जोश दे कर (जब पानी नहाने के क़ाबिल हो जाए तो) ग़ुस्ल करे اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْعَزِیز तमाम साल **जादू** के असर से मह़फ़ूज़ रहेगा।

शबे बराअत और क़ब्रों की ज़ियारत : **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं ने एक रात **सरवरे काएनात**, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देखा तो बक़ीए़ पाक में मुझे मिल गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : क्या तुम्हें इस बात का डर था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तुम्हारी ह़क़ त-लफ़ी करेंगे ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ख़याल किया था कि शायद आप अज़्वाजे मुत़ह्हरात में से किसी के पास तशरीफ़ ले गए होंगे। तो फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह तआ़ला** शा'बान की पन्द्रहवीं रात आस्माने दुन्या पर तजल्ली फ़रमाता है, पस क़बीलए बनी कल्ब की बकरियों के बालों से भी ज़ियादा गुनहगारों को बख़्श देता है।" (ترمذی ج ٢ ص ١٨٣ حدیث ٧٣٩)

क़ब्र पर मोमबत्तियां जलाना : **शबे बराअत** में इस्लामी भाइयों का क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत है (इस्लामी बहनों को शरअ़न मम्नूअ़ है) क़ब्रों पर मोमबत्तियां नहीं जला सकते हां अगर **तिलावत** वग़ैरा करना हो तो ज़रूरतन उजाला ह़ासिल करने के लिये क़ब्र से हट कर **मोमबत्ती** जला सकते

www.dawateislami.net

हैं, इसी त़रह़ ह़ाज़िरीन को ख़ुश्बू पहुंचाने की निय्यत से क़ब्र से हट कर अगरबत्तियां जलाने में ह़रज नहीं । **मज़ाराते औलिया** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर चादर चढ़ाना और इस के पास **चराग़** जलाना जाइज़ है कि इस त़रह़ लोग मु-तवज्जेह होते और उन के दिलों में अ़-ज़मत पैदा होती और वोह ह़ाज़िर हो कर इक्तिसाबे फ़ैज़ करते हैं । अगर औलिया और अ़वाम की क़ब्रें यक्सां रखी जाएं तो बहुत सारे दीनी फ़वाइद ख़त्म हो कर रह जाएं ।

सब्ज़ परचा : **अमीरुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक मर्तबा शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं रात या'नी शबे बराअत इ़बादत में मसरूफ़ थे । सर उठाया तो एक "**सब्ज़ परचा**" मिला जिस का नूर आस्मान तक फैला हुवा था, उस पर लिखा था : "هٰذِهٖ بَرَاءَةٌ مِّنَ النَّارِ مِنَ الْمَلِكِ الْعَزِيْزِ لِعَبْدِهٖ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيْزِ۔" या'नी ख़ुदाए मालिको ग़ालिब की त़रफ़ से येह "जहन्नम की आग से आज़ादी का परवाना" है जो उस के बन्दे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ को अ़त़ा हुवा है । (تفسیر روح البیان ج۸ ص۴۰۲)

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस ह़िकायत में जहां अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अ़ज़मतो फ़ज़ीलत का इज़्हार है वहीं **शबे बराअत** की रिफ़्अ़तो शराफ़त का भी ज़ुहूर है । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह मुबारक शब जहन्नम की भड़क्ती आग से **बराअत** (या'नी आज़ादी) पाने की रात है इसी लिये इस रात को "शबे बराअत" कहा जाता है ।

आतश बाज़ी का मूजिद कौन ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ शबे बराअत जहन्नम की आग से "बराअत" या'नी **छुटकारा** पाने की रात है, मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! मुसल्मानों की एक ता'दाद आग से छुटकारा ह़ासिल करने की कोशिश के बजाए ख़ुद पैसे ख़र्च कर के अपने लिये आग या'नी **आतश बाज़ी** का सामान ख़रीदती और ख़ूब पटाख़े वग़ैरा छोड़ कर इस मुक़द्दस रात का तक़द्दुस पामाल करती है । **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी मुख़्तसर किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" में फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

"इस रात को गुनाह में गुज़ारना बड़ी मह़रूमी की बात है, **आतश बाज़ी** के मु–तअ़ल्लिक़ मश्हूर येह है कि येह नमरूद बादशाह ने ईजाद की जब कि उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को आग में डाला और आग गुलज़ार हो गई तो उस के आदमियों ने आग के अनार भर कर उन में आग लगा कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ फेंके।" (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 77)

शबे बराअत की मुरव्वजा आतश बाज़ी ह़राम है : अफ़्सोस ! शबे बराअत में "आतश बाज़ी" की नापाक रस्म अब मुसल्मानों के अन्दर ज़ोर पकड़ती जा रही है। "इस्लामी ज़िन्दगी" में है : मुसल्मानों का लाखों रुपिया सालाना इस रस्म में बरबाद हो जाता है और हर साल ख़बरें आती हैं कि फ़ुलां जगह से इतने घर आतश बाज़ी से जल गए और इतने आदमी जल कर मर गए। इस में जान का ख़त़रा, माल की बरबादी और मकानों में आग लगने का अन्देशा है, (नीज़) अपने माल में अपने हाथ से आग लगाना और फिर ख़ुदा तआ़ला की ना फ़रमानी का वबाल सर पर डालना है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये इस बेहूदा और **ह़राम काम** से बचो, अपने बच्चों और क़राबत दारों को रोको, जहां आवारा बच्चे येह खेल खेल रहे हों वहां तमाशा देखने के लिये भी न जाओ। (ऐज़न, स. 78) (शबे बराअत की मुरव्वजा) आतश बाज़ी का छोड़ना बिला शक इसराफ़ और फ़ुज़ूल ख़र्ची है लिहाज़ा इस का **ना जाइज़ व ह़राम** होना और इसी त़रह़ आतश बाज़ी का बनाना और बेचना ख़रीदना सब शरअ़न मम्नूअ़ हैं। (फ़तावा अज्मलिय्या, जि. 4, स. 52) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : आतश बाज़ी जिस त़रह़ शादियों और **शबे बराअत** में राइज है बेशक **ह़राम** और पूरा जुर्म है कि इस में तज़्यीए़ माल (या'नी माल का ज़ाएअ़ करना) है। (फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 23, स. 279)

आतश बाज़ी की जाइज़ सूरतें : शबे बराअत में जो आतश बाज़ी छोड़ी जाती है उस का मक़्सद खेलकूद और तफ़्रीह़ होता है लिहाज़ा येह गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अलबत्ता इस की बा'ज़ जाइज़ सूरतें भी हैं जैसा कि बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه में **सुवाल** हुवा : क्या फ़रमाते हैं उ़–लमाए दीन इस मस्अले में कि आतश बाज़ी बनाना और

www.dawateislami.net

छोड़ना **ह़राम** है या नहीं ? **अल जवाब :** मम्नूअ़ व **गुनाह** है मगर जो सूरते ख़ास्सा लह्वो लइ़ब व तब्ज़ीर व इसराफ़ से ख़ाली हो (या'नी उन मख़्सूस सूरतों में जाइज़ है जो खेलकूद और फ़ुज़ूल ख़र्ची से ख़ाली हो), जैसे ए'लाने हिलाल (या'नी चांद नज़र आने का ए'लान) या जंगल में या वक़्ते ह़ाजत शहर में भी दफ़्ए़ जानवराने मूज़ी (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों को भगाने के लिये) या खेत या मेवे के दरख़्तों से जानवरों (और परिन्दों) के भगाने उड़ाने को नाड़ियां, पटाख़े, तूमड़ियां छोड़ना।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 290)

तुझ को शा'बाने मुअ़ज़्ज़म का ख़ुदाया वासित़ा
बख़्श दे रब्बे मुह़म्मद तू मेरी हर इक ख़त़ा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में इ़बादत करने, रोज़े रखने और मुरव्वजा आतश बाज़ी वग़ैरा के गुनाहों से बाज़ रहने का ज़ेहन बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह ख़ूब सुन्नतों भरे सफ़र कीजिये और **र-मज़ानुल मुबारक** में दा'वते इस्लामी के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-र-कतें लूटिये। आप की ज़ौक़ अफ़्ज़ाई के लिये एक मुश्कबार **म-दनी बहार** पेश करता हूं, **वाह केन्ट** (पंजाब, पाकिस्तान) के कॉलेज के एक इस्लामी भाई जो कि आ़म स्टूडन्ट्स की त़रह़ फ़ेशन के मतवाले थे, क्रिकेट का मेच देखने और खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ और रात गए तक आवारा गर्दी मा'मूल था। नमाज़ और मस्जिद की ह़ाज़िरी का जहां तक तअ़ल्लुक़ है तो वोह फ़क़त़ **ईदैन** तक मह़दूद थी। **र-मज़ानुल मुबारक** (1422 सि.हि., 2001 सि.ई.) में वालिदैन के इसरार पर नमाज़ अदा करने मस्जिद में गए, अ़स्र की नमाज़ के बा'द सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक बा रीश इस्लामी भाई ने नमाज़ियों को क़रीब करने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स दिया, वोह दूर बैठ कर सुनते रहे, दर्स के बा'द फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकल गए। दो तीन दिन तक येही तरकीब रही। एक दिन वोह मिलने के लिये रुक गए, एक इस्लामी भाई ने पुर-तपाक अन्दाज़

www.dawateislami.net

से मुलाक़ात कर के नाम व पता पूछने के बा'द तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की तरग़ीब दिलाते हुए ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल बयान किये। अव्वलन उन का ज़ेह्न न बना, लेकिन वोह इस्लामी भाई مَاشَآءَاللّٰه बहुत जज़्बे वाले थे, मायूस न हुए बल्कि उन के घर जा पहुंचे और बार बार इसरार करने लगे। उन की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में **ए'तिकाफ़** शुरूअ़ होने से एक दिन क़ब्ल उन्हों ने नाम लिखवा दिया, और आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** 1422 सि.हि. जामेअ़ मस्जिद नईमिया (लालारुख़, वाह केन्ट) के अन्दर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **मो'तकिफ़** हो गए। **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के पुरसोज़ माह़ोल और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन की दिली कैफ़िय्यत बदल डाली ! वहां अदा की जाने वाली तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल की पाबन्दी ने गुज़श्ता ज़िन्दगी में फ़र्ज़ नमाज़ें न पढ़ने पर उन्हें सख़्त शरमिन्दा किया, आंखों से नदामत के आंसू जारी हो गए और उन्हों ने दिल ही दिल में नमाज़ों की पाबन्दी की निय्यत कर ली। **पच्चीसवीं शब** दुआ़ में उन पर इस क़दर रिक़्क़त त़ारी थी कि वोह फूट फूट कर रो रहे थे। इसी आ़लम में उन पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई और वोह ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गए, क्या देखते हैं कि एक पुर वक़ार व नूरबार चेहरे वाली शख़्सिय्यत मौजूद है और उन के इर्द गिर्द काफ़ी हुजूम है। उन्हों ने किसी से पूछा तो उन्हें बताया गया कि येह **आक़ाए मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। **उन्हों ने देखा तो सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था।** कुछ देर तक वोह दीदार से आंखें ठन्डी करते रहे, जब बेदार हुए तो **सलातो सलाम** पढ़ा जा रहा था उन की कैफ़िय्यत बहुत अ़जीबो ग़रीब थी, जिस्म पर लरज़ा त़ारी था, हिचकियां बांध कर रोए जा रहे थे और आंसू थे कि थमने का नाम नहीं ले रहे थे। सलातो सलाम के बा'द **मजलिस बराए ए'तिकाफ़** के निगरान के सामने इमामे का ताज सजाने वालों की क़ित़ार बंधी हुई थी और सरकारे **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के लिखे हुए इस ना'तिया शे'र की तकरार जारी थी :

www.dawateislami.net

ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का

सर झुकाते हैं इलाही बोलबाला नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 243)

वोह अपने क़रीबी इस्लामी भाइयों को ब मुश्किल तमाम सिर्फ़ इतना कह पाए : "मैं ने भी इमामा बांधना है।" थोड़ी ही देर में रोते रोते वोह भी इमामे का ताज सजा चुके थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने **ए'तिकाफ़** ही में **एक माह के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत भी की और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र भी किया, सफ़र के दौरान बहुत कुछ सीखने के साथ साथ दर्सो बयान भी सीख कर करने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी कामों** में ह़िस्सा लेने लगे। उन्हें **ज़ैली मुशा-वरत के निगरान** के त़ौर पर म-दनी कामों की धूमें मचाने की सआ़दत भी मिली।

गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ईद" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक : ﴾1﴿ "**जिस** ने **र-मज़ान** के रोज़े रखे फिर छ[6] दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।"

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۳ص۴۲۵حديث۵۱۰۲)

गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा : ﴾2﴿ "**जिस** ने **र-मज़ान** के रोज़े रखे फिर इन के बा'द **छ[6] दिन शव्वाल** में रखे, तो ऐसा है जैसे दह्र का (या'नी उ़म्र भर के लिये) रोज़ा रखा।" (مُسلِم ص۵۹۲حديث۱۱۶۴)

साल भर रोज़े रखे : ﴾3﴿ "**जिस** ने ईदुल फ़ित्र के बा'द (शव्वाल में) **छ[6] रोज़े** रख लिये तो उस

www.dawateislami.net

ने पूरे साल के रोजे़ रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी। तो माहे र-मज़ान का रोज़ा दस महीने के बराबर है और इन छ6 दिनों के बदले में दो महीने तो पूरे साल के रोजे़ हो गए।"

(اَلسُّنَنُ الْكُبرٰى لِلنَّسائی ج ٢ ص ١٦٢،١٦٣ حديث ٢٨٦٠،٢٨٦١)

शश ईद के रोजे़ कब रखे जाएं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی "बहारे शरीअ़त" के हाशिये में फ़रमाते हैं : "बेहतर येह है कि येह रोजे़ मु-तफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं और **ईद** के बा'द लगातार **छ6 दिन** में एक साथ रख लिये, जब भी ह़रज नहीं।"

(دُرِّمُختار ج ٣ ص ٤٨٥, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1010)

ख़लीले मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : येह रोजे़ **ईद** के बा'द लगातार रखे जाएं तब भी मुज़ा-यक़ा नहीं और बेहतर येह है कि मु-तफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं या'नी (जैसे) हर हफ़्ते में दो रोजे़ और **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे तो और भी मुनासिब मा'लूम होता है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347) अल ग़रज़ **ईदुल फ़ित्र** का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोजे़ रख सकते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के इब्तिदाई दस दिन के फ़ज़ाइल : फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 10 सफ़ह़ा 649 पर है : सौम (या'नी रोज़ा) वग़ैरा आ'माले सालिह़ा (या'नी नेक आ'माल) के लिये बा'दे **र-मज़ानुल मुबारक** सब दिनों से अफ़्ज़ल अ़शरए ज़िल ह़िज्जा है।

"अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से अ़शरए ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के फ़ज़ाइल के मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**इन दस दिनों** से ज़ियादा किसी दिन का नेक अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब नहीं।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और न राहे ख़ुदा

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ में जिहाद ?" फ़रमाया : "और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद, मगर वोह कि अपने जान व माल ले कर निकले फिर उन में से कुछ वापस न लाए।" (या'नी सिर्फ़ वोह मुजाहिद अफ़्ज़ल होगा जो जान व माल कुरबान करने में काम्याब हो गया) (بُخارِی ج۱ص۳۳۳حدیث۹۶۹)

﴾2﴿ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अ़शरए जुल हिज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इबादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का क़ियाम **शबे क़द्र** के बराबर है।" (تِرمِذی ج۲ص۱۹۲حدیث۷۵۸)

﴾3﴿ "**मुझे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि अ़-रफ़ा (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम) **का रोज़ा** एक साल क़ब्ल और एक साल बा'द के गुनाह मिटा देता है।" (مُسلِم ص۵۹۰حدیث۱۱۶۲)

﴾4﴿ **अ़-रफ़ा** (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम) **का रोज़ा** हज़ार रोज़ों के बराबर है। (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ص۳۵۷حدیث۳۷۶٤) (मगर अ़-रफ़ात में ह़ाजी को अ़-रफ़े का रोज़ा मक्रूह है,) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अ़-रफ़े** के दिन (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) **अ़-रफ़ात** में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया। (ابنُ خُزَیمَۃ ج۳ص۲۹۲حدیث۲۱۰۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अय्यामे बीज़ के रोज़े : **हर** म-दनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़ कम तीन रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने चाहिएं। इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़रवी फ़वाइद हैं। बेहतर येह है कि येह रोज़े "अय्यामे बीज़" या'नी चांद की 13, 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं।

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ 3 रिवायात : ﴾1﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चार चीज़ें नहीं छोड़ते थे, आ़शूरा का रोज़ा और अ़शरए जुल हिज्जा के रोज़े और हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** और फ़ज्र (के फ़र्ज़) से पहले दो रक्अ़तें (या'नी दो सुन्नतें)। (نَسائی ص۳۹۵ حدیث۲٤۱۳) ह़दीसे पाक के इस हिस्से "अ़शरए जुल हिज्जा के रोज़े" से मुराद जुल

www.dawateislami.net

हि़ज्जा के इब्तिदाई नव दिनों के रोज़े हैं, वरना दस ज़ुल हि़ज्जा को रोज़ा रखना ह़राम है ।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 195)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم अय्यामे बीज़ में **बिग़ैर** रोज़ा के न होते न सफ़र में न ह़ज़र (या'नी क़ियाम) में । (نَسائی ص٣٨٦ حدیث٢٣٤٢)

﴾3﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "अम्बिया के सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم एक महीने में **हफ़्ता, इतवार** और **पीर** का जब कि दूसरे माह **मंगल, बुध** और **जुम्अ़रात** का रोज़ा रखा करते ।" (تِرمِذی ج٢ ص١٨٦ حدیث٧٤٦)

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के बारे में 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**जिस** त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है इसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और **हर माह तीन दिन रोज़े** रखना बेहतरीन रोज़े हैं ।" (ابنِ خُزَیمه ج٣ ص٣٠١ حدیث٢١٢٥) ﴾2﴿ हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** ऐसे हैं जैसे दह्‌र (या'नी हमेशा) के रोज़े । (بخاری ج١ ص٦٤٩ حدیث١٩٧٥) ﴾3﴿ **र-मज़ान** के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े **सीने की ख़राबी** (या'नी जैसे निफ़ाक़) दूर करते हैं । (مُسنَد اِمام اَحمَد ج٩ ص٣٦ حدیث٢٣١٣٢) ﴾4﴿ **जिस** से हो सके हर महीने में **तीन रोज़े** रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को । (مُعجَم کَبِیر ج٢٥ ص٣٥ حدیث٦٠) ﴾5﴿ **जब** महीने में **तीन रोज़े** रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो । (نَسائی ص٣٩٦ حدیث٢٤١٧)

मरने की दुआ़एं मांगते थे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अय्यामे बीज़ के रोज़ों, नेकियों और सुन्नतों का ज़ेह्‌न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" का **म-दनी माह़ोल** अपना लीजिये, सिर्फ़ दूर दूर से देखने से बात नहीं बनेगी, सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र

www.dawateislami.net

कीजिये, **र–मज़ानुल मुबारक** का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** भी फ़रमाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह क़ल्बी सुकून मुयस्सर आएगा कि आप हैरान रह जाएंगे। **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माहोल में आ कर कैसे कैसे बिगड़े हुए लोग राहे रास्त पर आ जाते हैं इस की एक झलक मुला–हज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे तह़सील ठुल (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इन्तिहाई फ़सादी और शरीर थे, लड़ाई झगड़ा उन का पसन्दीदा मश्ग़ला था, उन की शर अंगेज़ियों से सारा मह़ल्ला तंग था और घर वाले तो इस क़दर बेज़ार थे कि **उन के मरने की दुआएं मांगते थे।** ख़ुश क़िस्मती से कुछ इस्लामी भाइयों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **र–मज़ानुल मुबारक** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत पेश की उन्हों ने मुरव्वत में हां कर दी। और **र–मज़ानुल मुबारक** (1420 सि.हि. 1999 सि.ई.) में **मेमन मस्जिद** अ़त्तारआबाद के अन्दर आ़शिक़ाने रसूल के साथ **मो'तकिफ़** हो गए। दौराने ए'तिकाफ़ उन्हें वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद और एह़तिरामे मुस्लिम के अह़काम सीखने को मिले, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानों और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन्हें हिला कर रख दिया ! बसद नदामत उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से **तौबा** की, नेकियां करने की दिल में उमंग पैदा हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निशानी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज से सर सब्ज़ किया और लड़ाई झगड़ों की जगह **नेकी की दा'वत** के शैदाई बन गए।

आओ आ कर गुनाहों से तौबा करो, म–दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो, म–दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मुस्त़फ़ा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुम्अ़रात के रोज़ों के मु–तअ़ल्लिक़ 5 रिवायात

﴾1﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : **पीर** और **जुम्अ़रात** को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार होउं। (ترمذی ج ۲ ص ۱۸۷ حدیث۷۴۷) ताकि रोज़े की ब-र-कत से रह़मते इलाही का दरिया जोश मारे। (मिरआत, जि. 3, स. 188)

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ और जुम्अ़रात को रोज़े रखा करते थे, इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : इन दोनों दिनों में **अल्लाह तआ़ला** हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम (या'नी आपस में) जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें।

(ابنِ ماجه ج۲ص۳۴۴حدیث۱۷۴۰)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत जिल्द 3 सफ़्ह़ा 196 पर फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ الله ! येह दोनों दिन बड़ी अ़ज़्मत और ब-र-कत वाले हैं क्यूं न हों कि इन्हें अ़ज़्मत वालों से निस्बत है, "जुम्अ़रात" तो जुमुआ़ का पड़ोसी है और ह़ज़रते आमिना ख़ातून के ह़ामिला होने का दिन है, और "पीर" ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का दिन भी है और नुज़ूले क़ुरआने करीम का भी।

(3) **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : नबियों के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुम्अ़रात** के रोज़े का ख़ास ख़याल रखते थे। (ترمذی ج۲ص۱۸۶حدیث۷۴۵)

(4) **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **पीर शरीफ़** के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : इसी में **मेरी विलादत** हुई, इसी में मुझ पर वह़्य नाज़िल हुई। (مُسلِم ص ۵۹۱ حدیث۱۹۸۔۱۱۶۲)

(5) **ह़ज़रते** सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ग़ुलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है :

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सफ़र में भी **पीर** और **जुम्अ़रात** का रोज़ा तर्क नहीं फ़रमाते थे। मैं ने उन की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या वज्ह है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस बड़ी उ़म्र में भी **पीर** और **जुम्अ़रात** का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुम्अ़रात** का रोज़ा रखा करते थे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुम्अ़रात** का रोज़ा रखते हैं ? तो इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल **पीर** और **जुम्अ़रात** को पेश किये जाते हैं। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۲حدیث۳۸۰۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध और जुम्अ़रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : जो **बुध** और **जुम्अ़रात** के रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है। (اَبو یَعْلٰی ج۵ص۱۱۵حدیث۵۶۱۰)

﴾2﴿ **हज़रते** सय्यिदुना मुस्लिम बिन **उ़बैदुल्लाह** क़ुरशी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने वालिदे मुकर्रम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में या तो ख़ुद अ़र्ज़ की या किसी और ने दरयाफ़्त किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं **हमेशा रोज़ा** रखूं ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, फिर दूसरी मर्तबा अ़र्ज़ की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई। तीसरी बार पूछने पर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि **रोज़े** के मु-तअ़ल्लिक़ किस ने सुवाल किया ? अ़र्ज़ की, मैं ने **या नबिय्यल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का हक़ है तू **र-मज़ान** और इस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर **बुध** और **जुम्अ़रात** के रोज़े रख कि अगर तू ऐसा करेगा तो

www.dawateislami.net

गोया तू ने हमेशा के रोज़े रखे। (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۹۵حدیث۳۸۶۸)

《3》 फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस ने र-मज़ान, शव्वाल, बुध और जुम्आ़रात का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।" (اَلسُّنَنُ الْکُبْرٰی لِلنَّسَائی ج۲ص۱۴۷حدیث۲۷۷۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध, जुम्आ़रात और जुमुआ़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

《1》 **जिस** ने **बुध, जुम्आ़रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **जन्नत** में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से। (مُعجَم اَوسَط ج۱ص۸۷حدیث ۲۵۳)

《2》 **जिस** ने **बुध, जुम्आ़रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **जन्नत** में मोती और याक़ूत व ज़बर-जद का मह़ल बनाएगा और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी। (شُعَبُ الْایمان ج۳ص۳۹۷حدیث۳۸۷۳)

《3》 **जिस** ने **बुध, जुम्आ़रात** वु **जुमुआ़** का रोज़ा रखा फिर जुमुआ़ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था। (ایضاًحدیث۳۸۷۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"जुमुआ़" के चार हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ़ के रोज़े के मु-तअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

《1》 "**जिस** ने **जुमुआ़** का रोज़ा रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आख़िरत के दस दिनों के बराबर अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह अय्याम (अपनी मिक़्दार में) अय्यामे दुन्या की त़रह़ नहीं है।" (شُعَبُ الایمان ج ۳ ص ۳۹۳ حدیث ۳۸۶۲)

www.dawateislami.net

फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 10 सफ़हा 653 पर है : रोज़ए जुमुआ़ या'नी जब इस के साथ पन्ज शम्बा या शम्बा (या'नी जुम्अ़रात या हफ़्ते का रोज़ा) भी शामिल हो मरवी हुवा कि **दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है ।**

2 "**जिस** ने **जुमुआ़** अदा किया और इस दिन का **रोज़ा** रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और निकाह़ में ह़ाज़िर हुवा तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई ।"

(مُعجَم کَبِیْرج۸ص۹۷حدیث۷۴۸۴)

3 "**जिस** ने रोज़े की हालत में यौमे **जुमुआ़** की सुब्ह़ की और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और **स-दक़ा** किया तो उस ने अपने लिये **जन्नत** वाजिब कर ली ।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۳حدیث۳۸٦٤)

4 **जिस** ने बरोज़े **जुमुआ़** रोज़ा रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **मिस्कीन** को खाना खिलाया और **जनाज़े** के हमराह चला तो उसे **चालीस साल** के गुनाह लाह़िक़ न होंगे । (ایضاًص۳۹٤حدیث۳۸٦٥)

ह़दीसे पाक के इस हिस्से "उसे चालीस साल के गुनाह लाह़िक़ न होंगे" से मुराद या तो उसे नेकी ही की तौफ़ीक़ मिलेगी या गुनाह सादिर हुए तो ऐसी तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी जो उस के गुनाहों को मिटा देगी ।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत कम **जुमुआ़** का रोज़ा तर्क फ़रमाते थे । (اَیضاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ आ़शूरा के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी त़रह़ **जुमुआ़** में भी करना है, क्यूं कि खु़सूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ़** (इस मस्अले का खु़लासा आगे आ रहा है) या सिर्फ़ **हफ़्ते** का रोज़ा रखना मक्रूहे तन्ज़ीही (या'नी ना पसन्दीदा) है । हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ़** या हफ़्ता आ गया तो तन्हा **जुमुआ़** या हफ़्ते का रोज़ा रखने में कराहत नहीं । म-सलन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 र-जबुल मुरज्जब वग़ैरा ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"फ़ज़्ल" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा रखने की मुमा–न–अ़त पर 3 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) शबे **जुमुआ़** को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो और न ही **यौमे जुमुआ़** को दीगर दिनों में रोज़े के साथ ख़ास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोज़े में हो जो तुम्हें रखना हो । (مُسلِم ص٥٧٦ حديث١١٤٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 187 पर "शबे जुमुआ़ को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो ।" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जुमुआ़ की रात में इ़बादत करना मन्अ़ नहीं, बल्कि और रातों में बिल्कुल इ़बादत न करना मुनासिब नहीं कि येह ग़फ़्लत की दलील है चूंकि जुमुआ़ की रात ही ज़ियादा अ़ज़मत वाली है, अन्देशा था कि लोग इस को नफ़्ली इ़बादतों से ख़ास कर लेंगे इस लिये इसी रात का नाम लिया गया ।

(2) **तुम** में से कोई हरगिज़ **जुमुआ़** का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला ले । (بُخارِی ج١ ص٦٥٣ حديث١٩٨٥)

(3) **जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ईद** है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो । (التّرغيب وَالتّرهيب ج٢ ص٨١ حديث١١)

अह़ादीसे मुबा–रका से मा'लूम हुवा कि तन्हा **जुमुआ़** का रोज़ा न रखना चाहिये मगर येह मुमा–न–अ़त सिर्फ़ उसी सूरत में है जब कि ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ ही का रोज़ा रखा जाए अगर ख़ुसूसिय्यत न हो म–सलन जुमुआ़ के रोज़ छुट्टी थी इस से फ़ाएदा उठाते हुए रोज़ा रख लिया तो कराहत नहीं ।

मुफ़स्सिरे शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़हा 187 पर फ़रमाते हैं : म–सलन कोई शख़्स हर ग्यारहवीं या बारहवीं तारीख़ को

www.dawateislami.net

रोज़ा रखने का आ़दी हो और इत्तिफ़ाक़ से उस दिन जुमुआ़ आ जाए तो रख ले, अब ख़िलाफ़े औला भी नहीं।

रोज़ए जुमुआ़ के मु-तअ़ल्लिक़ एक फ़तवा : **इस** ज़िम्न में **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़्हा 559 से मा'लूमाती सुवाल जवाब मुला-हज़ा हों : **सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़-लमाए दीन इस मस्अले में कि **जुमुआ़** का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने जुमुआ़ का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा जुमुआ़ ईदुल मुअमिनीन है, रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इसरार बा'द दो पहर के रोज़ा तुड़वा दिया और किताब "सिर्रुल क़ुलूब" में मक्रूह होना लिखा है दिखला दिया। ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ने वाले के ज़िम्मे कफ़्फ़ारा है या नहीं ? और तुड़वाने वाले को कोई इल्ज़ाम है या नहीं ? **अल जवाब :** जुमुआ़ का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से (रखना) कि आज जुमुआ़ है इस का रोज़ा बित्तख़्सीस (या'नी ख़ुसूसिय्यत से रखना) चाहिये, मक्रूह है, मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते तख़्सीस न थी तो अस्लन कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से ह़माक़त हुवा और रोज़ा तुड़वा देना शर-अ़ पर सख़्त जुर्अत, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना और वोह भी बा'द दो पहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोजे़ में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं, तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन (या'नी बिल्कुल) नहीं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हफ़्ता और इतवार के रोजे़ : **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना उम्मे स-लमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **हफ़्ते और इतवार** का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते : "येह

www.dawateislami.net

दोनों (या'नी हफ़्ता और इतवार) मुश्रिकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि इन की मुख़ा-लफ़त करूं ।" (ابنِ خُزَیمہ ج۳ص۳۱۸حدیث۲۱۶۷)

तन्हा हफ़्ते का रोज़ा रखना मन्अ़ है । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन बुस्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी बहन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा मत रखो ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा **तिरमिज़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस ह़सन है और यहां मुमा-न-अ़त से मुराद किसी शख़्स का हफ़्ते के रोज़े को ख़ास कर लेना है कि यहूदी इस दिन की ता'ज़ीम करते हैं । (تِرمِذی ج۲ص۱۸۶حدیث۷۴۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"ऐ शहन्शाहे मदीना" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ए नफ़्ल के 13 म-दनी फूल

- **मां** बाप अगर बेटे को **नफ़्ल रोज़े** से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इत़ाअ़त करे । (رَدُّالْمُحتار ج۳ص۴۷۸)
- **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकती । (دُرِّمُختار ج۳ص۴۷۷)
- **नफ़्ल रोज़ा** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी । (ایضاً ص۴۷۳)
- **नफ़्ल रोज़ा** जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया म-सलन औ़रत को रोज़े के दौरान ह़ैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर क़ज़ा वाजिब है । (ایضاً ص۴۷۴)
- **नफ़्ल रोज़ा** बिला उ़ज़्र तोड़ना, **ना जाइज़** है । मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा । या **मेहमान** अगर खाना न खाए तो **मेज़बान** को

www.dawateislami.net

अज़िय्यत होगी तो **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ने के लिये येह उ़ज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त है कि ज़हूवए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ٣ ص ٤٧٥-٤٧٦)

❁ **वालिदैन** की नाराज़ी के सबब अ़स्र से पहले तक **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है बा'दे अ़स्र नहीं। (ایضاًص ٤٧٧)

❁ **अगर** किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़हूवए कुब्रा से क़ब्ल **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है। (دُرِّمُختار ج٣ص٤٧٧،٤٧٣)

❁ **इस** त़रह़ निय्यत की, कि "कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है।" येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल रोज़ादार नहीं। (عالمگیری ج١ص١٩٥)

❁ **मुलाज़िम** या मज़दूर अगर **नफ़्ल रोज़ा** रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो "मुस्ताजिर" (या'नी जिस ने मुला-ज़मत या मज़दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है। और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं।[1] (دُرِّمُختار ج٣ ص ٤٧٨)

❁ **त़ालिबे इ़ल्मे दीन** अगर नफ़्ल रोज़ा रखता है तो कमज़ोरी होती, नींद चढ़ती और सुस्ती के सबब त़-लबे इ़ल्मे दीन में रुकावट खड़ी होती है तो अफ़्ज़ल येह है नफ़्ल रोज़ा न रखे।

❁ **ह़ज़रते** सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। इस त़रह़ रोज़े रखना "सौमे दावूदी" कहलाता है और हमारे लिये येह अफ़्ज़ल है। जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल रोज़ा मेरे भाई **दावूद** (عَلَیْهِ السَّلَام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे।" (ترمذی ج٢ص١٩٧حدیث٧٧٠)

1 : मुला-ज़मत के मु-तअ़ल्लिक़ बेहतरीन मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा सिर्फ़ 22 सफ़ह़ात का रिसाला "ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 म-दनी फूल" का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

❁ **हज़रते** सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन[3] दिन **महीने** के शुरूअ़ में, तीन[3] दिन वस्त़ (या'नी बीच) में और तीन[3] दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस त़रह़ महीने के अवाइल, अवासित़ और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे। (ابن عساكر ج٢٤ ص٤٨)

❁ **सौमे** दह्‌र (या'नी हमेशा रोज़े रखना सिवा इन पांच दिनों या'नी शव्वाल की यकुम और ज़िल हिज्जा की दसवीं ता तेरहवीं के जिन में रोज़ा रखना ह़राम है) मक्रूहे तन्ज़ीही है। (دُرِّمُختار ج٣ ص٣٩١)

हमेशा रोज़ा रखना : हमेशा के रोज़ों से मुमा-न-अ़त पर "बुख़ारी शरीफ़" की येह ह़दीस भी है और इस का मफ़्हूम भी उ़-लमा ने तावील के साथ बयान फ़रमाया है चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : لَا صَامَ مَنْ صَامَ الدَّهْرَ ـ या'नी जो हमेशा रोज़े रखे उस ने रोज़े रखे ही नहीं। (بُخاری ج١ ص٦٥١ حديث١٩٧٩)

शर्हे ह़दीस : शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : अगर इस ख़बर को "नह्‌य" के मा'ना में मानें (या'नी अगर इस ह़दीस का येह मा'ना लें कि हमेशा रोज़े रखना मन्अ़ है और जो रखेगा तो उसे कोई सवाब नहीं मिलेगा) तो (इस सूरत में ह़दीस का) येह इर्शाद उन लोगों के लिये है जिन्हें मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि इतने कमज़ोर हो जाएंगे कि जो हुक़ूक़ इन पर वाजिब हैं उन को अदा नहीं कर पाएंगे ख़्वाह वोह हुक़ूक़ दीनी हों या दुन्यवी, म-सलन नमाज़, जिहाद, बच्चों की परवरिश के लिये कमाई, और (पहली सूरत से हट कर दूसरी सूरत येह बनती है कि) अगर मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से (अगर) इन (रोज़ादारों) का ज़न्ने ग़ालिब हो कि हुक़ूक़े वाजिबा तो कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अदा कर लेंगे मगर हुक़ूक़े ग़ैरे वाजिबा अदा करने की क़ुव्वत नहीं रहेगी, उन के लिये रोज़ा मक्रूह या ख़िलाफ़े औला है और जिन्हें इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि सौमे दह्‌र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखने के बा वुजूद तमाम हुक़ूक़े वाजिबा, मस्नूना, मुस्तह़ब्बा

www.dawateislami.net

कमा हक़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) अदा कर लेंगे उन के लिये कराहत भी नहीं। बा'ज़ सहाबए किराम जैसे अबू त़ल्ह़ा अन्सारी और ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا सौमे दहर (या'नी हमेशा रोज़ा) रखते थे और हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें मन्अ़ नहीं फ़रमाया, इसी त़रह़ बहुत से ताबिईन और औलियाए किराम से भी सौमे दहर (या'नी हमेशा रोज़ा) रखना मन्क़ूल है। [اشعة اللمعات جلد ثانی ص ۱۰۰] (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 386 मुलख़्ख़सन)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़िन्दगी, सिह़्ह़त और फ़ुरसत को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब **नफ़्ल रोज़े** रखने की सआ़दत इनायत फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर, हमें बे ह़िसाब बख़्श दे और हमारे मीठे मीठे मह़बूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"र-मज़ानुल मुबारक" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ादारों की 12 हिकायात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मेरी महब्बत और मेरी तरफ़ शौक़ की वज्ह से मुझ पर हर दिन और हर रात को **तीन तीन बार** दुरूद शरीफ़ पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि वोह इस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।

(مُعجَم کبیر ج۱۸ ص۳۶۲ حدیث۹۲۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) हज्जाज बिन यूसुफ़ और रोज़ादार आ'राबी : हज्जाज बिन यूसुफ़ एक मर्तबा सख़्त गर्मियों में दौराने सफ़रे हज मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए मुनव्वरह زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا के दरमियान एक मन्ज़िल में उतरा और दो पहर का खाना तय्यार करवाया और अपने हाजिब (या'नी चोकीदार) से कहा कि किसी मेहमान को ले आओ। हाजिब ख़ैमे से बाहर निकला तो उसे एक **आ'राबी** लैटा हुवा नज़र आया, इस ने उसे जगाया और कहा : चलो तुम्हें अमीर हज्जाज बुला रहे हैं। आ'राबी आया तो हज्जाज ने कहा : मेरी दा'वत क़बूल करो और हाथ धो कर मेरे साथ खाना खाने बैठ जाओ। **आ'राबी** बोला : मुआ़फ़ फ़रमाइये ! आप की दा'वत से पहले मैं आप से बेहतर एक **करीम** की दा'वत क़बूल कर चुका हूं। हज्जाज ने कहा : वोह किस की ? वोह बोला : **अल्लाह तआ़ला** की जिस ने मुझे **रोज़ा** रखने की दा'वत दी और मैं **रोज़ा** रख चुका हूं। हज्जाज ने कहा : इतनी सख़्त गरमी में **रोज़ा** ? आ'राबी ने कहा : हां ! क़ियामत की सख़्त

www.dawateislami.net

तरीन गरमी से बचने के लिये। ह़ज्जाज ने कहा : आज खाना खा लो और येह **रोज़ा** कल रख लेना। **आ'राबी** बोला : क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं कि मैं कल तक ज़िन्दा रहूंगा! ह़ज्जाज ने कहा येह बात तो नहीं। आ'राबी बोला : तो फिर वोह बात भी नहीं। येह कहा और चल दिया। (روض الرّیاحین ص ۲۱۲) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे किसी दुन्यवी ह़ाकिम के रो'ब में नहीं आते और येह भी मा'लूम हुवा कि जो आ़शिक़ाने रसूल यहां की गरमी बरदाश्त कर के **रोज़ा** रखते हैं वोह कल क़ियामत की होलनाक गरमी से मह़फ़ूज़ रहेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(2) सच्चा चरवाहा : ह़ज़रते सय्यिदुना **नाफ़ेअ़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا अपने बा'ज़ साथियों के साथ एक सफ़र में थे रास्ते में एक जगह ठहरे और खाने के लिये दस्तर ख़्वान बिछाया, इतने में एक **चरवाहा** (या'नी बकरियां चराने वाला) वहां आ गया, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : आइये! दस्तर ख़्वान से कुछ ले लीजिये! अ़र्ज़ की : मेरा रोज़ा है, **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : क्या तुम इस सख़्त गरमी के दिन में (नफ़्ल) **रोज़ा** रखे हुए हो जब कि तुम इन पहाड़ों में बकरियां चरा रहे हो! उस ने कहा : **अल्लाह** की क़सम! मैं येह इस लिये कर रहा हूं कि ज़िन्दगी के गुज़रे हुए दिनों की तलाफ़ी (या'नी बदला अदा) कर लूं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उस की परहेज़ गारी का इम्तिह़ान लेने के इरादे से फ़रमाया : क्या तुम अपनी बकरियों में से एक बकरी हमें बेचोगे? उस की क़ीमत और गोश्त भी तुम्हें देंगे ताकि तुम इस से रोज़ा इफ़्त़ार कर सको, उस ने जवाब दिया : येह बकरियां मेरी नहीं हैं, मेरे मालिक की हैं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आज़्माने के लिये फ़रमाया : मालिक से कह देना कि भेड़िया (Wolf) इन में से एक को ले गया है, ग़ुलाम ने कहा : तो फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कहां हैं? (या'नी **अल्लाह** तो देख रहा है, वोह तो ह़क़ीक़त को जानता है और इस पर

www.dawateislami.net

मेरी पकड़ फ़रमाएगा) जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो उस के मालिक से गुलाम और सारी बकरियां ख़रीद लीं फिर चरवाहे को आज़ाद कर दिया और बकरियां भी उसे तोहफ़े में दे दीं। (شُعَبُ الإيمان ج٤ ص٣٢٩ حديث٥٢٩١ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रहमत हो और उन के सदके़ हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 निराला कफ़्फ़ारा : बुख़ारी शरीफ़ में है, एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बारगाहे न-बवी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने **र-मज़ान** के रोज़े की हालत में अपनी औ़रत से "कु़रबत" की, मैं हलाक हो गया, (फ़रमाइये ! अब मैं क्या करूं ?) सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : गुलाम आज़ाद कर सकते हो ? अ़र्ज़ की नहीं। फ़रमाया : क्या मु-तवातिर दो माह के रोज़े रख सकते हो ? अ़र्ज़ की नहीं। फ़रमाया : साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो ? अ़र्ज़ की : येह भी नहीं कर सकता। इतने में बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में किसी ने कुछ खजूरें हदिय्यतन हाज़िर कीं। सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह सारी खजूरें उस सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को अ़ता फ़रमा दीं और फ़रमाया : इन्हें ख़ैरात कर दो (तुम्हारा **कफ़्फ़ारा** अदा हो जाएगा)। वोह बोले : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **मदीने** में मेरे घर वालों से बढ़ कर कोई ख़ानदान मोहताज नहीं। **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर हंसे यहां तक कि दन्दाने मुबारक चमकने लगे और फ़रमाया : اَطْعِمْهُ اَهْلَكَ या'नी "अपने घर वालों को ही खिला दे" (तेरा कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा)।

(بُخاری ج١ ص٦٣٨ حديث١٩٣٦ مُلَخَّصاً)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस ह़दीस की जो शर्ह़ फ़रमाई है उस से ह़ासिल होने वाले चन्द म-दनी फूल पेश करता हूं : ❁ **कफ़्फ़ारे** में तरतीब मो'तबर है कि अगर गुलाम आज़ाद कर सकता है तो येह करे अगर गुलाम न पाए तो दो माह के मुसलसल रोज़े अगर येह ना मुम्किन हो तो साठ मिस्कीनों का खाना। (कफ़्फ़ारे

www.dawateislami.net

की तफ़्सीली मा'लूमात "अह़कामे रोज़ा" के सफ़्ह़ा 152 ता 155 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये) ❁ या'नी अपना येह कफ़्फ़ारा तू ख़ुद भी खा ले और अपने घर वालों को भी खिला दे तेरा कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा। येह है हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم का इख़्तियार कि उस का कफ़्फ़ारा उस के लिये इन्आ़म बना दिया, वरना कोई शख़्स अपना कफ़्फ़ारा अपनी ज़कात न तो ख़ुद खा सकता है न उस के बीवी बच्चे, मगर यहां उस का अपना ही कफ़्फ़ारा है और अपने आप ही खा रहा है। (मिरआत, जि. 3, स. 161, 162 मुलख़्ख़सन) "नुज़्हतुल क़ारी" में इस ह़दीसे पाक के तह़त है : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को येह इख़्तियार ह़ासिल है कि वोह जिसे चाहें जिस हुक्म से चाहें मुस्तस्ना (या'नी जुदा) फ़रमा दें, मिस्कीनों को खिलाने के बजाए ख़ुद खाने और अपने अहलो इयाल को खिलाने का हुक्म दिया। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 335 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने लाख दिरहम लुटा दिये ! : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ख़िदमत में **एक लाख दराहिम** भेजे, तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वोह सब दिरहम एक ही रोज़ में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम कर दिये और अपने लिये कुछ न रखा और उस रोज़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़ुद रोज़े से थीं। ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : आप का रोज़ा है अगर उस में से एक दिरहम का गोश्त ख़रीद लेतीं तो हम उस से रोज़ा इफ़्तार करते। फ़रमाया : अगर तुम याद दिलातीं तो बचा लेती। (اَلْمُستَدرَك ج٤ ص١٧ حديث ٦٨٠٥) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़शिक़ाने रसूल से मुलाक़ात की ब-रकात : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने वुस्अ़त के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना

www.dawateislami.net

गुज़ार दी और जो दौलत भी ह़ाज़िर हुई आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तक़्सीम फ़रमा दी यहां तक कि **लाख दराहिम** आए वोह भी लुटा दिये और **रोज़ा** इफ़्तार करने के लिये भी कोई एहतिमाम न फ़रमाया और एक हम हैं कि अगर कभी **नफ़्ल रोज़ा** रख भी लें तो हमें **इफ़्तार** के वक़्त हमा अक़्साम के फल, कबाब, समोसे, ठन्डा ठन्डा शरबत और न जाने क्या क्या चाहिये। काश ! हमें भी उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के नक़्शे क़दम पर चलना नसीब हो जाए। हुब्बे दुन्या से पीछा छुड़ाने और आख़िरत बेहतर बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता रहना बेह़द मुफ़ीद है। जब भी आप के अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी के **आ़शिक़ाने रसूल** का म-दनी क़ाफ़िला तशरीफ़ लाए उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ज़रूर फ़ैज़याब हों। आइये ! आप को एक बिगड़े हुए नौ जवान की "म-दनी बहार" सुनाता हूं जो म-दनी क़ाफ़िले के **आ़शिक़ाने रसूल** की मुलाक़ात के लिये आया तो उस की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया ! चुनान्चे **शहर क़ुसूर** (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई मेट्रिक के त़ालिबे इ़ल्म थे, बुरी सोह़बत के बाइ़स गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, मिज़ाज बेह़द ग़ुसीला था और बद तमीज़ी की नौबत इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद कुजा दादा और दादी के सामने भी क़ैंची की त़रह़ ज़बान चलाते थे। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का एक म-दनी क़ाफ़िला उन के मह़ल्ले की मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का करना ऐसा हुवा कि वोह **आ़शिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गए। एक बा इ़मामा इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की, वोह उन के साथ बैठ गए। म-दनी क़ाफ़िले के आ़शिक़ाने रसूल ने **दर्स** के बा'द बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में **दा'वते इस्लामी का बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। **दर्स** ने उन पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा वोह इन्कार न कर सके। यहां तक कि वोह इज्तिमाअ़ (मुलतान) में ह़ाज़िर हो गए। वहां की रौनक़ें और ब-र-कतें देख कर वोह ह़ैरान रह गए, वहां होने

www.dawateislami.net

वाले आख़िरी बयान **"गाने बाजे की होल नाकियां"** सुन कर थर्रा उठे और आंखों से आंसू जारी हो गए। वोह गुनाहों से तौबा कर के उठे और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए। उन की **म-दनी माह़ोल** से वाबस्तगी से उन के घर वालों ने इत़्मीनान का सांस लिया। दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से इन जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ नौ जवान में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाने की वज्ह से मु-तअस्सिर हो कर उन के बड़े भाई ने दाढ़ी रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। उन की एक ही बहन है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस ने भी **म-दनी बुरक़अ़** पहन लिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْهِ رَحمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद हो गया और उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि उन्हों ने कुरआने पाक हिफ़्ज़ करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और दर्से निज़ामी (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त **द-र-जए सालिसा** या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुके हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादारी** की सआ़दत भी नसीब हुई।

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो — दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो

ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ कुरआन हो — ख़ूब ख़ुशियां मिलें, क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 672)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) हूर ने कूज़ा गिरा दिया : **ह़ज़रते** सय्यिदुना सरी स-क़त़ी رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه का **रोज़ा** था, त़ाक़ में पानी ठन्डा होने के लिये आबख़ोरा (या'नी कूज़ा) रख दिया था, नमाज़े अ़स्र के बा'द मुरा-क़बे में थे, हूराने बिहिश्त (या'नी जन्नती हूरों) ने यके बा'द दीगरे सामने से गुज़रना शुरूअ़ किया। जो सामने आती उस से दरयाफ़्त फ़रमाते : तू किस के लिये है ? वोह किसी एक बन्दए ख़ुदा का नाम लेती। एक आई, उस से भी येही पूछा तो उस ने कहा : "उस के लिये हूं जो **रोज़े** में पानी ठन्डा होने को न रखे।" फ़रमाया : "अगर तू सच कहती है तो इस कूज़े को गिरा दे,"

www.dawateislami.net

उस ने गिरा दिया । इस की आवाज़ से आंख खुल गई । देखा तो वोह आबख़ोरा (कूज़ा) टूटा पड़ा था । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 158 व تفسیرُ الْاَحلام لابن سیرین ص ٦٥ مُلَخّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़्त गर्मियों में भी पानी गर्म कर के पीते (ह़िकायत) **: मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मा'लूम हुवा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे आख़िरत की अ-बदी राह़तें और न ख़त्म होने वाली ने'मतें पाने के शौक़ में अपने नफ़्स को क़ाबू कर के दुन्या की लज़्ज़तों को ठोकर मार दिया करते हैं । चुनान्चे एक **बुज़ुर्ग** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सख़्त गरमी के दिनों में दो पहर के वक़्त एक शख़्स को देखा कि **बर्फ़** लिये जा रहा है, दिल में ह़सरत हुई, काश ! मेरे पास भी पैसे होते और मैं भी बर्फ़ ख़रीद कर ठन्डा पानी पीता । फिर फ़ौरन नदामत हुई कि मैं नफ़्स की चाल में क्यूं आ गया ! उन्हों ने अ़ह्द किया कि कभी ठन्डा पानी न पियूंगा । लिहाज़ा सख़्त गरमी के मौसिम में भी पानी को गर्म कर के पिया करते थे ।

निहंगो[1] अज़्दहा व शेरे नर मारा तो क्या मारा

बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

6 तीनों में बड़ा सख़ी कौन ! : र-मज़ानुल मुबारक की आमद आमद थी और मश्हूर मुअर्रिख़ ह़ज़रते **वाक़िदी** عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास कुछ न था । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने एक **अ़-लवी** दोस्त की त़रफ़ येह रुक़्आ़ भेजा : "र-मज़ान शरीफ़ का महीना आने वाला है और मेरे पास ख़र्च के लिये कुछ नहीं, मुझे क़र्ज़े ह़-सना के त़ौर पर **एक हज़ार दिरहम** भेजिये ।" चुनान्चे उस अ़-लवी ने एक हज़ार दिरहम की थेली भेज दी । थोड़ी देर के बा'द ह़ज़रते वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के एक दोस्त का रुक़्आ़ ह़ज़रते वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की त़रफ़ आ गया :

1 : निहंग : या'नी मगर मच्छ ।

www.dawateislami.net

"र-मज़ान शरीफ़ के महीने में ख़र्च के लिये मुझे **एक हज़ार दिरहम** की ज़रूरत है।" हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने वोही थेली वहां भेज दी। दूसरे रोज़ वोही **अ़-लवी** दोस्त जिन से हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने क़र्ज़ लिया था और वोह दूसरे दोस्त जिन्हों ने हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى से क़र्ज़ लिया था। दोनों हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के घर आए। **अ़-लवी** कहने लगे : **र-मज़ानुल मुबारक** का महीना आ रहा है और मेरे पास इन हज़ार दिरहमों के सिवा और कुछ न था। मगर जब आप का रुक़्आ़ आया तो मैं ने येह हज़ार दिरहम आप को भेज दिये और अपनी ज़रूरत के लिये अपने इन दोस्त को रुक़्आ़ लिखा कि मुझे एक हज़ार दिरहम बतौरे क़र्ज़ भेज दीजिये। इन्हों ने वोही थेली जो मैं ने आप को भेजी थी, मुझे भेज दी। तो पता चला कि आप ने मुझ से क़र्ज़ मांगा, मैं ने अपने इन दोस्त से क़र्ज़ मांगा और इन्हों ने आप से मांगा। और जो थेली मैं ने आप को भेजी थी वोह आप ने इसे भेज दी और इस ने वोही थेली मुझे भेज दी। फिर इन तीनों हज़रात ने इत्तिफ़ाक़े राय से उस रक़म के तीन हिस्से कर के आपस में तक़्सीम कर लिये। उसी रात हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई और फ़रमाया : कल तुम्हें बहुत कुछ मिल जाएगा। चुनान्चे दूसरे रोज़ अमीर यह्या बर्मकी ने हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को बुला कर पूछा : "मैं ने रात ख़्वाब में आप को परेशान देखा है, क्या बात है ?" हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने सारा क़िस्सा सुनाया। तो यह्या बर्मकी ने कहा : "मैं येह नहीं कह सकता कि आप तीनों में से कौन ज़ियादा सख़ी है, बेशक आप तीनों ही सख़ी और वाजिबुल एह्तिराम हैं।" फिर उस ने तीस हज़ार दिरहम हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को और बीस बीस हज़ार उन दोनों को दिये। और हज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को क़ाज़ी भी मुक़र्रर कर दिया। (حُجَّةُ اللهِ عَلَى الْعٰلَمِين ص ٥٧٧ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واله وسلّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ईसार की फ़ज़ीलत : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे सख़ी और पैकरे ईसार होते हैं और वोह अपने इस्लामी भाई की तक्लीफ़ दूर करने की ख़ातिर अपनी मुश्किलात की ज़र्रा बराबर परवा नहीं करते । इस हिकायत से मा'लूम हुवा कि जूदो **सख़ावत** से हमेशा फ़ाएदा ही होता है और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह तआ़ला** की रह़मत से उम्मत के ह़ालात से बा ख़बर हैं अपने ग़ुलामों की बिगड़ी बनाते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में **ईसार** की बहुत फ़ज़ीलत है । चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह़ दे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है ।" (ابنِ عساکر ج ۳۱ ص ۱٤۲)

(7) रोज़ादार की क़ब्र की ख़ुश्बूदार मिट्टी : **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ वग़ैरा के उस्ताज़े ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ग़ालिब ह़द्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی शहीद कर दिये गए । तदफ़ीन के बा'द उन की क़ब्र शरीफ़ की मिट्टी से मुश्क की ख़ुश्बू आती थी । किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : आप के साथ क्या मुआ-मला फ़रमाया गया ? कहा : "अच्छा मुआ-मला फ़रमाया गया ।" पूछा : आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को कहां ले जाया गया ? कहा : "जन्नत में ।" पूछा : "कौन से अ़मल के बाइ़स ?" फ़रमाया : "ईमाने कामिल, तहज्जुद और **गर्मियों के रोज़ों** के सबब ।" फिर पूछा : "आप की क़ब्र से मुश्क की ख़ुश्बू क्यूं आ रही है ?" तो जवाब दिया : **"येह मेरी तिलावत और रोज़ों में प्यास की ख़ुश्बू है ।"** (حلیۃ الاولیاء ج ٦ ص ٢٦٦ رقم ٨٠٠٣) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इमाम बुख़ारी की क़ब्र की मुश्कबार मिट्टी : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम बुख़ारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی की **क़ब्रे** अन्वर की मिट्टी से भी मुश्क की ख़ुश्बू

www.dawateislami.net

आती थी। बार बार क़ब्र पर मिट्टी डाली जाती थी मगर लोग ख़ुश्बू की वज्ह से तबर्रुकन उठा ले जाते थे। (طبقاتُ الشّافعية للسبكی ج۲ص۲۳۳)

साहिबे दलाइलुल ख़ैरात की क़ब्र से अम्बर की ख़ुश्बू आती थी : साहिबे दलाइलुल ख़ैरात हज़रत शैख़ सय्यिद मुहम्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की क़ब्रे मुनव्वर भी मुअ़त्तर थी और उस से **कस्तूरी की ख़ुश्बू** की लपटें आती थीं क्यूं कि आप ज़िन्दगी में कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे। इन्तिक़ाल के 77 बरस के बा'द किसी सबब से "सोस" से "मराकश" में मुन्तक़िल करने के लिये जब क़ब्र कुशाई की गई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का जिस्मे मुबारक बिल्कुल सहीहो सालिम था हत्ता की कफ़न तक बोसीदा नहीं हुवा था। वफ़ात से क़ब्ल आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने दाढ़ी मुबारक का ख़त़ बनवाया था वोह ऐसे ही था जैसे आज ही बनवाया है, यहां तक कि किसी ने इम्तिहानन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के रुख़्सारे मुबारक पर उंगली रख कर दबाया तो उस जगह से ख़ून हट गया और जहां दबाया था वोह जगह सफ़ेद सी हो गई या'नी ज़िन्दा इन्सानों की त़रह़ ख़ून भी जिस्म में रवां दवां था! (مَطَالِعُ المَسَرَّات ص٤)

जबीं मैली नहीं होती बदन मैला नहीं होता
ग़ुलामाने मुह़म्मद का कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

8 र-मज़ान व शश ईद के रोज़ों की ब-र-कत : हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : एक बार मैं तीन साल तक मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में मुक़ीम रहा। एक मक्की शख़्स रोज़ाना दो पहर के वक़्त त़वाफ़े का'बा करता, दो रक्अ़त वाजिबुत्त़वाफ़ अदा करता फिर मुझे सलाम करता और अपने घर चला जाता। मुझे उस नेक बन्दे से महब्बत हो गई। वोह सख़्त बीमार हो गया मैं इयादत के लिये हाज़िर हुवा तो उस ने मुझे वसिय्यत की : "जब मैं फ़ौत हो जाऊं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने हाथों से ग़ुस्ल दे कर मेरी नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाइये, मुझे तन्हा न छोड़िये बल्कि सारी रात मेरी क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा रहिये नीज़ मुन्कर

www.dawateislami.net

नकीर की आमद के वक़्त मुझे तल्क़ीन फ़रमाइयेगा।'' मैं ने हामी भर ली। चुनान्चे उस के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने हस्बे वसिय्यत अ़मल किया, क़ब्र के पास हाज़िर था कि मुझे ऊंघ आ गई, मैं ने **हातिफ़े ग़ैबी** की आवाज़ सुनी : **''ऐ सुफ़्यान** (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) **!** इस को तेरी तल्क़ीन व क़ुरबत की कोई ह़ाजत नहीं, इस लिये कि हम ने ख़ुद ही इस को उन्स दिया और तल्क़ीन की।'' मैं ने कहा : इस को किस अ़मल के सबब येह रुत्बा मिला ? आवाज़ आई : **''र-मज़ानुल मुबारक और इस के बा'द शव्वालुल मुकर्रम के छ[6] रोज़े रखने की ब-र-कत से।''** ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : उस एक रात में येही ख़्वाब मैं ने तीन बार देखा। मैं ने बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** मुझे भी अपने फ़ज़्लो करम से इन रोज़ों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। (قلیوبی ص ١٤) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیه واٰله وسلّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) र-मज़ान का चांद : एक मर्तबा र-मज़ान शरीफ़ के **चांद** के बारे में कुछ इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया, बा'ज़ लोग कहते थे कि रात को चांद हो गया और बा'ज़ कहते थे कि नहीं हुवा। **हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा येह बच्चा (या'नी ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم) जब से पैदा हुवा है र-मज़ान शरीफ़ के दिनों में सारा दिन **दूध** नहीं पीता और आज भी चूंकि अ़ब्दुल क़ादिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الظَّاهِر ने दिन के वक़्त **दूध** नहीं पिया इस लिये ग़ालिबन रात को **चांद** हो गया है।'' चुनान्चे फिर तह़क़ीक़ करने पर साबित हुवा कि **चांद** हो गया है। (بَهْجَةُ الْاَسرار ص ١٧٢) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیه واٰله وسلّم

छोड़ा है मां का दूध भी माहे सियाम में
सरताजे अत्क़िया को हमारा सलाम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 620)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जिगर का केन्सर ठीक हो गया : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गौसे आ'ज़म عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡاَكۡرَم की महब्बत और औलियाए किराम की चाहत दिल में बढ़ाने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये और ख़ूब ख़ूब रहमतें और ब-र-कतें लूटिये। आइये ! आप की तरगी़ब व तहरीस के लिये एक ईमान अफ़रोज़ ख़ुश गवार **म-दनी बहार** आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे **गुलिस्ताने मुस्तफ़ा** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले **बैनल अक्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की जिन की बेटी को **जिगर का केन्सर** था। वोह दुआए शिफ़ा का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए। उन का कहना है कि मैं ने इज्तिमाए पाक में खूब दुआ की। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का चेकअप करवाया तो डॉक्टर हैरान रह गए क्यूं कि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था !** डॉक्टरों की पूरी टीम हैरत ज़दा थी कि आख़िर केन्सर गया कहां ! जब कि हालत इस क़दर ख़राब थी कि इज्तिमाए पाक में जाने से पहले उस लड़की के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इज्तिमाए पाक (मुलतान) में शिर्कत की ब-र-कत से अब उस लड़की के जिगर में **केन्सर** का नामो निशान तक न रहा था, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिह्हत है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है।

अगर दर्दे सर हो, कहीं केन्सर हो — दिलाएगा तुम को शिफ़ा म-दनी माहोल
शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी — यक़ीनन है ब-र-कत भरा म-दनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) दो ग़ीबत करने वालियों की हिकायत : **हज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ

www.dawateislami.net

से रिवायत है, सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिन **रोज़ा** रखने का हुक्म दिया और इर्शाद फ़रमाया : जब तक मैं इजाज़त न दूं, तुम में से कोई भी इफ़्तार न करे। लोगों ने **रोज़ा** रखा। जब शाम हुई तो तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक एक कर के हाज़िरे ख़िदमते बा ब-र-कत हो कर अ़र्ज़ करते रहे : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं रोज़े से रहा, अब मुझे इजाज़त दीजिये ताकि मैं **रोज़ा** खोल दूं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते। एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दो औ़रतों ने **रोज़ा** रखा और वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में आने से ह़या मह़सूस करती हैं, उन्हें इजाज़त दीजिये ताकि वोह भी **रोज़ा** खोल लें। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से रुख़े अन्वर फैर लिया, उन्हों ने फिर अ़र्ज़ की, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेह्‌रए अन्वर फैर लिया। उन्हों ने फिर येही बात दोहराई आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर चेह्‌रए अन्वर फैर लिया वोह फिर येही बात दोहराने लगे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर रुख़े अन्वर फैर लिया, फिर **ग़ैबदान** रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : "उन दोनों ने **रोज़ा** नहीं रखा वोह कैसी रोज़ादार हैं वोह तो सारा दिन लोगों का गोश्त खाती रहीं ! जाओ, उन दोनों को हुक्म दो कि वोह अगर रोज़ादार हैं तो क़ै कर दें।" वोह सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ उन के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें **फ़रमाने शाही** सुनाया। उन दोनों ने क़ै की, तो क़ै से जमा हुवा ख़ून निकला। उन सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में वापस हाज़िर हो कर सूरते हाल अ़र्ज़ की। **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, अगर येह उन के पेटों में बाक़ी रहता, तो उन दोनों को **आग** खाती। (क्यूं कि उन्हों ने ग़ीबत की थी) (ذَمُّ الْغِيبَة لِابْنِ اَبِی الدُّنْيا ص ٧٢ رقم ٣١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

को **इल्मे ग़ैब** ह़ासिल है और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने ग़ुलामों के तमाम मुआ़-मलात मा'लूम हो जाते हैं। जभी तो उन लड़कियों के बारे में मस्जिद शरीफ़ में बैठे बैठे **ग़ैब की ख़बर** इर्शाद फ़रमा दी। बहर ह़ाल **रोज़ा** हो या न हो, **ज़बान** का क़ुफ़्ले मदीना ही भला वरना येह ऐसे गुल खिलाती है कि तौबा !

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा ! कब तक दबाते जाएंगे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े : **ह़ज़रते** सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **मुसल्सल चालीस साल तक रोज़े रखते रहे** मगर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के **इख़्लास** का येह आ़लम था कि अपने घर वालों तक को ख़बर न होने दी। काम पर जाते हुए दो पहर का खाना साथ ले लेते और रास्ते में किसी को दे देते, मग़रिब के बा'द घर आ कर खाना खा लिया करते। (تاریخ بغداد ج۸ص ۳٤٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना दावूद त़ाई के नफ़्स कुशी के वाक़िआ़त : سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! इख़्लास हो तो ऐसा ! ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपने नफ़्स पर ज़बर दस्त क़ाबू था। "तज़्कि-रतुल औलिया" में है : एक बार गरमी के मौसिम में **धूप** में बैठे मश्ग़ूले इबादत थे कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वालिदए मोह़्-त-रमा رَحْمَةُ اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهَا ने फ़रमाया : बेटा ! साए में आ जाते तो बेहतर था। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : "अम्मीजान ! मुझे शर्म आती है कि अपने नफ़्स की ख़्वाहिश के लिये कोई क़दम उठाऊं।"

एक बार आप का पानी का घड़ा **धूप** में देख कर किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! इस को छाउं में रखा होता तो अच्छा था। फ़रमाया : जब मैं ने रखा तो उस वक़्त यहां छाउं थी लेकिन अब **धूप** में से उठाते हुए नदामत मह़सूस हो रही है कि मैं सिर्फ़ अपने नफ़्स की राह़त की ख़ात़िर

www.dawateislami.net

घड़ा हटाने में वक़्त सर्फ़ करूं।

एक मर्तबा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **धूप** में कुरआने पाक की तिलावत कर रहे थे। किसी ने साए में आने की दर-ख़्वास्त की। तो फ़रमाया : "मुझे इत्तिबाए़ नफ़्स ना पसन्द है।" या'नी नफ़्स भी येही मश्वरा दे रहा है कि छाउं में आ जाओ मगर मैं इस की पैरवी नहीं कर सकता। उसी रात आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाल हो गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के इन्तिक़ाल के बा'द ग़ैब से आवाज़ सुनी गई : "दावूद त़ाई (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) अपनी मुराद को पहुंचा क्यूं कि उस का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ उस से खुश है।" (تذكرة الاولياء ج١ ص٢٠١-٢٠٢ مُلَخَّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़िफ़रत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अपनी नेकियों का ए'लान : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़िकायत नम्बर 11 से उन लोगों को ज़रूर इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो बिला ज़रूरत **अपनी नेकियों का ए'लान** कर के रियाकारी का ख़त़रा मोल लेते हैं, म-सलन कोई कहता है : मैं हर साल **रजब, शा'बान** और **र-मज़ान** के रोज़े रखता हूं, कोई बोलता है : मैं इतने साल से हर माह **अय्यामे बीज़** के रोज़े रख रहा हूं, कोई अपने **ह़ज** की ता'दाद का तो कोई **उ़म्रे** की गिनती का ए'लान करता है। कोई कहता है : मैं रोज़ाना इतने **दुरूद शरीफ़** पढ़ता हूं, इतने अ़र्से से **दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़** का विर्द कर रहा हूं। इतनी तिलावत करता हूं, हर माह फ़ुलां मद्रसे को इतना चन्दा पेश करता हूं। अल ग़रज़ ख़्वाह म ख़्वाह अपने नवाफ़िल, तहज्जुद, नफ़्ली रोज़ों और इ़बादतों का ख़ूब चरचा किया जाता है। ख़ुदा न ख़्वास्ता रियाकारी में जा पड़े तो इस का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा।

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जुब्बुल हुज़्न" से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! "जुब्बुल हुज़्न" क्या है ? फ़रमाया : "येह जहन्नम में एक वादी है जिस (की सख़्ती) से जहन्नम भी रोज़ाना **चार सो बार** पनाह मांगता है, इस में वोह **क़ारी** दाख़िल होंगे जो अपने आ'माल में **रिया** करते हैं।" (ابنِ ماجه ج١ ص١٦٧ حديث٢٥٦)

www.dawateislami.net

रियाकारी की ता'रीफ़ : रिया की ता'रीफ़ येह है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की रिज़ा के इलावा किसी और इरादे से इबादत करना।**" गोया इबादत से येह ग़रज़ हो कि लोग उस की इबादत पर आगाह हों ताकि वोह उन लोगों से माल बटोरे या लोग उस की **ता'रीफ़** करें या उसे नेक आदमी समझें या उसे **इज़्ज़त** वग़ैरा दें। (اَلزّواجر ج١ ص٧٦)

हिफ़्ज़ की ख़ुशी में तक़रीब : आज कल म-दनी मुन्ना या म-दनी मुन्नी अगर हिफ़्ज़े क़ुरआन मुकम्मल कर ले तो उस के लिये शानदार तक़रीब की जाती है, अगर इस से मक़्सूद रियाकारी और दिखावा न हो, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ महूज़ रिज़ाए इलाही के लिये इन्इक़ाद किया जाए तो येह एक निहायत उ़म्दा अ़मल है। हो सके तो अपने हाफ़िज़ म-दनी मुन्ने की दीनी तरक़्क़ी के लिये उसे बुज़ुर्गों की बारगाहों में पेश कर के उ़म्र भर क़ुरआने करीम याद रहने और उस के अह़कामात पर अ़मल करने की दुआ़एं भी लेनी चाहिएं। اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ इस त़रह ख़ूब ब-र-कतें मिलेंगी।

हिफ़्ज़ करना आसान है मगर हाफ़िज़ रहना मुश्किल है : म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों को क़ुरआने करीम हिफ़्ज़ करवाना बेशक बहुत बड़ा नेक काम है, मगर **येह याद रखिये कि हिफ़्ज़ करना आसान है मगर उ़म्र भर हाफ़िज़ रहना मुश्किल है।** लिहाज़ा जो भी अपनी औलाद को हिफ़्ज़ करवाए उस की ख़िदमत में दर्द भरी म-दनी इल्तिजा है कि उ़म्र भर अपनी हाफ़िज़ औलाद पर कड़ी निगरानी भी रखे और ताकीद करे कि हर रोज़ एक मन्ज़िल तिलावत करे अगर येह न हो सके तो रोज़ाना कम अज़ कम एक पारह तो लाज़िमन पढ़े ताकि हिफ़्ज़ बाक़ी रहे। "बुख़ारी शरीफ़" में है, नबियों के सुल्तान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, महबूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : "निगाह रखो क़ुरआन को और इसे याद करते रहो, सो क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अलबत्ता क़ुरआन ज़ियादा छूटने पर आमादा है उन ऊंटों से जो अपनी रस्सियों से बंधे हों।" (بخاری ج ٣ ص ٤١٢ حدیث ٥٠٣٣) **या'नी** जिस त़रह बंधे हुए ऊंट छूटना चाहते हैं और अगर उन की मुह़ा-फ़ज़त व एह़तियात़ न की जाए तो रिहा हो

www.dawateislami.net

जाएं इस से ज़ियादा कुरआन की कैफ़िय्यत है अगर उसे याद न करते रहोगे तो वोह तुम्हारे सीनों से निकल जाएगा, पस तुम्हें चाहिये कि हर वक़्त इस का ख़याल रखो और याद करते रहो इस दौलते बे निहायत को हाथ से न जाने दो। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 644)

कुरआन भुला देने का अ़ज़ाब : यक़ीनन हिफ़्ज़े कुरआने करीम कारे सवाबे अ़ज़ीम है मगर याद रहे ! हिफ़्ज़ करना आसान मगर उ़म्र भर इस को याद रखना दुश्वार है। हुफ़्फ़ाज़ व हाफ़िज़ात को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम एक पारह लाज़िमन तिलावत कर लिया करें। जो हुफ़्फ़ाज़ **र-मज़ानुल मुबारक** की आमद से थोड़ा अ़र्सा क़ब्ल फ़क़त मुसल्ला सुनाने के लिये मन्ज़िल पक्की करते हैं और इस के इलावा مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ सारा साल ग़फ़्लत के सबब कई आयात भुलाए रहते हैं, वोह बार बार पढ़ें और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ें। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़हा 552 पर सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कुरआन पढ़ कर भुला देना **गुनाह** है। **जो** कुरआनी आयात याद करने के बा'द भुला देगा बरोज़े क़ियामत **अन्धा** उठाया जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 553)

3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ﴾1﴿ **मेरी** उम्मत के सवाब मेरे हुज़ूर पेश किये गए यहां तक कि मैं ने उन में वोह तिन्का भी पाया जिसे आदमी मस्जिद से निकालता है और मेरी उम्मत के गुनाह मेरे हुज़ूर पेश किये गए मैं ने इस से **बड़ा गुनाह** न देखा कि किसी आदमी को कुरआन की एक सूरत या एक आयत याद हो फिर वोह उसे भुला दे। (ترمذی ج۴ ص۴۲۰ حدیث۲۹۲۵) ﴾2﴿ **जो** शख़्स कुरआन पढ़े फिर उसे भुला दे तो क़ियामत के दिन **अल्लाह तआ़ला** से **कोढ़ी** हो कर मिले। (ابوداوٗد ج۲ ص۱۰۷ حدیث۱۴۷۴)

﴾3﴿ **क़ियामत** के दिन मेरी उम्मत को जिस **गुनाह** का पूरा बदला दिया जाएगा वोह येह है कि उन में से किसी को कुरआने पाक की कोई सूरत याद थी फिर उस ने उसे भुला दिया। (جَمْعُ الْجَوامِع ج۳ ص۱۴۵ حدیث ۷۸۹۴)

फ़रमाने र-ज़वी : आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : उस से ज़ियादा नादान कौन है जिसे ख़ुदा ऐसी हिम्मत बख़्शे और वोह उसे अपने हाथ से खो दे अगर

www.dawateislami.net

क़द्र इस (हिफ़्ज़े क़ुरआने पाक) की जानता और जो सवाब और द-रजात इस पर मौऊ़द हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाक़िफ़ होता तो इसे जान व दिल से ज़ियादा अ़ज़ीज़ (प्यारा) रखता। मज़ीद फ़रमाते हैं : जहां तक हो सके इस के पढ़ाने और हिफ़्ज़ कराने और ख़ुद याद रखने में कोशिश करे ताकि वोह सवाब जो इस पर मौऊ़द (या'नी वा'दा किये गए) हैं ह़ासिल हों और बरोज़े क़ियामत **अन्धा कोढ़ी** उठने से नजात पाए। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 645, 647)

नेकी के इज़्हार की कब इजाज़त है ? : तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चरचा करने) की निय्यत से नेक अ़मल का इज़्हार किया जा सकता है, इसी त़रह़ कोई पेश्वा है और वोह अपना अ़मल इस निय्यत से ज़ाहिर करता है कि मा तह़्त अफ़राद को इस से नेक अ़मल की रग़बत मिलेगी तो अब रियाकारी नहीं, मगर हर एक को अपना अ़मल ज़ाहिर करते वक़्त एक सो एक बार अपने दिल की कैफ़िय्यत पर ग़ौर कर लेना चाहिये, क्यूं कि शैत़ान बड़ा मक्कार है, हो सकता है कि इस त़रह़ से उभार कर भी वोह रियाकारी में मुब्तला कर दे, म-सलन दिल में वस्वसा डाले कि लोगों से कह दे, "मैं तो सिर्फ़ तह़दीसे ने'मत के लिये अपना अ़मल बता रहा हूं।" ह़ालां कि दिल में लड्डू फूट रहे हों कि इस त़रह़ बताने से लोगों के दिलों में मेरी इ़ज़्ज़त बढ़ जाएगी। येह यक़ीनन रियाकारी है और साथ में तह़दीसे ने'मत का कहना रियाकारी दर रियाकारी और साथ ही झूट के गुनाह की तबाहकारी भी है। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ किताब "**रियाकारी**" (166 सफ़ह़ात) का मुत़ा-लआ़ फ़रमाइये।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें **इख़्लास** के साथ इबादत और नफ़्ल रोज़ों की कसरत की सआ़दत नसीब फ़रमा और हमें शैत़ान के उन ह़ीले बहानों की पहचान अ़त़ा फ़रमा जिन के ज़रीए वोह हमारे आ'माल बरबाद कर दिया करता है। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

अ़त़ा कर दे इख़्लास की मुझ को ने'मत

न नज़्दीक आए रिया या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 106)

www.dawateislami.net

(12) रोजे़दारों का महल्ला : **हज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने **चालीस साल** के दौरान कभी **खजूर** नहीं खाई। चालीस बरस बा'द आप को जब **खजूर** खाने की ख़ूब ख़्वाहिश हुई तो नफ़्स कुशी के लिये मुसल्सल आठ दिन रोजे़ रखे। फिर खजूरें ख़रीद कर दिन के वक़्त **बसरा** शरीफ़ के एक मह़ल्ले की मस्जिद में दाख़िल हुए, अभी खाने के लिये खजूरें निकाली ही थीं कि एक बच्चा चिल्ला उठा, **अब्बाजान** ! मस्जिद में यहूदी आ गया है ! उस के वालिद साहि़ब यहूदी का नाम सुन कर हाथ में डन्डा लिये चढ़ दौड़े मगर आते ही आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पहचान लिया और मा'ज़िरत करते हुए अ़र्ज़ की : **हु़ज़ूर** ! बात दर अस्ल येह है कि हमारे **मह़ल्ले** में सारे मुसल्मान **रोज़ा** रखते हैं। यहूदिय्यों के इलावा दिन के वक़्त यहां कोई नहीं खाता, इसी लिये बच्चे को आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के यहूदी होने का शुबा गुज़रा। बराहे करम ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस की ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आ़लमे जोश में फ़रमाया : बच्चों की ज़बान "ग़ैबी ज़बान" होती है। फिर क़सम खाई कि अब कभी खजूर खाने का नाम न लूंगा। (تذکرۃ الاولیاء ج ۱ ص ۵۲)

गोश्त की ख़ुश्बू से ही गुज़ारा कर लिया : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن अपने नफ़्स को किस त़रह़ मारते थे। सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار की नफ़्स कुशी के क्या कहने ! आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बरसों तक कोई लज़ीज़ चीज़ नहीं खाते थे। उ़मूमन दिन को रोज़ादार रह कर रूखी रोटी से इफ़्त़ार का मा'मूल था। एक बार नफ़्स की ख़्वाहिश पर **गोश्त** ख़रीदा और ले कर चले, रास्ते में सूंघा और फ़रमाया : "ऐ नफ़्स ! गोश्त की ख़ुश्बू सूंघने में भी तो लुत़्फ़ है ! बस इस से ज़ियादा इस में तेरा ह़िस्सा नहीं।" येह कह कर वोह **गोश्त** एक फ़क़ीर को दे दिया। फिर फ़रमाया : **ऐ नफ़्स** ! मैं किसी अ़दावत के बाइ़स तुझे अज़िय्यत नहीं देता मैं तो सिर्फ़ इस लिये तुझे सब्र का आ़दी बना रहा हूं कि रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ला ज़वाल दौलत नसीब हो जाए। (تذکرۃ الاولیاء ج۱ ص۵۱) येह भी मा'लूम हुवा कि पहले के मुसल्मान नफ़्ल रोज़ों से बहुत मह़ब्बत किया करते थे कि बसरा शरीफ़ के एक पूरे मह़ल्ले का हर मुसल्मान रोज़ ही **रोज़ा** रखा करता !

www.dawateislami.net

नादान बच्चों की त़रफ़ से नेकी की दा'वत : **हज़रते** सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار का येह फ़रमाना कि बच्चों की ज़बान "ग़ैबी ज़बान" होती है। निहायत ही पुर मग़्ज़ इर्शाद है। वाक़ेई नादान बच्चों की बातों और ह़-र-कतों में बारहा **इब्रत के म-दनी फूल** पाए जाते हैं। इत्तिफ़ाक़ से बयान कर्दा हिकायत नम्बर 12 सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ (या'नी राक़िमुल हुरूफ़) ने बाबुल मदीना कराची में एक इस्लामी भाई के घर पर 9 शव्वालुल मुकर्रम 1422 सि.हि. को तह़रीर करने की सआ़दत ह़ासिल की। त़आ़म के वक़्त साह़िबे ख़ाना का म-दनी मुन्ना और म-दनी मुन्नी भी खाने में शरीक हो गए। उन दोनों ने खाने के दौरान **ह़िर्सो त़मअ़, बे जा लड़ाई, आबरू रेज़ी, बे सब्री, चुग़ली, ह़सद, हुब्बे जाह, रियाकारी, मुसीबत का बे ज़रूरत तज़्किरा** और **फ़ुज़ूल गोई** वग़ैरा से मु-तअ़ल्लिक़ मुझे **ख़ूब दर्स** दिया !! आप शायद सोच में पड़ गए होंगे कि ना समझ बच्चे इतने सारे उ़न्वानात पर किस त़रह़ **दर्स** दे सकते हैं ! इन दुरूस का राज़ येह है कि वोह इस त़रह़ की ह़-र-कतें करने लगे जिस से म-दनी ज़ेह्न रखने वाला इन्सान चाहे तो बहुत कुछ सीख सकता है। म-सलन उन्हों ने ज़रूरत से कहीं ज़ियादा खाना अपनी अपनी रिकाबी में निकाला, कुछ खाया, कुछ गिराया और कुछ रिकाबी ही में छोड़ दिया। उन की इस ह़-र-कत से येह सीखने को मिला कि अपनी रिकाबी में ज़रूरत से ज़ियादा खाना डाल लेना येह **ह़िर्सो त़मअ़** की अ़लामत और नादान बच्चों का काम है, बड़ों को ऐसा नहीं करना चाहिये, गिरा हुवा खाना यूं ही छोड़ देने के बजाए उठा कर खा लेना चाहिये, खा कर बरतन चाट लेना सुन्नत है, बच्चे अगर्चे **सुन्नत** का तर्क कर दें बड़ों को ऐसा नहीं करना चाहिये। म-दनी मुन्ने ने ठन्डे मश्रूब की डेढ़ लीटर की बोतल में से अपने लिये पूरा गिलास भर लिया तो इस पर म-दनी मुन्नी एह़तिजाज करने लगी यहां तक कि पहले बोतल उठा कर मेरे क़रीब रखी मगर इत़्मीनान न हुवा तो वहां से उठा कर कमरे के बाहर किसी और की तह़्वील में दे आई। इस "जंग" के ज़रीए़ गोया दोनों ने ह़िर्स पर दर्स दिया। चूंकि दोनों में ठन गई थी लिहाज़ा अब एक दूसरे के "उ़यूब" उछालने लगे, गोया यूं समझा रहे थे कि देखो ! हम नादान हैं इस लिये फ़ुज़ूल गोई, आबरू रेज़ी, बे जा लड़ाई

www.dawateislami.net

और बे सब्री का मुज़ा–हरा करते और एक दूसरे के पोल खोलते हैं, अगर दाना कहलाने वाला शख़्स भी ऐसी ह़–रकात का इरतिकाब करे तो वोह बे वुक़ूफ़ हुवा या नहीं ? ठीक है हम अपने मुंह मियां मिट्ठू भी बन रहे हैं, अपनी ही ज़बान से अपने फ़ज़ाइल भी बयान कर रहे हैं, एक दूसरे की छोटी छोटी बातों को भी उछाल रहे हैं मगर हम तो छोटे हो कर छूट जाएंगे, क्यूं कि हम अभी ना बालिग़ हैं। अगर आप भी हमारी त़रह़ की ग़–लति़यां करते हुए गुनाहों में पड़ेंगे तो हो सकता है कि बरोज़े क़ियामत फ़र्दे जुर्म आइद कर के जहन्नम का हुक्म सुना दिया जाए, अगर ऐसा हुवा तो आप को वोह सदमा होगा कि दुन्या में ख़ुद सदमे ने भी कभी ऐसा सदमा न देखा होगा !

म–दनी मुन्नी ने मेहंदी वाले हाथ क्यूं दिखाए ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सच्ची बात येह है कि अगर म–दनी सोच रखने वाला शख़्स बच्चों की दिन भर की ह़–र–कतों का जाएज़ा ले तो उन की हर ह़–र–कत व हर स–कनत में से अपने लिये इ़ब्रत के कई **म–दनी फूल** ह़ासिल कर सकता है। एक बार शबे ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक इस्लामी भाई अपनी नन्ही सी म–दनी मुन्नी को उठा कर मेरे पास लाए, वोह अपने मेहंदी से रंगे हुए हाथ दिखा कर मेरी तवज्जोह चाह रही थी, इस से मैं ने येही "म–दनी फूल" ह़ासिल किया गोया वोह कहना चाहती है, ह़ाजते शर–ई के बिग़ैर बिला वासित़ा या बिल वासित़ा (Indirect) अपनी ख़ूबियों का इज़्हार भी **ह़ुब्बे जाह** या'नी अपनी इ़ज़्ज़त और वाह वाह की चाहत की अ़लामत है जो कि हम जैसे नादानों ही का ह़िस्सा है। ज़ाहिर है बच्चियां अपने मेहंदी से रंगे हुए हाथ दिखला कर या बच्चे अपने नए कपड़ों वग़ैरा की त़रफ़ मु–तवज्जेह कर के **वाह वाह** और **दादो तह़सीन** के त़लब गार होते हैं, मगर इस में ज़िम्नन बड़ों के लिये सामाने इ़ब्रत होता है। आज कल लोगों की अक्सरिय्यत **ह़ुब्बे जाह** में मुब्तला नज़र आ रही है, शोहरत से मह़ब्बत और वाह वाह पसन्दी का मरज़ आज कल आ़म है। ह़द तो येह है कि मसाजिद व मदारिस की ता'मीर और दीगर नेक कामों में भी अपनी नेकनामी या'नी शोहरत ही की तलाश रहती है, येह बेह़द मोहलिक मरज़ है मगर अब इस की त़रफ़ लोगों की तवज्जोह ही नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन

www.dawateislami.net

अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "दो भूके भेड़िये जिन्हें बकरियों में छोड़ दिया जाए वोह इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि हुब्बे माल व जाह या'नी माल व मर्तबे का लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाता है।" (ترمذی ج٤ص١٦٦حدیث٢٣٨٣)

मैं नमाज़े जुमुआ़ तक से महरूम था : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुब्बे जाह व माल दिल से मिटाने की कुढ़न पैदा करने के लिये तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहो़ल** से हर दम वाबस्ता रहिये और दा'वते इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र अपना मा'मूल बना लीजिये। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहो़ल की भी क्या ख़ूब म-दनी बहारें हैं ! चुनान्चे **गोजरांवाला** (सूबए पंजाब, पाकिस्तान) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई फ़रंगी फे़शन में लिथड़ी हुई गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे और बुरी सोहबत के बाइस مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शराब पीने के भी आ़दी हो चुके थे। ह़ालत यहां तक पहुंच चुकी थी कि नमाज़े जुमुआ़ तक न पढ़ते, वोह कु़रआने करीम के **ह़ाफ़िज़** थे मगर कमो बेश 12 साल से कु़रआने पाक खोल कर तक नहीं देखा था, जिस के बाइस तक़रीबन कु़रआने पाक उन्हें भुला दिया गया था। बहर ह़ाल ज़िन्दगी के दिन ग़फ़्लत में गुज़र रहे थे कि इतने में नसीब जागे और एक बा इ़मामा इस्लामी भाई से उन की मुलाक़ात हो गई। उन के हुस्ने अख़्लाक़ और शफ़्क़त भरे अन्दाज़ से वोह बड़े मु-तअस्सिर हुए, उन्हों ने उन को मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी के बैनल अक़्वामी तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की, उन्हों ने मा'ज़िरत करते हुए बताया कि मैं बे रोज़गार हूं, मआ़शी ह़ालात जाने की इजाज़त नहीं दे रहे। उन्हों ने निहायत ही अपनाइयत के साथ हौ़सला दिया और उन के टिकट का इन्तिज़ाम कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ उन की सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी हो गई। वहां के रूह़ परवर मन्ज़र और सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की ज़िन्दगी को यक्सर बदल कर रख दिया। जब वोह इज्तिमाए़ पाक से लौटे तो उन के क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका था। फिर उन्हों ने **आ़शिक़ाने**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

रसूल के हमराह **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआदत हासिल की जिस ने उन के ज़ाहिरी वुजूद को भी सुन्नतों के सांचे में ढाल दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी माहोल** से वाबस्तगी की ब-र-कतों से उन्हों ने भुलाया हुवा क़ुरआने करीम भी हिफ़्ज़ कर लिया बल्कि सात साल तक इमामत की सआदत भी पाते रहे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की जानिब से उन्हें "पंजाब मक्की" की मजलिस में एक ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से ख़िदमत की सआदत भी मिली।

गुनहगारो आओ, सियहकारो आओ — *गुनाहों को देगा छुड़ा म-दनी माहोल*
पिला कर मए इश्क़ देगा बना येह — *तुम्हें आशिक़े मुस्त़फ़ा म-दनी माहोल*

(वसाइले बख़्शिश, स. 648)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से मालामाल कर, हुब्बे जाह व माल और रियाकारी के वबाल से महफ़ूज़ फ़रमा। हमें फ़र्ज़ के साथ साथ ख़ूब ख़ूब नफ़्ल रोज़ों की भी सआदत बख़्श और इन को क़बूल भी फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम को और सारी उम्मते महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बख़्श दे। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मोटे मोटे सांप

रिवायत में है : क़ियामत के दिन सब से पहले नमाज़ छोड़ने वालों के चेहरे सियाह होंगे और जहन्नम में एक वादी है जिसे **लमलम** कहा जाता है, इस में ऊंट की गरदन की त़रह **मोटे मोटे सांप** हैं, हर सांप की लम्बाई एक माह की मसाफ़त के बराबर है। जब येह सांप नमाज़ न पढ़ने वाले को डसेगा तो उस का ज़हर उस के जिस्म में 70 साल तक जोश मारता रहेगा। (اَلزّواجِر ج۱ص۲۹۶)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मो 'तकिफ़ीन की 40 म-दनी बहारें

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** की जानिब से दुन्या के मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में की जाने वाली **मो 'तकिफ़ीन** की तरबियत से हर साल मुआ़-शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद गुनाहों से ताइब हो जाते और उन में बा'ज़ ख़ुश नसीब येह जज़्बा "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" ले कर उठते और फिर अपनी और दूसरों की इस्लाह़ की कोशिशों में मश्ग़ूल हो जाते हैं, इन की **झल्कियां** आयिन्दा सफ़ह़ात पर नज़र आएंगी। इस्लामी भाइयों ने अपने अपने अन्दाज़ में लिखा था, ज़रूरतन तसर्रुफ़ कर के पढ़ने वालों के लिये दिलचस्पी का सामान मुहय्या करने की कोशिश की गई है।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह तआ़ला** उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शु-हदा** के साथ रखेगा। (مُعجَم اَوسَط ج٥ ص٢٥٢ حديث٧٢٣٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

1 शिकारी ख़ुद शिकार हो गया !

अ़त्तारआबाद (जेकबआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई ने जिस घराने में आंख खोली उस में जहालत का घुप अंधेरा था, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बुरा भला कहना कारे सवाब समझा जाता था। वोह भी इस ज़लालत व गुमराही में पूरी त़रह फंसे हुए थे, उन की तौबा के अस्बाब यूं हुए कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (अ़त्तारआबाद) में **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की तरकीब थी, उन के मह़ल्ले के चन्द लड़के भी मो'तकिफ़ हो गए थे, उन्हें तंग करने की ग़रज़ से वोह म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना चले आए, वहां सुन्नतें सिखाने के ह़ल्क़े लगे हुए थे, वोह ताक में बैठ गए कि मौक़अ़ मिले तो शरारत शुरूअ़ करूं कि इतने में एक **आ़शिक़े रसूल** ख़ैर ख़्वाह ने बड़े ही प्यारे और दिल नशीन अन्दाज़ में उन्हें ह़ल्क़े में बैठने के लिये कहा, उस की नरमी और आ़जिज़ी के बाइस वोह इन्कार न कर सके और ह़ल्क़े में बैठ गए और मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान ध्यान से सुनने लगे। मुबल्लिग़ के बयान में अ़जीब कशिश थी, वोह आहिस्ता आहिस्ता बयान के म-दनी फूलों के सेह़र में गिरिफ़्तार होते चले गए। आ़शिक़ाने रसूल ने उन्हें बक़िय्या दिनों के **ए'तिकाफ़** की दा'वत दी, उन्हों ने हामी भर ली और **ए'तिकाफ़** की बहारें समेटने में मश्ग़ूल हो गए। वोह तो शिकार करने चले थे मगर ''लो आप अपने दाम (या'नी जाल) में सय्याद (शिकारी) आ गया'' के मिस्दाक़ **ख़ुद ही शिकार हो कर रह गए।** उन के लिये **ए'तिकाफ़** में सभी कुछ नया था। दौराने **ए'तिकाफ़** उन्हें अपनी गुमराही का पता चला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने बातिल अ़क़ाइद से तौबा की, कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और दा'वते इस्लामी के **सफ़ीनए अहले सुन्नत** में सुवार हो कर जानिबे मदीना रवां दवां हो गए। उन्हों ने अपना चेहरा म-दनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ो शादाब कर

www.dawateislami.net

लिया है। **63 दिन का म-दनी तरबियती कोर्स** कर के दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ ह़ल्क़ा ज़िम्मेदारी पर फ़ाइज़ हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ की भी कोशिश करने वाले बन गए। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उन्हें और हमें म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए और भटके हुवों को ह़क़्क़ो सदाक़त की राह दिखाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

ख़त्म होगी शरारत की आदत चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होगी गुनाहों की शामत चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

2 मैं ने कई बार ख़ुदकुशी की कोशिशें की थीं

तह़सील शुजाअ़आबाद ज़िलअ़ मुलतान (ह़ाल मुक़ीम बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई वालिदैन के مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन्तिहाई द-रजा गुस्ताख़ थे, क्रिकेट और बिलयर्ड खेलने में दिन बरबाद करते और रात विडियो सेन्टर की ज़ीनत बनते। **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में मां बाप से उन्हों ने बहुत ज़ियादा लड़ाई की यहां तक कि घर में तोड़ फोड़ मचा दी! अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ख़ुद भी बेज़ार थे, ग़ज़ब के जज़्बाती थे इसी लिये مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **कई बार ख़ुदकुशी की भी सई** (या'नी कोशिश) **की** मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नाकामी हुई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से उन को **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे में **ए'तिकाफ़** का शौक़ पैदा हुवा, अपने घर की क़रीबी मस्जिद ही में ए'तिकाफ़ का इरादा था कि एक इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई, उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की

www.dawateislami.net

ब-र-कतों के क्या कहने ! क्लीन शेव और पेन्ट शर्ट में कसे कसाए थे, मगर **तरबियती ह़ल्क़ों**, सुन्नतों भरे बयानात और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों ने वोह म-दनी रंग चढ़ाया कि हाथों हाथ दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, **इमामा शरीफ़** का ताज सर पर सजा लिया और चांदरात को ख़ूब रो रो कर गुनाहों से तौबा करने के बा'द घर जाने के बजाए हाथों हाथ सुन्नतों की तरबियत के तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सफ़र पर रवाना हो गए। उन का कहना है : **ख़ुदा की क़सम !** येह मेरी ज़िन्दगी की सब से पहली ईद थी जो बहुत अच्छी गुज़री। वापसी पर घर आ कर अम्मीजान के क़दमों से लिपट गए और इस क़दर रोए कि हिचकियां बंध गईं और बेहोश हो गए। कमो बेश आधे घन्टे के बा'द जब होश आया तो सारे घर वाले उन्हें घेरे हुए थे और तस्वीरे ह़ैरत बने एक दूसरे का मुंह तक रहे थे कि इसे क्या हो गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ घर में बहुत अच्छी तरकीब बन गई। उन्हें तन्ज़ीमी त़ौर पर अ़लाक़ाई मुशा-वरत का निगरान बनने और आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में 63 रोज़ा **तरबियती कोर्स** करने की सआ़दत भी ह़ासिल हुई। मज़ीद 126 दिन के "इमामत कोर्स" का सिल्सिला भी शुरूअ़ किया। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** उन्हें और हमें इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

बिगड़े अख़्लाक़ सारे संवर जाएंगे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

बस मज़ा क्या मज़े को मज़े आएंगे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640, 641)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

3 मैं ने ईद के इ़लावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी !

मियांवाली कोलोनी मंघूपीर रोड बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई ने दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से मुन्सलिक होने से पहले कई "गर्ल फ्रेन्ड्ज़" बना रखी थीं, गन्दी ज़ेहनिय्यत का आ़लम येह था कि रोज़ाना ही गन्दी फ़िल्में देखा करते, ह़ैरत बालाए ह़ैरत येह है

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

कि उन्हों ने **ज़िन्दगी में ईद के इलावा कभी नमाज़ ही नहीं पढ़ी थी** और उन्हें बिल्कुल भी मा'लूम नहीं था कि नमाज़ किस त़रह़ पढ़ी जाती है !!! उन की क़िस्मत का सितारा चमका और उन्हें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे का **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** नसीब हो गया, फ़ैज़ाने मदीना के म-दनी माह़ोल की भी क्या बात है ! उन की आंखें खुल गईं, ग़फ़्लत का पर्दा चाक हुवा और नेकियों का जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने नमाज़ सीख ली और पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ के पाबन्द हो गए। उन्हों ने दो मसाजिद में **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स शुरूअ़ कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों ने उन्हें एक मस्जिद की मुशा-वरत का ज़ैली निगरान बना दिया और उन पर करम बालाए करम येह हुवा कि ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का दीदार हो गया।**

जिसे चाहा जल्वा दिखा दिया, उसे जामे इ़श्क़ पिला दिया
जिसे चाहा नेक बना दिया, येह मेरे ह़बीब की बात है
जिसे चाहा दर पे बुला लिया, जिसे चाहा अपना बना लिया
येह बड़े करम के हैं फ़ैसले, येह बड़े नसीब की बात है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(4) ए 'तिकाफ़ की ब-र-कत से सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया

कल्यान (महाराष्ट्र, अल हिन्द) की **मेमन मस्जिद** में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** की जानिब से **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में एक नौ मुस्लिम ने (जो कि कुछ अ़र्सा क़ब्ल एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के हाथों मुसल्मान हुए थे) ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। सुन्नतों भरे बयानात, केसिट इज्तिमाआ़त और सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों ने उन पर ख़ूब म-दनी रंग

www.dawateislami.net

चढ़ाया, ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से दीन की तब्लीग़ के अ़ज़ीम जज़्बे का रोशन चराग़ उन के हाथों में आ गया चूंकि उन के घर के दीगर अफ़्राद अभी तक कुफ़्र की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे लिहाज़ा ए'तिकाफ़ से फ़ारिग़ होते ही उन्हों ने अपने घर वालों पर कोशिश शुरूअ़ कर दी, दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ीन को अपने घर बुलवा कर **दा'वते इस्लाम** पेश करवाई । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **वालिदैन, दो बहनों और एक भाई पर मुश्तमिल सारा ख़ानदान मुसल्मान हो गया और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूरे ग़ौसे पाक** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **का मुरीद बन गया ।**

वल्वला दीं की तब्लीग़ का पाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

फ़ज़्ले रब से ज़माने पे छा जाओगे, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(5) मैं पक्का दुन्यादार था

सखर शहर (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई पर दुन्या का धन कमाने ही की धुन सुवार रहती थी, अ़-मली दुन्या से कोसों दूर गुनाहों की अंधेरी वादियों में भटक रहे थे । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की उन पर शफ़्क़त भरी नज़र पड़ गई, वोह **र-मज़ानुल मुबारक** में बार बार उन के पास तशरीफ़ ले जाते और उन्हें **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत देते मगर वोह टाल दिया करते । مَاشَاءَ اللّٰہ वोह **आ़शिक़ाने रसूल** बहुत बुलन्द हौसला थे, गोया मायूस होना जानते ही न थे, चुनान्चे उन्हों ने मज़्कूरा इस्लामी भाई को उन के ह़ाल पर छोड़ना गवारा न किया और वक़्तन फ़ वक़्तन **नेकी की दा'वत** दे कर अपना सवाब खरा करते रहे ! उन की **इन्फ़िरादी कोशिश** बिल आख़िर रंग लाई और उस पक्के दुन्यादार का दिल भी पसीज ही गया और वोह आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1410 सि.हि., 1990

www.dawateislami.net

सि.ई.) में उन के साथ मो'तकिफ़ हो गए। ए'तिकाफ़ में उन को मह़सूस हुवा कि आ़शिक़ों की दुन्या ही कोई और होती है ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन पर म-दनी रंग चढ़ा दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **नमाज़ी** बन गए, **दाढ़ी** रख ली और **इमामा शरीफ़** का ताज सजा लिया। वहां उन्हें येह मस्अला भी सीखने को मिला कि क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ या पीठ किये पेशाब वग़ैरा करना **ह़राम** है। सूए इत्तिफ़ाक़ से ए'तिकाफ़ वाली मस्जिद के **इस्तिन्जा ख़ानों** का रुख़ ग़लत़ था। उन्हों ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर हाथों हाथ कारीगरों को बुलवा कर अपनी जेब से अख़्राजात पेश कर के इस्तिन्जा ख़ानों के रुख़ दुरुस्त करवा लिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के बा'द से अब तक उन्हें कई बार **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतें सीखने सिखाने के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दतें मिल चुकी हैं।

हुब्बे दुन्या से दिल पाक हो जाएगा, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

जामे इ़श्क़े मुह़म्मद भी हाथ आएगा, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

6 मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये

रावल पिन्डी (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई जब दसवीं क्लास के स्टूडन्ट थे, उन्हों ने अपने मह़ल्ले की बिलाल मस्जिद में **र-मज़ानुल मुबारक** (1421 सि.हि., 2000 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया। वहां 14, 15 अफ़राद मो'तकिफ़ थे, ग़ालिबन 28 **र-मज़ानुल मुबारक** को बा'दे नमाजे़ ज़ोहर उन के बचपन के एक क्लास फ़ेलो (जो बेचारे शराफ़त की वज्ह से उन की शरारत का निशाना बना करते थे) तशरीफ़ लाए, उन्हों ने अपने सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाया हुवा था, सलाम दुआ़ के बा'द उन्हों ने मो'तकिफ़ीन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए पूछा : आप में से बराहे मेहरबानी कोई **नमाजे़ ईद** का त़रीक़ा सुना दे। सब

www.dawateislami.net

एक दूसरे का मुंह देखने लगे ! इस पर उन्हों ने कहा : अच्छा चलिये **नमाज़े जनाज़ा** का त़रीक़ा ही बता दीजिये। येह भी उन में से कोई भी न बता सका। फिर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन्हें **नमाज़** की मश्क़ (Practical) करवाई। इस से उन की बहुत सारी ग़-लतियां उन के सामने आईं। इस के बा'द निहायत अह़सन अन्दाज़ में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन्हें **नमाज़े ईद** और **नमाज़े जनाज़ा** का त़रीक़ा सिखाया। जिस से उन का दिल बहुत ख़ुश हुवा। उस इस्लामी भाई का कहना है : "सच पूछो तो हमारे लिये ह़ासिले ए'तिकाफ़ येही था कि हमें मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से मुख़्तलिफ़ नमाज़ों के अहम अह़कामात सीखना नसीब हुए।" **ईद की नमाज़** में उन्हें मस्जिद की छत पर जगह मिली, जब इमाम साह़िब ने दूसरी तक्बीर कही तो उस इस्लामी भाई के इलावा तक़रीबन सभी रुकूअ़ में चले गए ! ह़ालां कि येह रुकूअ़ का मौक़अ़ नहीं था बल्कि इस में हाथ कानों तक उठा कर लटकाने थे। ख़ैर, वरना वोह भी अ़वाम के साथ रुकूअ़ ही में होते मगर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने ए'तिकाफ़ में **नमाज़े ईद** का त़रीक़ा सिखा दिया था। इस मौक़अ़ पर उन का दिल चोट खा गया और दा'वते इस्लामी की अहम्मिय्यत उन पर ख़ूब वाज़ेह़ हो गई। उन्हों ने उस मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी से ईद की मुलाक़ात पर अ़र्ज़ किया : **मुझे भी अपने जैसा बना लीजिये**। इस पर मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन की ख़ूब ह़ौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से वोह बिल आख़िर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में आ गए और दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिह़ाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर **शो'बए ता'लीम के अ़लाक़ाई ज़िम्मेदार** भी बने।

हां जनाज़ा व ईद इस को सीखें मज़ीद, आएं मस्जिद चलें कीजिये ए'तिकाफ़

ख़ूब नेकी का जज़्बा मिलेगा जनाब ! आप हिम्मत करें कीजिये ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

7 मेरी आंखों में आंसू आ गए !

जिन्नाहआबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई ने **र-मज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे में तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** की ब-र-कतें लूटने की सआ़दत ह़ासिल की और बुराइयों से तौबा की उन्हें सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना तक नहीं आता था, **ए 'तिकाफ़** में दीगर सुन्नतों के इलावा खाने पीने की सुन्नतें भी सिखाई गईं। बिल ख़ुसूस एक मुबल्लिग़ को सादगी के साथ सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना तनावुल करता देख कर **उन की आंखों में बे इख़्तियार आंसू आ गए !** और उन्हों ने भी सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की आ़दत अपना ली, यूं वोह दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

सुन्नतें खाना खाने की तुम जान लो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
मान लो बात अब तो मेरी मान लो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

8 आ़शिक़ाने रसूल की शफ़्क़तों ने लाज रख ली

इन्दोर शहर (M.P. अल हिन्द) के एक फ़ेशन एबल नौ जवान आवारा और मॉडर्न दोस्तों की सोह़बत में रह कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में बैठ गए। **आ़शिक़ाने रसूल** की **शफ़्क़तों ने लाज रख ली,** गुनाहों से **तौबा** की सआ़दत मिल गई, चेहरे पर **दाढ़ी** जग-मगाने और सर पर **इमामा शरीफ़** की बहारें मुस्कुराने लगीं, सुन्नतों की

www.dawateislami.net

ख़िदमत का ख़ूब जज़्बा मिला हत्ता कि **मुबल्लिग़** बन गए। येह लिखते वक़्त **अ़लाक़ाई मुशा-वरत के निगरान** की हैसिय्यत से सुन्नतों की ब-र-कतें लूट और लुटा रहे हैं।

लेने ख़ैरात तुम रहमतों की चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

लूटने ब-र-कतें सुन्नतों की चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) ग़ैर इस्लामी न-ज़रिय्यात रखने वालों की तौबा

यूं तो सख्खर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के क़रीबी शहर **अ़त्तारआबाद** (जेकबआबाद) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** का म-दनी पैग़ाम पहुंच चुका था, मगर उन दिनों **म-दनी काम** वहां बहुत कम था। **र-मज़ानुल मुबारक** (1410 सि.हि., 1990 ई.) में अ़त्तारआबाद के अन्दर ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के सख्खर के ज़िम्मादार इस्लामी भाइयों ने वहां के इस्लामी भाइयों को **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के लिये **सख्खर** आने की दा'वत दी, जिस की ब-र-कत से अ़त्तारआबाद के कसीर इस्लामी भाइयों ने **मुनव्वरह मस्जिद, स्टेशन रोड, सख्खर** में ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल की। क़ब्ल अज़ीं अ़त्तारआबाद में कोई इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स देने वाला भी न था! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से 17 इस्लामी भाई मुअ़ल्लिम व मुबल्लिग़ बने, चेहरों को दाढ़ी शरीफ़ से और सरों को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सजाया। दा'वते इस्लामी के **म-दनी कामों** के ज़िम्मेदार बने। बा'ज़ ऐसे लोग भी किसी त़रह से खिंच कर आ गए थे जो ग़ैर मुस्लिमों के कुछ ग़ैर इस्लामी न-ज़रिय्यात को दुरुस्त मानते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने अपने कुफ़्रिय्या न-ज़रिय्यात से तौबा की, कलिमा शरीफ़ पढ़ कर मुसल्मान हुए और बक़िय्या ज़िन्दगी तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के

www.dawateislami.net

म-दनी माह़ोल में गुज़ारने की निय्यत की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त उस शहर के इस्लामी भाई जो कि **र-मज़ानुल मुबारक** (1410 सि.हि.) में **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** की ब-र-कतों से मालामाल हुए थे वोह और ला दीनिय्यत से तौबा करने वाले अब बेहतरीन मुबल्लिग़ बन चुके हैं ह़त्ता कि बड़े बड़े इज्तिमाआ़त में भी सुन्नतों भरे बयानात फ़रमाते हैं और मुख़्तलिफ़ सूबाई मजालिस के अहम ज़िम्मादार बन कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश कर रहे हैं। **अल्लाह तआ़ला** हमें और उन्हें दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

प्यारे इस्लामी भाई चले आओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

ख़ाली दामन मुरादों से भर जाओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) अब गरदन तो कट सकती है मगर....

कोरंगी नम्बर 6 बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के अपने बे नमाज़ी और क्लीन शेव 26 सालह छोटे भाई को तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1421 सि.हि., 2000 सि.ई.) के **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में बिठा दिया। बे नमाज़ी और सुन्नतों से कोसों दूर रहने वाले उन के भाई पर ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बते बा ब-र-कत से वोह म-दनी रंग चढ़ा कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह पन्ज वक़्ता नमाज़ी बन गए और दाढ़ी मुबारक सजा ली और उन का यहां तक म-दनी ज़ेहन बन गया कि **अब गरदन तो कट सकती है मगर** दाढ़ी नहीं कट सकती।

www.dawateislami.net

मीठे आक़ा की उल्फ़त का जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दाढ़ी रखने की सुन्नत का जज़्बा मिले, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(11) मिरगी का मरज़ दूर हो गया

बम्बई की तह़सील कुर्ला (अल हिन्द) में तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक ऐसे इस्लामी भाई भी मो'तकिफ़ हो गए जिन को हर दूसरे दिन **मिरगी** का दौरा पड़ता था। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के दौरान उन्हें एक बार भी दौरा न पड़ा बल्कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर आज तक फिर उन्हें **मिरगी** की तक्लीफ़ नहीं हुई।

اِنْ شَآءَ الله हर काम होगा भला, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होगी ब फ़ज़्ले ख़ुदा हर बला, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 641, 642)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **ए'तिकाफ़** करने की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आफ़तें और बलाएं दूर होती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मिरगी का मरज़ भी ठीक हो गया कि उस को मस्जिद में दौरा ही न पड़ा, यक़ीनन येह उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी करम हो गया। ताहम येह मस्अला ज़ेहन में रखिये कि **मिरगी** के ऐसे मरीज़ और आसेब ज़दा जो उछल-कूद करते, चीख़ते चिल्लाते हों या ऐसे मरीज़ जिन का बेहोशी में पेशाब वग़ैरा निकल जाता हो, नीज़ ऐसे तमाम अफ़राद जिन से लोगों को घिन आती, ईज़ा पहुंचती हो उन का ए'तिकाफ़ करना तो दूर रहा ऐसी ह़ालत में बा जमाअ़त नमाज़ के लिये भी मस्जिद के अन्दर आना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

(12) मैं क्लीन शेव था

नसीरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई **क्लीन शेव थे,** ज़िन्दगी के दिन ग़फ़्लतों में बसर हो रहे थे, इस्लामी भाइयों की तरग़ीब और ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में, उन्हों ने **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **ए'तिकाफ़** में उन का दिल चोट खा गया, साबिक़ा मआ़सी (या'नी ना फ़रमानियों) पर पशेमान (या'नी शरमिन्दा) हो कर बहुत रोए और आयिन्दा हमेशा हमेशा के लिये गुनाहों से बचने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया, इमामा शरीफ़ का ताज सर पर सजाया, दाढ़ी मुबारक रख कर अपने चेहरे को म-दनी रंग चढ़ाया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के तन्ज़ीमी डिवीज़न नसीरआबाद की एक तह़सील मुशा-वरत के निगरान भी बने ।

सीखने को मिलेंगी तुम्हें सुन्नतें, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
लूट लो आ कर अल्लाह की रह़मतें, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) मेरी फ़िल्मी गीत गुनगुनाने की आ़दत थी

ड्रग रोड (बाबुल मदीना कराची) के तक़रीबन 25 सालह इस्लामी भाई ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** के **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल की । उन्हें ए'तिकाफ़ की बहुत सी ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, मिन जुम्ला राह चलते हुए बाज़ारी लड़कों की त़रह़ फ़िल्मी गीत गाने की जो आ़दत थी वोह निकल गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

इस की जगह ना'त शरीफ़ गुनगुनाने की आदत पड़ गई। नीज़ **ज़बान का कुफ़्ले मदीना** लगाने (या'नी बुरी तो बुरी ग़ैर ज़रूरी बातों से भी बचने) का ज़ेहन बना और उन का ऐसा ज़ेहन बन गया कि जूं ही मुंह से फ़ुज़ूल बात सरज़द होती बतौरे कफ़्फ़ारा झट ज़बान पर दुरूद शरीफ़ जारी हो जाता।

गीत गाने की आदत निकल जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बे जा बकबक की ख़स्लत भी टल जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(14) मॉडर्न नौ जवान तरक़्क़ी करते करते.....

बम्बई (बाएकला, अल हिन्द) में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की तरफ़ से आख़िरी अशरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1419 सि.हि., 1998 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में एक मॉडर्न नौ जवान ने (जो कि इलेक्ट्रिक इन्जीनियर हैं) शिर्कत की। दस दिन तक **आशिक़ाने रसूल** की सोहबत का ख़ूब फ़ैज़ उठाया, **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी दाढ़ी मुबारक का नूर चेहरे पर छाया, सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाया, ए'तिकाफ़ की ब-र-कतों ने उन को सुन्नतों का अज़ीम मुबल्लिग़ बनाया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह दीन की ख़िदमतों में तरक़्क़ी करते करते ता दमे तहरीर **हिन्द मक्की काबीना** के रुक्न की हैसिय्यत से सुन्नतों की बहारें लुटाने में कोशां हैं।

सारी फ़ेशन की मस्ती उतर जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ज़िन्दगी सुन्नतों से निखर जाएगी, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

15 मैं ने नशा कैसे छोड़ा !

ज़मज़म नगर (हैदरआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई बे नमाज़ी और नशे के आ़दी थे, घर वाले उन की वज्ह से परेशान थे। ख़ुश क़िस्मती से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान) (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हो गई, वहीं ए'तिकाफ़ की निय्यत की और वक़्त आने पर बाबुल मदीना कराची पहुंच कर आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में मो'तकिफ़ हो गए। तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ (मुलतान शरीफ़) में अगर्चे आख़िरत की बेहतरी के मु-तअ़ल्लिक़ काफ़ी ज़ेह्न बना था मगर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की तो क्या बात है ! बस उन के तो दिल की दुन्या ही बदल गई, उन्हों ने गुनाहों से पक्की तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ानी शुरूअ़ कर दी, हाथों हाथ सब्ज़ इमामा शरीफ़ भी सजा लिया। ए'तिकाफ़ के बा'द जब **ज़मज़म नगर** (हैदरआबाद) पहुंचे तो दाढ़ी और इमामा शरीफ़ में देख कर घर वाले और पड़ोसी वग़ैरा सब हैरत ज़दा रह गए ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की **नशे** की आ़दत भी बिल्कुल छूट गई। अपनी बिसात़ भर **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम करना शुरूअ़ कर दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उन की बेटी ने **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना में **शरीअ़त कोर्स** में दाख़िला ले लिया जब कि दो म-दनी मुन्नों ने मद्र-सतुल मदीना में क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करना शुरूअ़ कर दिया।

गर मदीने का ग़म चश्मे नम चाहिये, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

म-दनी आक़ा की नज़रे करम चाहिये, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(16) येह ए 'तिकाफ़ क्या होता है !

डेरा अल्लाह यार (बलोचिस्तान, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई गुनाहों भरी ज़िन्दगी में बद मस्त रहते हुए ज़िन्दगी के दिन गुज़ार रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह्सान कि उन के शहर में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** का म-दनी काम शुरूअ़ हुवा और पहली बार **दा 'वते इस्लामी** की त़रफ़ से (1416 सि.हि., 1995 सि.ई.) **शबे बराअत** का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने उस में शिर्कत की। इज्तिमाअ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** के दाढ़ी और इमामे वाले नूरानी चेहरों और उन की मह़ब्बत भरी मुलाक़ातों ने उन्हें दा'वते इस्लामी से मु-तअस्सिर तो किया मगर वोह दूर ही दूर रहे। हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी कभी शिर्कत नहीं की ह़त्ता कि **र-मज़ानुल मुबारक** (1416 सि.हि., 1995 सि.ई.) की **सत्ताईसवीं शब** आ पहुंची, उन्हों ने इज्तिमाअ़ वाली मस्जिद में होने वाली **इज्तिमाई दुआ़** में ह़ाज़िरी दी, इख़्तिताम पर इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात हुई और किसी ने बताया यहां कुछ इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ में बैठे हैं। उन के लिये येह लफ़्ज़ नया था, इस लिये उन्हों ने तजस्सुस के साथ पूछा : **येह ए 'तिकाफ़ क्या होता है ?** इस्लामी भाइयों ने बड़ी मह़ब्बत के साथ उन्हें **ए 'तिकाफ़** के बारे में मा'लूमात फ़राहम करते हुए **ए 'तिकाफ़ की बा 'ज़ म-दनी बहारें** बयान कीं। दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** में किये जाने वाले **ए 'तिकाफ़** के अह़्वाल सुन कर उन्हों ने दिल में पक्की निय्यत कर ली कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयिन्दा साल **ए 'तिकाफ़** में ज़रूर बैठूंगा। चुनान्चे दिन गुज़रते गए और जब **र-मज़ानुल मुबारक** (1417 सि.हि., 1996 सि.ई.) की फिर आमद हुई तो **आख़िरी अ़शरे** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ वोह भी मो'तकिफ़ हो गए। दस शबाना रोज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला।

न पूछो हम कहां पहुंचे और इन आंखों ने क्या देखा

जहां पहुंचे वहां पहुंचे जो देखा दिल के अन्दर है

www.dawateislami.net

ए 'तिकाफ़ में किसी ने दर्से निज़ामी का ज़ेह्न दिया, उन की समझ में आ गया चुनान्चे बाबुल मदीना कराची आ कर जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया, ह़त्ता कि दौरए ह़दीस शरीफ़ के बा'द दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना) में (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) उन की दस्तार बन्दी की गई और उन को दा'वते इस्लामी के एक जामिअ़तुल मदीना **ज़मज़म नगर** (हैदरआबाद) में तदरीस की ख़िदमत अन्जाम देने की सआ़दत मिली।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! एक ऐसा लड़का जिस को कल तक येह भी नहीं पता था कि **ए 'तिकाफ़ क्या होता है !** वोह आज **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ करने की ब-र-कत से दर्से निज़ामी से मुशर्रफ़ हो कर मुदर्रिस बन कर दूसरों को इल्मे दीन के फ़ैज़ान से मालामाल करने वाला बन गया।

सुन्नतें सीख लो रह़मतें लूट लो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

दीन के इल्म की ब-र-कतें लूट लो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17) वोह चोरियां भी कर लिया करते थे

बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ों में सुस्ती, विडियो गेम्ज़ का शौक़, T.V. पर रोज़ाना उलटे सीधे प्रोग्राम देखना, झूट की आ़दत यहां तक कि चोरियां भी कर लिया करते थे। ख़ुश क़िस्मती से आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1421 सि.हि., 2000 सि.ई.) में **जामेअ़ मस्जिद आमिना** (शकील गार्डन, ओखाई कॉम्पलेक्स, बाबुल मदीना कराची) में **दा 'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल के साथ उन्हें **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** की सआ़दत मिल गई। उन्हों ने आमिना

www.dawateislami.net

मस्जिद की दूसरी मन्ज़िल पर दा'वते इस्लामी के क़ाइम कर्दा **मद्र-सतुल मदीना** में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आलमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करते रहे और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन की कोशिशों से उन के घर में भी **म-दनी माहोल** बन गया वोह घर के अन्दर **मक-त-बतुल मदीना** की त़रफ़ से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें चलाया करते। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक हिफ़्ज़ कर लेने के बा'द जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी करना शुरूअ़ कर दिया और मद्र-सतुल मदीना में तदरीस की भी तरकीब रखी और अपने ज़ैली मुशा-वरत के निगरान के मा तह़्त रह कर तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचाने की भी कोशिशें फ़रमाने लगे।

तुम गुनाहों से अपने जो बेज़ार हो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम पे फ़ज़्ले ख़ुदा, लुत़्फ़े सरकार हो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(18) ए'तिकाफ़ की ब-र-कत से शहर के लिये म-दनी मर्कज़ मिल गया

चित्रदुर्गा (सूबए कर्नाटक, अल हिन्द) की "मस्जिदे आ'ज़म" के मु-तवल्लियान और कुछ मक़ामी मुसल्मान तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के बारे में बा'ज़ ग़लत़ फ़हमियों का शिकार थे। बहुत मुश्किल से वहां **र-मज़ानुल मुबारक** में **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की इजाज़त मिली। दो मु-तवल्लियों के साहिब ज़ादगान भी साथ ही मो'तकिफ़ हो गए। म-दनी मर्कज़ के अ़त़ा कर्दा जद्वल के मुत़ाबिक़ सुन्नतों भरे ह़ल्क़े, सुन्नतों भरे बयानात, ना'तों की धूमधाम, रिक़्क़त अंगेज़ दुआएं और कसीर मो'तकिफ़ीन का ह़ुस्ने इन्तिज़ाम देख कर मु-तवल्ली साह़िबान हैरान रह गए और इस क़दर मु-तअस्सिर हुए कि

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

आख़िरी दिन तमाम मो'तकिफ़ीन को तहाइफ़ व गुलपोशी से नवाज़ा। **दा'वते इस्लामी** इन सब की समझ में आ गई और उन ह़ज़रात ने अपने ज़ेरे तौलियत अ़ज़ीमुश्शान "मस्जिदे आ'ज़म" में दा'वते इस्लामी को म-दनी कामों की मुकम्मल तौ़र पर छूट दे दी और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ "**मस्जिदे आ'ज़म**" उस शहर का "म-दनी मर्कज़" बन गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों मु-तवल्लियों के मज़्कूरा साहिब ज़ादगान ने अपने चेहरे दाढ़ी मुबारक से आरास्ता कर लिये और **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए।

ज़िक्र करना ख़ुदा का यहां सुब्हो शाम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

पाओगे ना'ते मह़बूब की धूमधाम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 642, 643)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(19) ए'तिकाफ़ का फ़ैज़ इंग्लेन्ड पहुंचा

सख्खर शहर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) में **र-मज़ानुल मुबारक** (1410 सि.हि., 1990 सि.ई.) में एक इस्लामी भाई की **इंग्लेन्ड** से आमद हुई। इस्लामी भाइयों के तवज्जोह दिलाने पर उन के एक रिश्तेदार इस्लामी भाई ने **इन्फ़िरादी कोशिश** कर के उन्हें **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** के लिये राज़ी कर लिया और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह मो'तकिफ़ हो गए। एक ख़ालिस अंग्रेज़ी माह़ोल में रहने वाला जब ए'तिकाफ़ में बैठा और उस ने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतें और ज़रूरी अह़काम सीखे, क़ब्रो आख़िरत के अह़्वाल सुने तो मुसल्मान होने के नाते उस का दिल चोट खा कर रह गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की ब-र-कत से उन्हें गुनाहों से तौबा का तोह़फ़ा मिला और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में आ गए। चेहरे पर **दाढ़ी** सजा ली, सर **इमामा शरीफ़** से सर सब्ज़ कर लिया, **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स और बयान

www.dawateislami.net

सीख कर दौराने ए'तिकाफ़ ही **सुन्नतों भरा बयान** करने लगे ! **इंग्लेन्ड** में जा कर **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की धूमें मचाने की निय्यत की । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह **इंग्लेन्ड** में मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी और **बारह म-दनी कामों** के ज़िम्मेदार बने, उन के बच्चों की अम्मी भी **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो कर **इंग्लेन्ड** जैसे ह़या सोज़ माह़ोल में रहते हुए भी **म-दनी बुरक़अ़** ओढ़ती हैं, खु़द दुरुस्त **क़ुरआने करीम** सीख कर अब मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) में इस्लामी बहनों को पढ़ाती हैं और इस्लामी बहनों के म-दनी कामों की **तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार** हैं ।

कर के हिम्मत मुसल्मानो आ जाओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

उख़्रवी दौलत आओ कमा जाओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(20) मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

तह़सील कमालिया, ज़िलअ़ दारुस्सलाम (पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई जब नवीं जमाअ़त में पढ़ते थे । क्लास में उन का एक फ्रेन्ड सर्कल था, येह सब स्कूल से भाग जाते, खू़ब आवारा गर्दी करते, रात गए तक क्रिकेट खेलते, इन्टरनेट क्लब में ठीकठाक वक़्त बरबाद करते, सारा सारा दिन मिलजुल कर केबल पर फ़िल्में देखते, गाने सुनने का तो इस क़दर चस्का था कि रात गाने सुनते सुनते सोना और सुब्ह़ जागते ही सब से पहला काम مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येही मन्हूस गाने सुनना । फ़ेन्सी लिबास पहन कर येह लोग मिलजुल कर مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ثُمَّ مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ लड़कियों के साथ छेड़ खा़नियां और खू़ब बद निगाहियां करते । उस इस्लामी भाई की मां कभी समझाती भी तो उलटा उसी के गले पड़ जाते । वालिद साहिब नमाज़ का हुक्म फ़रमाते तो उन को भी चक्मा दे देते । अफ़्सोस ! इस्लाह़ की दूर दूर तक कोई सूरत नज़र नहीं आती थी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के बड़े भाई साहिब का भला करे जिन्हों ने उन की दस्त गीरी की और उन्हें **र-मज़ानुल मुबारक** के आखि़री अ़शरे के अन्दर **ए'तिकाफ़** में बैठने के लिये कहा । उन को सहीह़ मा'नों

www.dawateislami.net

में येह भी पता नहीं था कि **ए 'तिकाफ़** क्या होता है ! उन्हों ने साफ़ इन्कार कर दिया। मगर बड़े भाई ने किसी त़रह़ भी समझा बुझा कर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (सरदारआबाद) में होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में बिठा दिया। चार या पांच दिन तक बिल्कुल भी दिल न लगा और येह भागने की कोशिश करते रहे मगर काम्याब न हो सके। इस के बा'द सुरूर आना शुरूअ़ हुवा, और फिर तो वोह **रूह़ानी सुकून** मिला कि चांदरात को येह कह रहे थे कि मुझे घर नहीं जाना है मैं आज की रात भी यहीं **फ़ैज़ाने मदीना** में गुज़ारना चाहता हूं।

तुम घर को न खींचो नहीं जाता नहीं जाता
मैं छोड़ के फ़ैज़ाने मदीना नहीं जाता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

21 ए 'तिकाफ़ की ब-र-कत से घुटनों का दर्द चला गया

जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना) के एक त़ालिबे इल्म को आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में **ए 'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां उन की मुलाक़ात एक **सिन रसीदा बुज़ुर्ग** से हुई, उन्हों ने बताया : कई साल से मेरे **घुटनों में दर्द** था, जब मैं आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में **ए 'तिकाफ़** के लिये आया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की ब-र-कत से मुझ पर करम हुवा कि **मेरे घुटनों का दर्द दूर हो गया।**

दर्द टांगों में हो, दर्द घुटनों में हो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
पेट में दर्द हो या कि ज़ख़्मों में हो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

22 दाढ़ी सजी सर सब्ज़ हो गया

नवसारी (सूबए गुजरात, अल हिन्द) के एक मोडर्न इस्लामी भाई तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा 'वते इस्लामी** की त़रफ़ से आखि़री अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1423 सि.हि., 2002 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** (सूरत, गुजरात) में मो'तकिफ़ हुए। **म-दनी जद्वल** के मुताबिक़ लगने वाले सुन्नतों भरे ह़ल्क़ों, रिक्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और ज़िक्रो ना'त की पुरसोज़ सदाओं ने उन का दिल मोह लिया, **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत से वोह फ़ैज़ मिला कि न पूछो बात ! दाढ़ी मुबारक सजी, इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हुवा और तरक़्क़ी के मनाज़िल तै करते हुए ता दमे तह़रीर अपने **शहर की मुशा-वरत** के निगरान की ह़ैसिय्यत से म-दनी कामों की धूमें मचा रहे हैं।

सुन्नतों की तुम आ कर के सौग़ात लो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

आओ बटती है रह़मत की ख़ैरात लो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

23 अ़नबन ख़त्म हो गई

ज़मज़म नगर (ह़ैदरआबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी जो कि टन्डो जाम एग्री कल्चरल यूनीवर्सिटी के लेब इन्चार्ज थे, उन के दो बेटे **दा 'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर वोह ख़ुद नमाज़ों और सुन्नतों से दूर थे और ज़ेह्न मुकम्मल त़ौर पर दुन्यादारों वाला था। **र-मज़ानुल मुबारक** में **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की गई तो फ़रमाने लगे : मेरे बच्चों की अम्मी नाराज़ हो कर मयके जा बैठी हैं, अगर मैं ए'तिकाफ़ करूंगा तो क्या वोह आ जाएंगी ?

www.dawateislami.net

उन्हें बताया गया : اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आ जाएंगी। चुनान्चे वोह आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1416 सि.हि., 1995 सि.ई.) में **फ़ैज़ाने मदीना** (ज़मज़म नगर हैदरआबाद) के अन्दर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ हो गए। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों, सुन्नतों भरे बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुरसोज़ ना'तों ने उन का दिल बदल कर रख दिया ! उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली, नमाज़ों की पाबन्दी का अ़ह्द किया, दाढ़ी मुबारक व इमामा शरीफ़ से आरास्ता हो गए और ना'तें भी पढ़ने लगे। **ए 'तिकाफ़** के दौरान ही रूठी हुई बच्चों की अम्मी भी वापस आ गईं और घरेलू शकर रन्जियां भी ख़त्म हो गईं। **ए 'तिकाफ़** की ब-र-कत से वोह म-दनी लिबास पहनने लगे और उन्हों ने म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी किये। म-दनी माहोल में रहते हुए उसी साल या'नी बरोज़ जुम्आ़रात 27 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को उन का इन्तिक़ाल हो गया। اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

गोरे तीरह को तुम जग-मगाने चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
राह़तें रोज़े मह़शर की पाने चलो, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ज़िन्दगी के आख़िरी साल के मु-तअ़ल्लिक़ एक इ़ब्रत नाक रिवायत : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह "म-दनी बहार" वाक़ेई अपने अन्दर इ़ब्रत के कई म-दनी फूल लिये हुए है। मर्हूम अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى ख़ुश नसीब थे कि वफ़ात से थोड़े ही अ़र्से क़ब्ल उन्हें म-दनी माहोल मुयस्सर आ गया और यक़ीनन वोह बन्दा मुक़द्दर वाला है जो मरने से पहले पहले तौबा कर के राहे रास्त पर आ जाए और सुन्नतों की शाहराह पर चल पड़े और बड़ा ही बद नसीब है वोह शख़्स जो अच्छा भला नेकियां करने वाला और सुन्नतों के रास्ते पर चलने वाला हो कर मरने से थोड़े ही अ़र्से क़ब्ल مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मोडर्न हो जाए और गुनाहों में पड़ कर **म-दनी माहोल** से दूर जा पड़े। जब भी आप को शैतान किसी ज़िम्मेदार फ़र्द से नाराज़ करवा कर या

www.dawateislami.net

यूं ही सुस्ती दिला कर या दुन्यवी कारोबार में ख़ूब फंसा कर या शादी वग़ैरा का जोश दिला कर म-दनी माहोल से दूर होने का मश्वरा दे तो इस ह़दीसे पाक पर ग़ौर फ़रमा लिया करें : उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस के **मरने से एक साल पहले** एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस को राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह ख़ैर (या'नी भलाई) पर मर जाता है और लोग कहते हैं : फ़ुलां शख़्स अच्छी ह़ालत पर मरा है। जब ऐसा ख़ुश नसीब और नेक शख़्स मरने लगता है तो उस की जान निकलने में जल्दी करती है, उस वक़्त वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात को। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है तो **मरने से एक साल क़ब्ल एक शैत़ान** उस पर मुसल्लत़ कर देता है जो उसे बहकाता रहता है ह़त्ता कि वोह अपने बद तरीन वक़्त में मर जाता है, उस के पास जब मौत आती है तो उस की जान अटक्ने लगती है, उस वक़्त येह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने को पसन्द नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से मिलने को।

(ذِکرُ الموت مع موسوعة ابن اَبِی الدُّنیا ج٥ص٤٤٣حدیث١٠٥٧ مُلَخَّصاً)

गुनह करते हुए गर मर गया तो क्या करूंगा मैं
बनेगा हाए ! मेरा क्या करम फ़रमा करम मौला

(वसाइले बख़्शिश, स. 97)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

24 घर वाले घर से निकाल देते थे

मुज़फ़्फ़र गढ़ (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई पहले पहल बहुत ज़ियादा बिगड़े हुए नौ जवान थे, रात जब तक गानों की तीन चार केसिटें न सुन लेते नींद न आती, सारी सारी रात आवारा गर्दियों और गुनाहों में बसर हो जाती, बात बात पर घर में झगड़ते, **घर वाले बेज़ार हो कर घर से निकाल देते,** दो एक दिन इधर उधर भटक्ते फिरते इस के बा'द तरकीब बन

www.dawateislami.net

जाती। अल ग़रज़ उन की ज़िन्दगी के दिन इन्तिहाई ग़लत़ अन्दाज़ पर बरबाद हो रहे थे। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा 'वते इस्लामी** के अ़लाक़ाई मुशा-वरत के निगरान जो कि इन के कज़िन थे उन्हों ने इन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की और आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) में अड्डे वाली मस्जिद (मुज़फ़्फ़र गढ़) में उन्हें **दा 'वते इस्लामी** के **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में ला बिठाया। बाबुल मदीना से आए हुए एक मुबल्लिग़ के ह़ुस्ने अख़्लाक़ से मु-तअस्सिर हो कर उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली और उन्हीं के हाथों सब्ज़ सब्ज़ इमामे शरीफ़ से अपना सर सब्ज़ करवा लिया। **27वीं शब** सुन्नतों भरे बयान के बा'द होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने दिल पर बहुत ज़ियादा असर किया, उन पर गिर्या त़ारी हो गया और वोह सुब्ह़ तक रोते रहे। **ईद** के दूसरे रोज़ फ़ज्र के वक़्त अभी आंख न खुली थी कि एक बुज़ुर्ग ख़्वाब में नज़र आए और उन्हों ने उन का नाम ले कर पुकारा : "फ़ज्र का वक़्त हो गया है और आप अभी तक सोए हुए हैं !" उन्हों ने फ़ौरन नींद ही में दोनों हाथ क़ियाम की त़रह़ बांध लिये और आंख खुल गई तो हाथ उसी त़रह़ बंधे हुए थे। इस से दिल पर बड़ा असर पड़ा और उन्हों ने मस्जिद में जा कर बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा की। अपने शह्‌र के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से ह़ाज़िरी देते रहे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम बालाए करम फ़रमाया कि जामिअ़तुल मदीना (बाबुल मदीना कराची) में दर्से निज़ामी करने की सआ़दत ह़ासिल करना शुरूअ़ कर दी। अपने द-रजे में म-दनी इन्आ़मात के तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़िम्मेदार बने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन पर येह भी करम हुवा कि **त़-लबा के जो 92 म-दनी इन्आ़मात हैं उन सभी पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल हुई। अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उन को इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

छूट जाएगी फ़िल्मों डिरामों की लत, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
ख़ुश ख़ुदा होगा बन जाएगी आख़िरत, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

(25) मस्जिद का ख़त़ीब बना दिया

सईदआबाद, बलदिया टाउन, बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मद्र-सतुल मदीना में क़ुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल की, मगर अफ़्सोस कि फिर भी पक्के नमाज़ी न बन सके। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी अ़शरे के **ए'तिकाफ़** की सआ़दत मिली, दिल पर **म-दनी चोट** लगी, ग़फ़्लत की नींद उड़ी, ह़क़ीक़ी मा'नों में आंख खुली और वोह नमाज़ों के पाबन्द हो गए। **ए'तिकाफ़** के सबब **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र का ज़ेह्न बना। वोह बे रोज़गार थे, जिस दिन **म-दनी क़ाफ़िले** की निय्यत की उन के यहां की मुशा-वरत के निगरान ने फ़रमाया : اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का काम हो जाएगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले की ब-र-कत यूं ज़ाहिर हुई कि जिस मस्जिद में उन का **म-दनी क़ाफ़िला** गया वहां की इन्तिज़ामिया को उन इस्लामी भाई का बयान और अन्दाज़े दुआ़ भा गया और उन्हों ने **उन्हें उस मस्जिद का ख़त़ीब बना दिया !** यूं उन के रोज़गार की भी सबील बनी। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ उन्हें **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत इनायत फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तंगदस्ती का ह़ल भी निकल आएगा, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रोज़गार اِنْ شَآءَ اللّٰه मिल जाएगा, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(26) उ़म्र ग़फ़्लतों में गुज़र रही थी

मोडासा (गुजरात, अल हिन्द) के एक मॉडर्न नौ जवान की उ़म्रे अ़ज़ीज़ ग़फ़्लतों में गुज़र

www.dawateislami.net

रही थी, गुनाहों का सिल्सिला था, ऐसे में करम हो गया ! सबबे करम यूं हुवा कि **माहे र-मज़ानुल मुबारक** (1423 सि.हि., 2002 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठना नसीब हो गया, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बते बा ब-र-कत के क्या कहने ! सुन्नतों भरे बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं और पुरकैफ़ ना'तों के फ़ैज़ान से उन की काया पलट गई और वोह म-दनी जज़्बा अ़ता हुवा कि **ए'तिकाफ़** ही के अन्दर उन को दर्सो बयान करने की सआ़दत मिल गई ! **दाढ़ी मुबारक** और **इमामा शरीफ़** सजाने की निय्यत की। **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **एक माह के म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। चूंकि काफ़ी बा सलाह़िय्यत थे लिहाज़ा इस्लामी भाइयों ने मु-तअस्सिर हो कर उन को **अमीरे क़ाफ़िला** बना दिया !

आ़शिक़ाने रसूल आओ देंगे बयां, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
दूर होंगी इ़बादात की ख़ामियां, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 643)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

27 वोह तहज्जुद गुज़ार बन गए

सख्खर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक उ़म्र रसीदा इस्लामी भाई को आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में शिर्कत की सआ़दत मिली। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों का बा क़ाइदा जद्वल बना हुवा था। जिन में नमाज़ के अह़काम और रोज़मर्रा की सुन्नतें वग़ैरा सीखने को मिलीं, दस दिन में उन्हों ने वोह वोह सीखा जो गुज़री हुई ज़िन्दगी में न सीख पाए थे। सुन्नतों भरे बयानात की समाअ़त और **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से फ़िक्रे आख़िरत नसीब हुई, क़ल्ब में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा

www.dawateislami.net

हो गया और **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल का जज़्बा मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दूसरा "म-दनी इन्आ़म" बिल ख़ुसूस मज़बूती से थाम लिया और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पांचों नमाज़ें पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करने की आ़दत बना ली, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हें तहज्जुद पर भी इस्तिक़ामत ह़ासिल हुई। **म-दनी इन्आ़मात का रिसाला** हर माह अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने और हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में भी शिर्कत की सआ़दत पाने लगे।

बा जमाअ़त नमाज़ों का जज़्बा मिले, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

दिल का पज़्मुर्दा गुन्चा ख़ुशी से खिले, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(28) आक़ा अपना दीदार करा दीजिये

मिठ्ठियां (गुजरात, खारियां पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई आ़म नौ जवानों की त़रह़ मॉडर्न और फ़िल्में डिरामे देखने के शौक़ीन थे। ख़ुश क़िस्मती से आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत मिल गई। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की भी क्या बात है ! उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा **म-दनी माह़ोल** देखा था, दिलो जान से **दा 'वते इस्लामी** के शैदाई हो गए। उन्हें सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार का बड़ा अरमान था, **ए 'तिकाफ़** में रोज़ाना दीदार के लिये दुआ़ मांगते थे। **27वीं शब** आ गई, इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त हुवा, **ज़िक्रुल्लाह** में उन पर बेख़ुदी की सी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई फिर जब रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई तो उन्हों ने आंखें बन्द किये रो रो कर बस एक येही तकरार की : "**आक़ा अपना दीदार करा दीजिये !**" यकायक आंखों में एक बिजली सी कूंदी और एक नूरानी चेहरे की ज़ियारत हुई और उन्हें यक़ीन हो गया कि येह तो मेरे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं ! आह ! आह ! फिर चेहरए मुबारक निगाहों से ओझल हो गया। आह !

www.dawateislami.net

शरबते दीद ने इक आग लगाई दिल में   तपिशे दिल को बढ़ाया है बुझाने न दिया
अब कहां जाएगा नक़्शा तेरा मेरे दिल से   तह में रख्खा है इसे दिल ने गुमाने न दिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने गुनाहों से तौबा की, दाढ़ी बढ़ानी शुरूअ़ कर दी और इमामा शरीफ़ सजाने की निय्यत भी कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ईद** के दिन **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ हाथों हाथ तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बन गए। बाबुल मदीना कराची ह़ाज़िर हो कर जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी शुरूअ़ कर दिया, ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या का भी कोर्स किया और **मजलिसे मक्तूबातो ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** की त़रफ़ से सोंपी हुई ज़िम्मेदारी के मुत़ाबिक़ ता'वीज़ात का बस्ता भी लगाते नीज़ जामिअ़तुल मदीना के अन्दर अपने द-रजे में **म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मेदार** भी बने।

गर तमन्ना है आक़ा के दीदार की, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगी मीठी नज़र तुम पे सरकार की, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(29) उन को ह़ैरत है कि डब्बू स्नूकर कैसे छोड़ दिया !

लियाक़तआबाद (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के म-दनी रंग में रंगने से पहले बे तह़ाशा फ़िल्में डिरामे देखा करते, "डब्बू स्नूकर" खेलने का इस क़दर जुनून कि किसी के डांटने बल्कि मारने तक से भी येह लत नहीं छूट सकती थी। गुनाहों की नुहूसत का आ़लम येह था कि مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ नमाज़ पढ़ने से दिल घबराता था! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उन के अ़लाक़े की **फ़ुरक़ानिया मस्जिद** (लियाक़तआबाद, बाबुल मदीना कराची) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़**

www.dawateislami.net

के अन्दर वोह भी **आशिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ हो गए । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ "म-दनी इन्आमात" की ब-र-कत से आख़िरत बनाने की सोच बनी, गुनाहों से कुछ बे रग़बती पैदा हुई । फिर क़ादिरिय्या र-ज़विय्या सिल्सिले में मुरीद बने तो नमाज़ की पाबन्दी नसीब हुई, उन्हों ने **डब्बू स्नूकर** खेलना तर्क कर दिया जिस पर उन्हें भी हैरत है कि मैं ने येह कैसे छोड़ दिया ! इस के बा'द दा'वते इस्लामी के **तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** के आख़िरी दिन सहराए मदीना (बाबुल मदीना) में हाज़िरी हुई, वहां "T.V. की तबाह कारियां" के मौज़ूअ़ पर बयान हुवा । उस को सुन कर अ़ज़ाबे क़ब्रो हश्र के ख़ौफ़ से लरज़ उठे और येह अ़हद कर लिया कि कभी भी T.V. नहीं देखूंगा । उन्हों ने अपनी अम्मीजान को T.V. की तबाह कारियां केसिट सुनाई तो उन्हों ने भी T.V. देखना बिल्कुल बन्द कर दिया और सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की मुरीदनी बनने का जज़्बा पैदा हुवा चुनान्चे उन को भी बैअ़त करवा दिया । इस की ब-र-कत से अम्मीजान फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ तहज्जुद, इश्राक़ और चाश्त भी पाबन्दी से पढ़ने लगीं । ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ के करम से थोड़े ही अ़र्से में अम्मीजान को मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا का बुलावा आ गया, इस पर अम्मी ने ख़ुद ही फ़रमाया : येह सब बैअ़त होने का फ़ैज़ है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन इस्लामी भाई को अपने यहां ज़ैली क़ाफ़िला ज़िम्मादार की हैसिय्यत से अपनी प्यारी प्यारी म-दनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की ख़िदमत की सआ़दत मिलने लगी ।

सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(30) कॉमेडियन मुबल्लिग़ बन गया

बाला सिनोर (गुजरात, अल हिन्द) के एक नौ जवान जो कॉमेडियन थे । उलटे सीधे

www.dawateislami.net

चुटकुले सुना कर लोगों को हंसाना उन का मश्ग़ला था, शादियों में मीमीक्री फंक्शन के लिये उन को बुलवाया जाता था। आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** में उन्हें आ़शिक़ाने रसूल के साथ **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल हुई। अब तक धन कमाने ही की धुन थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ के **म-दनी माह़ोल** में आख़िरत बनाने की लगन पैदा हो गई, साबिक़ा गुनाहों से ताइब हो कर सुन्नतों के मुबल्लिग़ बन गए, अपने आप को दा'वते इस्लामी के लिये पेश कर दिया। ता दमे तह़रीर तन्ज़ीमी त़ौर पर तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की एक **डिवीज़नल मुशा-वरत के निगरान** की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचा रहे हैं, दीन के लिये उन की क़ुरबानियों का ह़ाल येह है कि माहाना 25 दिन म-दनी कामों के लिये वक़्फ़ हैं।

اِنْ شَآءَ اللّٰه भाई सुधर जाओगे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मरज़े इस्यां से छुटकारा तुम पाओगे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(31) ह़-जरे अस्वद चूम लिया

टन्डो अल्लाह यार (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई को बुरे माह़ोल और आवारा दोस्तों की सोह़बत ने गुनाहों पर दिलेर कर दिया था, शराब के अड्डों पर जाना उन के लिये मा'मूली बात थी, लोगों से ख़्वाह म ख़्वाह लड़ाई मोल लेना, बिला वज्ह झगड़ना और मारपीट करना उन की आ़दत बन चुकी थी। इन करतूतों की वज्ह से घर का हर फ़र्द उन से बेज़ार था, वोह इसी त़रह़ गुनाहों की वादियों में भटक रहे थे कि उन की क़िस्मत का सितारा चमका और वोह एक आ़शिक़े रसूल की **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तह़त **टन्डो अल्लाह यार** की

www.dawateislami.net

नूरानी मस्जिद में होने वाले **माहे र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) के आख़िरी अ़शरे के **इज्तिमाई ए 'तिकाफ़** की बहारें समेटने में शामिल हो गए। दौराने **ए 'तिकाफ़** आ़शिक़ाने रसूल के दाढ़ियों और इमामों वाले नूरानी चेहरों और उन की महब्बतों और शफ़्क़तों ने उन्हें **दा 'वते इस्लामी** से काफ़ी मु-तअस्सिर किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दस शबाना रोज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोहबत में रह कर उन्हों ने बहुत कुछ सीखा। 25वीं शब **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल थे कि उन पर गुनू-दगी त़ारी हुई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने ख़ुद को **का 'बतुल्लाह शरीफ़** के रू-बरू पाया, उन पर करम बालाए करम येह हुवा कि **उन्हों ने बे साख़्ता ह़-जरे अस्वद को चूम लिया। 27वीं शब** भी उन पर करम हुवा और गुनू-दगी के आ़लम में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की नूरबार गलियों और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दिल-बहार नज़्ज़ारों की सआ़दत पाई। इन ईमान अफ़्रोज़ सिलसिलों ने उन के दिल की दुन्या बदल डाली। उन्हों ने निय्यत की, कि येह **म-दनी माह़ोल** अब ज़िन्दगी भर नहीं छोड़ूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ के लुत्फ़ो करम से उन्हों ने दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना (ज़मज़म नगर हैदरआबाद) में दर्से निज़ामी करने के लिये दाख़िला ले लिया।

दिल में बस जाएं आक़ा के जल्वे मुदाम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
देखो मक्के मदीने के तुम सुब्ह़ो शाम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(32) बुरी सोह़बत में रहने का गुनाह छूट गया

ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई बुरी संगत के सबब मोडर्न और बुरे बन्दे बन गए थे। ख़ुश क़िस्मती से अपने अ़लाक़े की **अक़्सा मस्जिद**, ओरंगी टाउन, अल फ़त्ह़ कोलोनी (बाबुल मदीना) के अन्दर होने वाले **माहे र-मज़ानुल मुबारक** के आख़िरी

www.dawateislami.net

अ़शरए मुबा-रका के **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में बैठने की ब-र-कत से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गए, पाबन्दे सलातो सुन्नत भी बन गए, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की आ़दत पड़ गई, फ़िल्में डिरामे देखने की ख़स्लते बद निकल गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ एक बहुत बड़ा फ़ाएदा येह हुवा कि मह़ज़ नफ़्स की लज़्ज़त की ख़ातिर **बुरी सोह़बत** की जो आ़दत थी उस से भी उन की जान छूट गई।

सोह़बते बद में रहने की आ़दत छुटे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़स्लते जुर्मो इस्यां तुम्हारी मिटे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(33) जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए

मलाका (इलाहआबाद, यूपी, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई का वाक़िआ़ कुछ यूं है कि उन्हों ने मदीनतुल औलिया अह़मदआबाद शरीफ़ में हिन्द सत़ह़ के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाई, दीन की ख़िदमत का काफ़ी जज़्बा मिला। उसी साल तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए **माहे र-मज़ानुल मुबारक** (1418 सि.हि., 1997 सि.ई.) में नागोरी वाड़ की मस्जिद (अह़मदआबाद शरीफ़) के अन्दर होने वाले **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ हुए। **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत उन्हें ख़ूब मुवाफ़िक़ आई, उन के दीनी जज़्बे को मीठे मदीने के 12 चांद लग गए। ए'तिकाफ़ के बा'द अपने आबाई गाउं **मलाका** (यूपी) में जा कर उन्हों ने म-दनी कामों की ख़ूब धूमें मचाई। दूसरे साल म-दनी मर्कज़ की जानिब से मुख़्तलिफ़ शहरों में जा कर सेंकड़ों इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ करवाया। ता दमे तह़रीर अह़मदआबाद शरीफ़ में मुक़ीम हैं और **दा'वते इस्लामी** की

www.dawateislami.net

तन्ज़ीमी तरकीब के मुताबिक़ **तह्सील मालियात** के ज़िम्मेदार हैं।

आओ इश्क़े मुहम्मद के पीने को जाम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

मस्त हो कर करो ख़ूब तुम म-दनी काम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(34) 70 सालह इस्लामी भाई के तअस्सुरात

गार्डन वेस्ट (बाबुल मदीना कराची) के एक सिन रसीदा इस्लामी भाई बुढ़ापे के बा वुजूद مَعَاذَاللّٰه नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते थे, फ़िल्में डिरामे के शौक़ीन थे, दाढ़ी मुंडवाया करते थे और अंग्रेज़ी लिबास पहनते थे। तक़रीबन 60 बरस की उ़म्र में **कौसर मस्जिद** मूसा लेन, लियारी (बाबुल मदीना) के अन्दर पहली बार आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1416 सि.हि., 1996 सि.ई.) में उन्हें **ए'तिकाफ़** की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां **दा'वते इस्लामी** के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मुयस्सर आई। **गुजराती रस्मुल ख़त़ में लिखा हुवा क़ुरआने करीम** पढ़ता देख कर एक इस्लामी भाई ने उन्हें समझाया कि क़ुरआने करीम अ़-रबी में लिखा हुवा पढ़ना ज़रूरी है, गुजराती ज़बान के ह़ुरूफ़ अस्ल अ़-रबी मख़ारिज से कैसे अदा करेंगे! उन की समझ में बात आ गई। बहर ह़ाल ए'तिकाफ़ में **आ़शिक़ाने रसूल** से उन्हें बहुत फ़ैज़ ह़ासिल हुवा। उन्हों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। डेढ़ साल की जिद्दो जुहद से उन के कुछ न कुछ ह़ुरूफ़ दुरुस्त हुए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़-रबी में देख कर क़ुरआने करीम पढ़ना नसीब होने लगा। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने का शरफ़ मिलने लगा, हफ़्ते में एक बार म-दनी दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की सआ़दत भी मुयस्सर आने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली। ज़ाहिरी अस्बाब कम होने के बा वुजूद करम

www.dawateislami.net

बालाए करम हो गया और उन्हें उ़म्रह शरीफ़ और मीठे मदीने की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिल गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हर माह तीन दिन **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल होने लगी। 72 **म-दनी इन्आ़मात** में से 40 से ज़ाइद म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की कोशिश नसीब हुई। एक प्राइवेट फ़र्म में एकाउन्टन्ट हैं और सुब्ह़ो शाम आते जाते बस के अन्दर **नेकी की दा 'वत** देने की चार साल से सआ़दत ह़ासिल है, एक बार **ख़्वाब** में बस के अन्दर उन्हों ने **नेकी की दा 'वत** पेश की, फ़ारिग़ होने के बा'द देखा कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी जिन से येह बहुत मह़ब्बत करते हैं, वोह उन के सामने मुस्कुराते तशरीफ़ फ़रमा हैं। येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर येह रो पड़े और आंख खुल गई। येह ख़्वाब देखने के बा'द **नेकी की दा 'वत** देने में उन्हें मज़ीद इस्तिक़ामत नसीब हुई।

सीख लो आओ क़ुरआन पढ़ना सभी, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़
तुम तरक़्क़ी के ज़ीनों पे चढ़ना सभी, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए 'तिकाफ़

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैरे अ-रबी में आयाते क़ुरआनी लिखना जाइज़ नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जब तक अच्छी सोह़बत नहीं मिलती उस वक़्त तक बसा अवक़ात इस्लाह़ की सूरत नहीं बनती। आज कल अक्सर उ़म्र रसीदा अफ़्राद भी त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुब्तला नज़र आते हैं, ह़त्ता कि बेचारे बिस्तरे मर्ग पर पड़े हों तब भी उन्हें नमाज़ पढ़ने, झूट और ग़ीबत से बचने और दाढ़ी मुंडाने वग़ैरा से तौबा कर लेने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती, इस ह़ालत में भी مَعَاذَ اللّٰہ T.V. पर फ़िल्में डिरामे देखने का सिल्सिला जारी रहता है, सिह़्ह़त पा कर सिर्फ़ दुन्या के काम धन्दे ही करने का जज़्बा होता है। येह मुअ़म्मर इस्लामी भाई ख़ुश नसीब थे, जिन्हें ए'तिकाफ़ में **म-दनी माह़ोल** मुयस्सर आ गया और ग़फ़्लतों में गुज़रने वाली ज़िन्दगी यकायक म-दनी अदाओं में ढल गई। आप ने देखा कि बेचारे क़ुरआने करीम भी

www.dawateislami.net

पढ़े हुए नहीं थे इस लिये गुजराती ज़बान में कुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जिस पर एक **आशिके रसूल** ने तफ़्हीम की (या'नी समझाया) तो दा'वते इस्लामी के **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में रात के वक़्त सीख कर अ़-रबी में पढ़ने के कुछ न कुछ क़ाबिल हुए। याद रखिये ! अ़-रबी ज़बान के इलावा दूसरी किसी ज़बान म-सलन गुजराती, हिन्दी, इंग्लिश के रस्मुल ख़त़ में कुरआने पाक लिखना जाइज़ नहीं। गुजराती, हिन्दी, अंग्रेज़ी वग़ैरा ज़बानों के माहनामों और दीगर कुतुबो रसाइल में आयात और मासूर (या'नी कुरआनो ह़दीस की) दुआएं वग़ैरा अ़-रबी रस्मुल ख़त़ ही में लिखनी चाहिएं। **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان के एक तफ़्सीली फ़तवे का इक्तिबास मुला-ह़ज़ा हो : "हिन्दी या अंग्रेज़ी रस्मुल ख़त़ में कुरआन लिखना तो सरीह़ तह़रीफ़ है (और कुरआने पाक की तह़रीफ़ ह़राम है) कि अव्वलन : तो ऊपर ज़िक्र की हुई पाबन्दियों के ख़िलाफ़ है। दुवुम : سین، صاد، ثاء में, इसी त़रह़ ق और ک में, ز-ذ-ظ में फ़र्क़ बिल्कुल न हो सकेगा। म-सलन ظاہر के मा'ना हैं ज़ाहिर और زاہر के मा'ना हैं चमक्दार या तरो ताज़ा। अब अगर आप ने अंग्रेज़ी में Zahir लिखा तो कैसे मा'लूम हो कि ظاہر है या زاہر। इसी त़रह़ تاہر और طاہر, قدیر और قادر, سامع और سمیع, عالم और علیم में किस त़रह़ फ़र्क़ रहेगा ? ग़-रज़े कि औसाफ़े अल्फ़ाज़ तो दर कनार ख़ुद हुरूफ़ ही मुन्क़लिब (या'नी तब्दील) हो जाएंगे और मा'ना ही ख़त्म।"

(फ़तावा नईमिया, स. 83)

करम से येह जज़्बा मैं पाऊं ख़ुदाया
मैं कुरआन सीखूं सिखाऊं ख़ुदाया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(35) घर में भी म-दनी माह़ोल बना लिया

र-मज़ानुल मुबारक (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में ए'तिकाफ़ के दिन बिल्कुल क़रीब थे, **राजोरी** (जम्मूं कश्मीर, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 40 बरस) से

www.dawateislami.net

मुलाक़ात होने पर एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन को सर-सरी तौर पर **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत पेश की और वोह तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** की तरफ़ से मस्जिद रेल्वे स्टेशन (राजोरी, जम्मूं कश्मीर) में होने वाले आखिरी अशरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) के **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में मो'तकिफ़ हो गए। **आशिक़ाने रसूल** का **म-दनी माहोल** देख कर हैरान रह गए, दाढ़ी मुबारक सजा ली, इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ हो गया, दर्सो बयान का सिल्सिला शुरूअ कर दिया, **अपने घर में भी म-दनी माहोल बना लिया,** घर की इस्लामी बहनों पर पर्दा नाफ़िज़ किया और ता दमे तहरीर अपने शहर **"राजोरी" की मुशा-वरत के निगरान हैं।**

ज़िन्दगी का क़रीना मिलेगा तुम्हें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ दर्दे मदीना मिलेगा तुम्हें, म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

36 मैं र-मज़ान के रोज़े भी कम ही रखता था

भलवाल (ज़िलअ सरगोधा, गुलज़ारे तयबा, पंजाब पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई बे नमाज़ी और फ़ेशन परस्त नौ जवान थे और फ़िल्में, डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने के इन्तिहाई शौक़ीन। **र-मज़ानुल मुबारक** में रोज़े भी مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ कम ही रखते, अगर कोई समझाता भी तो टाल देते। एक दिन वोह किसी मुआ-मले के सबब परेशानी के आलम में जा रहे थे कि एक बा इमामा इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई जो तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता थे। वोह उन्हें इन्फ़िरादी कोशिश कर के जामेअ मस्जिद में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ले गए, मगर वोह शैतानी वस्वसों के बाइस कुछ ही देर में उठ कर चल दिये। दो दिन बा'द उन का

www.dawateislami.net

एक दुन्यादार दोस्त उन को फ़िल्म देखने के लिये ले गया मगर किसी बात पर अनबन होने के बाइस वोह उस से अलग हो गए और यूं उन की क़िस्मत का सितारा चमका, हुवा यूं कि **माहे र-मज़ानुल मुबारक** में उन के बड़े भाई साहिब दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ थे, वोह भाईजान से मिलने जा पहुंचे, वहां सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजाए आ़शिक़ाने रसूल उन्हें बहुत भले लगे। चांदरात एक इस्लामी भाई ने उन के भाईजान को **फ़ैज़ाने सुन्नत** और ना'तों की केसिट तोह़फ़े में दी, उस इस्लामी भाई ने फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब **बे नमाज़ी की सज़ाएं** पढ़ा तो लरज़ उठे और केसिट में येह मुनाजात

गुनाहों की आ़दत छुड़ा मेरे मौला   मुझे नेक इन्सां बना मेरे मौला

सुनी तो दिल चोट खा कर रह गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने गाने बाजे सुनना छोड़ दिये मगर नमाज़ की पाबन्दी न कर सके। एक आ़शिक़े रसूल की दा'वत पर दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में दोबारा जा पहुंचे और आख़िर तक रुके रहे इख़्तिताम पर **आ़शिक़ाने रसूल** की मुलाक़ात के दिल नशीन अन्दाज़ ने उन्हें दा'वते इस्लामी का शैदाई बना दिया। उन्हों ने चेहरे को म-दनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ से सर सब्ज़ो शादाब कर लिया। पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने लगे और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के मुरीद भी बन गए **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर जै़ली मुशा-वरत के ज़िम्मेदार बने और पाबन्दी से दर्स देने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के मद्र-सतुल मदीना में हिफ़्ज़ करने की सआ़दत भी पाने लगे।

आओ सुन्नत का फ़ैज़ान पाओगे तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

اِنْ شَآءَ اللّٰه जन्नत में जाओगे तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644, 645)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

37 रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात

बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े डिफ़ेन्स व्यू के मुक़ीम एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के मामूंज़ाद भाई जो कि मिल ऑनर (Mill owner) हैं, **इन्फ़िरादी कोशिश** की ब-र-कत से **माहे र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि.) में **दा'वते इस्लामी** के तह़त होने वाले सुन्नतों भरे **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में बैठने के लिये तय्यार हो गए। वोह अ़र्सए दराज़ से रीढ़ की हड्डी के शदीद दर्द में मुब्तला थे, कई डॉक्टरों को दिखाया और उन की तज्वीज़ कर्दा अदवियात भी इस्ति'माल कीं मगर ख़ातिर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा। वोह तश्वीश में थे कि दस दिन ए'तिकाफ़ में कैसे रहूंगा ! ख़ैर वोह दौराने ए'तिकाफ़ दीवार से टेक लगा कर बैठने की कोशिश करते, फ़ोम के गद्दे पर सोने की आ़दत थी यहां चटाई या दरी बिछा कर ज़मीन पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की तरग़ीब दी जाती थी, उन के लिये इन्तिहाई दुश्वार था। मगर इस के सिवा कोई चारा न था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ चन्द ही दिन सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की ब-र-कत से उन्हें मह़सूस हुवा कि कमर के दर्द में काफ़ी कमी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** की ब-र-कत से आख़िरे कार रीढ़ की हड्डी के दर्द से उन की जान छूट गई।

तुम को तड़पा के रख दे गो दर्दे कमर, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पाओगे तुम सुकूं होगा ठन्डा जिगर, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

38 हेप्पी न्यू यर का चस्का

जोधपूर (राजस्थान, अल हिन्द) के एक फ़ोटो ग्राफ़र (उ़म्र तक़रीबन 28 साल) जिन को 31 दिसम्बर को "हेप्पी न्यू यर" (Happy New Year) की बे ह़याई से भरपूर पार्टियों में शिर्कत का जुनून की ह़द तक चस्का था और वोह इस के लिये बम्बई पहुंच जाते थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम

www.dawateislami.net

हो गया कि तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की जानिब से बीच वाली मस्जिद (उदयपूर, राजस्थान, अल हिन्द) के अन्दर आख़िरी अ़शरए **माहे र-मज़ानुल मुबारक** (1426 सि.हि., 2005 सि.ई.) में होने वाले **इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ मो'तकिफ़ होने की उन्हें सआ़दत मिल गई। वहां लगने वाले सुन्नतों भरे म-दनी ह़ल्क़ों, पुरसोज़ बयानात और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन को झन्झोड़ कर रख दिया। अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, फ़ोटो ग्राफ़ी का काम तर्क कर दिया और पाबन्दी से **सदाए मदीना** लगाने लगे या'नी मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने लगे।

रंग रलियां मनाने का चस्का मिटे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

रक़्स की मह़फ़िलों की नुहूसत छुटे, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हमें हिजरी सिन का लिह़ाज़ रखना चाहिये : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश ! जनवरी से नए साल के इस्तिक़्बाल के बजाए मुसल्मानों को "म-दनी नए साल" या'नी हिजरी सिन के मुताबिक़ शुरूअ़ होने वाले नए साल के इस्तिक़्बाल का जज़्बा नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिने हिजरी का नया साल यकुम मुह़र्रमुल ह़राम से शुरूअ़ होता है, हो सके तो हर साल मुह़र्रमुल ह़राम की पहली तारीख़ आपस में नए म-दनी साल की मुबारक बाद देने का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाइये।

(39) आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत

भलवाल ज़िलअ़ गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले "क्लीन शेव" थे, सुन्नतों भरी ज़िन्दगी से दूर ग़फ़्लतों की वादियों में भटक रहे थे। **र-मज़ानुल मुबारक** का बा ब-र-कत महीना था, एक दिन अपने कमरे में बैठे थे कि उन के वालिद साह़िब उन के छोटे भाई से फ़रमाने लगे : "जामेअ़ मस्जिद ख़्वाजगान" में **दा'वते इस्लामी** के तह़त **र-मज़ानुल मुबारक** के

www.dawateislami.net

आख़िरी अ़शरे का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** हो रहा है। तुम जल्दी चलो वरना पहली सफ़ में जगह नहीं मिलेगी। येह चौंके और दिल में शौक़ पैदा हुवा कि मैं भी उन **आ़शिक़ाने रसूल** की ज़ियारत को जाऊं, उस दिन नमाज़े इशा मअ़ तरावीह़ उसी मस्जिद में अदा की। बा'दे तरावीह़ केसिट के ज़रीए ह़ाजी मुश्ताक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق की आवाज़ में येह ना'त शरीफ़ चलाई गई :

"सानी न कोई मेरे सोहने नबी लजपाल दा"

उन्हें इन्तिहाई सुरूर ह़ासिल हुवा। येह दूसरे दिन फिर जा पहुंचे तो चूंकि जुम्अ़रात थी लिहाज़ा वहां हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ शुरूअ़ हो गया। येह पहली बार शिर्कत कर रहे थे, दिल को अ़जीब सुकून व राह़त मुयस्सर हुई। तीसरे दिन भी गए तो केसिट इज्तिमाअ़ में मक-त-बतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरा बयान **गाने बाजे की होल नाकियां** सुनाया गया, बयान सुन कर येह कांप उठे क्यूं कि इस में आ़म बोले जाने वाले गानों के कुफ़्रिय्या अश्आ़र की निशान देही की गई थी। مَعَاذَ اللّٰہ येह भी कुफ़्रिय्या अश्आ़र बोलने की आफ़त में गिरिफ़्तार थे लिहाज़ा उन्हों ने तौबा की और तजदीदे ईमान भी किया। चूंकि दिल एक दम चोट खा चुका था लिहाज़ा बक़िय्या दिनों के लिये मो'तकिफ़ हो गए। **फ़ैज़ाने सुन्नत** में ज़ुल्फ़ें (गेसू) रखने की सुन्नतें और आदाब पढ़े तो ज़ुल्फ़ें रखने की निय्यत कर ली और 26 **र-मज़ानुल मुबारक** को होने वाले इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में दाढ़ी रखने की भी निय्यत कर ली और सिल्सिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के मुरीद बन गए। सलातो सलाम के सीग़े भी उन्हों ने वहीं याद किये और ए'तिकाफ़ से वापसी पर गानों की 100 से ज़ाइद केसिटों और T.V. को (कि उन दिनों "म-दनी चेनल" नहीं था दीगर चेनल्ज़ में उ़मूमन गुनाहों भरे प्राग्राम ही देखे जाते थे इस लिये) घर से निकाल बाहर किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी तौर पर डिवीज़्नल क़ाफ़िला ज़िम्मादार भी बने।

ढोल बाजों को सुनने से बाज़ आओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़िल्मी गाने न हरगिज़ कभी गाओ तुम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िल्मी गाने सुनने सुनाने से बचिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त कीजिये, कई गाने ऐसे हैं जिन में कुफ़्रिय्या अश्आर होते हैं बराहे करम ! मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ रिसाले "गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आर" का ज़रूर मुता-लआ फ़रमाइये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(40) मिलावट वाले मसाले का कारोबार बन्द कर दिया

रन्छोड़ पूरी रोड **भीमपूरा** (म-दनी पूरा) बाबुल मदीना कराची के एक इस्लामी भाई पहले पहल ऐसे बे नमाज़ी थे, जुमुआ की नमाज़ भी नहीं पढ़ते थे। ख़ुश क़िस्मती से उन्हों ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह्‌रीक, **दा'वते इस्लामी** के तहत गुलज़ारे मदीना मस्जिद (आगरा ताज कॉलोनी, बाबुल मदीना) में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह आख़िरी अ़शरए **र-मज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004 सि.ई.) के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। दस दिन में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने उन की क़ल्बी कैफ़िय्यत बदल कर रख दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने कुछ न कुछ नमाज़ सीख ली और पन्ज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त के पाबन्द बन गए। सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के मुरीद भी बन गए। ख़ुदाए ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से नेक आ'माल का ऐसा ज़ेह्‌न मिला कि 72 में से कमो बेश 63 **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश करने में काम्याब हो गए। मक-त-बतुल मदीना के मत्बूआ़ रसाइल कसरत से पढ़ने की आ़दत बन गई और ए'तिकाफ़ का एक बड़ा इन्आ़म येह भी मिला कि येह जो मिलावट वाले मिर्च मसाले की सप्लाय का सिन्ध भर में काम करते थे वोह तर्क कर दिया। उन के मसाले के कारख़ाने में तक़रीबन 44 मुलाज़िम काम करते थे, उन्हों ने वोह कारख़ाना ही ख़त्म कर दिया, क्यूं कि दौर बड़ा नाज़ुक है, बड़े पैमाने पर ख़ालिस मसाले के कारोबार में बाज़ार में खड़ा होना निहायत ही दुश्वार है। अगर्चे बा'ज़ सूरतों में मिलावट ज़ाहिर कर के बेचना जाइज़ सही मगर मिलावट

www.dawateislami.net

का ए'तिराफ़ करें तो ख़रीदे कौन ! उ़मूमन धोकाबाज़ी का दौर दौरा है। आज कल मुसल्मानों की सिह़्ह़त की किस को पड़ी है ! बस दौलत चाहिये ख़्वाह वोह ह़लाल हो या مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़राम। बहर ह़ाल आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की ब-र-कत से येह रिज़्क़े ह़लाल के हुसूल में मश्ग़ूल हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से इश्राक़, चाश्त, अव्वाबीन और तहज्जुद के नवाफ़िल के साथ साथ पहली सफ़ में नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त अदा करने की भी आ़दत बन गई।

छोड़ दो छोड़ दो भाई रिज़्क़े ह़राम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

आओ करने लगोगे बहुत नेक काम, म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ **!** हर मुसल्मान का ए'तिकाफ़ क़बूल फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **! मो 'तकिफ़ीने मुख़्लिसीन** के तुफ़ैल हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत कर। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** उम्मते मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

हर गुनह से बचा मुझ को मौला, नेक ख़स्लत बना मुझ को मौला

तुझ को र-मज़ान का वासित़ा है, या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1438 सि.हि. / मई 2017 ई.

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 म-दनी फूल

1 **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह **जन्नती** है।" (حِلْيَةُ الْاولياء ج١٠ ص٤٥ رقم ١٤٤٦٦)

2 **सरकारे** मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीस को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٩٨ حديث ٢٦٦٥)

3 **ह़ज़रते** सय्यिदुना इदरीस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है के कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्सो तदरीस के बाइस आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम **इदरीस** हुवा। (تفسيركبير ج٧ ص ٥٥٠، تفسير الحسنات ج٤ ص٤٨)

4 **हुज़ूरे ग़ौसे** पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰى صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इल्म का **दर्स** लिया यहां तक के मक़ामे क़ुत़्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (क़सीदए ग़ौसिय्या)

5 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कोलेज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **म-दनी फूल** लुटाइये और ढेरों सवाब कमाइये।

6 **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम दो दर्स देने या सुनने की सआदत ह़ासिल कीजिये। (इन दो में एक "घर दर्स" ज़रूर हो)

7 पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की छटी आयत में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स भी है। (दर्स के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी मुज़ा-करे की एक केसिट या V.C.D भी घर वालों को सुनाइये)

8 **ज़िम्मेदार** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौकदर्स का एहतिमाम करें म-सलन : रात 9 बजे **मदीना चौक** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये। (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों म-सलन आप की वज्ह से मुसल्मानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

9 **दर्स** के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

10 **दर्स** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाइये।

11 **मेह़राब** से हट कर (सेह़न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

12 ज़ैली मुशा-वरत के निगरान को चाहिये के अपनी मस्जिद में दो **ख़ैर ख़्वाह** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नरमी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

13 **पर्दे में पर्दा** किये दो ज़ानू बैठ कर **दर्स** दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े

www.dawateislami.net

हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वग़ैरा को तश्वीश न हो।

14 आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये के सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़्तियात़ फ़रमाइये के दर्सो बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मश्ग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

15 दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

16 जो कुछ दर्स देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ा-लआ़ कर लीजिये ताकि ग़-लत़ियां न हों।

17 फ़ैज़ाने सुन्नत के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ إِنْ شَاءَ اللهُ عزوجل तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

18 ह़म्दो सलात, दुरूदो सलाम के दोनों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़-रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

19 फ़ैज़ाने सुन्नत के इलावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ होने वाले म-दनी रसाइल से भी दर्स दे सकते हैं।[1]

20 दर्स मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

21 हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह दर्स का त़रीक़ा, बा'द की तरग़ीब और इख़्तितामी दुआ़ ज़बानी याद कर ले।

22 दर्स के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

1. अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه के रसाइल के इलावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये : "क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये।" पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ **ए'तिकाफ़** की निय्यत करवाइये :

نَوَیْتُ سُنَّةَ الْاِعْتِکَاف (तरजमा : मैं ने सुन्नते ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

फिर इस त़रह़ कहिये, **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़रीब क़रीब आ कर दर्स की ता'ज़ीम की निय्यत से हो सके तो दो ज़ानू बैठ जाइये अगर थक जाएं तो जिस त़रह़ आप को आसानी हो उसी त़रह़ बैठ कर निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स सुनिये कि ला परवाही के साथ इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए सुनने से इस की ब-र-कतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। (बयान के आग़ाज़ में भी इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर एक दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़-रबी इ़बारात का सिर्फ़ तरजमा पढ़िये। किसी भी आयत या ह़दीस का अपनी राय से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये।

www.dawateislami.net

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्सो बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा 'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमेरात इ़शा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हि़फ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए के "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये[1] म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा 'वते इस्लामी ! तेरी धूम मची हो

1. यहां इस्लामी बहन कहे : घर के मर्दों को म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाना है।

www.dawateislami.net

आख़िर में ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ (या'नी जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ○ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! दर्स की ग़-लत़ियां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, नेक अ़मल का जज़्बा दे, हमें परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमें अपना और अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुख़्लिस आ़शिक़ बना। हमें गुनाहों की बीमारियों से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमें म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ दूसरों को भी म-दनी कामों की तरग़ीब दिलवाने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मुसल्मानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, बे जा मुक़द्दमा बाज़ियों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! इस्लाम का बोलबाला कर और दुश्मनाने इस्लाम का मुंह काला कर। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मदीने की ख़ुश्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी जाइज़ दुआ़एं क़बूल फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلّم

www.dawateislami.net

शे'र के बा'द येह आयते मुबारक पढ़िये :

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (پ۲۳ الصّٰفّٰت)

दर्स की कमाई पाने के लिये सवाब की निय्यत के साथ (खड़े खड़े नहीं बल्कि) **बैठ** कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये और **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब मुस्कुराते हुए उन्हें **म-दनी इन्आमात** और **म-दनी क़ाफ़िलों** की ब-र-कतें समझाइये। (बैठ कर मिलने में हिक्मत येह है कि कुछ न कुछ इस्लामी भाई हो सकता है आप के साथ बैठे रहें वरना खड़े खड़े मिलने वाले उ़मूमन चल पड़ते हैं यूं इन्फ़िरादी कोशिश की सआदत से महरूमी हो सकती है)

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

दुआए अत्तार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और पाबन्दी के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो दर्स** एक घर में और दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़
मिले दिन में दो मरतबा या इलाही

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ/سال اشاعت
قرآن پاک	* * * * *	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
تفسیر عبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
تفسیر طبری	علامہ ابو جعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر خازن	علامہ علاء الدین علی بن محمد بغدادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مصر ۱۳۱۷ھ
تفسیر مدارک	علامہ ابو البرکات عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
تفسیر در منثور	امام جلال الدین بن عبد الرحمن سیوطی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر روح البیان	شیخ اسماعیل حقی بروسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۰۵ھ
تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد صاوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
روح المعانی	علامہ شہاب الدین سید محمود آلوسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر عزیزی	مولانا شاہ عبد العزیز محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	کوئٹہ
تفسیر خزائن العرفان	علامہ سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	رضا اکیڈمی ممبئی ہند
تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور
تفسیر نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	پیر بھائی اینڈ کمپنی
تفسیر صراط الجنان	مفتی ابو صالح محمد قاسم قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
صحیح بخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن ترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
سنن ابو داود	امام سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
مشکوٰۃ	علامہ محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
مسند امام اعظم	علامہ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ الکوثر الریاض ۱۴۱۵ھ
موطا امام مالک	امام مالک بن انس رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
البحر الزخار	امام ابوبکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ ۱۴۲۴ھ
بغیۃ الباحث عن زوائد مسند الحارث	امام حافظ نور الدین ہیثمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	المدینۃ المنورۃ ۱۴۱۳ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
مستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
مسند امام احمد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند ابی یعلی	امام احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
الفردوس بمأثور الخطاب	علامہ شیرویہ بن شہردار دیلمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۶ھ
معجم کبیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۲ھ

معجم اوسط	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
معجم صغیر	امام سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۳ھ
سنن کبریٰ	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۱ھ
الکامل	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام صنعانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
صحیح ابن خزیمہ	امام ابو بکر محمد بن اسحاق بن خزیمہ نیشاپوری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المکتب الاسلامی بیروت ۱۴۱۲ھ
مصنف ابن ابی شیبہ	امام عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
کتاب ذکر الموت	امام عبد اللہ بن محمد ابو بکر بن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
فضائل شہر رمضان	امام عبد اللہ بن محمد ابو بکر بن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
ذم الغیبۃ	امام عبد اللہ بن محمد ابو بکر بن ابی الدنیا رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	المکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
الزہد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الغد الجدید مصر ۱۴۲۶ھ
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
جامع صغیر	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
مجمع الزوائد	امام حافظ نور الدین ہیثمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
کنز العمال	علامہ علاؤ الدین علی متقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
الترغیب والترہیب	امام حافظ زکی الدین عبد العظیم منذری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
النھایۃ	امام مجد الدین محمد بن اثیر جزری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
حلیۃ الاولیاء	علامہ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
البدور السافرۃ فی امور الآخرۃ	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
فضائل شہر رجب	علامہ حسن بن محمد بن حسن خلال رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار ابن حزم ۱۴۱۶ھ
فضائل الاوقات	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	مکتبۃ المنارۃ مکۃ المکرمۃ ۱۴۱۰ھ
شرح مشکل الآثار	امام احمد بن محمد طحاوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۵ھ
عمدۃ القاری	علامہ ابو محمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
شرح صحیح مسلم	علامہ ابو زکریا یحیٰی بن شرف نووی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۰۱ھ
شرح طیبی	امام شرف الدین حسین بن محمد طیبی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2001ء
مرقاۃ المفاتیح	علامہ علی قاری رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرؤف مناوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
اشعۃ اللمعات	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	کوئٹہ
لمعات التنقیح	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار النوادر بیروت 2014ء
مرآۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
نزہۃ القاری	مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	فرید بک اسٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۱ھ
بدائع الصنائع	ابو بکر بن مسعود کاسانی حنفی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
جوہرہ نیرہ	علامہ ابو بکر بن علی حداد رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

نخبہ	علامہ محمد ابراہیم بن حلبی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
المیزان الشریعۃ الکبری	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مصطفی البابی مصر
غمز العیون	شیخ سید احمد بن محمد حموی مصری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	باب المدینہ کراچی ۱۴۱۸ھ
مراقی الفلاح	علامہ حسن بن عمار بن علی شرنبلالی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
فتح القدیر	محمد بن عبد الواحد ابن ہمام حنفی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا گجرات الہند
درمختار	علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
فتاوی عالمگیری	شیخ نظام و جماعۃ من علماء ہند رحمۃ اللہ تعالی علیہم	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
ردالمحتار	علامہ ابن عابدین محمد امین شامی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
جد الممتار	اعلی حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ تعالی علیہ	باب المدینہ کراچی
البحر الرائق	علامہ زین الدین بن ابراہیم بن محمد رحمۃ اللہ تعالی علیہ	کوئٹہ
فتاوی رضویہ	اعلی حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الملفوظ	مفتی مصطفی رضا خان رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
فتاوی امجدیہ	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبہ رضویہ باب المدینہ ۱۴۱۹ھ
فتاوی صدر الافاضل	علامہ سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور 2008ء
فتاوی نعیمیہ	علامہ سید نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	ادارہ کتب اسلامیہ گجرات
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ ۱۴۲۹ھ
وقار الفتاوی	مفتی وقار الدین رحمۃ اللہ تعالی علیہ	بزم وقار الدین باب المدینہ 2001ء
تاریخ بغداد	حافظ احمد بن علی خطیب بغدادی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
ابن عساکر	علامہ ابو القاسم علی بن حسن رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
الشفاء	امام قاضی ابو الفضل عیاض رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا گجرات الہند
الخصائص الکبری	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
بہجۃ الاسرار	علامہ نور الدین علی بن یوسف شطنوفی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
تذکرۃ الانبیاء	حافظ قاضی عبد الرزاق چشتی بھترالوی مدظلہ العالی	ضیاء العلوم پبلی کیشنز راولپنڈی 2002ء
سیرت مصطفی	علامہ عبد المصطفی اعظمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
حجۃ اللہ علی العالمین	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا گجرات الہند
تفسیر الاحلام	امام محمد بن سیرین بصری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
القول البدیع	امام حافظ محمد بن عبد الرحمن سخاوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مؤسسۃ الریان بیروت ۱۴۲۲ھ
رسالہ قشیریہ	امام ابو القاسم عبد الکریم بن ہوازن قشیری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
تنبیہ المغترین	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
احیاء العلوم	امام ابو حامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار صادر بیروت ۱۴۲۱ھ
کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
طبقات الشافعیۃ	علامہ تاج الدین بن علی بن عبد الکافی سبکی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	ہجر للطباعۃ والنشر والتوزیع ۱۴۱۳ھ
لطائف المعارف	علامہ ابن رجب حنبلی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار ابن کثیر ۱۴۲۰ھ
الروض الفائق	علامہ شعیب حریفیش رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ

www.dawateislami.net

اتحاف السادۃ	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تذکرۃ الاولیا	شیخ فرید الدین محمد عطار رحمۃ اللہ تعالی علیہ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
ماثبت بالسنۃ	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دہلی
الانوار القدسیۃ	علامہ عبد الوہاب بن احمد شعرانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار التقوی سوریہ دمشق ۱۴۲۸ھ
روض الریاحین	علامہ عبد اللہ بن اسعد بن علی یافعی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
الروض الفائق	علامہ شعیب بن سعد عبد الکافی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۲ھ
الزواجر عن اقتراف الکبائر	علامہ ابو العباس احمد بن محمد بن حجر مکی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
شرح الصدور	امام جلال الدین سیوطی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث محمد بن احمد سمرقندی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	پشاور ۱۴۲۰ھ
مکاشفۃ القلوب	منسوب بہ امام ابو حامد محمد بن محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مطالع المسرات	علامہ محمد مہدی فاسی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2005ء
قلیوبی	احمد بن احمد شہاب الدین قلیوبی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۳۹۱ھ
انیس الواعظین	مولانا ابو بکر سندی قرشی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	سیلاب پبلشرز پشاور ۱۳۵۷ھ
نزہۃ المجالس	مولانا عبد الرحمن صفوری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
درۃ الناصحین	مولانا عثمان بن حسن شاکر خوبوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت
راحت القلوب	خواجہ نظام الدین اولیاء رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دہلی
غنیۃ الطالبین	شیخ عبد القادر جیلانی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷ھ
انفاس العارفین	علامہ شاہ ولی اللہ محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	فضل نور اکیڈمی گجرات
کشف المحجوب	حضرت علی بن عثمان ہجویری رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مرکز الاولیا لاہور
جذب القلوب	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	نوری بک ڈپو لاہور
اخبار الاخیار	شیخ عبد الحق محدث دہلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	فاروقی اکیڈمی گمبٹ خیرپور
بوستان سعدی	شیخ سعدی شیرازی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	انتشارات عالمگیر کتاب خانہ ایران
معجم السفر	حافظ ابو طاہر احمد بن محمد رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
القاموس المحیط	علامہ مجد الدین محمد بن یعقوب رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
احسن الوعاء	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
اصول الرشاد	علامہ مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالی علیہ	دار اہل السنۃ باب المدینہ کراچی
مشعلۃ الارشاد	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اخلاق الصالحین	سلطان الواعظین ابو النور محمد بشیر رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اسلامی زندگی	مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
خطب علمی	مولانا محمد حسن علمی بریلوی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور
حدائق بخشش شریف	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ رحمۃ الرحمن	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
نورانی تقریریں	علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی رحمۃ اللہ تعالی علیہ	اکبر بک سیلرز مرکز الاولیا لاہور 2003ء

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **''फ़िक्रे मदीना''** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' अपनी इस्लाह के लिये **''म-दनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **''म-दनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

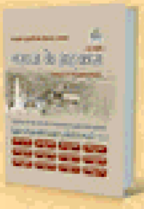

ISBN
0133014

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net